IUC ACADEMY

INCLUSIVE UNIVERSAL CAREERS ACADEMY

Learn. Prepare. Progress. • www.iucacademy.com

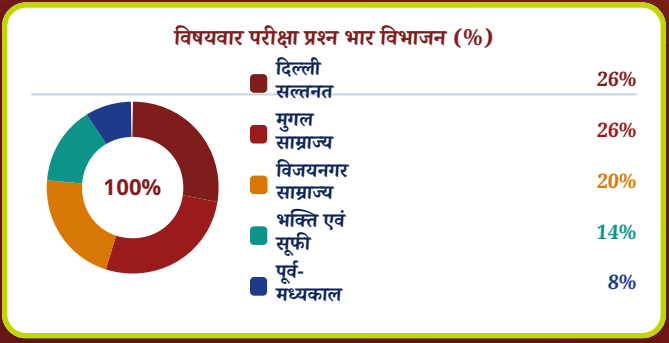
IUC अकादमी नोट्स

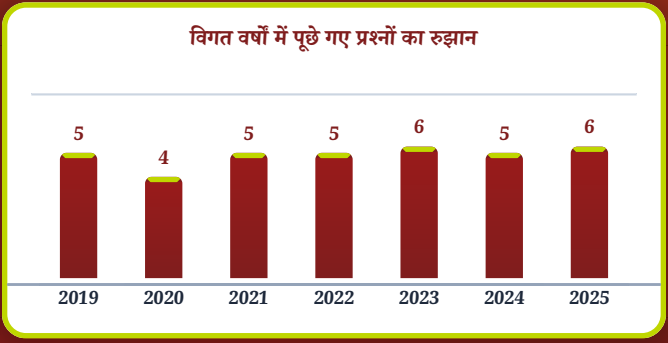
संपूर्ण
पाठ्यक्रम • विस्तृत व्याख्या • तुलनात्मक सारणियाँ • अभ्यास प्रश्न

मध्यकालीन भारत का इतिहास

MEDIEVAL INDIAN HISTORY & ADMINISTRATION

पूर्व-मध्यकाल, चोल साम्राज्य, दिल्ली सल्तनत, विजयनगर-बहमनी, मुगल साम्राज्य, मराठा एवं भक्ति-सूफी आंदोलन के संपूर्ण नोट्स





इस पुस्तक के प्रमुख अध्याय एवं परीक्षा भार

- दिल्ली सल्तनत: प्रशासन, सुधार व स्थापत्य (26%)
- मुगल साम्राज्य: मनसबदारी, जागीरदारी व कला (26%)
- विजयनगर साम्राज्य, बहमनी व विदेशी यात्री (20%)
- भक्ति एवं सूफी आंदोलन (संत व दर्शन) (14%)
- पूर्व-मध्यकाल: त्रिपक्षीय संघर्ष व चोल प्रशासन (8%)
- मराठा साम्राज्य (शिवाजी व अष्टप्रधान) (6%)

संपूर्ण पाठ्यक्रम
NCERT एवं मानक स्रोत

ग्राफ व चित्र
फ्लोचार्ट, सारणियाँ व आरेख

स्मृति ट्रिक्स
त्वरित याद करने के सूत्र

अभ्यास प्रश्न
व्याख्या सहित हल

आमुख एवं परीक्षा रणनीति मार्गदर्शिका — मध्यकालीन भारत का इतिहास

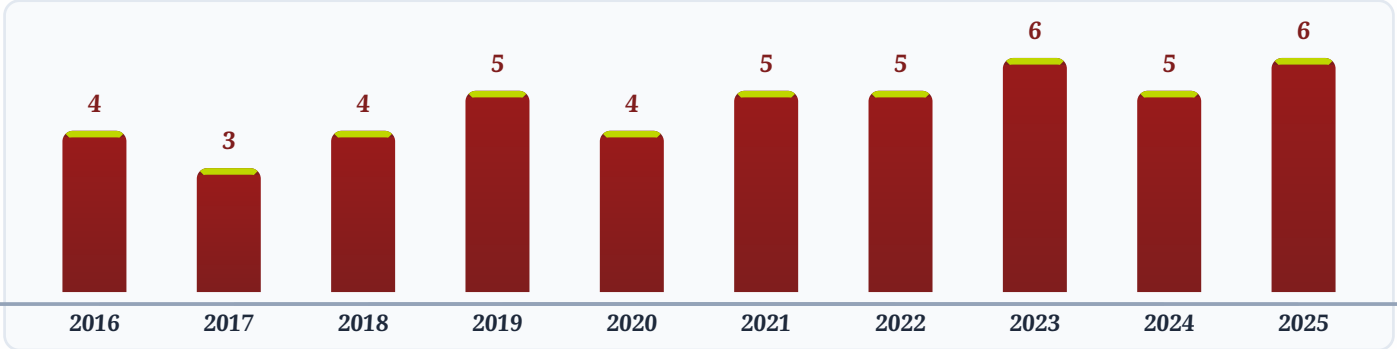
IUC Academy (Inclusive Universal Careers Academy) • छात्रों की सरल समझ हेतु विशेष रूप से निर्मित

प्रिय विद्यार्थियों,

सिविल सेवा (UPSC CSE) एवं विभिन्न राज्य लोक सेवा आयोगों (UPPSC, BPSC, MPPSC, RAS) की परीक्षाओं में सफलता का मूल मंत्र है — **"कम से कम समय में सटीक अवधारणा और बार-बार रिवीजन"**। अधिकांश पुस्तकों में सामग्री अत्यंत जटिल और बिखरी हुई होती है, जिससे छात्रों को मुख्य बिंदुओं को याद रखने में कठिनाई होती है।

इसी समस्या के समाधान हेतु **IUC Academy (www.iucacademy.com)** के शिक्षाविदों ने इस पुस्तक को पूर्णतः **मौलिक, छात्र-हितैषी और सुस्पष्ट भाषा** में नए सिरे से संकलित किया है। इसमें प्रत्येक विषय को सरल व्याख्या, स्पष्ट की-वर्ड्स, तुलनात्मक सारणियों, सचित्र आरेखों, डेटा ग्राफ और यादगार **IUC स्मृति ट्रिक्स** के साथ प्रस्तुत किया गया है।

विगत 10 वर्षों (2016–2025) में 'मध्यकालीन भारत का इतिहास' से पूछे गए प्रश्नों का रुझान ग्राफ



1. सरल छात्र व्याख्या

प्रत्येक कठिन बिंदु को आसान भाषा में समझाया गया है ताकि पहली बार पढ़ने वाला छात्र भी तुरंत समझ सके।

2. स्मृति सूत्र (Tricks)

तथ्यों, तिथियों, सूचियों और अनुच्छेदों को याद रखने के लिए विशेष IUC निमोनिक्स दिए गए हैं।

3. त्वरित रिवीजन

सारणियों, फ्लोचार्ट और अध्याय सारांश की सहायता से परीक्षा के अंतिम दिनों में पूरा पाठ्यक्रम दोहराएँ।

विषयवार प्रश्न भार विश्लेषण एवं उच्च-प्राथमिकता डैशबोर्ड

परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने हेतु अध्यायवार प्राथमिकता सूचकांक एवं प्रमुख स्मृति सूत्र

अध्यायवार प्रश्न वितरण सूचकांक (Topic-wise Weightage %)



इस पुस्तक की शीर्ष 5 मास्टर स्मृति ट्रिक्स (Top Memory Mnemonics)

1. दिल्ली सल्तनत के 5 राजवंश (कालक्रम: 1206-1526): ट्रिक: 'गुलाब खिले तो सांस लो' — 1. गुलाम/मामलूक वंश (1206-1290, कुतुबुद्दीन ऐबक), 2. खिलजी वंश (1290-1320, जलालुद्दीन), 3. तुगलक वंश (1320-1414, गयासुद्दीन — सर्वाधिक लंबा शासन 94 वर्ष), 4. सैयद वंश (1414-1451, खिज्र खाँ), 5. लोदी वंश (1451-1526, बहलोल लोदी — प्रथम अफगान वंश)।

2. सल्तनत कालीन प्रमुख विभाग एवं संस्थापक: ट्रिक: 'अर्ज बलबन, मुस्तखराज व रियासत अलाउद्दीन, कोही मुहम्मद तुगलक, खैरात व बंदगान फिरोज तुगलक' — दीवान-ए-अर्ज (सैन्य: बलबन), दीवान-ए-मुस्तखराज (राजस्व बकाया: अलाउद्दीन), दीवान-ए-अमीर कोही (कृषि: मुहम्मद बिन तुगलक), दीवान-ए-बंदगान (दास) व खैरात (दान): फिरोज शाह तुगलक।

3. विजयनगर साम्राज्य के 4 राजवंश एवं संस्थापक: ट्रिक: 'संगम हरि-बुक्का, सालुव नरसिंह, तुलुव वीर नरसिंह (कृष्णदेव राय), अरावीडु तिरुमल' — विजयनगर में आने वाले विदेशी यात्री: निकोलो कोंटी (देवराय-I), अब्दुर्रज्जाक (देवराय-II), बारबोसा व डोमिंगो पायस (कृष्णदेव राय), नूनिज (अच्युतदेव राय)।

4. बाबर द्वारा लड़े गए 4 प्रमुख युद्ध (1526-1529): ट्रिक: '26 में पानी पिया, 27 में खाना खाया, 28 में चल दिया, 29 में घर गया और 30 में मर गया' — पानीपत प्रथम (1526, इब्राहिम लोदी), खानवा (1527, राणा सांगा — गाजी उपाधि), चंदेरी (1528, मेदिनी राय), घाघरा (1529, अफगान)।

5. अकबर के नवरत्न याद रखने की ट्रिक: ट्रिक: 'BAT BAT MDH' — B=Birbal (बीरबल), A=Abul Fazl (अबुल फजल), T=Tansen (तानसेन), B=Bhagwan Das (भगवान दास), A=Abdul Rahim Khan-i-Khana (अब्दुर्रहीम खानखाना), T=Todar Mal (टोडरमल), M=Man Singh (मानसिंह), D=Mulla Do Pyaza (मुल्ला दो प्याजा), H=Hakim Humam (हकीम हुमाम)।

पुस्तक की विस्तृत विषय-सूची (Table of Contents)

1. प्रारंभिक मध्यकाल

- पाल साम्राज्य (750-1161 ई.)
- गुर्जर प्रतिहार (अगनकुल राजपूत) (8वीं-11वीं शताब्दी ई.)
- राष्ट्रकूट (753-975 ई.)
- जेजाकभुक्ति के चंदेल (बुंदेलखंड) (9वीं-13वीं शताब्दी)
- मालवा के परमार (9वीं-14वीं शताब्दी ई.)
- दिल्लिका (दिल्ली) के तोमर (8वीं-12वीं शताब्दी)
- शाकंभरी के चाहमान या चौहान (छठी-बारहवीं शताब्दी ई.)
- गहड़वाल (11वीं-12वीं शताब्दी ई.)
- त्रिपुरी के कलचुरी (10वीं-12वीं शताब्दी)
- गुजरात के चालुक्य (सोलंकी) (950-1300 ई.)
- कश्मीर
- असम के राजवंश
- वर्मन और सेन (पूर्वी बंगाल)
- कलिंग, उड़ीसा
- कल्याणी के चालुक्य (10वीं-12वीं शताब्दी ई.)
- देवगिरि के यादव
- काकतीय राजवंश (950-1323 ई.)
- चोल साम्राज्य (9वीं-13वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध)
- होयसल (10वीं-14वीं शताब्दी)
- उत्तरकालीन पांड्य
- भारत में घुरीद (Ghurids in India)

2. दिल्ली सल्तनत

- गुलाम या मामलुक वंश (1206-1290ई.)
- खिलजी वंश (1290 ई. से 1320 ई.)
- तुगलक वंश (1320 ई. से 1413 ई.)
- सैय्यद वंश (1414 ई.-1451 ई.)
- लोदी वंश (1451-1526 ई.)
- दिल्ली सल्तनत का जन-जीवन

3. बहमनी और विजयनगर साम्राज्य

- विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन
- नायक प्रणाली
- समाज
- अर्थव्यवस्था
- हम्पी/विजयनगर की स्थापत्यकला
- घटनाक्रम

4. मुगल साम्राज्य

- बाबर (1526-1530 ई.)
- हुमायूँ (1530-1540 ई. और 1555-1556 ई.)
- शेरशाह सूरी (सूर साम्राज्य) (1540-1555 ई.)
- अकबर (1556-1605 ई.)
- जहाँगीर (1605-1627 ई.)
- शाहजहाँ (1628-1658 ई.)
- औरंगजेब (1658 - 1707 ई.)
- बहादुर शाह प्रथम (1707-1712 ई.)
- जहाँदार शाह (1712-1713 ई.)
- फर्रु खसियर (1713-1719 ई.)
- मुहम्मद शाह (रंगीला) (1719-1748 ई.)
- आलमगीर द्वितीय-(1754-1759 ई.)
- शाह आलम द्वितीय (1759-1806 ई.)
- अकबर द्वितीय (1806-1837 ई.)
- बहादुर शाह द्वितीय-(1837-1857 ई.)
- मुगलों के पतन के कारण मराठा साम्राज्य 40
- शिवाजी (1627-1680 ई.)
- मराठा प्रशासन
- पेशवाओं का शासन (1713-1818 ई.)
- बालाजी बाजी राव (1740-1761 ई.)
- पानीपत का तृतीय युद्ध (1761 ई.)
- आंग्ल-मराठा युद्ध
- आंग्ल-मराठा युद्ध
- पेशवाओं के अधीन मराठा प्रशासन (1714-1818 ई.) भक्ति और सूफी परंपराएँ 48
- वीरशैव/लिंगायत परंपरा
- तंत्रवाद
- भक्ति आंदोलन
- चिश्तिया सिलसिला
- कादरिया सिलसिला
- सुहरावर्दी सिलसिला
- नक्शबंदी सिलसिला विदेशी यात्रियों की नजर से 56
- अल-बरूनी (किताब-उल-हिंद)
- इब्न बतूता (रिहला)
- फ्रांस्वा बर्नियर (मुगल साम्राज्य में यात्राएँ)
- मध्यकालीन इतिहास में राजवंशों का कालक्रम

8. परिशिष्ट

- मध्यकालीन इतिहास राजवंशों का कालक्रम

परिचय

• "प्रारंभिक मध्यकाल" वाक्यांश का मुख्य अभिप्राय प्राचीन काल और मध्यकाल के बीच की संक्रमणकालीन अवधि से है। इस काल की मुख्य विशेषता यह थी कि इसमें स्थानीय स्तर पर अनेक राज्यों का उदय हुआ।

• हर्ष की मृत्यु (647 ई.) के बाद, कश्मीर के ललितादित्य (कार्कोट वंश) ने कुछ समय के लिए पंजाब, कन्नौज और बंगाल के कुछ हिस्सों पर नियंत्रण किया, लेकिन अन्य साम्राज्यों के उदय के कारण उनकी शक्ति कम हो गई।

  ◦ कल्हण की राजतरंगिणी में उल्लेख है कि यशोवर्मन (8वीं शताब्दी, कन्नौज का वर्मन वंश) को ललितादित्य ने पराजित किया था। अनंतनाग (कश्मीर) में मार्तंड सूर्य मंदिर का निर्माण ललितादित्य (8वीं शताब्दी ईस्वी) ने करावया था।

• उत्तर भारत, दक्कन और दक्षिण भारत में कई बड़े राज्यों का उदय हुआ। यद्यपि, गुप्त और हर्ष के साम्राज्यों के विपरीत, ये उत्तर भारतीय साम्राज्य संपूर्ण गंगा घाटी पर नियंत्रण स्थापित करने में विफल रहे।

  ◦ चक्रवर्ती सम्राट का दर्जा प्राप्त करने और कन्नौज पर नियंत्रण के लिए प्रतिहारों, पालों और राष्ट्रकूटों के बीच 'त्रिपक्षीय संघर्ष' हुआ।

• **पाल साम्राज्य:** 9वीं शताब्दी तक पूर्वी भारत (बंगाल) पर प्रभुत्व था।

• **प्रतिहार साम्राज्य:** 10वीं शताब्दी तक पश्चिमी भारत (जालौर-राजस्थान) और ऊपरी गंगा घाटी पर शासन किया।

• **राष्ट्रकूट साम्राज्य:** दक्कन तथा उत्तर और दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों पर शासन था, जो दोनों क्षेत्रों के बीच एक पुल के रूप में कार्य करता था।

पाल साम्राज्य (750-1161 ई.) पाल साम्राज्य की स्थापना गोपाल (750-770 ई.)ने की थी और अरबों द्वारा इसे "धर्म का साम्राज्य" कहा जाता था। उसने ओदंतपुरी (बिहार) में एक बौद्ध महाविहार की स्थापना की।

धर्मपाल (780-810 ई.) उसने परमेश्वर, परमभट्टारक और महाराजाधिराज की उपाधियाँ धारण कीं।

साम्राज्य विस्तार/विजय

• खलीमपुर ताम्रपत्र शिलालेख में उसके राज्य की सीमा का उल्लेख है जिसमें बंगाल, बिहार, उड़ीसा के कुछ हिस्से, नेपाल, असम और कुछ समय के लिए कन्नौज शामिल था।

• धर्मपाल ने उत्तर भारत पर अपना प्रभाव जमाने और अपनी शक्ति को मजबूत करने के लिए कन्नौज में एक भव्य दरबार का आयोजन किया।

स्थापत्यकला:

• भागलपुर (बिहार) में विक्रमशिला मठ (जो विश्विद्यालय के रूप में भी काम करता था) की स्थापना की।

• सोमपुरा (बांग्लादेश) में एक भव्य विहार का निर्माण करवाया।

• **धार्मिक प्रभाव:** उसने बौद्ध दार्शनिक हरिभद्र को संरक्षण दिया। देवपाल (810-850 ई.)

• **साम्राज्य विस्तार/विजय:** वह धर्मपाल का पुत्र था, उसने पूर्व की ओर कामरूप (असम)तक पाल साम्राज्य का विस्तार किया। उसने राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष को पराजित किया।

• **धार्मिक प्रभाव:** वह बौद्ध धर्म का भी महान संरक्षक था और उसनेसुवर्णदीप (सुमात्रा) के शैलेन्द्र वंश के राजा बालपुत्रदेव को नालंदा में अपने द्वारा निर्मित एक मठ की देखरेख के लिए पाँच गाँव दिए थे।

अन्य शासक

• महिपाल प्रथम (988-1038 ई.) विग्रहपाल द्वितीय का पुत्र था जिसने राजेंद्र चोल के आक्रमण को गंगा नदी के पार रोका था।

• रामपाल (1077-1120 ई.) ने पाल वंश के खोए हुए गौरव को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया, लेकिन उसकी मृत्यु के बाद, पाल वंश का शासन केवल मगध (बिहार) के एक हिस्से तक ही सीमित रह गया और केवल थोड़े समय के लिए ही अस्तित्व में रहा।

पाल वंश का पतन

• राजपाल, गोपाल तृतीय और विग्रहपाल द्वितीय के शासनकाल के दौरान पाल वंश का तेजी से पतन होने लगा था।

• मिहिर भोज के अधीन जालौर में प्रतिहारों के उदय और राष्ट्रकूटों के पाल क्षेत्रों में आगे बढ़ने से पालों का पतन अपरिहार्य हो गया।

• सेन वंश के विजयसेन ने पाल वंश के अंतिम शासक मदनपाल(1130- 1150 ई.) को बंगाल से निष्कासित कर दिया और अपने वंश का शासन स्थापित किया।

व्यापार:

• **दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापार संबंध:** कपड़ा, मिट्टी के बर्तन, चावल प्रमुख वस्तुएँ थीं।

• दक्षिण-पूर्व बंगाल 7वीं से 11वीं शताब्दी तक अरब व्यापारिक बस्तियों को मलाया प्रायद्वीप और इंडोनेशियाई द्वीपसमूह से जोड़ने वाला एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था।

प्रारंभिक मध्यकाल

कला और स्थापत्यकला:

• धीमान और उसके पुत्र विटपाल इस काल के महान चित्रकार, मूर्तिकार और कांस्य मूर्ति निर्माता थे।

• पाल मूर्तिकला पर गुप्त कला का प्रभाव था।

• पालों द्वारा ताड़ के पत्तों पर लघु चित्रकला की शुरुआत की गई। पाल काल में कांस्य की मूर्तियाँ लॉस्ट वैक्स तकनीक (सेरे पेरड्यू) के माध्यम से बनाई गई थी।

• महिपाल प्रथम ने सारनाथ, नालंदा और बोधगया में कई पवित्र स्थलों का निर्माण और मरम्मत करवाई।

• पाल युग में कई तालाबों और नहरों का निर्माण भी देखा गया, जो लोक निर्माण संबंधी महत्त्वपूर्ण पहलों को दर्शाता है।

साहित्य:

• **ग्रंथ और दर्शन:** गौड़पाद (अद्वैत वेदांत संप्रदाय के विद्वान) द्वारा संकलित आगम शास्त्र; श्रीधर भट्ट कृत न्याय कुंडली।

• विक्रमशिला और नालंदा विश्विद्यालयों के बौद्ध विद्वान आतिशा, सरहा, तिलोपा, दानशील, दानश्री, जिनमित्र, मुक्तिमित्र, पद्मनाव, विराचन और शीलभद्र थे।

• संध्यायाकर नंदी द्वारा रचित रामचरितम, पाल शासक रामपाल की जीवनी है, जिसमें वर्णन किया गया है कि कैसे वन प्रमुखों को भव्य उपहारों के माध्यम से अपने गठबंधन में शामिल किया गया।

• उन्होंने संस्कृत विद्वानों को संरक्षण दिया। संस्कृत साहित्य में गौड़ी-रीति की साहित्यिक शैली का विकास हुआ।

• चक्रपाणि दत्त, सुरेश्वर गदाधर वैद्य पाल काल के दौरान चिकित्सा से संबंधित ग्रंथों के लेखक थे।

• **महिपालगीत (महिपाल पर गीत):** यह लोक गीतों का एक समूह है जो अभी भी बंगाल के ग्रामीण इलाकों में लोकप्रिय हैं।

• हिंदू विधि की प्रसिद्ध पुस्तक "दायभाग" है। जो उत्तराधिकार प्रक्रिया पर आधारित है, इसकी रचना जिमूतवाहन ने की।

धर्म:

• वे कट्टर बौद्ध थे और उन्होंने महायान बौद्ध धर्म का प्रचार किया। दीपांकर श्रीज्ञान जैसे प्रख्यात बौद्ध विद्वान, पाल के शासनकाल में फले-फूले और विक्रमशिला विश्विद्यालय, तिब्बती भिक्षुओं का एक प्रमुख केंद्र बन गया।

• उन्होंने ब्राह्मणों का भी समर्थन किया और मंदिरों का निर्माण कराया। पाल शासकों ने शिक्षा और धर्म को संरक्षण प्रदान किया, इसकी पुष्टि विदेशी राजाओं से प्राप्त विभिन्न साहित्यिक स्त्रोतों व यात्रा विरणों से से होती है, जिसमें जावा और सुमात्रा के राजा भी सम्मिलित थे, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय छात्रों को सुविधा प्रदान करने के लिए नालंदा में एक छात्रावास की स्थापना के लिए अनुरोध किया था।

गुर्जर प्रतिहार (अग्निकुल राजपूत) (8वीं-11वीं शताब्दी ई.) परिचय गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना हरिचन्द्र ने की थी, जिसे अरब लोग अल-जुर्ज कहते थे।

साम्राज्य विस्तार/विजय:

• 9वीं शताब्दी तक मध्यदेश और कन्नौज के एक बड़े हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया।

• प्रारंभ में उन्होंने भीलमल से शासन किया और बाद में अपनी राजधानी कन्नौज स्थानांतरित कर ली।

• प्रतिहार, अरब सेनाओं के विरोध और पालों तथा राष्ट्रकूटों के साथ अपने रणनीतिक संघर्षों के लिए जाने जाते थे।

महत्त्वपूर्ण शासक

शासक और शासनकाल प्रमुख उपलब्धियाँ और घटनाएँ नागभट्ट प्रथम (730-760 ई.) राजस्थान, मालवा और गुजरात को शामिल करने के लिए क्षेत्रों का विस्तार किया। अरब आक्रमणों को सफलतापूर्वक दमन किया, जिससे राजवंश की प्रमुखता स्थापित हुई।

वत्सराज (780-800 ई.) साम्राज्य का और विस्तार किया।

इसमें राजस्थान, मालवा और गुजरात के क्षेत्रों को अपने राज्य में शामिल किया।

नागभट्ट द्वितीय (800-833 ई.) काठियावाड़, आंध्र, कलिंग और विदर्भ के शासकों द्वारा स्वीकार किए गए आधिपत्य और असफल होने के बाद राजवंश को पुनर्जीवित किया। बंगाल के धर्मपाल और राष्ट्रकूट शासक गोविंदा तृतीय के साथ संघर्ष।

मिहिरभोज (836-885 ई.) पंजाब और काठियावाड़ से लेकर कौशल और कन्नौज तक एक विशाल साम्राज्य को मजबूत किया।

भोज प्रथम ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया, जिसे महोदया के नाम से भी जाना जाता है। बराह ताम्रपत्र शिलालेख में महोदया में एक सैन्य शिविर (स्कंधवार) का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है, जो कन्नौज के सामरिक महत्त्व को दर्शाता है।

महेंद्रपाल प्रथम

(885–910 ई.) विष्णु के उपासक के रूप में 'आदि वराह' की उपाधि धारण की।

मगध और उत्तरी बंगाल के कुछ हिस्सों में साम्राज्य का विस्तार किया।

अपने पूर्वर्तियों द्वारा स्थापित सांस्कृतिक और प्रशासनिक ढाँचे को मजबूत किया।

महिपाल प्रथम (913-944 ई.) उन्होंने साम्राज्य का पुनर्निर्माण एवं पुनर्गठन किया। राजशेखर उनके दरबारी कवि थे।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: कला और स्थापत्यकला



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — कला और स्थापत्यकला

मुख्य परीक्षा दृष्टि: महिपाल प्रथम (913-944 ई.) उन्होंने साम्राज्य का पुनर्निर्माण एवं पुनर्गठन किया। राजशेखर उनके दरबारी कवि थे।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: कला और स्थापत्यकला • साहित्य • धर्म • महत्त्वपूर्ण शासक • महेंद्रपाल प्रथम | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 760 ई, 800 ई, 833 ई, 885 ई, 910 ई

• राजशेखर, एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि, नाटककार और आलोचक था जिसे महेंद्रपाल प्रथम (885-910 ई.) औरमहिपाल प्रथम (913-944 ई.)का संरक्षण प्राप्त था।

• **राजशेखर द्वारा रचित महत्त्वपूर्ण कृतियाँ:**

  ◦ **कर्पूरमंजरी:** उनकी पत्नी अवंतीसुंदरी को समर्पित एक प्राकृत नाटक।

  ◦ **काव्य मीमांसा:** एक संस्कृत ग्रंथ (880-920 ई.पू.) जो कवियों को काव्य रचना पर व्यावहारिक सलाह प्रदान करता है।

  ◦ **अन्य रचनाएँ:** विधासलभंजिका, भृंजिका, बालरामायण, प्रपंच पांडव, बालभारत, भूषण कोष।

पतन: बाद के कमज़ोर शासक द्वारा राष्ट्रकूटों के हमलों का सामना करते हुए विशाल साम्राज्य को कायम नहीं रख सके। पतन ने चालुक्य, चंदेल, चाहमान, गढ़वाल, परमार, कलचुरी और तोमर जैसे कई नए राज्यों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया, जो अपने-अपने क्षेत्रों में अलग-अलग राजपूत वंशों के रूप में स्वतंत्र हो गए।

राष्ट्रकूट (753-975 ई.) पृष्ठभूमि

• उन्होंने स्वयं को अशोक के शिलालेखों में वर्णित कन्नड़ भाषी क्षेत्र के एक कबीले रथिक का वंशज बताया।

• राष्ट्रकूट, जिन्हें अरब लोग बल्लाहारा कहते थे, 743 ई. के आस-पास दक्कन में एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरे, जो अपनी राजधानी मान्यखेत, वर्तमान मालखेड से शासन कर रहे थे।

• उन्हें संस्कृत और अरबी दोनों अभिलेखों में लगभग दो शताब्दियों तक भारत में एक प्रमुख शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है, अरब यात्रियों ने राष्ट्रकूट शासक को अल-हिंद के "राजाओं के राजा (मलिक अल-मुलुक)" के रूप में वर्णित किया है।

• अरब वृत्तांतों, खास तौर पर अल-मसूदी के वृत्तांतों में राष्ट्रकूट साम्राज्य की भव्यता का सुंदर वर्णन किया गया है। साम्राज्य की अपार संपत्ति का श्रेय समुद्री व्यापार से होने वाले लाभ को दिया जाता है।

महत्त्वपूर्ण शासक — शासन और समयावधि प्रमुख योगदान

दंतिवर्मन/दन्तिदुर्ग (735-756 ई.) राष्ट्रकूट वंश के संस्थापक।

मालवा में गुर्जर-प्रतिहारों सहित क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की।

क्षत्रियत्व का दावा प्रस्तुत करने के लिए हिरण्यगर्भ अनुष्ठान किया।

कृष्ण प्रथम (756-774 ई.) हैदराबाद और मैसूर को शामिल करते हुए साम्राज्य का विस्तार किया।

एलोरा में कैलाश मंदिर का निर्माण किया, जो एक महत्त्वपूर्ण वास्तुशिल्प उपलब्धि थी।

ध्रुव धारावर्ष (779-793 ई.) उत्तरी अभियानों का नेतृत्व किया, वत्सराज (प्रतिहार राजा) और धर्मपाल (पाल राजा) को पराजित किया।

गंगा और यमुना को राष्ट्रकूटों के प्रतीक के रूप में शामिल किया।

गोविंदा तृतीय (793–814 ई.) नागभट्ट द्वितीय (प्रतिहार शासक) को युद्ध में पराजित किया।

हिमालय तक अभियान किये और प्रयाग, बनारस और गया का दौरा किया।

अमोघवर्ष प्रथम (814-878 ई.) जैन धर्म के प्रमुख अनुयायी; धार्मिक और साहित्यिक परंपराओं को संरक्षण प्रदान किया।

कविराजमार्ग, जो आरंभिक कन्नड़ ग्रंथों में से एक है, और रणमालिका की रचना की। अमोघवर्ष प्रथम की पुत्री चंद्रबल्लबे ने कुछ समय तक रायचूर दोआब पर शासन किया।

नृपतुंगा और वीर-नारायण जैसी उपाधियाँ धारण की।

तुंगभद्रा नदी में जल-समाधि द्वारा अपना जीवन समाप्त किया।

कमज़ोर सैन्य रणनीतियों के कारण अमोघवर्ष प्रथम के शासन में राष्ट्रकूटों का पतन आरंभ हो गया।

इन्द्र तृतीय (914-929 ई.) प्रतिहार शासक महिपाल के विरुद्ध उत्तरी क्षेत्र में सफल अभियान संचालित किया।

कृष्ण तृतीय (939-967 ई.) चोलों पर विजय प्राप्त करते हुए कांची और तंजौर पर अधिकार स्थापित किया।

रामेश्वरम में विजय स्तंभ का निर्माण करवाया।

अमोघवर्ष प्रथम (814-880 ई.)

• अमोघवर्ष प्रथम समकालीन भारत की धार्मिक परंपराओं में रुचि रखता था और अपना समय जैन भिक्षुओं की संगति में बिताता था। उसके शिलालेख जैन धर्म के सबसे प्रमुख अनुयायियों में उसकी गिनती करते हैं।

• उसनेकन्नड़साहित्यके सबसेप्राचीनग्रंथोंमें से एककविराजमार्ग की रचना की।

• उसने नृपतुंग, अतिशयधवल, महाराजा-शंद और वीर-नारायण की उपाधियाँ धारण कीं।

• उसने तुंगभद्रा नदी में जल-समाधि लेकर अपना जीवन समाप्त कर लिया।

• कमजोर सैन्य कौशल के कारण उसके शासनकाल में राष्ट्रकूटों का पतन शुरू हो गया। उसके उत्तराधिकारी कृष्ण द्वितीय के शासनकाल में साम्राज्य और अधिक कमजोर हो गया।

• इंद्र तृतीय ने उत्तर की ओर प्रतिहार शासक महीपाल के विरुद्ध एक सफल अभियान चलाया।

• कृष्ण तृतीय ने कांची और तंजौर जैसे क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया, यहाँ तक कि चोलों पर विजय प्राप्त की और रामेश्वरम में एक विजय स्तंभ स्थापित किया।

धर्म

- राष्ट्रकूट विभिन्न धर्मों के संरक्षक थे, जिनमें शैव, वैष्णव, शाक्त संप्रदाय और जैन धर्म सम्मिलित थे।
- मुहरों पर विष्णु के गरुड़वाहन के चित्र थे।
- राष्ट्रकूटों द्वारा तुलादान द्वारा मंदिर के देवताओं को अपने वजन के बराबर सोना भेंट करने का भी विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।
- उन्होंने मुस्लिम व्यापारियों को अपने राज्यक्षेत्र में इस्लाम का पालन करने और प्रचार करने की अनुमति दी, जिससे विदेशी व्यापार में वृद्धि हुई।

साहित्य

- अमोघवर्ष प्रथम ने संस्कृत कृति 'प्रश्नोत्तर रत्नमालिका' और कन्नड़ कृति कविराजमार्ग की रचना की।
- जिनसेन ने जैनियों का आदिपुराण लिखा।
- कृष्ण द्वितीय के आध्ययात्मिक गुरु गुणभद्र ने जैनियों का महापुराण लिखा।
- प्राचीन कन्नड़ साहित्य के तीन रत्नों - कविचक्रवर्ती पोन्ना, कविचक्रवर्ती रन्ना और आदिकवि पम्पा - को राष्ट्रकूट राजा कृष्ण तृतीय के साथ-साथ पश्चिमी चालुक्यों के तैलप और सत्याश्रय द्वारा संरक्षण दिया गया था।
- प्रख्यात अपभ्रंश कवि स्वयंभू और उनका पुत्र संभवतः राष्ट्रकूट दरबार में रहते थे।

उत्तर के राजवंश

जेजाकभुक्ति के चंदेल (बुंदेलखंड) (9वीं-13वीं शताब्दी) चंदेलों ने प्रारंभ में गुर्जर प्रतिहारों के सामंतों के रूप मेंकार्य किया और स्वयं को ऋषि चंद्रात्रेय का वंशज बताया। चंदेल वंश की स्थापना नन्नुक (831-845 ई.) ने की थी। *[यूपीएससी 2022]*

चंदेलों की स्थापत्य विरासत खजुराहो के भव्य मंदिरों में दिखाई देती है।

चंदेलों की स्थापत्य विरासत

- चंदेलों की स्थापत्य विरासत को खजुराहो के भव्य मंदिरों में देखा जा सकता है।
- उल्लेखनीय उदाहरणों में लक्ष्मण मंदिर (लगभग 930-950 ई.), विश्वनाथ मंदिर (लगभग 999-1002 ई.) और कंदारिया महादेव मंदिर (लगभग 1030 ई.) सम्मिलित हैं, जिन्हें क्रमशः चंदेल शासकों यशोवर्मन, धंग और विद्याधर के शासनकाल के शासनकाल में बनाया गया था।

प्रसिद्ध शासक

- पहले स्वायत्त चंदेल शासक यशोवर्मन (925-950 ई.) ने उत्तर भारत में अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उसके पुत्र धंग/धंगदेव (950-999 ई.) ने प्रतिहार प्रदेशों पर कब्जा कर लिया और सुबुक्तिगिन के खिलाफ शाही शासक जयपाल का समर्थन किया, जबकिधंग के पुत्र गंड/गंडदेव (999-1002 ई.) ने महमूद गजनवी के खिलाफ जयपाल के पुत्र आनंदपाल की सहायता की।
- विद्याधर (1003-1035 ई.) (गंड का पुत्र) एक शक्तिशाली चंदेल राजा था। उसने प्रतिहारों को अपने अधीन कर लिया।
- उत्तरवर्ती चंदेल शासक परमर्दिदेव (1165-1203 ई.) को पृथ्वी राज तृतीय और कुतुबुद्दीन ऐबक से पराजय का सामना करना पड़ा, लेकिन उसके वंशज ने1205 ई. तक कालिंजर परपुनः कब्जा कर लिया क्योंकि तुर्क उस पर कब्जा बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे थे। कालिंजर किला 1545 ई. तक देशी शासकों के अधीन रहा, इसके बाद यह अफगानों के अधीन हो गया।

मालवा के परमार (9वीं-14वीं शताब्दी ई.)

- मालवा के परमार मूलतः प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों के जागीरदार थे। 10वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में वे एक स्वतंत्र शक्ति के रूप में उभरे। उपेन्द्र (कृष्णराज) (800-818 ई.) ने परमार वंश की स्थापना की और धार को अपनी राजधानी बनाया। मुंज/वाक्पतिराज द्वितीय (972-990 ई.) एक प्रसिद्ध शासक था।
- वह कला और साहित्य का संरक्षक था। उसके दरबार की शोभा बढ़ाने वाले विभिन्न कवि निम्नलिखित थे:
  - धनंजय कृत दशरूपकम्।
  - पद्मगुप्त कृत नव-सहसांक-चरित।
  - अन्य कवियों में हलायुध और धनिक सम्मिलित हैं।

• **राजा भोज:** उसके शासनकाल में परमार वंश अपने चरम पर पहुँच गया था।

• 1008 ई.में उसने महमूद गजनवी के विरुद्ध आनंदपाल कीसहायता के लिए एक सेना भेजी और आनंदपाल के पुत्र त्रिलोचनपाल को आश्रय दिया।

• उसे चालुक्य और कलचुरियों के आक्रमणों का सामना करना पड़ा।

• 1043 ई. में, वह देशी सरदारों के संघ में शामिल हो गया जिन्होंने तुर्कों से हांसी, थानेसर, नगरकोट और अन्य क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की।

• भोपाल के निकट भोजपुर नगर की स्थापना की। उसने चिकित्सा, खगोल विज्ञान, धर्म और स्थापत्यकला जैसे विषयों पर किताबें लिखीं।

• शृंगार प्रकाश, व्यायकरण पर एक पुस्तक।

• समराङ्गण सूत्रधार वास्तुशास्त्र पर एक लोकप्रिय पुस्तक है।

• चम्पू रामायण (गद्य एवं पद्य)

• परमार वंश के अंतिम शासक महालकदेव (मृत्यु 1305ई.) को अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने पराजित किया था।

दिल्ली के तोमर (8वीं-12वीं शताब्दी)

पृष्ठभूमि:

• दिल्ली के तोमर हरियाणा पर शासन करते थे और दिल्लिका (दिल्ली) उनकी राजधानी थी। वे प्रतिहारों के सामंत थे।

• मध्ययुगीन बार्डिक साहित्य (आयरलैंड और स्कॉटलैंड के गेलिक भागों के बार्डिक स्कूलों में प्रशिक्षित विद्वानों के एक वर्ग द्वारा रचित) ने इस राजवंश को "तुअर" (Tuar) नाम दिया और उन्हें 36 राजपूत वंशों में से एक के रूप में वर्गीकृत किया है।

  ◦ उनका शाकंभरी के चाहमानों के साथ संघर्ष होता था और उनके शासन का पालन चाहमानों द्वारा किया जाता था।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: धर्म

845 ई	2022	950 ई	999 ई
धर्म	साहित्य	उत्तर के राजवंश	चंदेलों की स्थापत्य विरासत

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — धर्म

मुख्य परीक्षा दृष्टि: दिल्ली के तोमर हरियाणा पर शासन करते थे और दिल्लिका (दिल्ली) उनकी राजधानी थी। वे प्रतिहारों के सामंत थे।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: धर्म • साहित्य • उत्तर के राजवंश • चंदेलों की स्थापत्य विरासत • प्रसिद्ध शासक | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 845 ई, 2022, 950 ई, 999 ई, 1165

IUC विशेष स्मृति सूत्र #1: दिल्ली सल्तनत के 5 राजवंश (कालक्रम: 1206-1526)

ट्रिक: 'गुलाब खिले तो सांस लो' — 1. गुलाम/मामलूक वंश (1206-1290, कुतुबुद्दीन ऐबक), 2. खिलजी वंश (1290-1320, जलालुद्दीन), 3. तुगलक वंश (1320-1414, गयासुद्दीन — सर्वाधिक लंबा शासन 94 वर्ष), 4. सैयद वंश (1414-1451, खिज्र खाँ), 5. लोदी वंश (1451-1526, बहलोल लोदी — प्रथम अफगान वंश)।

• 13वीं सदी के पालम बावली (बावड़ीदार कुआँ) के शिलालेख से पता चलता है कि हरियानिका की भूमि पर पहले तोमरों का शासन था , फिर चौहानों का और उसके बाद शकों का शासन हुआ।

• सबसे महत्त्वपूर्ण राजा अनंगपाल तोमर था।

  ◦ उसने दिल्ली की स्थापना की और उसका वर्णन महरौली के लौह स्तंभ के 11वीं शताब्दी के शिलालेख में किया गया है।

  ◦ उसके सिक्कों पर घुड़सवार और वृषभ की आकृति अंकित है साथ ही उन पर "श्री सामंत-देव" उपाधि भी अंकित है । येसिक्के , शाकंभरी चाहवान राजा सोमेश्वर और पृथ्वीराज तृतीय के सिक्कों के समान थे।

योगदान:

• दिल्ली क्षेत्र में सबसे पुराने सर्वाइविंग (बावड़ीदार कुआँ) निर्माण करवाया।

• अनंगपाल द्वितीय, महरौली क्षेत्र में लाल कोटके गढ़का संस्थापक था और उसने अनंग ताल के नाम से एक ताल भी बनवाया था।

• प्रसिद्ध सूरज कुंड जलाशय (फरीदाबाद, हरियाणा के पास) का निर्माण तोमर राजा सूरजपाल द्वारा करवाया गया था।

शाकंभरी के चाहमान या चौहान

(छठी-बारहवीं शताब्दी ई.) शाकंभरी के चाहमान राजवंश का नाम उनकी राजधानी, राजस्थान के सांभर, के नाम पर रखा गया था। इसकी स्थापना सिंहराज (944–971 ई.) ने की थी।

महत्त्वपूर्ण शासक

• अजयराज (1110–1135 ई.) ने नागौर पर पुनः कब्जा किया और गजनवी को आगे बढ़ने से रोका।
  ◦ उसने अजमेर (अजयमेरु) की स्थापना की।
  ◦ उसके सिक्कों पर रानी सोमलदेवी का नाम अंकित है।

• उसके पुत्र अर्णोराज ने यामिनियों (गजनी साम्राज्य) को रोका और विवाह के माध्यम से गुजरात के चालुक्य शासक के साथ गठबंधन किया।

• अर्णोराज के पुत्र विग्रहराज चतुर्थ (1150–1164 ई.) नेदिल्ली और हांसी पर कब्जा करके चौहान राज्य का विस्तार किया तथा उसे एक साम्राज्य के रूप में स्थापित किया।
  ◦ वह साहित्य का संरक्षक था और उसकी नाटक कृति हरके लि अजमेर के शिलालेख पर उत्कीर्ण है।
  ◦ ललित-विग्रहराज की रचना उसके दरबारी कवि सोमदेव ने की थी।
  ◦ अढ़ाई दिन का झोंपड़ा (अब मस्जिद) का निर्माण कराया जो मूल रूप से एक विद्यालय था।

• इस घराने के अंतिम शासक पृथ्वीराज तृतीय (1177–1192 ई.) ने कन्नौज, गुजरात और चंदेल पर आक्रमण किया।

• चंदबरदाई ने पृथ्वीराज तृतीय के जीवन पर पृथ्वीराज रासो (ब्रज भाषा में) लिखी।

• पृथ्वीराजविजय भी जयानकद्वारालिखितउसके शासनकालकाएक वृत्तांत है।

• पृथ्वीराज तृतीय ने मुहम्मद गौरी के साथ दो युद्ध लड़े।
  ◦ **तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.):** इसमे राजपूतों की विजय हुई; यद्यपि, मुहम्मद गौरी भागने में सफल रहा और गजनी लौट गया।
  ◦ **तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.):** इस युद्ध में पृथ्वीराज, मुहम्मद गौरी से हार गए जिससे भारत में शासन का मार्ग प्रशस्त हुआ।।

• चौहान वंश की शाखाओं ने रणथंभौर, नाडोल और जालौर पर भी शासन किया। 14वीं शताब्दी की शुरुआत में अलाउद्दीन खिलजी ने अजमेर और जालौर पर कब्जा कर लिया।

गहड़वाल (11वीं-12वीं शताब्दी ई.) गहड़वाल सूर्यवंशी क्षत्रिय थे जिन्होंने 11वीं शताब्दी के अंत में कन्नौज राज्य पर शासन किया था। उन्होंने धीरे-धीरे पालों को बिहार से बाहर खदेड़ दिया और बनारस को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।

शासक और उनका योगदान:

• **चंद्रदेव (लगभग 1090 ई.):** उसने गहड़वाल राजवंश की स्थापना की और प्रतिहारों एवं राष्ट्रकूटों से दिल्ली को सफलतापूर्वक छीन लिया।

• **विजयचंद्र (1154–1170 ई.):** उसने गजनवियों के आक्रमणों का सफलतापूर्वक सामना किया। उसके शासनकाल के दौरान दिल्ली उसके हाथ से निकल गई और तोमर शासकों ने विजयचंद्र को अपने अधिपति के रूप में मान्यता देना बंद कर दिया।

जयचंद्र (1170–1194 ई.)

• पृथ्वीराज चौहान के नेतृत्व में अजमेर के चौहानों ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया।

• चंदावर के युद्ध (1194 ई.) (फिरोजाबाद के पास, यमुना नदी के तट पर) में मोहम्मद गौरी ने जयचंद्र को पराजित कर साम्राज्य पर कब्जा कर लिया।

• जयचंद्र के पोते सियाजी ने राठौड़ वंश की स्थापना की, जो जोधपुर से मारवाड़ रियासत पर शासन करता था।

• इल्तुतमिश की विजय के साथ ही कन्नौज का गौरव समाप्त हो गया। त्रिपुरी के कलचुरी (10वीं-12वीं शताब्दी)

• कोकल्ल प्रथम (845-855 ई.)ने कलचुरी वंश की स्थापना की। वह सिंध के तुर्की सैनिकों को हराने के लिए और चंदेलों के साथ विवाह के माध्यम से गठबंधन करने के लिए जाना जाता था। उसके साम्राज्य का पहला केंद्र नर्मदा पर महिष्मति था।

• प्रसिद्ध कवि राजशेखर कलचुरी दरबार में रहता था।

• इन्हें कटसुरी, हैहय और चेदी के नाम से भी जाना जाता है।

• कई सशक्त शासकों के बावजूद, 10वीं शताब्दी के अंत में इस राजवंश का पतन हो गया, लेकिन 1015 ई. के आसपास जबलपुर में गांगेयदेव के नेतृत्व में इसका पुनरुत्थान हुआ।

• उसके पुत्र, कर्ण (इस राजवंश के सबसे महान शासक) ने बनारस और प्रयागराज सहित पश्चिम बंगाल तक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय विस्तार किया और मालवा के खिलाफ, चालुक्यों के साथ गठबंधन किया।

गुजरात के चालुक्य (सोलंकी) (950-1300 ई.)

• **भीम प्रथम (1022-1064 ई.):** इसके शासनकाल के दौरान महमूद गजनी ने गुजरात पर आक्रमण किया और सोमनाथ मंदिर को लूटा।

• जयसिंह सिद्धराज (1092-93 ई.) ने साम्राज्य को सुदृढ़ किया और उसका विस्तार किया। मालवा के कुछ हिस्सों पर विजय प्राप्त करने (1137ई.) के बाद, उसने अवंतीनाथ (मालवा के स्वामी) की उपाधि धारण की।

• वह शिव भक्त था और उसने सिद्दपुर में रुद्रमहाकाल मंदिर का निर्माण करवाया।

• उसने जैन विद्वान हेमचंद्र को संरक्षण प्रदान किया।

• उसका उत्तराधिकारी कुमारपाल, जैन धर्म का अंतिम प्रसिद्ध शाही समर्थक था। कुमारपाल के नाबालिग पोते के शासनकाल के दौरान गुजरात को मुहम्मद गौरी के आक्रमण का सामना करना पड़ा।

• गुजरात के अंतिम हिंदू राजा कर्ण द्वितीय ने अलाउद्दीन खिलजी की सेना का सामना किया।

कश्मीर

• कश्मीर में कार्कोट वंश (कर्कोटक वंश), जो ललितादित्य मुक्तापीड जैसे शासकों के लिए जाना जाता है, के बाद 9वीं शताब्दी के मध्य में उत्पल वंश का शासन स्थापित हुआ।

• उत्पल राजवंश के संस्थापक अवंतीवर्मन (855-883 ई.) ने बाढ़ से राहत प्रदान करने के लिए जल निकासी और सिंचाई प्रणालियों का पर्याप्त विकास किया। उसनेअवंतीपुर शहर की स्थापनाकीऔरकईमंदिरोंकानिर्माण कराया।

• प्रसिद्ध महिला शासक रानी दिद्दा का शासनकाल अशांति से भरा रहा और लोहार राजवंश का उदय हुआ। 1172 ई. में इस राजवंश के पतन के परिणामस्वरूप दो शताब्दियों तक अराजकता की स्थित बनी रही, जिसका अंत 1339 ई. में शाह मीर द्वारा रानी कोटा को अपदस्थ करने के साथ हुआ, जो कश्मीर में हिंदू शासन की समाप्ति का प्रतीक था।

पूर्व और उत्तर-पूर्व के राजवंश — असम के राजवंश

1. सलामा/सलस्तम्भ राजवंश (लगभग 800-1000 ई.पू.)

◦ असम, जिसे ऐतिहासिक रूप से कामरूप या प्रागज्योतिषपुर के नाम से जाना जाता है, देवपाल के शासनकाल के दौरान पाल शासकों के प्रभाव में था।

◦ 800 ई. में, हरजवरमन ने पालों से स्वतंत्रता की घोषणा की और सलामा/ सलम्बा राजवंश की स्थापना की। इसने असम में अपनी क्षेत्रीय स्वतंत्रता को स्थापित कर उसकी पुष्टि की।

◦ इसकी राजधानी, हरुप्पेश्वर, ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर स्थित थी, जो व्यापार और संचार के लिए नदी के मार्गों से लाभान्वित थी।

2. प्रलम्ब राजवंश (9वीं शताब्दी)

◦ सलामा राजवंश के बाद, 9वीं शताब्दी ई. के दौरान असम में प्रलम्ब राजवंश का उदय हुआ।

◦ इस राजवंश के एक अज्ञात शासक द्वारा बख्तियार खिलजी के आक्रमण को सफलतापूर्वक विफल किया, जिससे आक्रमणकारियों को भारी क्षति हुई।

3. अहोम साम्राज्य (1228 ई. के बाद)

◦ शान जनजाति का एक उपसमूह अहोम, 1228 ई. में सुकफा के नेतृत्व में असम में आया और अहोम साम्राज्य की स्थापना की। असम नाम की उत्पत्ति अहोम शासन से हुई।

◦ राज्य पाइक प्रणाली पर निर्भर था, जो जबरन श्रम का एक रूप था, जहाँ पाइक राज्य के लिए विभिन्न क्षमताओं के साथ कार्य करते थे।

वर्मन और सेन (पूर्वी बंगाल)

• 11वीं शताब्दी की शुरुआत में वर्मन सत्ता में आए, उनके बाद सेन वंश ने सत्ता संभाली, जो संभवतः कन्नड़ भाषी क्षेत्र से आए थे और दक्षिणापथ के राजाओं के साथ अपने संबंध का दावा करते थे।

• विजयसेन एक प्रसिद्ध सेन राजा था जिसने 1095 ई. से शासन करना प्रारंभ किया। उसने क्षेत्र के सांस्कृतिक विकास में निर्णायक भूमिका निभाई, उसके शासनकाल का विवरण देवपाड़ा प्रशस्ति शिलालेख में दिया गया है। उसके उत्तराधिकारी बल्लाल सेन को उसकी शिक्षा, लेखनकौशल और कुलीनवाद की सामाजिक व्यवस्था की शुरूआत के लिए जाना जाता था।

• अंतिम हिंदू शासक और बल्लाल सेन के पुत्र लक्ष्मणसेन, जो अपने शासन काल में सांस्कृतिक प्रगति के लिए जाने जाते थे, के दरबार में जयदेव (गीत गोविंद), हलायुध और श्रीधरदास जैसे प्रसिद्ध साहित्यकार थे।

उसके उत्तराधिकारी ने 13वीं शताब्दी के मध्य तक वंग पर नियंत्रण बनाए रखा, उसके बाद देव राजवंश ने इस पर कब्जा कर लिया।

कलि ग, उड़ीसा

• 7वीं शताब्दी के मध्य में उड़ीसा शैलोद्भव वंश के सैन्यभीत माधववर्मन (श्रीनिवास) के शासन के अधीन था, जो अश्वमेध यज्ञ करने के लिए प्रसिद्ध थे।

• इस राजवंश का प्रभुत्व 8वीं शताब्दी के मध्य तक रहा। इसके बाद, उड़ीसा पर कई राजवंशों का शासन रहा, इनमें से कर और भंज राजवंश खास तौर पर उल्लेखनीय हैं। कर राजवंश में कम से कम पाँच महिला शासक रहीं हैं।

• मैसूर के गंगों से संबंधित पूर्वी गंगों ने कलिंग में अपना शासन स्थापित किया, जिसकी राजधानी कलिंगनगर थी।

  ◦ एक प्रसिद्ध शासक अनंतवर्मन चोडगंग ने उत्कल और कलिंग को एकीकृत किया और 1078 ई. के आस-पास वह अपने पिता का उत्तराधिकारी बना। उसने उड़ीसा के राज्यक्षेत्र का विस्तार किया।

  ◦ चोल आक्रमण का सामना करने के साथ, उसने चोलों की भूमि पर कब्ज़ा कर लिया तथा अपने राज्य को "गंगा से गोदावरी" तक बढ़ाया। उसने आधुनिक ओडिशा की नींव रखी तथा जगन्नाथ मंदिर का निर्माण करवाया।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: कश्मीर

1. कश्मीर	**2. पूर्व और उत्तर-पूर्व के राजवंश**
3. असम के राजवंश	**4. 2. प्रलम्ब राजवंश (9वीं शताब्दी)**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — कश्मीर

मुख्य परीक्षा दृष्टि: मैसूर के गंगों से संबंधित पूर्वी गंगों ने कलिंग में अपना शासन स्थापित किया, जिसकी राजधानी कलिंगनगर थी।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: कश्मीर • पूर्व और उत्तर-पूर्व के राजवंश • असम के राजवंश • 2. प्रलम्ब राजवंश (9वीं शताब्दी) • 3. अहोम साम्राज्य (1228 ई. के बाद) | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1300, 883 ई, 1172, 1339, 800 ई

  ◦ उसके द्वारा स्थापित साम्राज्य ने गंगा तक नियंत्रण बनाए रखा और बंगाल के आक्रमणों का विरोध किया, जिसमें बख्तियार खिलजी का आक्रमण भी शामिल था।

  ◦ नरसिंह प्रथम ने (1238-1264 ई.) कोणार्क में सूर्य मंदिर का निर्माण शुरू करवाया।

• 15वीं शताब्दी के मध्य में, कलिंग में एक नया शाही परिवार, सूर्यवंश सत्ता में आया।

भुवनेश्वर स्थित लिंगराज मंदिर (शिव से संबंधित) का निर्माण सोमवंशी राजा ययाति प्रथम ने करवाया था।

दक्कन और दक्षिण भारत के राजवंश

कल्याणी के चालुक्य (10वीं-12वीं शताब्दी ई.)

• कल्याणी के चालुक्य वंश का संस्थापक तैलप द्वितीय (973-997 ई.) राष्ट्रकूटों का उत्तराधिकारी बना, उसने अपनी राजधानी कर्नाटक के कल्याणी (आधुनिक बीदर जिला) में स्थापित की।

• उसने पड़ोसी क्षेत्रों को अपने अधीन कर लिया, जिनमें मैसूर के गंग, मालवा के परमार, गुजरात के चालुक्य और चेदि के कलचुरी सम्मिलित थे।

• इस अवधि में उल्लेखनीय चालुक्य-चोल प्रतिद्वंद्विता देखी गई, जिसमें तुंगभद्रा नदी को दोनों साम्राज्यों के बीच की सीमा के रूप में स्वीकार किया गया।

• विक्रमादित्य षष्ठम ने शक संवत के स्थान पर चालुक्य-विक्रम संवत की स्थापना की।

• उसने विक्रमांकदेवचरित के रचयिता बिल्हण और मिताक्षरा (याज्ञवल्क्य स्मृति पर टिप्पणी) के लेखक विज्ञानेश्वर जैसेप्रख्यात विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया था।

• 12वीं शताब्दी के मध्य तक चालुक्य शासन समाप्त हो गया, जिससे वारंगल के काकतीय,द्वारसमुद्रके होयसल और देवगिरिके यादवोंके शासन का मार्ग प्रशस्त हो गया। वेंगी के पूर्वी चालुक्य, जो शुरू में चोलों द्वारा संरक्षित थे, अंततः कोलुतुंग के शासनकाल में चोल साम्राज्य में एकीकृत हो गए।

देवगिरि के यादव

• भगवान कृष्ण के यदु वंश से होने का दावा करने वाले यादवों को एक स्वदेशी मराठा समूह (प्रारंभ में राष्ट्रकूटों और बाद में पश्चिमी चालुक्यों के सामंत) माना जाता है।

• भिल्लम पंचम ने देवगिरि को अपनी राजधानी बनाकर यादव साम्राज्य की स्थापना की।इस साम्राज्य का पतनशील पश्चिमी चालुक्य साम्राज्य के क्षेत्रों को लेकर होयसलों के साथ संघर्ष हुआ।

• सिंहण (1210-1246 ई.) ने यादव साम्राज्य को उसके चरम पर पहुँचाया। इस राजवंश का अंतिम प्रसिद्ध शासक राम चंद्र देव था जिसने अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण का सामना किया था।

काकतीय राजवंश (950-1323 ई.)

• इनकी उत्पत्तिप्राचीन तेलुगु वंशसे हुई थी,वेपश्चिमी चालुक्यों के सामंत थे।

• बेत प्रथम (सबसे पहले ज्ञात शासक) ने नलगोंडा जिले (हैदराबाद) में एक छोटे राज्य की स्थापना की। पश्चिमी चालुक्य राजा, विक्रमादित्य षष्ठम के निधनके बादकाकतीयोंने चालुक्यसामंतोंकोहराकर अपनाविस्तार शुरू किया।

• एक प्रमुख काकतीय शासक, गणपति ने तेलुगु क्षेत्र पर सत्ता का केंद्रीकरण किया,प्रशासनिक दक्षताऔरव्यापार एवं कृषिको बढ़ावा देने पर जोरदिया।

• उसने वारंगल शहर का निर्माण पूरा किया और अपनी राजधानी वहाँ स्थानांतरित कर दी।

• रुद्रमादेवी (गणपति की पुत्री) ने रुद्रदेव महाराजाका नाम धारण किया और उड़ीसा एवं यादवों के खतरों का सामना करते हुए लगभग 35 वर्षों तक शासन किया। वह पाशुपत शैव मठों की संरक्षक थी।

• रुद्रमादेवी का पौत्र प्रताप रूद्र (1295-1323 ई.) इस राजवंश का अंतिम शासक था।

मोटुपल्ली काकतीयों का प्रमुख बंदरगाह था। वेनिस यात्री मार्को पोलो इसी बंदरगाह पर आया था। [यूपीएससी 2017]

चोल साम्राज्य (9वीं-13वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध) परिचय चोल उन तीन शक्तिशाली राजवंशों में से एक थे जिन्होंने प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में तमिझ (तमिल) देश पर शासन किया था। उन्हें संगम साहित्य में मुवेंधर में से एक के रूप में वर्णित किया गया है और अशोक के शिलालेखों में भी उनका विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

• चोल साम्राज्य का 9वीं शताब्दी के मध्य में विजयालय (संभवतः पल्लवों का जागीरदार) के शासनकाल में पुनरुत्थान हुआ, जिसने मुत्तरैयार से कावेरी डेल्टा पर विजय प्राप्त की थी। उसने तंजावुर (तंजौर) शहर का निर्माण कराया।

• बाद के चोलों ने स्वयं को संगम युग के प्रसिद्ध चोल शासक कराईकल का वंशज बताया।

आदित्य (राजादित्य) और परांतक प्रथम (जिसने पांड्यों पर विजय प्राप्त करने के बाद मदुरैकोंडा की उपाधि धारण की) के शासन काल में साम्राज्य का और विस्तार हुआ। परिणामस्वरूप, राष्ट्रकूट राजा कृष्ण द्वितीय के साथ टकराव पैदा हुआ, जिसकी परिणति 949 ई. में तक्कोलम के युद्ध में राजादित्य (चोल) की हार के रूप में सामने आई।

प्रसिद्ध शासक

राजराज प्रथम (985-1014 ई.) राजनीतिक महत्त्व की दृष्टि से राजराज प्रथम के युग की तुलना समुद्रगुप्त से की गई है।

प्रमुख उपलब्धियाँ/विजय:

• उसने कई नौसैनिक अभियान दल भेजे और पश्चिमी तट, श्रीलंका और मालदीव परविजय प्राप्त की। उसने सैन्य विजय के माध्यम से श्रीलंका के उत्तरी और पूर्वी हिस्सों पर सीधा नियंत्रण स्थापित कर लिया।

• राजराज प्रथम ने विजित क्षेत्रों को एकीकृत किया और वहाँ "सूबेदार (वायसराय)" नियुक्त किए: पांडिनाडु में चोल-पांड्य, श्रीलंका में चोल-लंके श्वर, जिसे बाद में मुम्मुदिचोलामंडलम नाम दिया गया और दक्षिणी कर्नाटक के गंगावाड़ी क्षेत्र में चोल-गंग को नियुक्त किया।।

• **स्थापत्यकला:** उसने तंजौर में बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण कराया (जिसे उसके नाम पर राजराजेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है)। इस मंदिर की दीवारों पर उसकी विभिन्न उपलब्धियाँ उत्कीर्ण हैं। उसने जावा में बौद्ध विहार के निर्माण में जावा के राजा की भी सहायता की।

राजेंद्र प्रथम (1014-44 ई.)

• वह राजराज का पुत्र था और उसके अधीनचोलों की शक्ति अपने चरम पर पहुँच गई थी।

• तिरुवलंगंडु ताम्रपत्र शिलालेख और तिरुमलाई शिलालेख में उसकी विजयों का विवरण है।

सैन्य अभियान:

• उसने पश्चिमी चालुक्यों पर आक्रमण करके चोल साम्राज्य की सीमा को तुंगभद्रा नदी तक बढ़ाया।

• मदुरै पर हमला किया, जिसके बाद पांड्य भाग गए और श्रीलंका में शरण ली। इसके बाद, राजेंद्र प्रथम ने उनकी खोज में श्रीलंका पर आक्रमण किया।

• महीपाल (पाल वंश के राजा) पर अपनी जीत के बाद उसने गंगईकोंडा (गंगा का विजेता) की उपाधि धारण की और गंगईकोंडा चोलपुरम शहर की स्थापना की। उसने गोदावरी नदी तक के अभियान का नेतृत्व किया। गंगईकोंडा चोलपुरम मंदिर उत्तर भारत में उसकी विजयों की याद में बनाया गया था।

• उसका नौसैनिक अभियान श्री विजय साम्राज्य (दक्षिणी सुमात्रा) के खिलाफ था, जो एक प्रमुख समुद्री और वाणिज्यिक राज्य था जो दक्षिण-पूर्व एशिया में 700-1300 ईस्वी तक फला-फूला था।

• उसने मुदिकोंडा चोलन (ताज धारण किए हुए चोल), कदारमकोंडन (कदारम का विजेता) और पंडित चोलन (विद्वान चोल) की उपाधियाँ धारण कीं।

• उसने सुमात्रा पर विजय प्राप्त की और मलाया प्रायद्वीप एवं दक्षिण भारत के बीच व्यापार को बढ़ावा दिया।

• पश्चिमी चालुक्य साम्राज्य पर 1003 ई. में राजराज प्रथम और 1009 ई. में राजेन्द्र प्रथम द्वारा किए गए चोल आक्रमण भी सफल रहे।

• राजेंद्र प्रथम के बाद राजाधिराज शासक बना और उसके बाद राजेंद्र द्वितीय शासक बना।

कुलोतुंग प्रथम (1070-1122 ई.)

• वह अंतिम महत्त्वपूर्ण चोल शासक था जिसने वेंगी के पूर्वी चालुक्यों को चोलों के साथ एकजुट किया।

• भूमि सर्वेक्षण (जो इंग्लैंड के डोम्सडे सर्वेक्षण के साथ मेल खाता है) सहित कई प्रशासनिक सुधार शुरू किए।

• एक शैव होने के बावजूद, उसने नागपट्टम के बौद्ध मठों को अनुदान दिया।

• वेंगी पर उसका प्रभुत्व समाप्त हो गया और उसे होयसलों के आक्रमण का सामना करना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप गंगावाड़ी प्रांत भी उसके हाथ से चला गया। उसे पांड्य और चेर शासकों से भी चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

इससे चोल साम्राज्य का पतन हुआ, अंततः होयसल और पांड्यों ने उस पर कब्जा कर लिया।

चोल राजाओं राजाधिराज और कुलोतुंग तृतीय के शासनकाल के दौरान उत्तरी अर्कोट और चेंगलपट्टू क्षेत्रों में संबुवरयार सरदार/सामंत थे।

चोल प्रशासन

• चोल साम्राज्य में, राजा प्रशासन का प्रमुख होता था, प्रशासनिक कार्यों में शाही राजकुमारों, मंत्रिपरिषद और प्रशासनिक कर्मचारियों द्वारा सहायता की जाती थी। राज्य के अधिकारियों को वेतन और सम्मान के रूप में भूमि अनुदान और उपाधियाँ प्रदान की जाती थीं।

• राजाओं को हमेशा पेरुमान या पेरुमागन (बड़ा आदमी), उलागुदैयापेरुमल (दुनिया का स्वामी) और उलागुदैयानयनार (दुनिया का स्वामी) कहकर संबोधित किया जाता था। बाद में, उन्होंने चक्रवर्ती (सम्राट) और त्रिभुवन चक्रवर्ती (तीन लोकों के सम्राट) जैसी उपाधियाँ भी धारण कीं।

• साम्राज्य को प्रांतों (मंडलों) में विभाजित किया गया था, जिन्हें आगे वलनाडु और नाडु में विभाजित किया गया था।

• चोल शासकों ने ब्राह्मणों को राजगुरु के रूप में नियुक्त किया, इसलिए उन्हें ब्रह्मदेयम (ब्राह्मणों को कर मुक्त भूमि की विशाल संपदा) और चतुर-वेदी-मंगलम (ब्राह्मणों के लिए कर मुक्त गाँव) प्रदान किए।

स्थानीय प्रशासन

• स्थानीय प्रशासन उर, सभा या महासभा और नगरम जैसी विभिन्न ग्राम सभाओं द्वारा प्रशासित किया जाता।

• "उर" सभी भूमिधारक वर्गों की एक ग्राम सभा थी।

• "सभा" ब्रह्मदेय गाँवों के ब्राह्मणों की एक सभा थी, और

• "नगरम" व्यापारियों की एक सभा थी। उत्तरमेरुर शिलालेख (919 और 921 ई.) - इसे परांतक चोल प्रथम के शासनकाल में तैयार किया गया था। यह चोलों के स्थानीय प्रशासन पर प्रकाश डालता है। इसमें ब्राह्मण बस्ती के मामलों को प्रशासित करने वाली विभिन्न समितियों के सदस्यों को चुनने की प्रक्रिया का विवरण है।

सेना

चोलों के पास एक सुसंगठित सेना थी। सेना के तीन पारंपरिक अंग थे: पैदल सेना, घुड़सवार सेना (कुदिराई सेवागार) और हस्ति दल (अनैयात्कल)।

प्रासंगिक शब्द:

• पदैविदु - छावनियाँ, जो राजधानी शहर में स्थापित की गईं।

• निलाईपादई - विजित क्षेत्र में सैन्य चौकियाँ।

• दंडनायगम - प्रधान सेनापति।

• पेरुन्दनम- सेना में उच्च रैंक; सिरुदनम- निचले रैंक।

• वेलैक्करन- सम्राट के निजी अंगरक्षक।

• विलालिगल - तीरंदाज; वलिलर - तलवारवाज; कोंडुवर - भाला चलाने वाले।

अर्थव्यवस्था भूमि सर्वेक्षण

• एक विस्तृत "भू-राजस्व विभाग" था जिसे पुरवुवारी-तिनैक्कलम के नाम से जाना जाता था।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: सैन्य अभियान



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — सैन्य अभियान

मुख्य परीक्षा दृष्टि: एक विस्तृत "भू-राजस्व विभाग" था जिसे पुरवुवारी-तिनैक्कलम के नाम से जाना जाता था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: सैन्य अभियान • चोल प्रशासन • स्थानीय प्रशासन • सेना • प्रासंगिक शब्द | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1300, 1122, 921 ई

• चोलों ने कर निर्धारण के उद्देश्य से राजराज प्रथम (1001 ई.), कुलोतुंग प्रथम (1086 ई.) और कुलोतुंग तृतीय (1226 ई.) के शासनकाल में व्यापक भूमि सर्वेक्षण किया।

  ◦ भूमि के सर्वेक्षकों को नाडु-वागैसेकिर कहा जाता था। भूमि माप की इकाइयों को कुली, मा, वेलि, पट्टी और पदागम जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता था।

कर

• कर की दरें मिट्टी की उर्वरता और भूमिधारक की स्थिति के आधार पर तय की गईं। मंदिरों और ब्राह्मणों को कर चुकाने से छूट दी गई।

  ◦ इरई, कदमई, ओपती- जमींदारों पर लगाया जाने वाला प्राथमिक भूमि कर था।

  ◦ कुडिमई कृषकों अर्थात भूमि को वास्तव में जोतनेवालों पर लगाया गया श्रम/सेवा कर था।

  ◦ पट्टम और अयम विभिन्न गैर-कृषि व्यवसायों पर लगाया गया कर था।

  ◦ कलम (28 किग्रा.) नामक इकाई द्वारा कर के रूप में धान लिया जाता था।

  ◦ इरैकाटिना नेलु - वस्तु के रूप में चुकाया गया कर था। सिंचाई प्रणाली वटी एक जल निकासी चैनल है और वयक्कल एक आपूर्ति चैनल है।

वटी-वयक्कल, एक आढ़ा-तिरछा नाला, कावेरी डेल्टा में वर्षा जल के संचयन का एक पारंपरिक तरीका है। राजेंद्र प्रथम ने गंगईकोंडा चोलपुरम में सिंचाई के लिए ठोस चिनाई के एक तटबंध का निर्माण करवाया था। उसने इसे अपना जलमायम जयस्तंभम बताया, जिसका अर्थ है "जल में विजय स्तंभ"। उसने राजधानी के पास चोलगंगम नामक एक सिंचाई तालाब का निर्माण कराया जिसे जल-स्तंभ कहा जाता था। बाद में यही राजाओं का राज्याभिषेक केंद्र बन गया, जो एक महत्त्वपूर्ण चोल स्थल था।

व्यापार

- **संघ जैसे दो समूहों की जानकारी मिलती है:**
  - अंजुवन्नत्तार समुद्री व्यापारी थे जिनमें यहूदी, ईसाई और मुस्लिम सहित पश्चिम एशियाई लोग सम्मिलित थे। वे पश्चिमी तट के सभी बंदरगाह शहरों में बस गए।
  - मणिग्रामत्तार भीतरी इलाकों में व्यापारी थे।
- वेट्टी और अमांजी ग्रामीण स्तर पर सार्वजनिक कार्यों से संबंधित निःशुल्क श्रम के रूप थे।

समाज

- यह मुख्य रूप से एक कृषि प्रधान समाज था जिसमें भूमि स्वामित्व, सामाजिक स्थिति और पदानुक्रम का प्रमुख निर्धारक था।
- ब्राह्मण जमींदारों को ब्रह्मदेय-किलवार कहा जाता था, जो ब्रह्मदेय बस्तियों के शीर्ष पर थे (कर छूट प्राप्त थी), उन्होंने कुडी नीक्की (स्थानीय किसानों) को विस्थापित कर दिया।
- मंदिरों को देवदान के नाम से भूमि उपहार में दी जाती थी और उन्हें ब्रह्मदेयम के समान कर से छूट दी जाती थी।
- वेल्लनवागई गाँवों के जमींदारों को सामाजिक पदानुक्रम में अगले स्थान पर रखा गया था।
- उलुकुडी (काश्तकार) जमीन के मालिक नहीं हो सकते थे, लेकिन उन्हें ब्राह्मणों और वेल्लनवागई गाँवों के जमींदारों की जमीन पर खेती करनी पड़ती थी। वहीं दूसरी ओर जमींदारों ने मेल्वरम (फसल में बड़ा हिस्सा) अपने पास रखा, उलुकुडी को किज वरम (कम हिस्सा) मिला।
- पनीसीमक्कल (मजदूर) और अदिमैगल (दास) सामाजिक पदानुक्रम में सबसे नीचे रहे।

चोल कला और स्थापत्यकला — मंदिर

- मंदिर सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बन गए।
- मंदिर बैंक के रूप मेंकार्य करते थे, वे ऋण देते थे और धर्मार्थ दान प्राप्त करते थे। उन्होंने वेदों, संगीत और कलाओं में प्रशिक्षण प्रदान करके शैक्षिक केंद्रों के रूप में भी काम किया।

प्रसिद्ध चोल मंदिर (यूनेस्को)

- तंजावुर में बृहदीश्वर मंदिर राजराज द्वारा बनवाया गया।
- गंगाईकोंडाचोलिसवरम में बृहदीश्वर मंदिर का निर्माण राजेंद्र प्रथम द्वारा कराया गया था।
- दारासुरम में ऐरावतेश्वर मंदिर राजराज द्वितीय (1146-1172 ई.) द्वारा बनवाया गया।
- मंदिर के प्रमुख अधिकारी थे-
  - कोयिलकनक्कू (मंदिर लेखाकार)
  - देव-कन्मी (भगवान का एजेंट)
  - कंतेसर (मंदिर प्रबंधक)
- अन्य अधिकारियों में कोयिरमार और श्रीवैष्णवार सम्मिलित थे।
- शंकरपादियार नामक तेल निकालने वाले लोग मंदिर को तेल की आपूर्ति करते थे। बाद में ये मंदिर के पदाधिकारी बन गए।
- राजराज प्रथम के जीवन पर आधारित एक नाटक राजराजनाटकम का तंजावुर मंदिर में मंचन किया गया था।
- कुड़क-कुथु और सक्काइक-कुथु जैसे पारंपरिक नृत्य रूपों को मंदिरों में मूर्तियों और चित्रों के रूप में चित्रित किया गया था। तंजावुर मंदिर में नृत्य और कर्ण मुद्राओं को मूर्तियों के रूप में दिखाया गया है।
- पारंपरिक तमिल संगीत वाद्यंत्रों को भी इसी तरह चित्रित किया गया था।

• चोल मूर्तियाँ ऊर्जा, लावण्य और गरिमा के सामंजस्य का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

उदाहरण के लिए: चिदंबरम में नटराज या नृत्य करते शिव की मूर्ति।

• चोल चित्र सूक्ष्मता और रंग में समृद्ध थे, खास तौर पर बृहदेश्वर मंदिर के प्रदक्षिणा पथ को सुशोभित करते हुए चित्र समृद्धि के प्रतीक थे।।

साहित्य

• चोल राजा शिक्षा के महान संरक्षक थे जिन्होंने संस्कृत शिक्षा का समर्थन किया।

• साहित्यिक कृतियाँ कंब रामायण और पेरियापुराण इसी काल की हैं।

• राजेंद्र प्रथम ने एनायिरम (दक्षिण अरकोट जिला) में वैदिक कॉलेज की स्थापना की, जो एक वैष्णव केंद्र था, जहाँ वेद, व्याकरण और वेदांत की शिक्षा प्रदान की जाती थी।

चोल साम्राज्य पतन

• 12वीं शताब्दी के अंत तक स्थानीय सरदार ताकतवर हो गए, जिससे केंद्र कमजोर हो गया।

• चोल साम्राज्य एक समय शक्तिशाली साम्राज्य था जो पांड्यों के लगातार आक्रमणों के कारण होयसलों पर निर्भर हो गया।

• 1264 ई. में, जटावर्मन पांडियन प्रथम ने चोल राजधानी गंगईकोंडा चोलपुरम को लूट लिया।

• 1279 ई. चोल राजवंश के अंत का प्रतीक है जब राजा मारवर्मन पांडियन प्रथम ने अंतिम राजा राजेंद्र चोल तृतीय को पराजित कर पांड्यों का शासन स्थापित किया।

होयसल (10वीं-14वीं शताब्दी)

• सल (Sala), जिसे नृपकाम के नाम से भी जाना जाता है, ने होयसल राजवंश की स्थापना की।

• **साम्राज्य विस्तार:** यह राजवंश पश्चिमी चालुक्यों और चोलों के बीच के जिलों में फैला, अंततः पूर्व मैसूर राज्य के अधिकांश भाग तक फैल गया।

होयसलों ने द्वारसमुद्र में अपनी राजधानी स्थापित की। बेलूर एक शाही निवास के रूप में कार्य करता था जो शानदार होयसल स्मारकों के लिए प्रसिद्ध था। शाही परिवार की सुरक्षा गरुड़ नामक अंगरक्षकों की एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित सेना द्वारा की जाती थी।

• **संघर्ष:** होयसल शासक यादवों और पांड्यों के साथ संघर्ष में लगे रहे।

• प्रसिद्ध शासकों में विष्णुवर्धन, बल्लाल द्वितीय और बल्लाल तृतीय सम्मिलित हैं।

• बल्लाल तृतीय ने दिल्ली सल्तनत (खिलजी और तुगलक) की सेनाओं से युद्ध किया।

• होयसल प्रख्यात निर्माता थे, जिन्होंने चालुक्य कला परंपराओं को विकसित किया। उदाहरण के लिए: हलेबिदु में होयसलेश्वर मंदिर।

• होयसलों की राजधानी हलेबिदु या हेलेबिडु को दो बार 1311 ई. और 1327 ई. में लूटा गया।

उत्तरकालीन पांड्य

• पांड्य उन मुवेंदारों में से एक थे जिन्होंने पूर्व-आधुनिक काल तक भारत के दक्षिणी भाग पर शासन किया था। उन्हें मदुरै के पांड्य कहा जाता है। यह दक्षिण भारतकाएकप्राचीनतमिलराजवंश थाऔर तमिलकमके चारमहानसाम्राज्यों में से एक था। दक्षिण भारत के अन्य तीन साम्राज्य पल्लव, चोल और चेर थे।

पांड्य वंश की कालरेखा स्थापित करना कठिन है क्योंकि यह राजवंश कई चरणों से गुजरा।

• **प्राचीन पांड्य/प्रारंभिक पांड्य:** चौथी से तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व

• **उत्तरकालीन (मध्यकालीन) पांड्य:** छठी से 10वीं शताब्दी ई.

• **पांड्यों का पुनरुत्थान:** 13वीं से 14वीं शताब्दी ई.

• **पांड्यों का राज्यक्षेत्र:** इसे पांड्यमंडलम, थेनमंडलम या पांड्यनाडु कहा जाता है। इसमें वैगई और तामृपर्णी नदियों द्वारा सिंचित क्षेत्रों को छोड़कर अन्य सभी पहाड़ी क्षेत्र सम्मिलित थे।

साम्राज्य की सीमाएँ : — उत्तर: पुदुक्कोट्टई क्षेत्र से होकर — बहने वाली वेल्लार नदी — दक्षिण: हिंद महासागर — पश्चिम: पश्चिमी घाट पूर्व: बंगाल की खाड़ी — अध्ययन का स्रोत:

- नेदुंजदायन का वेल्विक्कुडी अनुदान।
- मार्को पोलो, वसफ और इब्न-बतूता के वृत्तांत। प्रसिद्ध शासक
- कडुन्कोन ने पांड्य क्षेत्र को कलभ्रों से पुन: प्राप्त किया और पांड्यों का पुनरुत्थान किया।

प्रारंभिक चोल, पांड्य और चेर के प्राचीन राजवंशों के बाद, तीसरी से छठी शताब्दी ईस्वी के बीच कलभ्र (पहाड़ी जनजाति) तमिल क्षेत्र के सभी या कुछ हिस्सों के शासक थे। उन्होंने संभवत: बौद्धों और जैनियों को अपना संरक्षण प्रदान किया।

- सेंदन में योद्धा जैसे गुण थे और उसने वनावन (Vanavan) की उपाधि धारण की जिससे चेरों पर उसकी विजय का पता चलता था।

अरिके सरी मारवर्मन (624-674 ई.)

- वैगई नदी तल शिलालेख के अनुसार, वह 642 ई. में सिंहासन पर बैठा। उसे चेर, चोल, पल्लव और सिंहली जैसे अपने समकक्षों पर विजय के लिए जाना जाता है।
- **धार्मिक झुकाव:** शैव संत त्रिगुणसंबंदार ने अरिके सरी को जैन धर्म से शैव धर्म में परिवर्तित किया। इसके अतिरिक्त, अरिके सरी की पहचान जैनियों के उत्पीड़क कुन पांडियन से की जाती है।
- अरिके सरी, महेंद्रवर्मन प्रथम और नरसिंहवर्मन प्रथम का समकालीन था। जटिला परांतक नेदुंजदायन (वारगुण प्रथम) (756-815 ई.)
- वह अपने राजवंश में सबसे महान था और उसने पल्लवों और चेरों का सफलतापूर्वक सामना किया।
- उसने पांड्य साम्राज्य का विस्तार तंजावुर, तिरुचिरापल्ली, सेलम और कोयंबटूर जिलों तक किया।
- उसे वेल्विक्कुडी प्लेटों का दाता माना जाता है और उसेकई शिव और विष्णु मंदिरों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है।
- **श्रीमार श्रीवल्लभ (815-862 ई.):** उसने सीलोन पर आक्रमण किया और अपना अधिकार कायम रखा। वह पल्लव राजा नंदीवर्मन तृतीय (846-869 ई.) द्वारा पराजित हुआ। श्रीमार के बाद वारगुण द्वितीय ने शासन किया, जिसे श्रीपुरम्बियम में अपराजिता पल्लव (885-903) ने पराजित किया था।
- परांतक वीरनारायण और राजसिंह द्वितीय जैसे अन्य उत्तराधिकारी/शासक, परांतक प्रथम के नेतृत्व में बढ़ते चोल राजवंश का सामना नहीं कर सके।
- परांतक प्रथम ने पांड्य राजा राजसिंह द्वितीय को पराजित किया जो 920 ई. में देश छोड़कर भाग गया।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: चोल साम्राज्य पतन

1264	1279	1311	1327
चोल साम्राज्य पतन	उत्तरकालीन पांड्य	साम्राज्य की सीमाएँ	उत्तर: पुदुक्कोट्टई क्षेत्र से होकर

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — चोल साम्राज्य पतन

मुख्य परीक्षा दृष्टि: परांतक प्रथम ने पांड्य राजा राजसिंह द्वितीय को पराजित किया जो 920 ई. में देश छोड़कर भाग गया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: चोल साम्राज्य पतन • उत्तरकालीन पांड्य • साम्राज्य की सीमाएँ • उत्तर: पुदुक्कोट्टई क्षेत्र से होकर • बहने वाली वेल्लार नदी | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** *1264, 1279, 1311, 1327, 674 ई*

IUC विशेष स्मृति सूत्र #2: सल्तनत कालीन प्रमुख विभाग एवं संस्थापक

ट्रिक: 'अर्ज बलबन, मुस्तखराज व रियासत अलाउद्दीन, कोही मुहम्मद तुगलक, खैरात व बंदगान फिरोज तुगलक' — दीवान-ए-अर्ज (सैन्य: बलबन), दीवान-ए-मुस्तखराज (राजस्व बकाया: अलाउद्दीन), दीवान-ए-अमीर कोही (कृषि: मुहम्मद बिन तुगलक), दीवान-ए-बंदगान (दास) व खैरात (दान): फिरोज शाह तुगलक।

आदि राजेंद्र (चोल सूबेदार) की मृत्यु के बाद 13वीं शताब्दी के अंत में पांड्यों को फिर से अपनी सीमाओं को बढ़ाने का अवसर मिला और पांड्य सरदारों ने स्वतंत्र रूप से अपने क्षेत्रों पर पुन: शासन करना शुरू कर दिया।

- **सद्यवर्मन सुंदरपांडियन (1251-1268 ई.):** वह दूसरे पांड्य साम्राज्य का प्रसिद्ध शासक था, जिसने पूरे तमिलनाडु को अपने अधीन किया और आंध्र में नेल्लोर तक अपना अधिकार स्थापित किया।

मारवर्मन कुलशेखरन (1268-1312 ई.)

- 1302 ई. में, बड़े पुत्र जटावर्मन सुंदर पांडियन तृतीय को,सह-शासक नियुक्त किया गया।
- राजा द्वारा सह-शासक के रूप में सुंदर पांडियन की नियुक्ति ने दूसरे पुत्र वीरा पांडियन को नाराज कर दिया, इसलिए उसने अपने पिता मारवर्मन कुलशेखरन की हत्या कर दी।
- इसके बाद हुए गृहयुद्ध में वीरा पांडियन ने जीत हासिल की और मजबूती से अपना राज्य स्थापित किया।
- दूसरा पुत्र, सुंदर पांडियन दिल्ली भाग गया और अलाउद्दीन खिलजी के संरक्षण में शरण ली। इस घटनाक्रम नेमलिक काफूर को आक्रमण के लिए एक अवसर प्रदान किया।

मलिक काफ़ू र का आक्रमण

मलिक काफूर ने पांड्य साम्राज्य पर आक्रमण किया और 1311 ई. में मदुरै को लूट लिया। मदुरै में, दिल्ली सुल्तान के अधीनस्थ एक मुस्लिम राज्य स्थापित हुआ और 1335 ई. तक यह उसके अधीन रहा, जब मदुरै के मुस्लिम सूबेदार जलालुद्दीन आसन शाह ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

मार्को पोलो (वेनिस यात्री) वह दो बार (1288 ई., 1293 ई.) कयाल बंदरगाह (तमिलनाडु के कोरोमंडल तट का ताम्रापानी डेल्टा) पर आया था। उसने यहाँ के परिदृश्य पर लिखा है कि शहर अरब और चीन के जहाजों एवं व्यवसायिक गतिविधियों से भरा हुआ था। उसने विदेशी व्यापारियों के लिए निष्पक्ष प्रशासन और उदार आतिथ्य के लिए राजा की सराहना की।

- उसने राजाओं में प्रचलित सती प्रथा और बहुविवाह की घटनाओं का भी वर्णन किया।

पांड्य साम्राज्य का प्रशासन — राजनीतिक प्रशासन:

- पांड्य राजाओं ने मदुरै को अपनी राजधानी बनाया जो कुडाल और तमिल के लुकुदल के नाम से प्रतिष्ठित थी।
- राजाओं को पारंपरिक रूप से कुडालकोन, कुडाल नगर कावलन और मदुरापुरा परमेश्वरन के रूप में सम्मानित किया जाता था ।
- पांड्यों ने अपने घोड़ों के माध्यम से अपने पड़ोसियों पर सैन्य बढ़त प्राप्त की, वे इन घोड़ों को अरबों से अपने संबंधों के माध्यम से आयात करते थे।
- राजा शक्ति का प्रयोग करते समय शाही सिंहासन पर बैठते थे।
  - इन सिंहासनों का नाम स्थानीय सूबेदारों के नाम पर रखा गया था: मुनैया दरैयान, पांडिया दरैयान और कालिनकट त्रैयान।
- राजा मौखिक रूप से शाही आदेश जारी करते थे। इसका दस्तावेजीकरण तिरुमन्तिर ओलाई नामक एक शाही मुंशी द्वारा किया जाता था।
- शाही महलों को तिरुमालीगई और मनापरानन तिरुमालीगई कहा जाता था।
- **प्रारंभिक पांड्यों की उपाधियाँ:** पांडियातिरासन, पांडिया महारासन, मन्नार मन्नान, अवनिब सेकरन, एका वीरन, सकलपुवन चक्रवर्ती।
- **उत्तरवर्ती पांड्यों की उपाधियाँ:** कोदंड रमण, कोलाकलां, पुवानेकविरन और कलियुग रमण।
- **शुद्ध तमिल में उपाधियाँ:** सेम्बियन, वनावन और थेन्नावन।

शाही अधिकारी: शाही अधिकारी पदनाम उत्तरमन्त्री प्रधानमंत्री एलुट्टू मंडपम शाही सचिवालय अकाप्परिवारा मुदालिकल राजाओं के निजी परिचारक मारन आइनान, सत्तन गणपति, एनाथी सत्तन, तीरा तिरान, मूर्ति आइनान अधिकारी पल्ली वेलन, परांतकन पल्लीवेलन, मारन अदित्तन और तेनावन तमिझावेल सैन्य कमांडरों की उपाधियाँ मणिकवसागर, कुलचिरैयार और मारनकारी नेमंत्री के रूप मेंकाम किया।

राजनीतिक विभाजन

- पांड्य मंडलम या पांड्य नाडु में कई वलनाडु सम्मिलित थे।
- वलनाडु कई नाडु और कुर्रम में विभाजित थे।
  - नाडु और कुर्रम में मंगलम, नगरम, उर और कुडी जैसी बस्तियाँ थीं, जिनमें विभिन्न सामाजिक समूह रहते थे।
  - नाडु के प्रशासनिक अधिकारी नट्टार थे।
- मंगलम या चतुर्वेदीमंगलम सिंचाई सुविधाओं से युक्त ब्राह्मण बस्तियाँ थीं।
  - इन बस्तियों को शाही नाम और देवताओं के नाम दिए गए।

- प्रभावशाली ब्राह्मणों के पास ब्रह्मधि राजन और ब्रह्मरायण जैसी सम्मानजनक उपाधियाँ थीं।

• मनुर (तिरुनेलवेली जिला) के एक शिलालेख में ग्राम प्रशासन का विवरण मिलता है।

- यह चोलों के स्थानीय शासन के समान था, जिसमें ग्राम सभाएँ और समितियाँ शामिल थीं। नागरिक और सैन्य दोनों शक्तियाँ एक ही व्यक्ति में निहित थीं।

सिंचाई

• पांड्य मंडलम में एक अनोखा राजनीतिक विभाजन कुलक्किल है, अर्थात्सिंचाई तालाब के तहत क्षेत्र। उदाहरण के लिए, मदुरै को एक शिलालेख में मदक्क्कुलक्किल मदुरै के रूप में वर्णित किया गया है।

- पांड्यों द्वारा निर्मित सिंचाई स्रोतों का नाम शाही परिवार के सदस्यों के नाम पर रखा गया था जैसे कि वासुदेव पेरारू, वीरपांड्य पेरारू, श्रीवल्लब पेरारू और परकीरामा पांड्या पेरारू।
- तालाबों का नाम तिरुमलेरी, मारानेरी, कालियानेरी और कादानेरी रखा गया।
- वैगई नदी तल के सेंदन मारन शिलालेख में नदी के पानी को वितरित करने के लिए पांड्यों द्वारा निर्मित एक नहर का उल्लेख है।

पांड्यों के अधीन भूमि

• 14 और 24 फीट की छड़ों का उपयोग करके भूमि का सर्वेक्षण किया गया।

• नट्टार ने कर लगाने के उद्देश्य से खेती योग्य भूमि की गुणवत्ता का आकलन किया।

• सलाबोगम - ब्राह्मणों को सौंपी गई भूमि।

• तट्टारकणी - लोहारों को सौंपी गई भूमि।

• तक्कु -मणियम - बढ़ई को सौंपी गई भूमि।

• भट्टवृत्ति - शिक्षा प्रदान करने के लिए ब्राह्मण समूह को दान की गई भूमि। व्यापार

• दक्षिणी भारत के पश्चिमी तट पर अरब बस्तियों के कारण तमिझ देश के पूर्वी तट तक उनके व्यापार संबंध का विस्तार हुआ। यहाँ से मसालों, मोती, जवाहरात, घोड़े, हाथी और पक्षियों का व्यापार होता था।

• व्यापारियों कोनिकमत्तोर, नानादेसी, टिकाई-अयिरातु-ऐनुत्रुवर, ऐनुत्रुवर, मणिकिरामत्तार और पतिनेन-विश्यत्तार कहा जाता था।

- तेरु वह स्थान था जहाँ व्यापारी रहते थे।

• वसफ (फ़ारसी इतिहासकार) ने घोड़ों के व्यापार का उल्लेख किया है। घोड़ों का व्यापार करने वालों को कुदिराई-चेट्टी कहा जाता था।

• पांड्यों के अधीन सबसे व्यस्त बंदरगाह शहर पूर्वी तट पर कयालपट्टिनम (अब तमिलनाडु के थूथुकुडी जिले में) था। चिंतामणि, मायलापुर, तिरुवोत्रियूर, तिरुवदानई और महाबलीपुरम अन्य व्यस्त तटीय व्यापारिक केंद्र थे।

• सोने के सिक्कों का उपयोग व्यापार के माध्यम के रूप में किया जाता था।

- इसे कासु, पलानकासु, अनरादुनारपलंकासु, कानम, कलानकु और पोन कहा जाता था।

• व्यापारियों के नामधारी देवता अयिरट्टू अयनुरुवर उदय्यार और सोक्का नायकी अम्मन थे।

• समय-समय पर आयोजित होने वाले मेलों को तावलामिन बस्तियाँ कहा जाता था।

शिक्षा एवं साहित्य

• मंदिर भक्ति के प्रमुख केंद्र थे। उनमें भजन सुनाने औरथिएटरों में नाटकों के मंचन के लिए गायकों की नियुक्ति के माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा दिया गया।

• ब्राह्मणों ने कादिगई, सालई और विद्यास्थानम में संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन किया।

• **महत्त्वपूर्ण तमिल साहित्यिक ग्रंथ:** तिरुप्पावै, तिरवेम्पावै, तिरुवसागम, तिरुक्कोवै और तिरुमंतीराम।

• महाकाव्य 'शिलप्पादिकारम', जो कन्नगी और कोवलन की कहानी कहता है, पांड्यों के अधीन विकसित समृद्ध साहित्यिक संस्कृति का प्रमाण है।

धर्म

• पांडय पहले जैन धर्म में विश्वास करते थे लेकिन बाद में उन्होंने शैव और वैष्णव धर्म अपना लिया।

• सद्यवर्मन सुंदरपांडियन का श्रीरंगम मंदिर में अभिषेक किया गया था और इसकी स्मृति में उसने मंदिर को विष्णु की एक मूर्ति दान में दी थी।

• **पांड्यों ने वैदिक प्रथाओं को संरक्षण दिया:**
  ◦ पल्यागसलाई मुदुकुडुमी पेरुवलूठी (जिन्होंने कई वैदिक अनुष्ठान किए) की पहचान संगम काल के पांड्यों से की जाती है।
  ◦ वेल्विक्कुडी ताम्र पत्र के साथ-साथ शिलालेख स्रोतों में अश्वमेध यज्ञ, हिरण्यगर्भ और वाजपेय यज्ञ जैसे अनुष्ठानों का उल्लेख है।

• कुछ राजा कट्टर शैव थे और कुछ कट्टर वैष्णव थे। दोनों संप्रदायों के मंदिरों को संरक्षण दिया गया।

मंदिर

• पांड्यों ने विभिन्न प्रकार के मंदिरों का निर्माण कराया - सेपुलक्रल मंदिर (जैसे सुंदरपांडिस्वरम), चट्टानों को काटकर बनाए गए गुफा मंदिर और संरचनात्मक मंदिर।

• **प्रारंभिक पांड्य:** चट्टानों को काटकर बनाए गए प्रमुख गुफा मंदिर पिल्लयारपट्टी, तिरुमेयम, कुंत्रक्कुडी, तिरुचेंदूर, कलुगुमलाई, कन्याकुमारी और सित्तनवासल में मिलते हैं। चित्र सित्तनवासल, अरित्तापट्टी, तिरुमलाईपुरम और तिरुनेदुनकरई के मंदिरों में चित्र पाए जाते हैं।

• मध्यकालीन पांड्यों और उत्तरवर्ती पाण्ड्यों कोई नया मंदिर नहीं बनवाया, लेकिन मौजूदा मंदिरों को बनाए रखा, उनमें गोपुर, मंडप और परिक्रमा पथ का निर्माण करके उन्हें बड़ा किया।

• विशाल आकार के अखंड अलंकृत स्तंभ, मध्यकालीन पांड्य शैली की अनूठी विशेषता है।

• पांड्यों ने खास तौर पर मीनाक्षी मंदिर को संरक्षण दिया और गोपुरों और मंडपों को जोड़कर इसके परिसर का विस्तार करना जारी रखा।

पांड्य साम्राज्य का पतन

1310 ई. में मारवर्मन कुलशेखर प्रथम की मृत्यु के बाद, उसके पुत्रों वीर पांड्य चतुर्थ और सुंदर पांड्य चतुर्थ के बीच सिंहासन के लिए संघर्ष हुआ, वहीं दूसरी ओर दिल्ली की खिलजी सल्तनत ने उनके क्षेत्र पर कई बार आक्रमण किया।

• होयसल राजा बल्लाल तृतीय ने भी इसस्थिति का फायदा उठाने की कोशिश की, लेकिन वह खिलजियों से हार गया।

• पंड्या बंधुओं ने अलग-अलग समय पर खिलजियों से मदद माँगी लेकिन अंततः उनके अधिकांश क्षेत्र पर खिलजियों का कब्जा हो गया।

• 1323 ई. तक पांड्य साम्राज्य दक्षिण अरकोट के एक छोटे से क्षेत्र तक सीमित रह गया था। सोलहवीं शताब्दी के अंत में, पांडियन राजवंश अचानक भारतीय ऐतिहासिक परिदृश्य से हमेशा के लिए गायब हो गया।

भारत में इस्लाम का आगमन

• कदीसिया के युद्ध (Battle of Qadisiya) ने अरब सेनाओं को अल-हिंद की सीमा पर ला दिया। उन्होंने उत्तर-पश्चिम में संघर्ष किया और लगभग चार शताब्दियों तक छोटे-छोटे हिंदू राज्यों से संघर्ष किया।

• मुहम्मद-बिन-कासिम ने अंततः 712 ई. में राजा दाहिर को हराकर सिंध में अरब शासन स्थापित किया।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: पांड्यों के अधीन भूमि

1. पांड्यों के अधीन भूमि	**2. शिक्षा एवं साहित्य**
3. धर्म	**4. मंदिर**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — पांड्यों के अधीन भूमि

मुख्य परीक्षा दृष्टि: मुहम्मद-बिन-कासिम ने अंततः 712 ई. में राजा दाहिर को हराकर सिंध में अरब शासन स्थापित किया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: पांड्यों के अधीन भूमि • शिक्षा एवं साहित्य • धर्म • मंदिर • पांड्य साम्राज्य का पतन | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1310, 1323, 712 ई

फारस की खाड़ी में दक्षिण भारतीय बस्तियाँ थीं, वहीं दूसरी ओर अरब भी मालाबार और कोरोमंडल तट पर बस गए। मालाबार महिलाओं से विवाह करके पश्चिमी तट पर बसने वाले अरबों को मपिल्लै (दामाद) कहा जाता था।

भारत में गजनवी

सुबुक्तगीन (तुर्की गुलाम सेनापति) गजनवी वंश का संस्थापक था और उसने हिंदू शाही वंश की सीमांत चौकी के खिलाफ कई अभियानों का नेतृत्व किया था।

- सुबुक्तगीन के पुत्र महमूद गजनी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया। इस्लाम के प्रति उसकी सेवा के पुरस्कार के रूप में उसे अब्बासिद खलीफा से 'यामीन अल-दावला' की उपाधि मिली। इस प्रकार यह राजवंश यामिनी कहलाया।
  - उसने 1001 ई. में जयपाल (हिंदूशाही शासक) को पराजित किया।
  - उसने वाहिंद के युद्ध (1008-1009 ई.) में आनंदपाल (जयपाल का पुत्र) को पराजित किया।
  - नगरकोट, थानेसर, मथुरा और कन्नौज शहरों पर हमला किया और 1025 ई. में सोमनाथ मंदिर को लूटा।
- महमूद गजनवी की मृत्यु के बाद गजनवी साम्राज्य, गजनी और पंजाब तक ही सीमित रह गया, जिसे अंततः हेरात के पूर्व के पहाड़ी क्षेत्र से उनके जागीरदारों घुरीदों ने उखाड़ फेंका था।

भारत में घुरीद (GHURIDS IN INDIA)

- मुहम्मद गौरी या मुहम्मद गोरी का पहला आक्रमण मुल्तान के विरुद्ध था, जिस पर अंततः 1175 ई. में उसका कब्जा हो गया।
- उसे गुजरात में राजा भीमदेव द्वितीय (चालुक्य/सोलंकी वंश) ने 1178-79 ई. में माउंट आबू के निकट कयादरा के युद्ध में पराजित किया था। इस हार के बाद गौरी ने अपने अभियान की दिशा बदल दी और सिंध तथा पंजाब में अपनी स्थिति मजबूत कर ली।
- 1180 और 1190के दशक में गौरी ने पंजाब, सिंध और हरियाणा के आधुनिक प्रांतों में सैन्य दुर्ग स्थापित किए।
- **उसने पृथ्वीराज के साथ दो युद्ध लड़े:**
  - **तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.):** पृथ्वीराज ने यह युद्ध जीत लिया, लेकिन वह इस युद्ध को सीमांत युद्ध मानकर अपनी स्थिति मजबूत करने में विफल रहा। उसे उम्मीद नहीं थी कि गुरीद लगातार हमले करेंगे।
  - **तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.):** यह भारतीय इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था। इस युद्ध में, पृथ्वीराज को करारी हार का सामना करना पड़ा और अंततः पकड़ लिया गया। माना जाता है कि बाद में, गौरी ने उसे अजमेर की गद्दी पर पुनः बैठाया, लेकिन राजद्रोह के आरोपमें बाद में उसे फाँसी दे दी गई और गौरीके भरोसेमंद सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत में अपना सूबेदार नियुक्त किया।
  - **चंदावर का युद्ध (1194 ई.):** मौहम्मद गोरी ने जयचंद (कन्नौज के गहड़वाल राजा) को पराजित किया।
- उसने गहड़वालों का खजाना लूट लिया, बनारस शहर परकब्जा कर लिया और उसके मंदिरों को अपवित्र कर दिया।
- 1203 ई. के बाद, अपने भाई की मृत्यु के बाद वह भारत से चला गया।
- कुतुबुद्दीन ऐबक (गौरी का गुलाम) ने अंततः 1206 ई. में दिल्ली सल्तनत की स्थापना की।

दिल्ली सल्तनत — दिल्ली सल्तनत के शासकों का शासनकाल — गुलाम या मामलुक शासन

(1206-1290 ई.) खिलजी शासन (1290-1320 ई.) तुगलक शासन (1320-1414 ई.) सैय्यद वंश (1414-1451 ई.) लोदी वंश (1451-1526 ई.) कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.) जलालुद्दीन खिलजी (1290-1996 ई.) गियासुद्दीन तुगलक (1320-1324 ई.) खिज्र खाँ (1414-1421 ई.) बहलोल लोदी (1451-1489 ई.) शमसुद्दीन इल्तुतमिश (1210-1236 ई.) रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.) – – – – नासिरुद्दीन महमूद द्वितीय (1246-1266 ई.) अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.) मुहम्मद तुगलक (1324-1351 ई.) – सिकंदर लोदी (1489-1517 ई.) गियासुद्दीन बलबन (1266-1287 ई.) मुबारक शाह खिलजी (1316-1320 ई.) फिरोज तुगलक (1351-1388 ई.) – इब्राहीम लोदी (1517-1526 ई.) परिचय महमूद गजनवी और मुहम्मद गौरी के आक्रमणों के परिणामस्वरूप भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई।

गुलाम या मामलुक वंश (1206-1290ई.) कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.) परिचय

- तराइन के द्वितीय युद्ध (1192 ई.; करनाल, हरियाणा) के बाद मुइज़ुद्दीन मुहम्मद (जिसे मुहम्मद गौरी के नाम से भी जाना जाता है),गजनी लौट गया और अपने भरोसेमंद गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक को सूबेदार नियुक्त कर गया।
- गौरी की मृत्यु के बाद ऐबक ने गजनी से संबंध तोड़ लिए और भारत में गुलाम वंश की स्थापना की और स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया। उसने लाहौर को अपने राज्य की राजधानी बनाया।
  - इसने भारत को मध्य एशियाई राजनीति से दूर रखा।
- उसे उसकी उदारता और उदार दानशीलता के लिए "लाख बख्श" (लाखों का दानकर्ता) के नाम से भी जाना जाता है।

• अफगानिस्तान के एक तुर्की सेनापति मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने बिहार और बंगाल पर विजय प्राप्त करने में उसकी सहायता की।

• बख्तियार खिलजी पर बिहार के नालंदा विश्विद्यालय को नष्ट करने का आरोप है।

• 1210 ई. में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरकर ऐबक की मृत्यु हो गई।

मामलुक मतलब संपत्ति (गुलाम का अरबी पदनाम)।

स्थापत्य कला:

• **कुतुबुद्दीन ऐबक ने दो मस्जिदों का निर्माण कराया:** दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम और अजमेर में अढ़ाई दिन का झोंपड़ा।

• उसने दिल्ली में, सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी को समर्पित कुतुब मीनार का निर्माण शुरू किया। मीनार का निर्माण पूरा होने से पहले ऐबक की मृत्यु हो गई, जिसे बाद में इल्तुतमिश ने पूरा किया।।

साहित्य: उसके संरक्षण में हसन निजामी ने ताज-उल-मासिर (दिल्ली सल्तनत की पहली इतिहास पुस्तक) लिखी। शमसुद्दीन इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)

परिचय:

• इल्तुतमिश ऐबक का गुलाम और दामाद था और ऐबक के पुत्र को हराने के बाद सिंहासन पर बैठा। इसलिए उसे 'गुलाम का गुलाम' भी कहा जाता है।

वह इलबरी जनजाति का था।

सैन्य चुनौतियाँ:

• **गजनी:** उस समय गजनी पर ख्वारिज्मी शाह का कब्जा था, जिसने सिंधु तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

  ◦ **मुल्तान:** ऐबक के गुलाम, कुबाचा ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।

  ◦ **ग्वालियर एवं अजमेर :** राजपूतों ने स्वतंत्रता का दावा किया।

  ◦ **बिहार और बंगाल:** अली मर्दन खान ने स्वयं को बादशाह घोषित कर दिया।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: दिल्ली सल्तनत



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — दिल्ली सल्तनत

मुख्य परीक्षा दृष्टि: गजनी: उस समय गजनी पर ख्वारिज्मी शाह का कब्जा था, जिसने सिंधु तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: दिल्ली सल्तनत • दिल्ली सल्तनत के शासकों का शासनकाल • गुलाम या मामलुक शासन • स्थापत्य कला • सैन्य चुनौतियाँ | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1206, 1290, 1320, 1414, 1451

विजय:

• इल्तुतमिश को उत्तर भारत में तुर्की विजय का वास्तविक संयोजक माना जाता है।

• उसने ग्वालियर और बयाना पर पुन: कब्जा करने का लक्ष्य रखा और गुजरात के चालुक्यों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करने का प्रयास करते हुए रणथंभौर, जालौर और नागदा के खिलाफ सेना भेजी, जिसमें सीमित सफलता मिली।

• भारत परपहला मंगोल आक्रमण इल्तुतमिश शासनकाल में हुआ था। लेकिन उसने मंगोलों के खिलाफ अपनी लड़ाई में, मध्य एशियाई शासक ख्वारिज्म जलालुद्दीन का समर्थन न करके मंगोलों (चंगेज खान) से भारत को बचाया।

[यूपीएससी 2022, 2021]

• उसने कुबाचा को मुल्तान से खदेड़ दिया और सिंधु तक सल्तनत की सीमाओं को सुरक्षित कर लिया, वहीं दूसरी ओर मंगोलों ने ख्वारिज्मी साम्राज्य को नष्ट कर दिया।

प्रशासन:

• राजधानी को लाहौर से दिल्ली स्थानांतरित किया। बुखारा, समरकंद और बगदाद जैसे केंद्रों से लाए गए कुलीन सैन्य गुलामों (बंदगान) को गवर्नर और जनरल के रूप में नियुक्त किया।

• उसने सल्तनत का प्रशासन चलाने के लिए चहलगानी / चालीसा (40 सदस्यों की परिषद) का गठन किया।

• ताँबे (जीतल) और चाँदी के सिक्के (टंका) शुरू किए जो सल्तनत काल के दो बुनियादी सिक्के थे।

• कुतुब मीनार, जो एक विशाल विजय मीनार है, उसके शासनकाल के दौरान पूरी हुई।

• उसने भारत में इक्ता प्रणाली की शुरुआत की।

• इल्तुतमिश खलीफा से मान्यता पत्र प्राप्त करने वाला पहला सुल्तान था।

इक्ता प्रणाली:

• इक्ता एक अरबी शब्द है और इसकी शुरुआत फारस (ईरान) में हुई थी।
  ◦ खलीफा प्रशासन में इसका उपयोग सैन्य संचालन के वित्तपोषण और नागरिक एवं सैन्य अधिकारियों को भुगतान करने के तरीके के रूप में किया जाता था।

• शासकों ने अपने अमीरों (उमरा) को नकदी के बदले में भूमि अनुदान (इक्ता) सौंपे।
  ◦ उक्त अमीरों (जिन्हें मुक्ति और वली के नाम से जाना जाता था) ने इन क्षेत्रों से लगान एकत्र किया।
  ◦ एकत्र किया गया लगान उनके स्वयं के खर्च, सैनिकों (जो उनके द्वारा रखे गए) को भुगतान करने के लिए था और अधिशेष (फवाजिल) को केंद्र में भेजा जाता था।

• यह गैर-वंशानुगत था और इसका मुख्य अभिप्राय भूमि पर अधिकार नहीं था, लेकिन फिरोज शाह तुगलक के शासनकाल में यह वंशानुगत हो गया।

ये भूमि अनुदान हस्तांतरणीय थे, इक्ता धारक को हर तीन या चार साल में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरित किया जाता था।

उसने अपनी पुत्री रजिया सुल्तान को अपना उत्तराधिकारी नामित किया, जो तत्कालीन पुरुष प्रभुत्व के मध्य एक अपरंपरागत निर्णय था।

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.)

परिचय:

• सल्तनत की एकमात्र महिला मुस्लिम शासक।

• इब्नबतूता के अनुसार, उसने घोड़ों की सवारी करके , शस्त्र धारण करके , पर्दा प्रथा को त्यागकर, पुरुष पोशाक पहनकर और युद्ध में सेना का नेतृत्व करके तत्कालीन मानदंडों का उल्लंघन किया।

विजय और प्रशासन

• उसने रणथंभौर के खिलाफ (राजपूतों के खिलाफ) सेना भेजी।

• एक गैर-तुर्क को उच्च पद पर पदोन्नत करने के उसके प्रयासों का विरोध हुआ।

• उसके शासनकाल के दौरान राजशाही और तुर्क प्रमुखों (चहलगानी) के बीच सत्ता संघर्ष शुरू हुआ।

• एक गुलाम जलालुद्दीन याकू त को अस्तबल का स्वामी 'अमीर-ए-आखूर' के पद पर पदोन्नत करने से तुर्की अमीर नाराज हो गए।

• **मृत्यु:** बाद में दक्षिणी पंजाब में विद्रोह को दबाने के दौरान उसकी हत्या कर दी गई।

बलबन (1266-1287 ई.) परिचय

• राजशाही और तुर्क प्रमुखों के बीच संघर्ष तब समाप्त हुआ जब 1265 ई. में एक तुर्की प्रमुख बलबन (जिसे उलुग खाँ के नाम से भी जाना जाता है) सिंहासन पर बैठा।

• वह आलोचना के प्रति असहिष्णु और अत्यंत सत्तावादी था। अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने के बाद उसने जिल -ए- इलाही (Zil-e-Ilahi) की उपाधि धारण की।

प्रशासन

• उसने प्रशासन में चालीसा/चहलगानी के बढ़ते प्रभाव के कारण उसे समाप्त कर दिया।

• उसने सिजदा (झुककर सुल्तान को अभिवादन करना) और पैबोस (सुल्तान के पैर चूमना) जैसी प्रथाओं को लागू किया - यह इस बात का प्रतीक था कि अमीर उसके बराबर नहीं थे। ये दोनों प्रथाएँ ईरानी मूल की थीं और इन्हें गैर-इस्लामी माना जाता था।

• उसने सरकारी विभागों में गुप्तचरों का एक व्यापक नेटवर्क बनाए रखा।

• उसका लक्ष्य निष्पक्ष न्याय सुनिश्चित करके जनता का विश्वास हासिल करना था। यहाँ तक कि उसके शासनकाल में सर्वोच्च अधिकारियों को भी जवाबदेह ठहराया गया।

• बलबन ने सरकारी पदों के लिए तुर्क अमीरों कोप्राथमिकता दी और भारतीय मुसलमानों को उच्च पदों से बाहर रखा।

• **कानून एवं व्यवस्था:** अवध और गंगा-जमुना दोआब क्षेत्र की सड़कों पर लुटेरों और डकैतों से निपटने के लिए बलबन ने 'रक्त और लौह' की नीति अपनाई एवं मेवों (मेवात क्षेत्र के निवासियों) का दमन किया, जिन्होंने दिल्ली के बाहरी इलाकों को लूटा था। दिल्ली के चारों ओर सैन्य चौकियाँ (थाने) स्थापित स्थापित कीं।

रक्त और लौह नीति: कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए सभी प्रकार के कठोर तरीकों, यहाँ तक कि रक्तपात करना।

• सड़कों की सुरक्षा और राजपूत जमींदारों को नियंत्रित करने के लिए दोआब और कटेहर (आधुनिक रुहेलखंड) में अफगान सैनिकों की कॉलोनियों को बसाया गया था।

• बलबन नेसैन्य विभाग (दीवान-ए-अर्ज) को पुनर्गठित किया और उन सैनिकों को पेंशन प्रदान की जो अब सेवा के लिए उपयुक्त नहीं थे।

• आंतरिक और बाहरी अशांति (मुख्य रूप से मंगोलों द्वारा की जाने वाली) से निपटने के लिए एक मजबूत केंद्रीकृत सेना बनाए रखी।

मंगोल और उत्तर-पश्चिम सीमा की समस्या:

• मुख्य रूप से उत्तर-पश्चिमी पहाड़ी दर्रों को छोड़कर, जिसके माध्यम से तुर्क , हूण और सीथियन जैसे आक्रमणकारियों ने भारत में प्रवेश किया, भारत की प्राकृतिक सीमाओं ने विशेष सुरक्षा प्रदान की। इस प्रकार, पंजाब और सिंध की उपजाऊ घाटियों को सुरक्षित करने के लिए काबुल, गजनी और कंधार जैसे क्षेत्रों को नियंत्रित करना महत्त्वपूर्ण था।

• पश्चिम एशिया में अस्थिरता के दौर में दिल्ली सल्तनत अपनी सीमाओं को सुरक्षित नहीं रख सका। उसे बढ़ते ख्वारिज्मी साम्राज्य के साथ बढ़ते तनाव का सामना करना पड़ा, जिसने घुरीदों(Ghurids) के क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया था। 1218 ई. में चंगेज खाँ के आगमन के साथ स्थिति और अधिक खराब हो गई, जिसने ख्वारिज्मी साम्राज्य पर भयंकर हमले किए और काफी आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षति पहुँचाई।

• मंगोल आक्रमण के समय, दिल्ली सल्तनत शहजादों और विद्वानों की शरणस्थली बन गया। यह इस्लाम के केंद्र के रूप में उभरा।

खिलजी वंश (1290 ई. से 1320 ई.) खिलजी, मिश्रित तुर्की-अफगान मूल के थे। वे घुरीदों के आक्रमण के समय भारत आए और उन्नति के अवसर की तलाश में बंगाल और बिहार चले गए।

इसके अतिरिक्त, कुछ को मंगोल चुनौती से निपटने के लिए उत्तर-पश्चिम में सैनिकों के रूप में तैनात किया गया था।

जलालुद्दीन खिलजी (1290-1296 ई.) परिचय बलबन के उत्तराधिकारी की अयोग्यता और अमीरों की साजिश के बीच, सेनापति मलिक जलालुद्दीन खिलजी 1290 ई. में सिंहासन पर बैठा और खिलजी वंश की स्थापना की।

प्रशासन:

• जलालुद्दीन खिलजी ने तुर्कों को न केवल उच्च पदों से बाहर रखा बल्कि उनके एकाधिकार को भी समाप्त कर दिया।

• उसने यह कहते हुए बलबन की सख्त नीतियों को नरम किया कि हिंदू बहुमत के कारण राज्य पूरी तरह से इस्लामी नहीं हो सकता, इस प्रकार उसने हिंदुओं के प्रति सहिष्णु दृष्टिकोण प्रदर्शित किया।

• **मंगोल आक्रमण:** 1292 ई. में हुलगु के पौत्र (मंगोल) को हराया।

• **विजय:** अलाउद्दीन खिलजी (इलाहाबाद के निकट कड़ा मानिकपुर का गवर्नर) ने दक्कन में मालवा और यादव साम्राज्य की राजधानी देवगिरि पर सफलतापूर्वक आक्रमण किया।

• **मृत्यु:** उसके भतीजे और दामाद अलाउद्दीन खिलजी ने उसकी हत्या कर दी, जो बाद में सिंहासन पर बैठा।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

परिचय:

- अलाउद्दीन खिलजी एक असहिष्णु सुल्तान था (अपने पूर्वर्ती जलालुद्दीन के विपरीत)।
- उसने सिकंदर-ए-आजम की उपाधि धारण की।

प्रशासन:

- पारंपरिक ग्राम प्रधानों को दरकिनार करते हुए सीधे किसानों से केंद्रीकृत राजस्व संग्रहण की नीति अपनाई। कर नीतियों में गरीबों पर बोझ डालने के बजाय मुख्य रूप से अमीरों को लक्षित किया गया।
- पारंपरिक ग्राम अधिकारियों, खोतों (छोटे जमींदरों) और मुकद्दमों (ग्राम प्रधानों) से उनके पारंपरिक विशेषाधिकार छीन लिए गए। उसने उन पर किसानों के समान कर लगाया और उन पर चराई कर और गृह कर (हाउस टैक्स) लगाया।
- उसने पूरे साम्राज्य में संचार व्यवस्था बनाए रखने के लिए एक डाक प्रणाली की स्थापना की।
- उसने अमीरों की गतिविधियों और चर्चाओं पर नजर रखने के लिए एक गुप्तचर सेवा स्थापित की।
- सोने के लालच में अनेक अमीर मारे गए या बर्खास्त किए गए। उसने अपने ही परिवार के विद्रोही सदस्यों को दण्डित किया। उनकी प्रसिद्ध उद्घोषणा की 'राजा का कोई रिश्तेदार नहीं होता'।
- मदिरा, नशीले पदार्थों और जुआ पर प्रतिबंध लगाया था। सैन्य अभियान
- अलाउद्दीन खिलजी तार्गी के नेतृत्व वाले मंगोल आक्रमण के खिलाफ बचाव किया, जिसने दिल्ली तक मार्च किया और शहर को घेर लिया था।

[यूपीएससी 2022]

- **उत्तर भारतीय अभियान:**
  - रणथंभौर (1301 ई.), चित्तौड़ (1303 ई.), मालवा (1305 ई.)
  - **देवगिरि:** 1307 ई. (मलिक काफू र के तहत), 1314 ई. सोमनाथ मंदिर को लूटा।
  - **दक्कन और दक्षिण भारत के अभियान:** (मलिक काफूर का दक्षिण की ओर अभियान)
    - काकतीय शासक की पराजय: 1309 ई.
    - होयसल शासक ने खजाना समर्पित किया: 1310 ई.
    - चिदंबरम, श्रीरंगम और मदुरै के मंदिर शहरों को लूटा।
    - पांड्य साम्राज्य के पतन ने मदुरै में एक मुस्लिम राज्य का मार्ग प्रशस्त किया, जिसने दिल्ली सल्तनत के अधीनस्थ के रूप में कार्य किया।

सुधार:

- उसने चेहरा (सैनिकों का विवरण या हुलिया) और दाग (घोड़ों को दागना) प्रथा शुरू की।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: मंगोल और उत्तर-पश्चिम सीमा की समस्या

1218	1290	1320	1296
मंगोल और उत्तर-पश्चिम सीमा की समस्या	प्रशासन	सुधार	रक्त और लौह नीति

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मंगोल और उत्तर-पश्चिम सीमा की समस्या

मुख्य परीक्षा दृष्टि: उसने चेहरा (सैनिकों का विवरण या हुलिया) और दाग (घोड़ों को दागना) प्रथा शुरू की।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: मंगोल और उत्तर-पश्चिम सीमा की समस्या • प्रशासन • सुधार • रक्त और लौह नीति • मंगोल आक्रमण | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1218, 1290, 1320, 1296, 1292

IUC विशेष स्मृति सूत्र #3: विजयनगर साम्राज्य के 4 राजवंश एवं संस्थापक

ट्रिक: 'संगम हरि-बुक्का, सालुव नरसिंह, तुलुव वीर नरसिंह (कृष्णदेव राय), अरावीडु तिरुमल' — विजयनगर में आने वाले विदेशी यात्री: निकोलो कोंटी (देवराय-I), अब्दुर्रज्जाक (देवराय-II), बारबोसा व डोमिंगो पायस (कृष्णदेव राय), नूनिज (अच्युतदेव राय)।

• वह पहला सुल्तान था जिसने सैनिकों को लूट के हिस्से के बदले नकद भुगतान किया।

• अलाउद्दीन के पास दिल्ली के सभी शासकों की तुलना में सबसे बड़ी स्थायी सेना थी।

बाजार सुधार:

• उसने अकाल को कम करने और कीमतों को नियंत्रित करने के लिए शाही अन्न भंडार में अनाज का भंडारण किया।

• उसने मामूली वेतन पर एक बड़ी सेना को बनाए रखने के लिए अनाज, कपड़ा, फल जैसी वस्तुओं, पशुधन और यहाँ तक कि गुलामों और घोड़ों की अधिकतम कीमतें निर्धारित करके , आवश्यक वस्तुओं की कम कीमतें सुनिश्चित कीं।

• कालाबाजारी और जमाखोरी पर नजर रखनेके लिए व्यापक खुफिया नेटवर्के माध्यम से मूल्य नियंत्रण किया गया। मूल्य विनियमन उल्लंघनों के लिए कड़े दंड लगाए गए।

• **शाहना-ए-मंडी:** बाजार अधीक्षकों के माध्यम से बाजार कीमतों पर दैनिक रिपोर्ट ली जाती थी।

• **दीवान-ए-रियासत:** बाजार और कीमत को नियंत्रित करने के उद्देश्य से सृजित किया गया।

• **अलग बाजार:** कपड़ा, चीनी, जड़ी-बूटियाँ, सूखे मेवे, मक्खन और दीपक के तेल के लिए सराय-ए-अदल; दूसरा बाजार घोड़ों, दासों और मवेशियों के लिए था।

• व्यापारियों कीएक रजिस्ट्री रखी गई थी,जिसमें उन्हें सराय-ए-अदल में निर्दिष्ट माल की मात्रा बेचने के लिए लिखित वचन देना अनिवार्य था।

कर व्यवस्था:

• खराज – यह एक कृषि कर था जो किसानों की उपज का लगभग 50 प्रतिशत होता था। खराज वसूलने के लिए एक विशेष पद सृजित किया गया, जिसे मुस्तखराज कहा जाता था।

• बिस्वा (बीघा का 1/20 भाग) का उपयोग खेती योग्य भूमि की माप और उसकी उत्पादकता की गणना के लिए किया जाता था।

• भूमि कर का भुगतान सामान्य रूप से नकद में किया जाता था, जिससे किसान मुद्रा बाजार में प्रवेश कर सकते थे। वहीं दूसरी ओर दोआब क्षेत्र में भविष्य में अनाज की कमी के लिए अनाज पर कर वसूला जाता था।

• **अलाउद्दीन ने किसानों पर दो अतिरिक्त कर भी लगाए:**
  ◦ चराई कर (पशु चराने के लिए) और गढ़ी कर (आवास पर)।

• उसने ग्राम प्रधान का उपकर (किस्मत-ए-खूटी) समाप्त कर दिया। कला और स्थापत्यकला

• उसने अपने काल के कवियों, अमीर खुसरो और मीर हसन दहलवी का समर्थन किया।
  ◦ अमीर खुसरो को तूती-ए-हिंद (भारत का तोता) की उपाधि से नवाजा।
  ◦ अमीर खुसरो द्वारा रचित खजाइन-उल-फु तुह में अलाउद्दीन की विजयों का वर्णन है।

• **स्थापत्यकला:** उसने निम्नलिखित इमारतों का निर्माण कराया-
  ◦ **अलाई दरवाजा (1311 ई.):** दिल्ली के महरौली स्थित कुतुब परिसर में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का दक्षिणी प्रवेश द्वार।
  ◦ **सीरी किला (1303 ई.):** यह कुतुब परिसर के उत्तर में स्थित है।
  ◦ **मस्जिद जमाइत खानम:**यह निजामुद्दीन औलिया की दरगाह के परिसर के भीतर निर्मित है।

• **मृत्यु:** 1316 ई.में अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद खिलजियों का शासन धीरे-धीरे समाप्त हो गया और गाजी मलिक ने गयासुद्दीन तुगलक की उपाधि धारण कर सिंहासन पर कब्जा कर लिया।

तुगलक वंश (1320 ई. से 1413 ई.) गयासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ई.)

परिचय:

• वह तुर्कों की करौना जनजाति से संबंधित था और तुगलक वंश का संस्थापक था।

• उसने सुल्तान बनने से पहले मंगोलों से सल्तनत की रक्षा की और दीपालपुर (पाकिस्तान) में अलाउद्दीन का मुक्ता(Muqta)(गवर्नर; एक इक्ता का प्रभारी) था।

विजय:

• उसने दक्कन में सल्तनत के नियंत्रण को मजबूत करने के लिए वारंगल के काकतीय शासक के खिलाफ सेना भेजी, जिसका नेतृत्व उसके पुत्र मुहम्मद बिन तुगलक ने किया।

• 1324 ई. में, उसने स्वयं पूर्वी और दक्षिणी बंगाल पर कब्जा करने के लिए एक सफल अभियान का नेतृत्व किया।

प्रशासन:

• अमीरों के साथ सुलह की नीति अपनाई।

• वह नहरों का निर्माण कराने वाला पहला सुल्तान था।

• गयासुद्दीन तुगलक ने राहत उपाय (अतिरिक्त कर, मवेशी कर आदि से छूट) प्रदान करके किसानों और ग्राम प्रधानों का दिल जीतने की कोशिश की।

• **स्थापत्यकला:** दिल्ली में तुगलकाबाद किले का निर्माण गयासुद्दीन तुगलक ने (1321 ई. में) करवाया था।

• **साहित्य:** अमीर खुसरो की "तुगलकनामा" गयासुद्दीन तुगलक के साथ-साथ अन्य तुगलक शासकों की जीवनी है।

• **मृत्यु:** उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र उलुग खाँ/मुहम्मद बिन तुगलक गद्दी पर बैठा।

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 ई.)

परिचय: उसका शासनकाल दिल्ली सल्तनत के चरमोत्कर्ष और पतन की शुरुआत, दोनों के लिए जाना जाता है।

मोरक्को के यात्री इब्न-बतूता ने चीन में उसके दूत के रूप में कार्य किया।

प्रशासन:

• खुत और मुकद्दम (ग्राम प्रधान) की भूमिकाओं को कम करने के लिए, उसने अलाउद्दीन खिलजी की नीति को उलट दिया। उसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि राज्य को भू-राजस्व का एक बड़ा हिस्सा प्राप्त हो।

• राजस्व में राज्य की हिस्सेदारी 50% रही, लेकिन इसे मनमाने ढंग से निर्धारित किया गया था। उपज को मुद्रा में बदलने के लिए कीमतें भी मनमाने ढंग से निर्धारित की गईं।

• उसने किसानों को बेहतर फसलों की खेती करने हेतु प्रेरित करने के लिए ऋण (जिसे 'तकावी' कहा जाता था) प्रदान करके , कृषि को बढ़ावा देने वाले एक अलग विभाग “दीवान-ए-अमीर-कोही” की स्थापना की। अयोग्य और भ्रष्ट अधिकारियों के कारण यह पहल विफल रही।

• उसने योग्यता और दक्षता के आधार पर विभिन्न पृष्ठभूमियों के अमीरों को नियुक्त किया।

• **धार्मिक नीति:** उसने हिंदुओंऔर जैन विद्वानों को संरक्षण दिया, खास तौर पर जिनप्रभा सूरी (जैन) को, जो 1328 ई. में उसके दिल्ली दरबार में आए थे। उसने जैन भिक्षुओं के लिए एक नए बसदी उपाश्रय (जैन भिक्षुओं के लिए एक विश्राम गृह) के निर्माण का आदेश दिया। वह होली के त्यौहार में भाग लेने वाला पहला सुल्तान था।

मुहम्मद बिन तुगलक के प्रमुख प्रयोग:

• 1326 ई. में गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में कराधान और उपकर में वृद्धि।

• उसने दक्षिण भारत पर बेहतर नियंत्रण के लिए सबसे पहले राजधानी को दिल्ली से देवगिरि (दौलताबाद) स्थानांतरित किया लेकिन यह स्थानांतरण विनाशकारी साबित हुआ।

• उसने 1330 ई. में एक सांके तिक मुद्रा शुरू की, जो चाँदी के टंका के बराबर मूल्य के , कांस्य के सिक्के थे। यद्यपि, उसने ताँबे की मुद्रा भी शुरू की, लेकिन अंततः दोनों को वापस ले लिया (1329 ई. में) क्योंकि इसके परिणामस्वरूप जालसाजी और मुद्रास्फीति में वृद्धि हुई।

• खुरासान और इराक को जीतने के लिए खुरासान अभियान (1329 ई.) का प्रस्ताव रखा, जिसे बाद में त्याग दिया गया।

• चीनी घुसपैठ को रोकने के लिए कुमाऊँ की पहाड़ियों में कराचिल अभियान (1333 ई.) शुरू किया गया।

उसके शासनकाल के दौरान दक्षिण भारत में राज्यों का उदय:

• मदुरै (1335 ई.) जलालुद्दीन शाह के अधीन।

• विजयनगर(1336 ई.) हरिहर और बुक्का के अधीन।

• वारंगल (1336 ई.) कन्हैया के अधीन।

• बहमनी (1341-1347 ई.) हसन गंगू के अधीन। मुहम्मद बिन तुगलक जब सिंध की ओर मार्च कर रहा था तभी 1351 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। इस पर बदायूँनी ने टिप्पणी की कि "राजा को अपनी प्रजा से और प्रजा को अपने राजा से मुक्ति मिल गई।" फिरोज शाह तुगलक (1351-1388 ई.)

विजय:

• फिरोज शाह ने साम्राज्य विस्तार के लिए कोई युद्ध नहीं छेड़ा लेकिन, उसने विद्रोहों को कुचलकर अपना अधिकार कायम रखा। उसके शासनकाल के दौरान दो मंगोल आक्रमणों को विफल कर दिया गया।

• उसने दक्षिण भारत और दक्कन पर प्रभुत्व स्थापित करने से बचने का प्रयास किया।

प्रशासन:

• उसने सेना और अमीरों (इक्ता सहित) के लिए वंशानुगत सिद्धांतों को लागू किया, उसने पुत्रों, दामादों अथवा गुलामों को उत्तराधिकार की अनुमति दी, उसने वफादारी सुनिश्चित की और विद्रोह को रोका।

• सैनिकों को नकद भुगतान नहीं किया जाता था बल्कि गाँवों का भू-राजस्व सौंपा जाता था (मुहम्मद बिन तुगलक की नीति के विपरीत)।

• वकील-ए-दर पद का सृजन किया जो अदालत की मर्यादा और अमीरों की प्राथमिकता के लिए जिम्मेदार था।

• उसने एक लोकनिर्माण विभाग बनाया, जोफतेहाबाद, हिसार, फिरोजपुर, जौनपुर और फिरोजाबाद शहरों में निर्माण कार्य के लिए जिम्मेदार था। इसके अतिरिक्त उसने:

  ◦ उसने पाँच नहरों का निर्माण कराया जिनमें सतलज नदी से हांसी तक एक नहर और दूसरी यमुना नहर शामिल थी।

  ◦ उसके शासनकाल के दौरान अशोक के दो स्तंभ दिल्ली लाए गए, एक मेरठ से और दूसरा टोपारा से।

• मुक्तियों (प्रांतीय गवर्नरों) को पिछले शासकों के शासनकाल में कठोर ऑडिट का सामना करना पड़ा, लेकिन फिरोज ने इन उपायों को आसान बना दिया।

• भारत में फलों की गुणवत्ता में सुधार को प्राथमिकता दी गई और दिल्ली के पास 1,200 बगीचे लगाए गए।

• बड़ी संख्या में गुलाम की नियुक्ति की और गुलामों के लिए एक विभाग (दीवान-ए-बंदगान) की स्थापना की

  ◦ गुलाम हस्तशिल्प का काम करते थे।

  ◦ गुलाम अंगरक्षकों के रूप में काम करते थे तथा व्यक्तिगत सेवाएँ प्रदान करते थे।

• उसने गरीबों के लिए अस्पतालों की स्थापना की जिन्हें "दारुल-शफा" के नाम से जाना जाता था।

  ◦ दीवान-ए-खैरात, गरीब लड़कियों की शादी में मदद करता था।

• **उसने दो नए सिक्के चलाए:**

  ◦ अद्धा (एक जीतल के 50% के बराबर) और बिख (एक जीतल के 25% के बराबर)।

धर्म:

• धर्मशास्त्रियों को प्रसन्न करने के लिए अनेक धर्मशास्त्रियों को उच्च पदों पर नियुक्त किया गया। उन्होंने न्यायपालिका और शिक्षा प्रणाली पर नियंत्रण बनाए रखा।

• फिरोज शाह तुगलक ने जजिया को एक अलग कर के रूप में लगाया गया था। यह पहले भू-राजस्व के साथ ही एकत्र किया जाता था।

कराधान नीति

• फिरोजशाह तुगलक ने उसने इस्लामी कानून द्वारा स्वीकृत चार कर लगाए: खराज (भूमि कर); खम्स (युद्ध में लूटी गई संपत्ति का 1/5 भाग); जजिया (हिंदुओं पर धार्मिक कर); जकात (मुसलमानों की आय का 2½ प्रतिशत, जो मुस्लिम प्रजा के कल्याण और उनके धर्म के लिए उपयोग किया जाता था)।

• वह शर्ब (सिंचाई कर) लगाने वाला पहला सुल्तान बना।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: मुहम्मद बिन तुगलक के प्रमुख प्रयोग

1. मुहम्मद बिन तुगलक के प्रमुख प्रयोग	**2. प्रशासन**
3. कराधान नीति	**4. धार्मिक नीति**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मुहम्मद बिन तुगलक के प्रमुख प्रयोग

मुख्य परीक्षा दृष्टि: वह शर्ब (सिंचाई कर) लगाने वाला पहला सुल्तान बना।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: मुहम्मद बिन तुगलक के प्रमुख प्रयोग • प्रशासन • कराधान नीति • धार्मिक नीति • विजय | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** *1328, 1326, 1330, 1329, 1333*

स्थापत्यकला और साहित्य

• उसने अपनी आत्मकथा 'फतूहात-ए-फिरोजशाही' (फारसी) लिखी।

• जियाउद्दीन बरनी ने 'फतवा-ए-जहांदारी' और 'तारीख-ए-फिरोजशाही' लिखी।

• फिरोज तुगलक पहला शासक था जिसने हिंदू धार्मिक कृतियों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद शुरू करवाया।

• फिरोज शाह तुगलक ने अपने चचेरे भाई मुहम्मद बिन तुगलक की याद में जौनपुर शहर की स्थापना की। मुहम्मद बिन तुगलक को जौना खाँ के नाम से भी जाना जाता था।

• फिरोज शाह तुगलक ने दिल्ली में कोटला किला बनवाया।

• **मृत्यु:** फिरोज शाह तुगलक की मृत्यु 1388 ई. में हुई। फिरोज शाह तुगलक का मकबरा नई दिल्ली में हौज खास परिसर में स्थित है।

• फिरोज शाह तुगलक के बाद के शासक कमजोर थे। तैमूर (मंगोल सरदार) ने 1398 ई. में उत्तरी भारत को लूटा। भारत छोड़ते समय उसने खिज्र खाँ को मुल्तान, लाहौर और दीपालपुर का गवर्नर नियुक्त किया।

सैय्यद वंश (1414 ई.-1451 ई.)

• खिज्र खाँ (1414-1421 ई.) ने दिल्ली पर कब्जा करके सैय्यद वंश की स्थापना की। उसके और उसके उत्तराधिकारियों के शासनकाल में कटेहर, बदायूँ, इटावा और अन्य क्षेत्रों में विद्रोहों को दबाने के प्रयासों के साथ-साथ जौनपुर के शर्की सुल्तानों के साथ संघर्ष देखने को मिला।

• 1421 ई. में उसकी मृत्यु के बाद मुबारक शाह (1421-1433 ई.), मुहम्मद शाह (1434-1443 ई.), और अलाउद्दीन आलम शाह (1445-1451 ई.) सिंहासन पर बैठे जो बहुत प्रभावशाली शासक नहीं थे। बाद में, बहलोल लोदी (लाहौर का गवर्नर) ने सिंहासन पर कब्जा कर लिया।

महत्त्वपूर्ण बिंदु:

• सैय्यद नुकीली टोपी (कुलाह) पहनते थे और उन्हें 'कुलाह-दारान' के नाम से जाना जाता था। *[यूपीएससी 2022]*

• याह्या बिन अहमद सरहिंदी ने उसके शासनकाल के दौरान "तारीख-ए-मुबारक शाही" लिखी। लोदी वंश (1451-1526 ई.) लोदी वंश सल्तनत काल का अंतिम शासक वंश और अफगानों के नेतृत्वाला पहला वंश था।

बहलोल लोदी (1451-1489 ई.)

• बहलोल लोदी वंश की स्थापना की और उत्तर भारत के एक विशाल क्षेत्र को अपने नियंत्रण में लाने में सफल रहा। उसने जौनपुर साम्राज्य पर कब्जा कर लिया।

• अमीरों को पर्याप्त स्थानीय स्वायत्ता प्राप्त थी औरवे मुख्य रूप से सैन्य दायित्वों के माध्यम से उससे जुड़े थे। इसके कारण, बहलोल लोदी ने शाही अधिकार का प्रदर्शन नहीं किया और खुले दरबारों से उसने परहेज किया। उसने अपने अफगान अमीरों को मसनद-ए-अली कहा।

• मालवा सुल्तान के खिलाफ मुहम्मद शाह की सफलतापूर्वक मदद करने के बाद उसे खान-ए-खाना की उपाधि दी गई थी।

सिकंदर लोदी (1489-1517 ई.)

• वह बहलोल लोदी का पुत्र था। उसके शासनकाल में उत्तर भारत में लोदी साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर था।

• 16वीं शताब्दी की शुरुआत तक लोदी का प्रभाव राजपूताना और मालवा तक फैल गया।

• उसने बहलोल लोदी के विपरीत अमीरों को अपने अधीन कर लिया और खुला दरबार लगाया।

• वह गुजरात के महमूद बेगड़ा और मेवाड़ के राणा सांगा, दोनों के समकालीन था।

प्रशासन:

• उसने अनाज पर लगाए जाने वाले 'जकात' कर को समाप्त कर दिया।

• माप की एक नई इकाई की शुरुआत की गई जिसे गज-ए-सिकंदरी कहा जाता था।

• गैर-मुसलमानों पर जजिया कर पुनः लगाया।

• सिकंदर लोदी ने आगरा शहर की स्थापना की और 1506 ई. में राजधानी को दिल्ली से आगरा स्थानांतरित किया।

• वह एक प्रसिद्ध कवि था और गुलरुखी उपनाम से कविताएँ लिखता था। इब्राहीम लोदी (1517-1526 ई.)

• इब्राहीम लोदी दिल्ली में लोदी वंश का अंतिम सुल्तान था।

• उत्तराधिकार विवाद के कारण साम्राज्य का विभाजन हुआ। इससे केंद्रीय शक्ति कमजोर हो गई और आंतरिक संघर्ष उत्पन्न हो गया।

• पंजाब के गवर्नर दौलत खाँ लोदी ने इब्राहिम लोदी को अपदस्थ करने के लिए बाबर को आमंत्रित किया। बाबर ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और पानीपत के प्रथम युद्ध (1526 ई.) में इब्राहिम लोदी को हरा दिया। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत का अंत हो गया।

दिल्ली सल्तनत का जन-जीवन

के द्रीय प्रशासन: प्रशासन में सुल्तान की मदद करने के लिए मंत्रिपरिषद (मजलिस-ए-खलवत) होती थी। मंत्रियों को वह व्यक्तिगत रूप से चुनता था और वे उसके विवेकाधिकार के तहत कार्य करते थे।

सुल्तान:

• सल्तनत ने भारत में तुर्क -अफगान प्रशासनिक प्रणाली की स्थापना की।

• सुल्तान स्वयं को बगदाद के खलीफा का प्रतिनिधि मानते थे और अपनी इबादतों (खुतबा) में खलीफा का नाम शामिल करते थे और अपनी मुद्रा पर भी उनका नाम अंकित करते थे।

• स्पष्ट उत्तराधिकार नीति के अभाव के कारण, सुल्तान की मृत्यु के बाद अस्थिरता और सत्ता संघर्ष देखा गया।

नायब या वली z सबसे प्रभावशालीपदथा।यहविस्तारितअधिकार के साथ सभी विभागों का निरीक्षण करता था।

दीवान-ए-वजीरत z वित्त विभाग का प्रमुख होता था।

दीवान-ए-आरिज z रक्षा मंत्री,जो सैन्य मामलों की देखरेख करता था वहीं दूसरी ओर आरिज-ए-मुमालिक विभाग का प्रमुख होता था, जो सैनिकों की भर्ती के लिए जिम्मेदार होता था।

दीवान-ए-रिसालत

• मुख्य सद्र इसका प्रमुख होता था; यह विभाग धार्मिक मामलों का प्रबंधन करता था और मस्जिदों, कब्रों और मदरसों के निर्माण एवं रखरखाव के लिए संसाधन आवंटित करता था।

काजी z मुख्य काजी दीवानी मामलों में शरिया को लागू करने वाले न्यायिक विभाग का प्रमुख होता था।

• आपराधिक कानून सुल्तान द्वारा जारी नियमों पर आधारित था। हिंदू अपने व्यक्तिगत कानूनों का पालन करते थे और मुद्दों का समाधान ग्राम पंचायतों द्वारा किया जाता था।

दीवान-ए-इंशा z शासक और अधिकारियों के बीच सभी प्रकार के संचार को संभालते हुए पत्राचार का प्रबंधन करता था।

वकील-ए-दर z दरबार की मर्यादा बनाए रखने के लिए जिम्मेदार था।

बरीद z गुप्तचर

कारखाना z उन्होंने सुल्तान की जरूरतों को पूरा किया, रेशम तथा सोने एवं चाँदी के बर्तन जैसी शान-शौकत की वस्तुओं का उत्पादन किया और दुर्लभ वस्तुओं का भंडारण किया।

दिल्ली सल्तनत में स्थानीय प्रशासन: — क्षेत्र द्वारा शासित

इक्ता (प्रांत) मुक्ती (राज्यपाल) शिक (जिले) शिकदार परगना (ब्लॉक) आमिल (राजस्व एकत्र करने के लिए) [यूपीएससी 2019]

गाँव (प्रशासन की मूल इकाई) मुकद्दम या चौधरी अर्थव्यवस्था: सल्तनत की आय के लिए भूमि राजस्व महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि एक बड़ी आबादी कृषि कार्य से जुड़ी थी। कुप्रबंधन के कारण कृषि का इष्टतम लाभ नहीं मिल पाया, जिसकी भरपाई उनके विजय अभियानों के दौरान की गई लूट और खजाने का उपयोग करके की गई थी।

- **भूमि वर्गीकरण (तीन प्रकार थे):**
  - **इक्ता भूमि:** वह भूमि जो अधिकारियों को उनकी सेवाओं के लिए वेतन के बदले इक्ता के रूप में प्राप्त होती थी।
  - **खालिसा भूमि:** सीधे सुल्तान द्वारा नियंत्रित होती थी, इससे शाही दरबार और शाही घरेलू खर्चों के लिए निर्धारित राजस्व प्राप्त होता था।
  - **इनाम भूमि:** धार्मिक नेताओं या संस्थाओं को अनुदान में दी गई भूमि।

• **कृषि:** खाद्य फसलें, नकदी फसलें, फल, सब्जियाँ और मसालों की खेती की जाती थी (इब्न बतूता का वृत्तांत), जिसमें रेशम उत्पादन भी शामिल था, जिसमें फसल चक्र, दोहरी फसल, तीन फसलें उगाना और फलदार वृक्षों की कलम काटने जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता था। पानी निकालने के लिए रहट जैसे कृत्रिम उपकरणों का उपयोग किया जाता था।

• भू-राजस्व उपज का एक-तिहाई से आधे तक होता था।

• **व्यापार:** साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण से बेहतर संचार और स्थिर मुद्रा प्रणाली के साथ-साथ व्यापार में वृद्धि हुई। कपास, कपड़ा और रेशम उद्योगों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

• बंगाल और गुजरात उच्च गुणवत्ता वाले कपड़ों के लिए जाने जाते थे। भारतीय वस्त्र चीन में लोकप्रिय थे। ध्ययातव्य है कि गुजरात कपड़ा, स्वर्ण और चाँदी के काम में उत्कृष्ट था। सोनारगाँव (बांग्लादेश) कच्चे रेशम और मलमल के लिए प्रसिद्ध था।

तुर्कों ने नई तकनीकेंपेश कीं जैसे:

- कागज का निर्माण (चीन से सीखा)
- लोहे की रकाब और कवच का उपयोग
- चरखे की शुरुआत
- धातुकर्म उद्योग का विकास संचार इब्न बतूता ने दो प्रकार की डाक प्रणाली का वर्णन किया है :
- घोड़ा डाक (उलाक), हर चार मील की दूरी पर तैनात शाही घोड़ों द्वारा संचालित की जाती थी।
- पैदल डाक (दावा) एक-तिहाई मील की दूरी पर थी।
  - यात्रियों की सुविधा के लिए राजमार्गों के किनारे सराय नामक विश्राम गृह बनाए गए थे।

सामाजिक जीवन:

दिल्ली सल्तनत के दौरान सामाजिक जीवन इस्लामी, फारसी, मध्य एशियाई और भारतीय सांस्कृतिक तत्त्वों के मिश्रण से प्रभावित था।

• **महिलाएँ:** महिलाओं की अधीनस्थ स्थिति - सती प्रथा; पर्दा प्रथा जिसने महिलाओं में अकेलेपन को बढ़ाया।

• **विभाजन:** हिंदू समाज में जाति व्यवस्था; मुस्लिम समाज में जातीय और नस्लीय समूहों (तुर्क , ईरानी, अफगान और भारतीय मुस्लिम) ने अलग-अलग समूहों का निर्माण किया, जिनके बीच अंतर्विवाह बहुत सीमित थे।

• **धार्मिक भेदभाव:** मुस्लिम अमीरों के पास उच्च पद थे वहीं दूसरी ओर हिंदू अमीरों को शायद ही कभी महत्त्वपूर्ण पद मिले। हिंदुओं को "जिम्मी" या संरक्षित लोग माना जाता था और उन्हें जजिया कर देना पड़ता था।

• **गुलामी:** बाजारों में पुरुष और महिला गुलामों का व्यापार किया जाता था और उनका घरेलू कामों एवं कुशल श्रम सहित कई प्रकार के अन्य कार्यों के लिए उपयोग किया जाता था।

स्थापत्यकला:

भारत में दिल्ली सल्तनत काल के दौरान कला और स्थापत्यकला में इस्लामी, फारसी, मध्य एशियाई और भारतीय प्रभावों का एक अनूठा मिश्रण देखने को मिलता है।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: दीवान-ए-रिसालत



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — दीवान-ए-रिसालत

मुख्य परीक्षा दृष्टि: भारत में दिल्ली सल्तनत काल के दौरान कला और स्थापत्यकला में इस्लामी, फारसी, मध्य एशियाई और भारतीय प्रभावों का एक अनूठा मिश्रण देखने को मिलता है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: दीवान-ए-रिसालत • बरीद z गुप्तचर • दिल्ली सल्तनत में स्थानीय प्रशासन • क्षेत्र द्वारा शासित • तुर्कों ने नई तकनीकेंपेश कीं जैसे | **प्रमुख तिथियाँ/ कालखंड:** 2019

स्थापत्यकला संबंधी तत्त्वों में निम्नलिखित सम्मिलित थे:

• मेहराब, गुंबद, ऊँची मीनारें और सजावटी अरबी लिपि। मेहराबों और गुंबदों को रोमन स्थापत्यकाल से लिया गया था। यद्यपि, भारतीयों को मेहराबों और गुंबदों के बारे में पता था, लेकिन उन्होंने उनका बड़े पैमाने पर उपयोग नहीं किया।

• पट्टी और शहतीर निर्माण विधि।

• तुर्कों ने ज्यामितीय और पुष्प डिजाइन (अरबस्क) और कुरानिक उत्कीर्णलेखों को शामिल किया।

तुगलक स्थापत्यकला में निम्नलिखित शामिल थे:

• ढलान युक्त दीवारें, मेहराब, सरदल (चौखट) और शहतीर सिद्धांतों का संयोजन।

• भूरे बलुआ पत्थर का उपयोग और न्यूनतम सजावट। लोदी स्थापत्यकला में निम्नलिखित सम्मिलित थे:

• ऊँची इमारतें, विशेषकर ऊँचे चबूतरों पर मकबरे। कुछ मकबरे बगीचों के बीच स्थित, जैसे- दिल्ली में लोदी गार्डन।

• दोहरे गुंबद लोदी स्थापत्यकला की एक विशिष्ट विशेषता थे, जैसे कि सिकंदर लोदी का मकबरा।

संगीत: अमीर खुसरो:

- तबला औरसितार जैसे नवीन संगीत वाद्यंत्रों का आविष्कार किया।
- उन्हे "भारत का तोता" या "तूती-ए-हिंद" भी कहा जाता है।
- उन्होंने नए राग और कव्वालियाँ बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई ।
- उन्होंने "तुगलकनामा" का संकलन भी किया और कश्मीर को धरती पर स्वर्ग बताया।

• सूफी प्रथाएँ, विशेषकर संगीतमय समा, संगीत प्रचार में महत्त्वपूर्ण थीं। पीर भोदन(Pir Bhodan) इस युग का प्रसिद्ध संगीतकार था। इस काल के दौरान, कुछ विशिष्ट संगीत वाद्यंत्रों जैसे सारंगी और रबाब का आविष्कार किया गया।

• ग्वालियर के राजा मान सिंह तोमर ने शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली को सुदृढ़ किया।

• फिरोज तुगलक के संरक्षण में राग दर्पण का फारसी में अनुवाद किया गया।

• जलालुद्दीन खिलजी के शासनकाल के दौरान नुसरत खातून (संगीतकार) और मिहर अफरोज (नर्तक) जैसे कलाकारों के कारण, नृत्य भी एक महत्त्वपूर्ण दरबारी गतिविधि बन गई।

साहित्य

आधिकारिक भाषा के रूप में फारसी की स्थापना के कारण फारसी और भारतीय प्रभावों का साहित्यिक मिश्रण, इसकी प्रमुख विशेषता थी। इस काल में बंगाली, गुजराती, मराठी और तेलुगु जैसी क्षेत्रीय भाषाएँ भी विकसित हुईं।

विद्वान कृतियाँ — जियाउद्दीन — बरनी

• फतवा-ए-जहाँदारी - फारसी गद्य लेखन की कला का उत्कृष्ट उदाहरण है।

• तारीख-ए-फिरोजशाही - इसमें तुगलक वंश का ऐतिहासिक विवरण है।

मिन्हाज-उस-सिराज

तबकात-ए-नासिरी- 1260 ई. तक का मुस्लिम वंशों का एक व्यापक इतिहास।

जिया नक्शबी z वे संस्कृत कहानियों का फारसी में अनुवाद करने में अग्रणी थे।

• उन्होंने तोते की कहानियाँ 'तूतीनामा' लिखी, जो लघु कथाओं की एक शृंखला है।

मालाधर बसु ये एक बंगाली कवि थे, जिन्होंने श्री-कृष्ण विजय लिखी। इन्हें बंगाली सुल्तानों से संरक्षण प्राप्त हुआ तथा इन्हें गुणराज खान की उपाधि दी गई।

फरिश्ता गुलशन-ए-इब्राहीमी या तारीख-ए-फरिश्ता - इसमें गजनवी शासक महमूद (11वीं सदी की शुरुआत) के समय से लेकर फरिश्ता के संरक्षक, बीजापुर के सुल्तान इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय के समय तक की घटनाओं और वंशों का एक पारंपरिक विवरण दिया गया है।

लेखक-पुस्तकें (मुगल सल्तनत काल में)

• **हसन निजामी:** ताज-उल-मासिर

• **चंदबरदाई:** पृथ्वीराज रासो

• **कल्हण:** राजतरंगिणी

• **राजा मान सिंह तोमर:** मान कौतूहल नुसरत शाह ने महाभारत का बंगाली में अनुवाद करने में मदद की।

बहमनी और विजयनगर साम्राज्य परिचय 14वीं शताब्दी की शुरुआत में दक्कन और दक्षिण भारत, चार राज्यों में विभाजित था:

• देवगिरि के यादव (पश्चिमी दक्कन या वर्तमान महाराष्ट्र)

• द्वारसमुद्र के होयसल (कर्नाटक)

• वारंगल के काकतीय (वर्तमान तेलंगाना का पूर्वी भाग)

• मदुरै के पाण्ड्य (दक्षिणी तमिलनाडु)

  ◦ अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल के दौरान इन राज्यों को 1304 ई. और 1310 ई. में जनरल मलिक काफूर द्वारा पराजित किया गया था।

  ◦ मुहम्मद तुगलक (1325-51 ई.) द्वारा अपनी राजधानी को देवगिरि (दौलताबाद) में स्थानांतरित करने का प्रयास असफल रहा, जिसके कारण जब वह दिल्ली वापस लौटा तो दक्षिणी अधीनस्थ राज्यों ने स्वतंत्रता की माँग की।

नए साम्राज्यों का उदय:

1336 ई. में संगम भाइयों हरिहर और बुक्का ने तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित विजयनगर (वर्तमान हम्पी) में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की।

1345 ई. में जफर खाँ ने सल्तनत से स्वतंत्रता की घोषणा की और बहमन शाह की उपाधि धारण कर बहमनी वंश की शुरुआत की।

बहमनी साम्राज्य (1347-1527 ई.) विभिन्न शासक और उनके योगदान बहमन शाह (1347-1358 ई.)

- **परिचय:** बहमन शाह (जिसे जफर खाँ और हसन गंगू के नाम से भी जाना जाता है) ने 1345 ई. में देवगिरि में स्वतंत्रता की घोषणा कर दी और बाद में अपनी राजधानी गुलबर्गा (उत्तरी कर्नाटक) में स्थानांतरित कर दी।
- उसे उड़ीसा (जाजनगर) और विजयनगर के शासकों से चुनौतियों का सामना करना पड़ा। सफल अभियानों के बाद, उसने सिक्कों पर खुद को दूसरे सिकंदर के रूप में चित्रित करवाया।
- उसने प्रशासनिक रूप सेदिल्ली सल्तनत की संरचना को अपनाया, अपने क्षेत्र को चार प्रांतों (गुलबर्गा, दौलताबाद, बीदर और बरार) में विभाजित किया, जिन्हें 'तरफ' कहा जाता था, प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक गवर्नर नियुक्त किया गया जो प्रशासन, राजस्व संग्रह और सैन्य कमान के लिए जिम्मेदार था।

मुहम्मद प्रथम (1358-1375 ई.)

- इसने 1363 ई. में वारंगल पर आक्रमण किया तथा गोलकुंडा के किले और फिरोजा सिंहासन पर कब्जा कर लिया। बाद में फिरोजा सिंहासन ने बहमनी राजाओं के राजसिंहासन का रूप ग्रहण कर लिया।
- उसने एक ऐसी शासन प्रणाली स्थापित की जिसका पालन बाद के सभी शासकों के साथ-साथ मराठों ने भी किया।
- **उसने आठ राज्य मंत्रियों की एक परिषद नियुक्त की:**
  - **वकील-ए-सल्तनत:** राज्य के लेफ्टिनेंट और निकटस्थ अधीनस्थ।
  - **वजीर-ए-कुल:** वह अन्य सभी मंत्रियों के कार्यों का पर्यवेक्षण करता था।
  - **अमीर-ए-जुमला:** वित्त मंत्री
  - **वसीर-ए-अशरफ:** विदेश मंत्री और समारोहों का प्रमुख।
  - **नाजीर:** सहायक वित्त मंत्री।
  - **पेशवा:** राज्य के लेफ्टिनेंट के साथ संबद्ध।
  - **कोतवाल:** राजधानी में पुलिस प्रमुख और नगर मजिस्ट्रेट।
  - **सद्र-ए-जहाँ:** मुख्य न्यायाधीश तथा धार्मिक कार्य औरबंदोबस्त मंत्री।
- इसके अतिरिक्त, उसने राजमार्ग पर होने वाली लूटपाट के दमन के लिए कई उपाय किए और गुलबर्गा में दो मस्जिदें भी बनवाईं।
- सुल्तानों ने अक्सर दक्षिण के राज्यों को हड़पने के उद्देश्य से लगभग एक शताब्दी तक, दक्षिण में एक के बाद एक कई युद्ध किए, जिससे उन्हें कोई अधिक लाभ नहीं हुआ। 1425 ई. में इन्होंने वारंगल पर कब्जा कर लिया, लेकिन उड़ीसा के शासकों ने पूर्व की ओर आगे बढ़ने से रोक दिया। अहमद वली शाह ने 1429 ई. में राजधानी को गुलबर्गा से बीदर स्थानांतरित कर दिया।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: नए साम्राज्यों का उदय

1304	1310	1325	1336
नए साम्राज्यों का उदय	वकील-ए-सल्तनत	वजीर-ए-कुल	अमीर-ए-जुमला

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — नए साम्राज्यों का उदय

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इसके अतिरिक्त, उसने राजमार्ग पर होने वाली लूटपाट के दमन के लिए कई उपाय किए और गुलबर्गा में दो मस्जिदें भी बनवाईं।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: नए साम्राज्यों का उदय • वकील-ए-सल्तनत • वजीर-ए-कुल • अमीर-ए-जुमला • वसीर-ए-अशरफ | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1304, 1310, 1325, 1336, 1345

IUC विशेष स्मृति सूत्र #4: बाबर द्वारा लड़े गए 4 प्रमुख युद्ध (1526-1529)

ट्रिक: '26 में पानी पिया, 27 में खाना खाया, 28 में चल दिया, 29 में घर गया और 30 में मर गया' — पानीपत प्रथम (1526, इब्राहिम लोदी), खानवा (1527, राणा सांगा — गाजी उपाधि), चंदेरी (1528, मेदिनी राय), घाघरा (1529, अफगान)।

मुहम्मद तृतीय (1463-1482 ई.): मुहम्मद गवाँ उसका लेफ्टिनेंट (प्रधान मंत्री) था जिसने बहमनी साम्राज्य के विकास में योगदान दिया।

मुहम्मद गवाँ:

- मुहम्मद गवाँ ने विजयनगर राजाओं के खिलाफ बेलगाँव का युद्ध, बारूद का उपयोग करके युद्ध जीता।
- **प्रशासनिक सुधार:**
  - बहमनी सल्तनत के मौजूदा चार प्रांतों को आठ प्रांतों में विभाजित किया।
  - शाही अधिकारियों को भुगतान के रूप में जमींदारी दी गई और उन्हें उनकी आय एवं व्यय के लिए जवाबदेह ठहराया गया।
- गवाँ के प्रशासनिक सुधारों के कारण दक्कनी मुसलमानों और परदेसी (विदेशी) मुसलमानों के बीच टकराव बढ़ गया।
- **सल्तनत धीरे-धीरे चार स्वतंत्र राज्यों:** बीजापुर, अहमदनगर, बरार और गोलकुंडा में विभाजित हो गई। इसके अतिरिक्त, बहमनी सुल्तान ने एक कठपुतली के रूपमें बीदरपर शासन किया, जो पाँचवाँ स्वतंत्र राज्य बन गया।
- बीदर और बरार के विलय के कारण, बीजापुर की ताकत बढ़ गई।
- अहमदनगर और गोलकुंडा ने शुरू में स्वतंत्र रूप सेकार्य किया लेकिन बाद में 1565 ई.में बीजापुर के साथ मिलकर विजयनगर के विरुद्ध तालीकोटा के युद्ध (या राक्षस-तांगड़ी का युद्ध) में विजयनगर को पराजित कर दिया। इसके बाद, मुगल साम्राज्य ने धीरे-धीरे एक सदी के ही भीतर सम्पूर्ण सल्तनत को अपने अधीन कर लिया।

अन्य संबंधित तथ्य — राजवंश शहर संस्थापक — आदिल शाही बीजापुर यूसुफ आदिल शाह — कुतुब शाही गोलकुंडा कुली कुतुब शाह — निजाम शाही अहमदनगर मलिक अहमद — शर्की शाही जौनपुर मलिक सरवर

इब्राहीम आदिल शाह-द्वितीय (1580-1627 ई.)

- वह बीजापुर का शासक था।
- वह एक अच्छा प्रशासक, कवि, कलाकार व कला संरक्षक था।
- उसने दक्खिनी में 'किताब-ए-नौरस' पुस्तक भी लिखी।
- धर्मनिरपेक्षता में विश्वास के कारण उन्हें मुस्लिम समुदाय द्वारा 'जगदगुरु' की उपाधि दी गई थी।

गोल गुंबद कर्नाटक के बीजापुर जिले में स्थित है, इसे दुनिया का सबसे बड़ा गुंबद कहा जाता है। यह आदिल शाही राजवंश के सातवें सुल्तान मुहम्मद आदिल शाह (1626-1656 ई.) का मकबरा है।

गोलकुंडा का किला

- इस किले को काकतीय राजवंश के राजा कृष्ण देव द्वारा मिट्टी के किले के रूप में निर्मित किया गया था।
- इस किले को 1495-1496 ई. के दौरान जागीर (भूमि अनुदान) के रूप में सुल्तान कुली कुतुब खाँ को सौंप दिया गया था।
  - उन्होंने मिट्टी के किले का पुनर्निर्माण किया और उसे ग्रेनाइट के किले में बदल दिया तथा उस स्थान का नाम मुहम्मद नगर रखा।
- कुतुब शाही राजवंश ने उस पर कब्जा कर लिया और गोलकुंडा को अपनी राजधानी बनाया।
  - मोहम्मद कुली कुतुब शाह ने गोलकुंडा किले की भव्यता को और बढ़ाया।
  - इस किले में कुतुब शाही वंश की कब्रें हैं।
- 17वीं शताब्दी तक गोलकुंडा 'कोहिनूर' हीरे के लिए प्रसिद्ध था।
- यह किला अपनी ध्वनिक वास्तुकला के लिए लोकप्रिय है, इसका उच्चतम बिंदु बाल हिसार है।
- फतह दरवाजा (या विजय द्वार) किले का प्रवेश द्वार है।
- औरंगजेब द्वारा 1687 ई. में गोलकोंडा किले की घेराबंदी आठ महीने तक चली, लेकिन विश्वासघात के कारण उसका पतन हो गया।

विजयनगर साम्राज्य (1336-1650 ई.) (कर्नाटक साम्राज्य) विजयनगर साम्राज्य की जानकारी देने वाले विभिन्न स्त्रोत स्रोत: साहित्यिक स्रोत:

- **मनुचरित्रम् (तेलुगु, अल्लासानी पेद्दना कृत):** मनु की कहानी; इसमें विजयनगर साम्राज्य की सामाजिक स्थिति विशेषकर जाति व्यवस्था का विवरण है।

- **सलु वभ्युदयम् (राजनाथ डिंडिमा कृत):** सालुवा नरसिंह के युद्धों पर कविताएँ।
- **रायवाचकमू (तेलुगु):** यह नायकों और उनके संरक्षक राज्य, विजयनगर के संबंधों पर प्रकाश डालता है।

विदेशी यात्रियों का विवरण: — यात्री मूल देश — जिसके शासनकाल

के दौरान यात्रा की इब्न बतूता (1333-45 ई.) मोरक्को हरिहर प्रथम निकोलो द कोंटी (1420-21 ई.) इटली देवराय प्रथम अब्दुर रज्जाक (1443-45 ई.) फारस देवराय द्वितीय अफानसी निकितिन (1470-74 ई.) रूस मुहम्मद शाह तृतीय (बहमनी) दुआर्ते बारबोसा डोमिंगो पेस (1520 ई.) पुर्तगाल कृष्णदेव राय फर्नाओ नुनिज (1535-37 ई.) पुर्तगाल अच्युत देवराय

- **पुरालेख:** कन्नड़, तमिल, तेलुगु व संस्कृत में ताम्रपत्र अभिलेख।
- **मुद्राशास्त्रीय साक्ष्य:** कृष्णदेव राय के सोने के सिक्के , जिन्हें वराह सिक्के भी कहा जाता है (जिन्हें तमिल में पोन औरकन्नड़ में होन्नू भीकहा जाता है)।

उत्पत्ति और विस्तार

- चार राजवंशों ने विजयनगर साम्राज्य पर तीन शताब्दियों से अधिक समय तक शासन किया:

राजवंश संस्थापक समय

संगम हरिहर प्रथम 1336-1485 ई.

सलुव सलुव नरसिंह 1485-1505 ई.

तुलुव वीर नरसिंह 1505-1570 ई.

अराविडु तिरुमल 1570-1650 ई.

- हरिहर और बुक्का ने होयसल शासकों से अपनी स्वतंत्रता का दावा करने के बाद (बल्लाल तृतीय की मृत्यु के बाद) 1336 ई. में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की।
- माना जाता है कि प्रतिष्ठित शैव संत और संस्कृत विद्वान विद्यारण्य ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना में निर्णायक भूमिका निभाई थी।
- प्रारंभ में, राजधानी अनेगोंडी के पासथी (तुंगभद्रा के उत्तरी तट पर), बादमें होयसल शहर, होसापट्टन (हम्पी के पास; तुंगभद्रा के दक्षिणी तट पर) में स्थानांतरित हो गयी, और इसका नाम बदलकर विजयनगर कर दिया गया (विजय का शहर)। हम्पी का नाम स्थानीय देवी पम्पादेवी के नाम पर पड़ा।

हम्पी को 1986 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।

- हम्पी के खंडहरों की खोज 1800 ई. मेंकर्नल कॉलिन मैकेंजी द्वारा की गई थी। बाद में, 1815 ई. में उन्हें भारत का पहला महासर्वेक्षक नियुक्त किया गया।
- विरुपाक्ष, जिसे शिव के एक रूप में मान्यता प्राप्त है, राज्य का संरक्षक देवता था।
  - सभी शाही आदेशों पर सामान्य रूप से कन्नड़ लिपि में “श्री विरुपाक्ष” के हस्ताक्षर होते थे।
  - शासकों ने "हिंदू सुरत्राण" की उपाधि के माध्यम से देवताओं के साथ अपने मजबूत संबंधों का प्रदर्शन किया। यह अरबी शब्द सुल्तान का संस्कृतीकरण था।
- उन्होंने अपने शाही प्रतीक के रूप में चालुक्यों के प्रतीक, सूअर या वराह को अपनाया।

विजयनगर की लोकप्रिय परंपराओं में, दक्कन के सुल्तानों को अश्वपति कहा जाता था जिसका अर्थ घोड़ों का स्वामी है; राय का अर्थ नरपति, या मनुष्यों के स्वामी हैं।

- सैन्य गतिविधियों के माध्यम से, कई क्षेत्रों को अपने साम्राज्य में मिला लिया गया:
  - कर्नाटक में होयसल राज्य का संपूर्ण क्षेत्र।
  - तटीय आंध्र (उड़ीसा के गजपति साम्राज्य और विजयनगर साम्राज्य के बीच सत्ता संघर्ष था)।
  - तोंडाई-मंडलम (उत्तरी तमिलनाडु और दक्षिणी आंध्र का क्षेत्र); बुक्का प्रथम के पुत्र राजकुमार कुमार कम्पाना ने इस क्षेत्र को जीता। उसने मदुरै के सुल्तान को भी पराजित कर दिया और 1370 ई. के आस-पास सल्तनत का अंत कर दिया, जैसा कि कंपाना की पत्नी गंगादेवी द्वारा रचित संस्कृत कृति मदुरा-विजयम में वर्णित है।
  - 1500 ई. तक मदुरै सहित पांड्य क्षेत्र, विजयनगर से स्वतंत्र था। कावेरी डेल्टा तक केवल उत्तरी और मध्य तमिल क्षेत्रों पर संगम और सलुव राजवंशों का शासन था।
  - कोंकण क्षेत्र, पश्चिमी घाट और समुद्र के बीच एक संकीर्ण पट्टी है।
- अपने चरमोत्कर्ष पर विजयनगर साम्राज्य उत्तर में कृष्णा नदी से लेकर प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिण तक फैला हुआ था।

विजयनगर - बहमनी संघर्ष

- **संघर्ष के प्रमुख कारण:**
  - कृष्णा और तुंगभद्रा के बीच उपजाऊ क्षेत्र (रायचूर दोआब) पर नियंत्रण करने के लिए।
  - गोवा और अन्य बंदरगाहों से होने वाले घोड़े के व्यापार पर नियंत्रण करने के लिए।
- लगातार युद्ध के बावजूद, कृष्णा नदी ने दोनों शक्तियों के बीच विभाजन रेखा के रूप में काम किया।
- बहमनी साम्राज्य और वारंगल के बीच गठबंधन ने तुंगभद्रा दोआब पर विजयनगर की जीत की क्षमता को सीमित कर दिया।

महत्त्वपूर्ण शासक और उनके योगदान — संगम वंश

हरिहर (1336-56 ई.)

- मैसूर के होयसल शासक को हराया और उसे मार डाला।
- उसका भाई बुक्का (1356-77 ई.) उसका उत्तराधिकारी बना।
- उसने कृष्णा नदी की एक सहायक नदी के दक्षिणी तट पर, एक नए शहर की स्थापना की और एक देवता के प्रतिनिधि (एजेंट) के रूप में अपने नए राज्य पर शासन करने का बीड़ा उठाया। कृष्णा नदी के दक्षिण की सारी भूमि को इस देवता की भूमि माना जाता था। [यूपीएससी 2015]

हरिहर द्वितीय (1377-1404 ई.)

- बहमनी साम्राज्य के बेलगाँव और गोवा पर अधिकार कर लिया।
- उत्तरी श्रीलंका में एक सैन्य दल भेजा। देवराय प्रथम (1404-1422 ई.)
- वह बहमनी शासक फिरोज शाह से पराजित हो गया था। बाद में, उसने वारंगल के साथ गठबंधन किया, जिसने दक्कन में शक्ति का संतुलन बदल दिया और फिरोज शाह बहमनी को पराजित कर कृष्णा नदी के मुहाने तक पूरे रेड्डी क्षेत्र पर कब्जा कर लिया।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: राजवंश संस्थापक समय

1. राजवंश संस्थापक समय	**2. विजयनगर - बहमनी संघर्ष**
3. महत्त्वपूर्ण शासक और उनके योगदान	**4. संगम वंश**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — राजवंश संस्थापक समय

मुख्य परीक्षा दृष्टि: उत्तरी श्रीलंका में एक सैन्य दल भेजा। देवराय प्रथम (1404-1422 ई.)

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: राजवंश संस्थापक समय • विजयनगर - बहमनी संघर्ष • महत्त्वपूर्ण शासक और उनके योगदान • संगम वंश • संघर्ष के प्रमुख कारण | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** *1336, 1485, 1505, 1570, 1650*

- उसने तुंगभद्रा और हीराद्रा नदियों पर एक बाँध का निर्माण करवाया और पानी की कमी को दूर करने के लिए नहरों का उपयोग किया।
- निकोलो कोंटी ने 1420 ई. में विजयनगर की यात्रा की। देवराय द्वितीय (1422-46 ई.)
- यह संगम वंश का सबसे महान शासक था।
- उसने ओडिशा के गजपति शासकों को पराजित किया।
- फरिश्ता (दक्कन के सुल्तानों का दरबारी इतिहासकार) के अनुसार, उसने प्रशिक्षित मुस्लिम घुड़सवार सेना की भर्ती की और अपने सैनिकों को तीरंदाजी का प्रशिक्षण दिया।
- अब्दुर रज्जाक ने उसके शासनकाल के दौरान कोच्चि के जमोरिन और विजयनगर दरबार का दौरा किया।
- 1443 ई. जमोरिन ने बहमनी सुल्तानों से मुदकल, बंकापुर आदि क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करने के लिए तुंगभद्रा को पार करने की कोशिश की, लेकिन अंत में दोनों पक्षों को मौजूदा सीमाओं पर सहमत होना पड़ा।
- नुनिज के अनुसार, श्रीलंका और तेनासेरिम (मलय और बर्मा) के राजाओं ने उसे उपहार प्रदान किए।

• विजयनगर में वंशानुक्रम स्थापित नहीं किया गया था, जिसके कारण उसकी मृत्यु के बाद सिंहासन के लिए कई गृह युद्ध हुए। सलुव वंश सलुव नरसिंह

• उसने 1485 ई. में सलुव वंश की स्थापना की, जो बहुत ही कम अवधि के लिए, ही रहा। सलुव सैन्य कमांडर थे।

• उनके बड़े बेटे वीर नरसिंह ने 1505 ई. में तुलुव वंश की शुरुआत की। तुलुव वंश कृष्णदेव राय (1509-29 ई.)

• वे विजयनगर के सभी शासकों में सबसे महान थे। वे वीर नरसिंह के छोटे भाई थे और उन्होंने अपने पिता और बड़े भाई द्वारा स्थापित मजबूत सैन्य आधार को और अधिक मजबूत किया। उन्हें आंध्र भोज के नाम से भी जाना जाता है।

• **दो मोर्चों पर युद्ध:** उन्होंने दो मोर्चों पर युद्ध किया, एक बहमनी सुल्तान (जो कि पारंपरिक शत्रु था) के साथ और दूसरा उड़ीसा के गजपति शासकों के साथ।

• रायचूर दोआब (1512 ई.) पर कब्जा कर लिया, उड़ीसा के शासकों को अपने अधीन कर लिया (1514 ई.) और बीजापुर के सुल्तान को पराजित कर दिया (1520 ई.)।

• शिलालेखों में उदयगिरि जैसे कई गजपति किलों पर उसके द्वारा कब्जा करने का वर्णन मिलता है।

• उन्होंने सिंहाचलम (विशाखापत्तनम) में विजय स्तंभ का निर्माण करवाया।

• **बहमनी पर आक्रमण:**
  ◦ पुर्तगालियों की मदद से मालाबार और कोंकण तटों पर अधिकार स्थापित किया।
  ◦ पुर्तगालियों को भटकल (कर्नाटक) में किला बनाने की अनुमति मिल गई।

• उन्होंने श्रीशैलम, तिरूपति, कालाहस्ती, कांचीपुरम, तिरुवन्नमलाई और चिदंबरम जैसे मंदिरों के लिए उदारतापूर्वक दान दिया। उन्होंने इन मंदिरों में विशाल गोपुरम बनवाए।

• **स्थापत्यकला:**
  ◦ विजयनगर के पास नागलापुरम नामक एक उपनगर की स्थापना की, जिसका नाम उनकी माँ के नाम पर रखा गया।
  ◦ उन्होंने विजय महल और विट्ठल स्वामी मंदिर जैसे कुछ महत्त्वपूर्ण मंदिरों में गोपुरम का निर्माण करवाया।

• विदेशी यात्रियों डोमिंगो पेस, फर्नाओ नुनिज और दुआर्ते बारबोसा ने कृष्णदेवराय के चरित्र और विजयनगर शहर की समृद्धि की प्रशंसा की।

• वह तेलुगु और संस्कृत के प्रतिभाशाली विद्वान थे। उनकी कृतियों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं:
  ◦ प्रसिद्ध तेलुगु कविता अमुक्तमाल्यदा (इसमें अंडाल की कहानी और उनके सपने में भगवान विष्णु के आने का वर्णन है)।
  ◦ मदालसा चरित, सत्यवेदु परिणय, रसमंजरी, जांबवती कल्याणम (संस्कृत)।
  ◦ कृष्णदेव रायण दिनाचारी (कन्नड़)।

• उन्होंने तेलुगु के आठ प्रसिद्ध कवियों, अष्टदिग्गजों को संरक्षण दिया।
  ◦ अल्लासानि पेद्दाना (जिसे आंध्रकविता का पितामह के नाम से भी जाना जाता है), उनकी कृतियाँ हैं: मनुचरितम और हरिकथासारम।
  ◦ मदय्यागरी मल्लाना, नंदी थिम्मन, धूर्जति, रामभद्र, पिंगली सुराणा, रामराजाभूषणुडु।
  ◦ **तेनाली रामकृष्ण (दरबारी विदूषक और कवि):** उसकी कृति पांडुरंग महत्यम है।

• उन्होंने चतु विट्ठलनाथ (कन्नड़ कवि; उनकी कृति भागवत); तमिल कवि हरिदास; व्यासतीर्थ (उनके शिष्य पुरंदर दास थे) को भी संरक्षण दिया।

• धार्मिक मतभेदों के बावजूद, कृष्णदेव राय ने सल्तनत में सत्ता के कुछ दावेदारों का समर्थन किया और "यवन साम्राज्य के संस्थापक" की उपाधि धारण की।
  ◦ यवन एक संस्कृत शब्द है जिसका उपयोग यूनानियों और ऐसे अन्य लोगों के लिए किया जाता है जिन्होंने उत्तर-पश्चिम से उपमहाद्वीप में प्रवेश किया था।

कृष्णदेव राय की कर प्रणाली:

• भूमि पर कर की दर, भूमि की उर्वरता के आधार पर तय की जाती थी।

• कार्यशालाओं के निजी मालिकों ने उद्योग कर का भुगतान किया। [यूपीएससी 2016] अच्युत देवराय

• कृष्णदेव राय की मृत्यु के बाद उनके भाई अच्युत देवराय ने सिंहासन संभाला। शक्तिशाली चेल्लप्पा (जिन्हें सलुव नायक के नाम से भी जाना जाता है) के समर्थन ने उन्हें अच्छी स्थिति बनाए रखने में मदद की।

• 1542 ई. तक सदाशिव राय उनके उत्तराधिकारी बने रहे। सदाशिव राय (1543-67 ई.)

• वास्तविक शक्ति उनके मंत्री रामराय के हाथों में थी। रामराय ने अपने रिश्तेदारों (अराविडु कबीले के) को रणनीतिक इलाकों के नायक के रूप में नियुक्त किया, जिससे रामराय को उनका समर्थन प्राप्त हुआ। रामराय एक महान योद्धा और रणनीतिकार थे:
  ◦ उन्होंने बहमनी मुस्लिम शक्तियों को एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा किया।

- उन्होंने पुर्तगालियों के साथ एक व्यापारिक संधि की, जिसके तहत बीजापुर के शासक को घोड़ों की आपूर्ति रोक दी गई।
- उन्होंने बीजापुर के शासक से युद्ध किया। यद्यपि, बाद में उन्होंने गोलकुंडा और अहमदनगर के खिलाफ बीजापुर के साथ गठबंधन किया, जिसके परिणामस्वरूप अंततः तालीकोटा का युद्ध (1565) में हुआ तालीकोटा का युद्ध (1565 ई.)

• यह युद्ध 1565 ई.में विजयनगर और दक्कन राज्यों (बीजापुर, अहमदनगर और गोलकुंडा की संयुक्त सेनाओं) के बीचतालीकोटा या राक्षसी-तांगड़ी में लड़ा गया था।

• रामराय ने व्यक्तिगत रूप से सेना की कमान संभाली; यद्यपि, वह युद्ध हार गया और बाद में उसे मार दिया गया।

• विजयी बहमनी सेनाओं ने इतिहास में पहली बार विजयनगर शहर में प्रवेश किया और कई महीनों तक इसे लूटा।

• इस युद्ध को सामान्य रूप से विजयनगर के अंत का संकेत माना जाता है। युद्ध के बाद के प्रभाव

• राजा सदाशिव ने भागकर पेनुगोंडा में शरण ली और बाद मेंचंद्रगिरि (तिरुपति के पास) से शासन किया।

• रामराय के भाई तिरुमला ने 1570 ई. में खुद को राजा घोषित कर दिया। उसने चौथे राजवंश अर्थात् अराविडु राजवंश की शुरुआत की। यद्यपि, वास्तविक शक्ति देश के विभिन्न हिस्सों में नायक प्रमुखों (Nayak chiefs) के पास थी।

विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन

• विजयनगर साम्राज्य में राजा साम्राज्य का सर्वोच्च प्राधिकारी और सेना का सर्वोच्च सेनापति होता था।

• उसकी सहायता के लिए उच्च स्तर के कई अधिकारी होते थे।

• महाप्रधानी (मुख्यमंत्री) निचले स्तर के अधिकारियों का नेतृत्व करता था जैसे कि दलवाई (सेनापति), वासल (महल का रक्षक), रायसम (सचिव/ लेखाकार), अदईप्पम (निजी परिचारक) और कार्यकर्ता (कार्यकारी एजेंट)।

• हरिहर प्रथम और उसके उत्तराधिकारियों द्वारा सृजित प्रशासनिक प्रभाग:

- साम्राज्य को राज्यों या मंडलम (प्रांतों) में विभाजित किया गया था, जिन्हें आगे नाडु (जिला), स्थल (उप-जिला) और ग्राम (गाँव) में विभाजित किया गया था।
  - राज्य या प्रांत प्रधानी नामक गवर्नर द्वारा शासित होते थे।
  - प्रमुख राज्य होयसल, अरागा, बाराकुर (मंगलूर) और मुलुवे थे।
- प्रधानी या तो एक शाही सदस्य या एक सैन्य अधिकारी था जो शाही परिवार से संबंधित नहीं था।
  - प्रधानी के पास, प्रशासन में सहायता के लिए अपना स्वयं का राजस्व राजस्व लेखाकार और सेना होती थी।
- नाडु, सिम, स्थल, कंपाना आदि जैसे छोटे प्रशासनिक प्रभाग थे जिनकी सबसे छोटी इकाई गाँव थी।
- कृष्णदेव राय के शासनकाल में नायक प्रणाली के विकास के कारण तुलुव वंश के तहत राज्यों का प्रशासनिक और राजस्व दर्जा कम हो गया था।

नायक प्रणाली

• तेलुगु और कन्नड़ क्षेत्रों में "नायक" सेना प्रमुख होते थे। 13वीं शताब्दी के बाद, वे सामान्य रूप से किलों कोनियंत्रित करते थे और उनके हथियारबंद रक्षक होते थे।

• नायकों को सौंपी गई राजस्व (मालगुजारी) प्रणाली, 13वीं शताब्दी में काकतीय साम्राज्य में भी मौजूद थी, जो दिल्ली सल्तनत में प्रचलित इक्ता प्रणाली के समान थी।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन

मुख्य परीक्षा दृष्टि: नायकों को सौंपी गई राजस्व (मालगुजारी) प्रणाली, 13वीं शताब्दी में काकतीय साम्राज्य में भी मौजूद थी, जो दिल्ली सल्तनत में प्रचलित इक्ता प्रणाली के समान थी।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन • नायक प्रणाली • कृष्णदेव राय की कर प्रणाली | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2016, 1542, 1543, 1565, 1570

• नुनिज के अनुसार, प्रत्येक नायक जरूरत के समय राजा की सेवा के लिए एक निश्चित संख्या में सैन्य बल (घोड़े औरपैदल सैनिक) रखता था। नुनिज का वृत्तांत कृष्णदेव राय के युग की तेलुगु कृति रायवाचकमू से मेल खाता है।

• नायक महानवमी उत्सव के दौरान राजा को राजस्व का एक हिस्सा, भेंट स्वरूप देते थे।

• कई नायकों ने विजयनगर के राजाओं की अधीनता स्वीकार कर ली, लेकिन वे अक्सर विद्रोह करते थे और उन्हें सैन्य कार्रवाई से वश में करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त, उन्हें राजा द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित कर दिया जाता था।

• पलायगारों (जो पुराने नायक परिवारों के उत्तराधिकारी थे) की वंशावली (पारिवारिक इतिहास) इस बात की पुष्टि करती है कि नायक प्रणाली, कृष्णदेव राय के शासनकाल दौरान और अधिक सुधार के दौर से गुजरी।

• वे अलग-अलग जातियों से संबंधित थे, जिनमें ब्राह्मण और गैर- ब्राह्मण दोनों सम्मिलित थे।

  ◦ गैर-ब्राह्मण नायक विभिन्न सामाजिक मूल के थे जिसमें योद्धा, देहाती कबीले (यादव, बिलामा), किसान (रेड्डी), व्यापारी (बलीजा) आदि सम्मिलित थे।

  ◦ कृष्णदेव राय के अधीन चेलप्पा जैसे कुछ ब्राह्मण नायक प्रमुख थे।

• विजयनगर साम्राज्य में, यह प्रणाली 1500 ई. के आस-पास अधिक स्पष्ट हो गई, जो कृष्णदेव राय और अच्युत देवराय के शासनकाल में और मजबूत हुई, जैसा कि "नायककट्टनम" (तमिल), "नायकतनम" (कन्नड़), और "नयनकरमु" (तेलुगु) जैसे शिलालेखों में वर्णित है।

अमर-नायक

• यह विजयनगर साम्राज्य का एक प्रमुख राजनीतिक नवप्रवर्तन था।

• अमर-नायक सेनापति थे जिन्हें राजा द्वारा शासन करने के लिए अलग-अलग क्षेत्र दिए गए थे।

• वे क्षेत्र के किसानों, शिल्पकारों और व्यापारियों से कर और अन्य बकाया वसूल करते थे।

• उन्होंने राजस्व का कुछ हिस्सा व्यक्तिगत उपयोग के लिए व घोड़ों और हाथियों की एक निर्धारित टुकड़ी को बनाए रखने के लिए रखा, जिससे राजाओं को युद्ध में प्रभावी रूप से सहयोग प्राप्त होता था।

• राजस्व का कुछ हिस्सा मंदिरों के रखरखाव और सिंचाई कार्यों के लिए उपयोग किया जाता था।

• नायकट्टनम प्रमुख वाणिज्यिक केंद्रों (पेट्टई), कर प्रोत्साहन, अधिवास और सिंचाई के माध्यम से उत्पादन का प्रबंधन करते थे।

  ◦ उनमें सेकई ने उच्च अधिकारियों (सेनापति, गवर्नर, लेखाकार आदि) के रूप में शुरुआत की और राजा के प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया।

• तालीकोटा युद्ध के बाद, नायक प्रमुख विजयनगर के राजा से स्वतंत्र हो गए।

  ◦ उनमें से कुछ मदुरै, तंजावुर, इक्के री आदि जैसों ने अपने अधीनकई छोटे नायकों को नियंत्रित करते हुए शक्तिशाली राज्य स्थापित किए।

अयंगार प्रणाली

इसमें केंद्र द्वारा ग्राम स्तर पर प्रशासन को बनाए रखने के लिए 12 सदस्यीय अधिकारियों के समूह का गठन किया जाता था। ये अधिकारी, जिन्हें अयंगार कहा जाता था, गाँव के कार्यकर्ता थे और परिवारों के एक समूह का गठन करते थे। उन्हें उनकी सेवा के लिए गाँव में एक हिस्सा या भूखंड प्रदान किया जाता था जो कर मुक्त होता था।

अयागर वंशानुगत अधिकारी थे और उनकी अनुमति के बिना भूमि की बिक्री या खरीद नहीं की जा सकती थी।

समाज

• विदेशी यात्रियों ने विजयनगर और बीजापुर जैसे शहरों में शासकों, अधिकारियों और अभिजात वर्ग की समृद्ध जीवन शैली को देखा, जो व्यापक गरीबी एवं गुलामी की उपस्थिति के विपरीत थी। शासक वर्ग और शासित वर्ग के बीच खाई बढ़ती जा रही थी।

• निरंतर युद्ध और उससे उत्पन कष्टों के कारण, लोगों का विस्थापन और पलायन हुआ।

• पुर्तगाली लेखक नुनिज के अनुसार, विजयनगर साम्राज्य की महिलाएँ कुश्ती, ज्योतिष, लेखांकन और भविष्यवाणी की विशेषज्ञ थीं। [यूपीएससी 2021]

अर्थव्यवस्था कर व्यवस्था

• राज्य को अपना राजस्व प्रमुख तौर पर कराधान से प्राप्त होता था।

• कर की दर फसलों, मिट्टी के प्रकार, सिंचाई के विविध साधन आदि के अनुसार भिन्न-भिन्न होती थी।

  ◦ भूमि कर के अलावा, कई अन्य कर भी थे, जैसे- संपत्ति कर, उपज की बिक्री पर कर, पेशा कर, सैन्य योगदान (संकट के समय में), विवाह कर आदि।

आर्थिक क्रियाकलाप:

• विजयनगर साम्राज्य प्रारंभ में कृषि प्रधान था, जो 14वीं शताब्दी में एक वाणिज्यिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गया। उत्तरी तमिलनाडु, रायलसीमा और तटीय आंध्र में बड़ी संख्या में व्यायवसायिक और बुनाई केंद्र खुले। बुनकर, लोहार और राजमिस्त्री जैसे कारीगर समाज में अधिक प्रमुख हो गए।

• विजयनगर युग में गैर-कृषि शिल्प में काफी वृद्धि देखी गई। इन गैर-कृषि समूहों को आम तौर पर पट्टाडायर (कार्यशाला के लोग) और कसायावर्गम (वह समूह जो नकद में कर का भुगतान करता था) कहा जाता था।

• 16वीं शताब्दी में, नायकों ने नायक प्रणाली के तहत कभी-कभी कर प्रोत्साहन के साथ बुनाई जैसे शिल्प को बढ़ावा दिया।

व्यापार:

• अंतरदेशीय, तटीय और विदेशी व्यापार, राज्य को समृद्धि की ओर ले गया।

• विजयनगर के प्रारंभिक समय के व्यापार में घोड़ों पर अरब व्यापारियों का नियंत्रण था जो अरब और मध्य एशिया से घोड़े आयात करते थे, जो प्रतिद्वंद्वी साम्राज्यों के लिए भी महत्त्वपूर्ण थे।

  ◦ व्यापारियों के स्थानीय समुदायों को कुदिराई चेट्टी (घोड़ा व्यापारी) कहा जाता था, वे भी व्यापार में भाग लेते थे।

• विजयनगर अपने मसालों, वस्त्रों और कीमती पत्थरों (जवाहरात) के बाजारों के लिए भी प्रसिद्ध था।

• जैसे-जैसे मुद्रा अर्थव्यवस्था का विकास हुआ, वैसे-वैसे सिक्कों के उपयोग में भी वृद्धि हुई।

विजयनगर साम्राज्य का प्रमुख सोने का सिक्का वराह था। पर्टा आधे वराह के बराबर था। फै नम पर्टा का दसवाँ हिस्सा था। [यूपीएससी 2022]

व्यापारिक संबंध और पुर्तगालियों का आगमन:

• पुर्तगाली 1498 ई. से नएप्रतिभागियों के रूपमें उभरे। उनका लक्ष्य पश्चिमी तट पर व्यापार और सैन्य चौकियाँ स्थापित करना था।

• 16वीं शताब्दी की शुरुआत में आने वाले पुर्तगाली और अन्य यूरोपीय व्यापारियों के लिए, कपड़ा एक प्राथमिक आकर्षण के रूप में उभरा।

• बंदूक जैसी बेहतर सैन्य तकनीक ने इस युग की जटिल राजनीति में अपना महत्त्व बढ़ाया।

हम्पी / विजयनगर की स्थापत्यकला

• निकोलो डी कोंटी, अब्दुर रज्जाक और अफानसी निकितिन, जिनमें से सभी ने पंद्रहवीं शताब्दी में शहर की यात्रा की थी, और दुआर्ते बारबोसा, डोमिंगो पेस (विजयनगर के राजधानी शहर की तुलना रोम से की थी), और फर्नाओ नुनिज, जो सोलहवीं शताब्दी में आए थे,के वृत्तांतों में विजयनगर शहर का वर्णन मिलता है।

• **हम्पी कीकिलेबंदी:** अब्दुर रज्जाक ने हम्पी मेंकिलों की सात पंक्तियों का उल्लेख किया है, जो नकेवल शहर को, बल्कि इसके कृषि क्षेत्र और जंगलों को भी घेरे हुए थीं।

  ◦ निर्माण में कहीं भी गारे या सीमेंट का उपयोग नहीं किया गया था।

  ◦ किले की दीवारों के अंदर कृषि क्षेत्र भी थे।

  ◦ प्रवेश द्वार पर मेहराब और गुंबद इंडो-इस्लामिक स्थापत्यकला की विशेषताओं को दर्शाते थे।

• यद्यपि, इसे द्रविड़ शैली के नाम से सुप्रसिद्ध है, लेकिन इसकी अपनी अनोखी विशेषताएँ थीं जिसे प्रोविदा शैली कहा जाता है, जिसमें बड़ी संख्या में स्तंभ और खंभे प्रयुक्त होते हैं।

• **शहरी भवन क्षेत्र:**

  ◦ यहाँ स्थित मकबरों और मस्जिदों के अलग-अलग कार्य थे, फिर भी उनकी स्थापत्यकला हम्पी के मंदिरों में पाए जाने वाले मंडपों से मिलती-जुलती है।

  ◦ पूरा क्षेत्र कई मंदिरों और छोटे मंदिरों से घिरा हुआ था, जो विभिन्न प्रकार के पंथों के प्रचलन की ओर इशारा करता है, जिन्हें विभिन्न समुदायों का समर्थन प्राप्त था।

• **जल संसाधन:** चूँकि यह प्रायद्वीप के सबसे शुष्क क्षेत्रों में से एक था, इसलिए वर्षा जलका संग्रहण करने और इसे शहर तक पहुँचाने के लिए विस्तृत व्यवस्था की गई थी। उदाहरण के लिए, कमलापुरम ताल तथा हिरिया नहर (तुंगभद्रा से पानी लिया जाता था, स्पष्ट तौर पर संगम वंश के राजाओं द्वारा निर्मित)।

शहर में तुंगभद्रा से पानी लाने के लिए एक विस्तृत नहर प्रणाली थी।

• विजयनगर शहर को पवित्र केंद्र और शाही केंद्र में विभाजित किया गया था।

• **शाही केंद्र में स्थित इमारतें:** महानवमी डिब्बा, लोटस महल, हजारा राम मंदिर आदि।

◦ **महानवमी डिब्बा (Mahanavami Dibba):**

■ यह शहर के सबसे ऊँचे स्थान पर स्थित सबसे लम्बी संरचना है ।

■ इस मंदिर में महानवमी पर्व से जुड़े अनुष्ठान होते थे, जोहिंदुओं के दस दिवसीय शरद उत्सव (उत्तर भारत में दशहरा के रूप में मनाया जाता है) का एक महत्त्वपूर्ण दिन है।

■ डोमिंगो पेस द्वारा द हाउस ऑफ विक्ट्री (The House of Victory) के रूप में वर्णित।

◦ **हजारा राम मंदिर:** मंदिर की भीतरी दीवारों पर रामायण के दृश्य उत्कीर्णित हैं।

◦ अधिकांश मंदिर पवित्र केंद्र में स्थित थे, वहीं दूसरी ओर कई मंदिर शाही केंद्र में भी थे।

• **पवित्र केंद्र में निम्नलिखित सम्मिलित थे:**

◦ **गोपुरम और मंडप:** राय गोपुरम या शाही प्रवेश द्वार मंदिरों के केंद्रीय शिखर से ऊँचे होते थे। दिव्य विवाहों के लिए प्रयुक्त होने वाले कल्याण मंडप, इस अवधि के दौरान मंदिर निर्माण की एक उल्लेखनीय विशेषता थी। *[यूपीएससी 2019]*

◦ मंदिरों में शाही मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं।

◦ **विरुपाक्ष मंदिर (शिव मंदिर):** विरुपाक्ष साम्राज्य के संरक्षक देवता थे।

■ मुख्य मंदिर के सामने एक विशाल कक्ष, कृष्णदेव राय द्वारा अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में बनवाया गया था।

◦ विट्ठल मंदिर (विष्णु मंदिर; विट्ठल, विष्णु का एक रूप जिसे आम तौर पर महाराष्ट्र में पूजा जाता है।)

■ इसमें कई विशाल कक्ष और रथके आकार का एक अनोखा मंदिर है। मंदिर परिसर की एक विशिष्ट विशेषता रथ मार्ग है जो मंदिर के गोपुरम से एक सीधी रेखा में जाता है।

■ यह संगीतमय स्तंभों के लिए भी प्रसिद्ध था। *[यूपीएससी 2007]*

■ यह विजयनगर मंदिर स्थापत्यकला के चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करता है।

■ इसका निर्माण देवराय द्वितीय के शासनकाल के दौरान 15वीं शताब्दी में किया गया था।

◦ विजयनगर काल से पहले के जैन मंदिर भी प्राप्त हुए हैं, जो इस क्षेत्र में कई पवित्र परंपराओं के अस्तित्व का संकेत देते हैं।

घटनाक्रम प्रमुख राजनीतिक घटनाक्रम

1200-1300 ई. दिल्ली सल्तनत की स्थापना (1206 ई.) 1300-1400 ई. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना (1336 ई.); बहमनी साम्राज्य की स्थापना (1347 ई.); जौनपुर, कश्मीर और मदुरै में सल्तनत।

1400-1500 ई. उड़ीसा के गजपति साम्राज्य की स्थापना (1435 ई.); गुजरात और मालवा की सल्तनतों की स्थापना; अहमदनगर, बीजापुर और बरार सल्तनतों का उदय (1490 ई.) 1500-1600 ई. पुर्तगालियों द्वारा गोवा पर विजय (1510 ई.); बहमनी साम्राज्य का पतन, गोलकुंडा सल्तनत का उदय (1518 ई.); बाबर द्वारा मुग़ल साम्राज्य की स्थापना (1526 ई.)

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: व्यापारिक संबंध और पुर्तगालियों का आगमन

1498	2019	2007	1200
घटनाक्रम	प्रमुख राजनीतिक घटनाक्रम	हम्पी कीकिलेबंदी	शहरी भवन क्षेत्र

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — व्यापारिक संबंध और पुर्तगालियों का आगमन

मुख्य परीक्षा दृष्टि: 1200-1300 ई. दिल्ली सल्तनत की स्थापना (1206 ई.) 1300-1400 ई. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना (1336 ई.); बहमनी साम्राज्य की स्थापना (1347 ई.); जौनपुर, कश्मीर और मदुरै में सल्तनत।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: घटनाक्रम • प्रमुख राजनीतिक घटनाक्रम • हम्पी कीकिलेबंदी • शहरी भवन क्षेत्र • जल संसाधन | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1498, 2019, 2007, 1200, 1300

IUC विशेष स्मृति सूत्र #5: अकबर के नवरत्न याद रखने की ट्रिक

ट्रिक: 'BAT BAT MDH' — B=Birbal (बीरबल), A=Abul Fazl (अबुल फजल), T=Tansen (तानसेन), B=Bhagwan Das (भगवान दास), A=Abdul Rahim Khan-i-Khana (अब्दुर्रहीम खानखाना), T=Todar Mal (टोडरमल), M=Man Singh (मानसिंह), D=Mulla Do Pyaza (मुल्ला दो प्याजा), H=Hakim Humam (हकीम हुमाम)।

मुगल साम्राज्य — परिचय

1526 ई. में बाबर द्वारा स्थापित मुगल साम्राज्य, लगभग तीन शताब्दियों तक भारत में फला-फूला और इसने भारत के सांस्कृतिक और प्रशासनिक ढाँचे का स्वरूप सुनिश्चित किया। यद्यपि, 1707 ई. में औरंगजेब के निधन के बाद, साम्राज्य का पतन होना शुरू हो गया और 1857 ई. में बहादुरशाह II के पतन के साथ ही इस साम्राज्य का अंततः पतन हो गया।

बाबर 1526-1530 ई.

हुमायूँ 1530-1540 ई. और 1555 -1556 ई.

अकबर 1556-1605 ई.

जहाँगीर 1605-1627 ई.

शाहजहाँ 1628-1658 ई.

औरंगजेब 1658-1707 ई.

बहादुर शाह प्रथम 1707-1712 ई.

जहाँदार शाह 1712-1713 ई.

फर्रुखसियर 1713-1719 ई.

मुहम्मद शाह 1719-1748 ई.

आलमगीर द्वितीय 1754-1759 ई.

शाह आलम द्वितीय 1759-1806 ई.

अकबर द्वितीय 1806-1837 ई.

बहादुर शाह द्वितीय 1837-1857 ई.

1540 से 1545 ई.के बीच शेरशाह सूरी के हाथ में दिल्ली का शासन था।

बाबर (1526-1530 ई.) परिचय

- बाबर की विशिष्ट वंशावली की जड़ें तुर्क -मंगोल विजेताओं से जुड़ी हैं:
  - वह अपने पितृ वंश से तैमूर से जुड़ा था, और
  - अपने मातृ वंश से मंगोल शासक चंगेज खाँ से जुड़ा था।
- बाबर ने फरगना (उजबेकिस्तान का एक शहर) की छोटी रियासत पर अपने पिता के उत्तराधिकारी के रूप में शासन किया। उसे समरकंद को जीतने की महत्त्वाकांक्षा विरासत में मिली थी। यद्यपि, वित्तीय तनाव और संभावित उज़बेक खतरों ने, बाबरकोआगेके अभियानके लिएभारतकोएकशरणस्थल और रणनीतिक आधार के रूप में विचार करने के लिए प्रेरित किया। जब बाबर ने अफगानिस्तान पर विजय प्राप्त की, तब उसका मानना था कि उसका इन क्षेत्रों (जैसे पंजाब) पर दावा सही था क्योंकि उन पर बाबर के पूर्वज, तैमूर द्वारा कब्जा कर लिया गया था।

• भारत में अस्थिर राजनीतिक परिदृश्य और इब्राहिम लोदी के खिलाफ अफगानों और राजपूतों के बीच असंतोष ने उसकी विजय को आसान बना दिया। प्रारंभ में उसे अपने आक्रमण के लिए दौलत खाँ लोदी और राणा सांगा जैसे शासकों से समर्थन प्राप्त हुआ।

• लोदी और राजपूतों की संयुक्त सेना को हराने के बाद, बाबर ने काबुल और कंधार को उत्तरी भारत में फिर से मिला लिया।

◦ इसने कुषाण साम्राज्य के पतनके बाद पहली बार रणनीतिक सुरक्षा प्रदान की और इस प्रकार, भारत में एक केंद्रीकृत साम्राज्य का मार्ग प्रशस्त हुआ।

◦ इस एकीकरण ने विदेशी व्यापार को सुविधाजनक बनाया जिससे भारत, ट्रांस-एशियाई व्यापार नेटवर्क के साथ जुड़ गया।

भारत में प्रमुख विजय

• **पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई.):** यह बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच लड़ा गया था।

◦ बाबर ने अपने शासन को मजबूत करने के लिए राजपूतों और अफगानों को अपने अधीन करने के इरादे से, दिल्ली और आगरा पर विजय प्राप्त की।

• **खानवा का युद्ध (1527 ई.):** एक ओर बाबर की सेना और दूसरी ओर राणा सांगा, महमूद लोदी (इब्राहीम लोदी का भाई) और हसन खाँ मेवाती (मेवात का शासक) की संयुक्त सेना के बीच युद्ध हुआ।

◦ खानवा के युद्ध में विजय के बाद उसने गाजी की उपाधि धारण की।

• **चंदेरी का युद्ध (1528 ई.):** मालवा में चंदेरी के मेदिनी राय पर बाबर ने विजय प्राप्त की।

• **घाघरा का युद्ध (1529 ई.):** बाबर का अंतिम युद्ध अफगानों के खिलाफ था। उसने घाघरा के किनारे महमूद लोदी और नुसरत शाह (बंगाल) की संयुक्त सेना के खिलाफ युद्ध लड़ा। यद्यपि, 1530 में आगरा से लाहौर की यात्रा के दौरान बाबर की मृत्यु हो गई।

सेना और युद्धकला:

• यद्यपि, बारूद के बारे में भारत में पहले से ही जानकारी थी, लेकिन बाबर ने तोपखाने और घुड़सवार सेना के साथ इसके कुशल उपयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया। *[यूपीएससी 2015]*

• बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध में एक नई युद्ध पद्धति का उपयोग किया जिसे तुलुगमा पद्धति के नाम से जाना जाता है। तुलुगमा का अर्थ पूरी सेना को विभिन्न इकाइयों में विभाजित करना था।

• **रणनीतिक संपत्ति के रूप में घोड़े:** खैबर दर्रे पर नियंत्रण रखने के कारण मुगलों को पश्चिम से अच्छी नस्ल के घोड़े लगातार मिलते रहे, जिससे उनकी सैन्य क्षमताएँ बढ़ती गईं।

सोलहवीं सदी के युद्ध में तोपें एक महत्त्वपूर्ण योगदानकर्ता थीं। बाबर ने इनका प्रभावी ढंग से प्रयोग, पानीपत के प्रथम युद्ध में किया था।

• **स्थापत्यकला:** चार बाग शैली (फारसी शैली के उद्यान) की शुरुआत की; पानीपत और संभल में मस्जिदों का निर्माण कराया।

साहित्य:

• **बाबर की आत्मकथा, तुज़ुक-ए-बाबरी (बाबरानामा):**

◦ इस आत्मकथा से उसकी सैन्य रणनीतियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

◦ यह उसकी मातृभाषा तुर्की में लिखी गयी है।

◦ यह बाबर के भारतीय भूमि के प्रति प्रेम को दर्शाती है।

• बाबर ने विस्तृत लेखन के प्रति अपने उत्साह के साथ संस्मरण रखने की परंपरा स्थापित की, भारत में उसके उत्तराधिकारियों ने भी इस प्रथा का पालन किया।

• वह फारसी और अरबी में निपुण था।

धार्मिक दृष्टिकोण:

• एक रूढ़िवादी सुन्नी होने के बावजूद, बाबर ने खुले विचारों वाला दृष्टिकोण बनाए रखा।

• वह नक्शबंदिया सूफी ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार के प्रति समर्पित था। हुमायूँ (1530-1540 ई. और 1555-1556 ई.) परिचय 1530 ई. में बाबर के बाद, हुमायूँ पूर्व में अफगानों के बढ़ते प्रभाव के बीच असंगठित प्रशासन और वित्तीय अस्थिरता जैसी चुनौतियों से जूझ रहा था।

उसके भाई कामरान ने काबुल, कंधार और पंजाब पर शासन किया, जो खंडित अधिकार और शासन की चुनौतियों को उजागर करता है।

भारत में प्रमुख विजय

• **चुनार की घेराबंदी [मिर्जापुर] (1532 ई.):** हुमायूँ ने दरदाह में अफगानों को पराजित किया और उसके बाद चुनार किले (जिसे पूर्वी भारत का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है) को घेर लिया।

• **चौसा का युद्ध [बक्सर] (1539ई.):** शेरशाह सूरी के हाथों हुमायूँ को पराजय का सामना करना पड़ा, युद्ध के मैदान में वह बाल-बाल बचा।

• **कन्नौज का युद्ध (1540 ई.):** शेरशाह सूरी ने हुमायूँ पर पूर्ण विजय प्राप्त की और एक स्वतंत्र शासन स्थापित किया।

• गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने मुगल सम्राट हुमायूं के खिलाफ सैन्य सहायता मांगने के बाद 1535 में दीव को पुर्तगालियों को सौंप दिया था। इससे दीव पर पुर्तगाली नियंत्रण की शुरुआत हुई। **[UPSC 2023]**

हुमायूँ का निर्वासन (1540-1555 ई.):

• शेरशाह सूरी के भय से हुमायूँ भारत से भाग गया और अमरकोट (सिंध, पाकिस्तान) में रहने के दौरान 1542 ई. में अकबर का जन्म हुआ।

• इसके बाद हुमायूँ ईरान चला गया और ईरान के शासक, सफ़ाविद शाह से सहायता माँगी।

• इसके साथ-साथ, भारत में सूर राजवंश का तेजी से पतन हो रहा था। हुमायूँ ने 1555 ई. में अफगानों परविजय प्राप्त की और बैरम खाँ के समर्थन सेदिल्ली पर पुनः कब्जा कर लिया।

• 1556 ई. में पुराना किला स्थित शेर-ए-मण्डल नामक पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

भारत में हुमायूँ का शासन — स्थापत्यकला:

• दीनपनाह नाम से एक नया शहर बसाया।

• दिल्ली में जमाली मस्जिद और ईसा खाँ की मस्जिद का निर्माण कराया।

• उनकी पत्नी हमीदा बानो बेगम ने, हुमायूँ के मकबरे का निर्माण शुरू कराया।

चित्रकला:

• हुमायूँ ने फारस में रहते हुए मुगल चित्रकला की नींव रखी और प्रसिद्ध चित्रकारों मीर सैय्यद अली और अब्दुस समद को भारत लाया।

• उसने अपने पुस्तकालय के एक हिस्से में निगार खाना (चित्रकला कार्यशाला) की स्थापना की।

साहित्य:

• उसकी बहन गुल बदन बेगम ने "हुमायूँ-नामा" लिखी।

• उन्होंने हमजा नामा को चित्रित करने की परियोजना शुरू की, जिसे अकबर ने जारी रखा।

शेरशाह सूरी (सूर साम्राज्य) (1540-1555 ई.) परिचय फरीद, जिसे शेर खाँ के नाम से भी जाना जाता है, लोदी शासन के दौरान जौनपुर साम्राज्य के हसन खाँ (जागीरदार) का पुत्र था। एक बाघ को मारने के बाद उसे शेर खाँ की उपाधि मिली।

विजय

• उसने1540ई.में हुमायूँकोहराकरभारतमें दूसरे अफगानसाम्राज्यकीस्थापनाकी।

• शेरशाह के विजय अभियान में 1542 ई. में मालवा और रणथंभौर, 1543 ई. में रायसेन (भोपाल के पास), 1544 ई. में चित्तौड़, और 1545 ई. में कालिंजर (बांदा जिला, उत्तर प्रदेश) की विजय शामिल थी।

• कालिंजर किले की घेराबंदी के दौरान अचानक बारूद विस्फोट होने के कारण शेरशाह की मृत्यु हो गई।

• इस्लाम शाह (1545-53 ई.) और आदिल शाह सूरी (1555 ई.) इस वंश के अंतिम शासक माने जाते हैं।

प्रशासन:

उसने अत्यधिक केंद्रीकृत शासन की स्थापना की।

- **प्रमुख मंत्री:**
  - दीवान-ए-विजारत (वजीर) - राजस्व और वित्त का प्रभारी,
  - दीवान-ए-आरिज - सेना की देखरेख करने वाला,
  - दीवान-ए-रिसालत - विदेश मंत्री, और
  - दीवान-ए-इंशा - संचार व्यवस्था संभालने वाला।
- शेरशाह ने अपने साम्राज्य को सरकारों में विभाजित किया।
  - प्रत्येक सरकार का शासन एक मुख्य शिकदार (कानून और व्यवस्था) और एक मुख्य मुंसिफ (न्यायाधीश) के अधीन था।
- प्रत्येक सरकार को आगे कई परगनों में विभाजित किया गया था।
  - प्रत्येक परगना का प्रशासन एक शिकदार (सैन्य अधिकारी), अमीन (भूराजस्व अधिकारी), फोतेदार (कोषाध्यक्ष) और कारकुन (लेखाकार) द्वारा किया जाता था।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: साहित्य

1. साहित्य	**2. भारत में प्रमुख विजय**
3. हुमायूँ का निर्वासन (1540-1555 ई.)	**4. भारत में हुमायूँ का शासन**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — साहित्य

मुख्य परीक्षा दृष्टि: प्रत्येक सरकार को आगे कई परगनों में विभाजित किया गया था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: साहित्य • भारत में प्रमुख विजय • हुमायूँ का निर्वासन (1540-1555 ई.) • भारत में हुमायूँ का शासन • स्थापत्यकला | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1530, 1540, 1555, 1556, 1532

- गाँव (मौजा) मूल राजस्व इकाई था, जिसमें वंशानुगत मुखिया कर एकत्र करते थे और राज्य एवं किसानों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते थे।
- अमीन, तटबंधों के निर्माण और मरम्मत तथा खेती योग्य भूमि की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार था।
  - अन्य अधिकारियों में खजानदार (कोषाध्यक्ष), मुंसिफ-ए-खजाना (कोष निरीक्षक) और कानूनगो (राजस्व अभिलेख रखने वाला) सम्मिलित थे।
  - **लचीली राजस्व प्रणाली:** शेरशाह ने भारत में फसल-दर (राय) प्रणाली की स्थापना की, जिसमें मिट्टी की उर्वरता को ध्यान में रखते हुए, राज्य की माँग की गणना प्रति बीघे औसत उपज के एक-तिहाई के रूप में की गई। इस राशि का भुगतान मौजूदा बाजार दरों पर नकद में किया जा सकता था।
  - अकाल और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए 2.5 सेर प्रति बीघा की दर से उपकर भी लगाया गया था।
  - किसानों को पट्टा (बोया गया क्षेत्र, फसलों का प्रकार, और प्रत्येक किसान को भुगतान की जाने वाली राशि एक कागज पर लिखी जाती थी) और कबूलियत (समझौता पत्र) प्रदान किया जाता था।

एक रूढ़िवादी सुन्नी के रूप में,वे निष्पक्ष न्याय करने के लिए विख्यात हैं, यहां तक कि उन्होंने कुलीनों या रिश्तेदारों को भी दंडित किया।

- बड़े पैमाने पर दान, निराश्रितों को वजीफा देना।
- यद्यपि जिज़िया कर वसूला जाता रहा, फिर भी इसे नगर कर कहा जाता है, जिसका मुख्य अभिप्राय है कि इसे ग्रामीण क्षेत्रों में भू-राजस्व के एक भाग के रूप में वसूला जाता था।

व्यापार:

- व्यापार शुल्क को सुव्यवस्थित किया और केवल प्रवेश एवं बिक्री बिंदुओं पर कर एकत्र किया;
- सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्कों में धातु की मात्रा का मानकीकरण किया;
- व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए एक समान वजन और माप की एक प्रणाली बनाई गई।

• 178 ग्रेन वजन का चाँदी का सिक्का जारी किया, जिसे रुपिया कहा जाता था।

सेना:

• इसे तीन खंडोंमें विभाजितकिया गयाथाअर्थात घुड़सवार,हाथीऔर पैदल यात्री।

• व्यक्तिगत सेना, जिसे शाही खालसा खेल के नाम से जाना जाता था।

• दाग और हुलिया/चेहरा की प्रथा को पुनर्जीवित किया।

• स्थापत्यकला

  ◦ ग्रैंड ट्रंक रोड का पुनरुद्धार किया - (प्राचीन काल का उत्तरापथ)

    ■ बंगाल में ताम्रलिप्ति से लेकर पेशावर में पुरुषपुर तक।

    ■ व्यापार मार्गों पर सरायों (विश्राम गृहों) का निर्माण करवाया।

  ◦ दिल्ली में एक नए परकोटे वाले शहर का निर्माण, जिसे पुराना किला के नाम से जाना जाता है।

  ◦ सासाराम (बिहार) में अपनी स्वयं की समाधि का निर्माण करवाया।

• शेरशाह एक रूढ़िवादी सुन्नी था, वह निष्पक्ष न्याय देने, यहाँ तक कि दमनकारी सामंतों या रिश्तेदारों को भी दंडित करने के लिए प्रसिद्ध है।

  ◦ बड़े पैमाने पर दान दिया, निराश्रितों को वजीफा दिया।

  ◦ हिंदुओं पर जजिया कर लगाया। अकबर (1556-1605 ई.) परिचय

• अकबर का जन्म 1542 ई. में हुमायूँ के निर्वासन के दौरान अमरकोट में हुआ था।

• 1556 ई. में हुमायूँ की मृत्यु के बाद, 13 वर्ष की उम्र में अकबर का राज्याभिषेक पंजाब के कलानौर में हुआ।

• अकबर का मकबरा सिकंदरा (आगरा के पास) में स्थित है। अकबर इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ-प्रथम का समकालीन था। इनके शासनकाल में (1600) ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई ।

• **बैरम खाँ:** वह अकबर का शिक्षक और हुमायूँ का सलाहकार था। उसने 1556-60 ई. तक राज्य-संरक्षक के रूप में कार्य किया और शुरुआती विजयों की कमान संभाली, जिससे मुगल साम्राज्य का काबुल से जौनपुर तक विस्तार हुआ, जिसमें ग्वालियर और अजमेर जैसे क्षेत्र भी सम्मिलित थे।

• **बाहरी चुनौतियाँ:** आदिल शाह ने मुगलों को खदेड़ने के लिए हेमू को वजीर नियुक्त किया और उसने 'विक्रमादित्य अर्थात विक्रमजीत की उपाधि धारण की। हेमू ने आगरा पर विजय प्राप्त की और दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। यद्यपि, बैरम खाँ ने शेरशाह सूरी के खतरे को बेअसर करते हुए, उसे पानीपत के द्वितीय युद्ध (1556 ई.) में पराजित कर दिया।

• **आंतरिक चुनौती:** बैरम खाँ को अन्य अमीरों के प्रति उसके अहंकार के कारण बर्खास्त कर दिया गया और अकबर ने उसके विद्रोह को तुरंत कुचल दिया। मक्का जाते हुए रास्ते में उसकी हत्या कर दी गई और उसके परिवार को दिल्ली स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ उसके बेटे अब्दुर रहीम ने अकबर के दरबार में प्रतिष्ठा प्राप्त की और उन्हें खान-ए-खाना की उपाधि से नवाजा गया।

भारत में प्रमुख विजय

• **पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556 ई.):** 1556 ई. में अकबर के अधीन मुगल सेना ने हेमू और अफगान सेना को पराजित कर दिया।

• **मालवा (1562 ई.):**बाज बहादुर (मालवा का अंतिम सुल्तान; राजधानी मांडू) को पराजित किया; जिसने बाद अकबर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

• **गोंडवाना (1564 ई.):** रानी दुर्गावती ने मुगल विस्तार का विरोध किया लेकिन उसे इसमें पराजय का मुँह देखना पड़ा।

• **मेवाड़ (1568 ई.):**राणा उदयसिंह के पीछे हटने के बाद चित्तौड़ पर कब्जा कर लिया। चित्तौड़ के पतन के साथ ही रणथंभौर और जोधपुर जैसे कई राजपूत राज्यों ने भी आत्मसमर्पण कर दिया।

• **गुजरात (1573 ई.):**मुजफ्फर शाह के बाद से गुजरात, दक्कन पर कब्जे के लिए एक लॉन्च पैड बन गया।

• **हल्दीघाटी का युद्ध (1576 ई.):** हल्दीघाटी के युद्ध में अकबर ने निर्णायक जीत हासिल की, जहाँ महाराणा प्रताप को मान सिंह के नेतृत्व वाली मुगल सेना के हाथों बड़ी पराजय का सामना करना पड़ा। इस विजय के परिणामस्वरूप, अधिकांश प्रमुख राजपूत शासकों ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली।

• **बिहार और बंगाल का विलय (1576 ई.):** बिहार और बंगाल के अफगान शासक दाउद खाँ को पराजित किया और बाद में 1576 ई. में दोनों प्रांतों को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।

• **उत्तर और उत्तर-पश्चिम:** काबुल के मिर्जा हकीम को पराजित किया। बाद में 1586 ई. में कश्मीर और 1591 ई. में सिंध पर उसकी विजय ने उत्तर-पश्चिम में और अधिक मजबूती प्रदान की।

• **दक्कन क्षेत्र:** 1591 ई. में खानदेश क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। 1596 ई. तक, अहमदनगर की संरक्षिका चाँद बीबी से बरार का अधिग्रहण कर लिया गया। अहमदनगर के कुछ हिस्से 1600 ई. तक मुगल नियंत्रण में थे।

के द्रीय प्रशासन:

• **वजीर या दीवान-ए-आला:** राजस्व विभाग का प्रमुख था लेकिन उसके पास कोई उच्च मनसब नहीं होता था। वह सभी आय और व्यय के लिए जिम्मेदार था और खलीसा, जागीर एवं इनाम भूमि पर नियंत्रण रखता था।

• **खालसा:** सीधे सम्राट के स्वामित्व वाली भूमि।

• **जागीर:** मनसबदारों को वेतन के रूप में दी जाती थी।

• **इनाम:** विद्वान और धार्मिक पुरुषों को सौंपी जाती थी।

• इनाम अनुदान सभी धर्मों के लोगों को दिए गए, जिसने खेती को प्रोत्साहित किया गया। मुगल अमीरों के उच्च वेतन के कारण इसने विदेशी प्रतिभाओं को आकर्षित किया।

• **मीर बख्शी:** सैन्य प्रशासन का प्रमुख था तथा सशस्त्र टुकड़ियों और युद्ध उपकरणों की देखरेख के लिए जिम्मेदार था। वह व्यक्तिगत रूप से घोड़ों की ब्रांडिंग (दाग) की निगरानी करता था और सैनिकों के मस्टर-रोल (चेहरा) की जाँच करता था। मनसबदारों की नियुक्तियों और उनके वेतन पत्रों के सभीआदेश, उसके द्वारा अनुमोदित और पारित किए जाते थे। वह खुफिया और सूचना एजेंसियों का प्रमुख भी था।

• खुफिया अधिकारी (बरीद) और समाचार देने वाले (वाकिया नवीस) पूरे साम्राज्य में तैनात किये गए थे।

• अकबर व्यक्तिगत सैनिकों (अहदी सैनिकों) की एक टुकड़ी भी रखता था। वे सम्राट के अपने घरेलू सैनिक थे जिन्हेंसीधे मुगल सम्राट द्वारा भर्ती किया जाता था, जो मुख्य रूप से सम्राट के अपने रक्त संबंधियों और कबीलों से होते थे।

• बर्नियर शाही कारखानों या कार्यशालाओं के कामकाज का विस्तृत विवरण प्रदान करता है।

• **मीर समान:** शाही घराने का प्रभारी, आपूर्ति औररसद का प्रबंध करता था। वह कारखानों में विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन की देखरेख करता था और दरबार के शिष्टाचार को बनाए रखने और शाही अंगरक्षकों को नियंत्रित करने के लिए जिम्मेदार था।

कोर्निश: विनम्रता और समर्पण का प्रतीक एक औपचारिक अभिवादन था, जिसमें दरबारी अपनी दाहिनी हथेली अपने माथे पर रखकर और अपना सिर झुकाकर अभिवादन करता था।

• **सद्र-उस-सुदूर:** वह धार्मिक मामलों का प्रधान होता था। उसका मुख्य कर्तव्य शरीयत के कानूनों की रक्षा करना था। वह दान-नकद (वजीफा) और भूमि अनुदान (सुयुर्गल, इनाम, मदद-ए-माश) का वितरण भी संभालता था।

• बर्नियर शाही कारखानों या कार्यशालाओं की कार्यप्रणाली का विस्तृत विवरण प्रदान करता है।

प्रांतीय प्रशासन:

साम्राज्य को 12 प्रांतों (सूबों) में विभाजित किया गया, प्रत्येक को एक दीवान, बख्शी, सद्र और काजी प्रदान किया गया था, जो अपने केंद्रीय समकक्षों के समान, कार्यों के लिए जिम्मेदार थे। प्रांतों को आगे सरकार और परगना में विभाजित किया गया था। [यूपीएससी 2021]

सूबा (प्रांत):

• सूबेदार इसका प्रधान होता था जो कानून और व्यवस्था के लिए जिम्मेदार होता था।

• दीवान राजस्व का प्रबंधन करता था, कर संग्रहण की निगरानी करता था और खेती की भूमि में वृद्धि करता था।

• राजस्व विभाग के माध्यम से किसानों के लिए तकावी (ऋण) की सुविधा दी जाती थी।

• बख्शी घोड़ों और सैनिकों की देखरेख करता था।

• सदर धार्मिक और न्यायिक मामलों की देखरेख करने वाले केंद्रीय प्राधिकरण का प्रतिनिधित्व करता था।

सरकार (जिला):

• फौजदार इसका प्रधान होता था जो विद्रोहों और कानून-व्यवस्था की समस्याओं का ध्यान रखने, निवासियों की रक्षा करने और राजस्व संग्रहण में सहायता करने के लिए जिम्मेदार था।

• अमलगुजार/आमिल सबसे महत्त्वपूर्ण राजस्व संग्रहकर्ता था। एक अच्छे आमिल से अपेक्षा की जाती थी कि वह खेती योग्य भूमि को बढ़ाए और किसानों को बिना किसी दबाव के स्वेच्छा से, राजस्व का भुगतान करने के लिए प्रेरित करे।

परगना:

• शिकदार (कार्यकारी अधिकारी) इसका प्रधान होता था जो राजस्व संग्रहण में अमलगुजार की सहायता करता था।

• कानूनगो भूमि अभिलेख रखता था।

• शहरों में नियुक्त कोतवाल, कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिम्मेदार था।

गाँव:

• मुकद्दम (ग्राम प्रधान) इसका प्रधान होता था।

• पटवारी गाँव के राजस्व अभिलेख का प्रबंधन करता था।

• जमींदार कानून एवं व्यवस्था तथा राजस्व संग्रहण में सहायता करते थे।

• किलादार किलों के प्रशासन के लिए जिम्मेदार था।

भू-राजस्व प्रणाली:

• भू-राजस्व व्यवस्था में राजस्व संग्रहण के दो चरण सम्मिलित हैं:

• कर निर्धारण (जमा) और वास्तविक संग्रहण (हासिल)।

भू-राजस्व प्रणाली:

• शेरशाह की प्रणाली को संशोधित किया और राजा टोडरमल ने भूमि माप और वर्गीकरण को मानकीकृत करके , इसे और परिष्कृत किया।

• राजस्व औसत उपज का एक-तिहाई निर्धारित किया गया था और इसका भुगतान मुख्य रूप से नकद में किया जाता था।

• जब्त/जब्ती प्रणाली (शेरशाह द्वारा लागू की गई और अकबर द्वारा अपनाई गई) राजा टोडर मल ने सुधारों के साथ लागू किया, जिसे टोडर मल का बंदोबस्त भी कहा जाता है।

• 1580 ई. में शुरू की गई दहसाला प्रणाली में स्थानीय कीमतों को ध्यान में रखते हुए पिछले दस वर्षों की औसत उपज के आधार पर राजस्व की गणना की जाती थी। समान उत्पादकता वाले परगनाओं को अलग-अलग कर-निर्धारण मंडलों में संगठित किया गया था।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: प्रांतीय प्रशासन



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — प्रांतीय प्रशासन

मुख्य परीक्षा दृष्टि: जब्त/जब्ती प्रणाली (शेरशाह द्वारा लागू की गई और अकबर द्वारा अपनाई गई) राजा टोडर मल ने सुधारों के साथ लागू किया, जिसे टोडर मल का बंदोबस्त भी कहा जाता है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: प्रांतीय प्रशासन • सूबा (प्रांत) • सरकार (जिला) • परगना • गाँव | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1586, 1591, 1596, 1600, 2021

• भूमि को उनकी संबंधित कर-निर्धारण दरों के आधार पर निम्नलिखित में वर्गीकृत किया गया था:
  ◦ पोलज (लगभग हर साल खेती के तहत भूमि),
  ◦ परती (ऐसी भूमि जिस पर 1 से 2 वर्ष के अंतराल पर खेती होती थी),
  ◦ चाचर (दो से तीन वर्षों तक परती),
  ◦ बंजर (पाँच से अधिक वर्षों तक परती)

• करोड़ी को राजस्व संग्रहण एवं लेखापरीक्षा के लिए नियुक्त किया जाता था।

• आमिलों (राजस्व संग्रहकर्ताओं) को विभिन्न आवश्यकताओं के लिए तकावी ऋण प्रदान करके और आसान किश्तों में पुनर्भुगतान की व्यवस्था करके , किसानों की सहायता करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था।

अकबर के शासनकाल के दौरान लगान की विधियाँ:

• **बटाई/गल्ला बख्शी (Batai/Ghalla Bakhshi):** किसान और राज्य के बीच फसल का बँटवारा, जिसका नकद या वस्तु के रूप में भुगतान किया जाता था। इसमें सम्मिलित थे:
  ◦ बटाई या भाओली (फसल काटने के बाद उसका बँटवारा);
  ◦ खेत-बटाई (बुवाई के बाद खेत बाँटना);
  ◦ लंग-बटाई (फसल का ढेर लगाने के बाद अनाज का बँटवारा)

• **हस्त-ओ-बद (Hast-o-bud):** अधिकारी कुल उपज का अनुमान लगाते थे और गाँव का निरीक्षण करके राजस्व माँग निर्धारित करते थे साथ ही कुल उपज का आकलन करने के लिए हलों की संख्या पर विचार कर थे।

• **कनकुट (Kankut):** भूमि की माप की जाता थी और प्रत्येक खड़ी फसल के लिए प्रति इकाई उपज का अनुमान लगा कर लगान निश्चित करती ।

• **नसक (Nasaq):** राज्य के राजस्व की गणना के लिए पिछले आकलन का इस्तेमाल किया जाता था।

मनसबदारी व्यवस्था “मनसबदार" शब्द उस व्यक्ति के लिए उपयोग किया जाता था जिसके पास मनसब होता था, जिसका अर्थ है कोई पद या रैंक। यह एक ग्रेडिंग प्रणाली थी जिसका उपयोग मुगलों द्वारा (1) रैंक, (2) वेतन और (3) सैन्य जिम्मेदारियों को तय करने के लिए किया जाता था।

• पद औरवेतन का निर्धारण, जात (zat) नामक संख्यात्मक मान द्वारा किया जाता था। जात जितनी ऊँची होती थी, दरबार में अमीर का पद उतना ही अधिक प्रतिष्ठित होता था और उसका वेतन भी उतना ही अधिक होता था।

• मनसबदार की सैन्य जिम्मेदारियों के लिए उसे एक निश्चित संख्या में सवार या घुड़सवार सैनिक रखने की आवश्यकता होती थी।
  ◦ मनसबदार अपने घुड़सवारों को निरीक्षण के लिए लाता था, उनका पंजीकरण कराता था, उनके घोड़ों की ब्रांडिंग की जाती थी (घोड़ों को दागा जाता था) और फिर उन्हें वेतन के रूप में भुगतान करने के लिए मनसबदार को धन प्राप्त होता था।
  ◦ 500 ज़ात से नीचे के पद वाले व्यक्तियों को मनसबदार कहा जाता था; 500 से 2500 से नीचे के पद वाले लोगों को अमीर कहा जाता था और 2500 और उससे अधिक पद वाले लोगों को अमीर-ए-उम्दा या उम्मीद-ए-आज़म कहा जाता था।
  ◦ हालाँकि मनसबदार शब्द का प्रयोग कभी-कभी तीनों श्रेणियों के लिए किया जाता था। दाग़ प्रणाली का उपयोग कर मनसबदारी प्रणाली को प्रभावी बनाया गया। दाग़ प्रणाली का उपयोग कर मनसबदारी प्रणाली को प्रभावी बनाया गया।
  ◦ मनसबदारों को उनका वेतन जागीर के रूप में मिलता था।
  ◦ जागीरें कुछ हद तक इक्ता जैसी होती थीं। लेकिन मुक्ती के विपरीत, अधिकांश मनसबदार वास्तव में अपनी जागीरों में नहीं रहते थे या उनका प्रशासन नहीं करते थे। उनके लिए राजस्व उनके नौकरों द्वारा एकत्र किया जाता था जबकिमनसबदार, स्वयंदेशके किसी अन्यहिस्सेमें सेवाकरते थे।
  ◦ जागीरों का नियमित रूप से हस्तांतरण किया जाता था और वे वंशानुगत नहीं थीं। इसके अतिरिक्त, मनसबदार की मृत्यु पर इन्हें राज्य को वापस कर दिया जाता था।

• राजस्व उद्देश्यों के लिए, सारी भूमि को दो भागों में बाँट दिया गया - जागीर और खलीसा।

• खलीसा से एकत्र किया गया भू-राजस्व शाही खजाने में जाताथा, वहीं दूसरी ओर जागीर से प्राप्त राजस्व मनसबदारों के पास जाता था।

• राजा मान सिंह और मिर्जा अजीज कोका जैसे असाधारण व्यक्तियों के पास 7,000 घुड़सवार थे। इसप्रणाली के कारण अमीर वर्ग में विविधता आ गई। इसमें शुरू में मध्य एशियाई और फारसी, लेकिन बाद में राजपूत और शेखजादा (भारतीय मुस्लिम) भी शामिल हो गए।

राजपूत नीति

- सुलह नीति अपनाई, उनके परिवारों के साथ वैवाहिक संबंध बनाए और उन्हें दरबारों में उच्च पद सौंपे।
- उसने हरखा बाई (आमेर के राजा भारमल की बेटी) और बीकानेर एवं जैसलमेर की राजकुमारियों से शादी की।

स्थापत्यकला:

- **किले:** आगरा के किलेका निर्माण लाल बलुआ पत्थर का उपयोग करके किया गया था। इसके अतिरिक्त लाहौर और इलाहाबाद में किलों का निर्माण करवाया गया।
  - अकबर नेमान मंदिर से प्रेरित हिंदूडिजाइन सिद्धांतों के आधार पर आगरा किले के अंदर जहाँगीरी महल का निर्माण करवाया।
- **फतेहपुर सीकरी (विजय का शहर):** यह एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।

इसमें निम्नलिखित शामिल है:

- बुलंद दरवाजा (1572-73) ई. में गुजरात पर विजय के बाद निर्मित, जामा मस्जिद, जोधा बाई का महल, बौद्ध विहार के समान डिजाइन किया गया पंच महल, दीवान-ए-खास, दीवान-ए-आम और शेख सलीम चिश्ती का मकबरा।

धार्मिक दृष्टि कोण:

- सुधारात्मक उपाय
  - युद्ध बंदियों का जबरन धर्मांतरण बंद कराया।
  - 1563 ई. में तीर्थयात्रा पर कर और 1564 ई. में जजिया कर समाप्त कर दिया।
  - सती प्रथा को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया; विधवा पुनर्विवाह की अनुमति दी गई।
  - हिंदुओं को नए मंदिरों की मरम्मत और निर्माण की अनुमति दी गई।
- फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना का निर्माण करवाया
  - धार्मिक चर्चा के लिए हिंदू धर्म, जैन धर्म, ईसाई धर्म और पारसी धर्म सहित विभिन्न धर्मों के विद्वानों को आमंत्रित किया गया।
  - इबादत खाना के विद्वानों में पुरसोत्तम दास, हीरा विजय सूरी, दस्तूर मेहरजी राणा, मोनसेरेट और रोडोल्फो एक्वाविवा सम्मिलित थे।
- दीन-ए-इलाही
  - अकबर ने 1582 ई. में दीन-ए-इलाही या तौहिंद-ए-इलाही (ईश्वरीय एके श्वरवाद) नामक एक नया धर्म शुरू किया।
  - इसमें एक ईश्वर में विश्वास और "सुलह-ए-कुल" पर जोर दिया गया है, जिसमें तर्क संगत आधार पर विभिन्न धर्मों के सकारात्मक पहलुओं को शामिल किया गया, जैसा कि बदायूँनी द्वारा प्रलेखित किया गया है।

प्रयासों के बावजूद, दीन-ए-इलाही को व्यापक स्वीकृति नहीं मिली और अकबर के निधन के बाद यह धीरे-धीरे समाप्त हो गया।

- अकबर के जीवनकाल के दौरान, बीरबल, अबुल फजल और अबुल फैजी सहित केवल कुछ व्यक्तियों ने इस नए धर्म का पालन किया।

सुलह-ए-कुल (सार्वभौमिक शांति) अबुल फजल ने सुलह-ए-कुल के आदर्श को धार्मिक सहिष्णुता और समावेशिता के माध्यम से प्रबुद्ध शासन की आधारशिला के रूप में वर्णित किया है। सुलह-ए-कुल में, सभी धर्मों और विचारधाराओं को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता थी, लेकिन इस शर्त पर कि वे राज्य के अधिकार को कमजोर नहीं करेंगे या आपस में नहीं लड़ेंगे।

- जैन भिक्षु हरि विजय सूरी अकबर के दरबार में कुछ वर्षों तक रहे और उन्हें जगद्गुरु की उपाधि से नवाजा गया।

साहित्य:

- अकबरनामा का संकलन अबुल फजल ने किया था। इसमें अकबर के शासनकाल के इतिहास के तीन खंड सम्मिलित थे।
  - पहला खंड अकबर के पूर्वजों से संबंधित था।
  - दूसरे खंड में अकबर के शासनकाल की घटनाओं का वर्णन किया गया था।
  - तीसरा खंड आइन-ए-अकबरी था।
- आइन-ए-अकबरी में निम्नलिखित का विवरण है-

- अकबर का प्रशासन, सेना, राजस्व और उसके साम्राज्य का भूगोल।
- भारत में रहने वाले लोगों की परंपराओंऔर संस्कृति के बारे में विवरण।
- फसलों, पैदावार, कीमतों और मजदूरी के बारे में सांख्यिकीय विवरण। अकबर ने 1574 ई. में फतेहपुर सीकरी में एक मकतब खाना ('अनुवाद गृह') स्थापित किया। इसका अध्यक्ष अबुल फजल था। इसका प्राथमिक उद्देश्य अंतर-धार्मिक सहयोग था।

• अनुवाद

- महाभारत, जिसका नाम बदलकर 'रज्मनामा' (युद्धों की पुस्तक) रखा गया, का फारसी में अनुवाद किया गया। यह कार्य बदायूँनी और फैजी की देखरेख में पूरा हुआ।
- भास्कराचार्य की लीलावती का फैजी द्वारा फारसी में अनुवाद किया गया।
- बीसवीं सदी की शुरुआत में हेनरी बेवरिज द्वारा अकबरनामा का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। सुलेख, हस्तलेखन की कला को प्रमुखता मिली।

किताबखाना एक पुस्तकालय था, अर्थात वह स्थान जहाँ बादशाह की पांडुलिपियों का संग्रह किया जाता था और नई पांडुलिपियाँ तैयार की जाती थीं।

- सुलेख, हस्तलेखन की कला, को प्रमुखता मिली।
- मुहम्मद हुसैन अल-कातिब कश्मीरी (लगभग 1575-1605 ई.) सम्राट अकबर के दरबार में सबसे प्रसिद्ध सुलेखक था। अकबर ने उसे जरीन कलम (Golden Pen) की उपाधि दी थी। उन्होंने जहाँगीर के दरबार में काम करना जारी रखा और उनका अभिलिखित कार्य 1580-1608ई. के बीच का है। अकबर की पसंदीदा हस्तलिखित शैली नस्तालिक(एक लिपि) थी।

चित्रकला:

• **प्रमुख चित्रकार:** दसवंत और बसावन।
- बसावन का मैडोना एंड चाइल्ड (1580) मुगल चित्रकला का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है।

• अकबर हमजानामा (विशाल सचित्र पांडुलिपि के लिए विख्यात)
- यह शानदार परियोजना दो फारसी उस्तादों मीर सैय्यद अली और अब्दुस्समद की देखरेख में पूरी हुई।

• **अकबर के नवरत्न:** अकबर के दरबार में बुद्धिजीवियों का एक समूह था जिन्हें नवरत्न कहा जाता था।

अबुल फजल शाही दरबार का इतिहासकार जिसने अकबरनामा लिखी।

फै जी (राज कवि) फारसी कवि और अबुल फजल का बड़ा भाई।

फकीर अजिओं दीन एक सूफी फकीर और अकबर का प्रमुख सलाहकार।

तानसेन (रामतनु पांडे) प्रसिद्ध संगीतकार, राजा रामचन्द्र के दरबारी संगीतकार, जिन्होंने ग्वालियर के सूफी फकीर मुहम्मद गौस के अधीन इस्लाम स्वीकार कर लिया। उन्हें तानसेन की उपाधि ग्वालियर के राजा विक्रमजीत ने दी थी। **[UPSC-2019]**

अकबर ने उन्हें "मियाँ" नाम दिया।

बीरबल (कवि प्रिय) एक दरबारी जिसे अकबर ने राजा और बीरबल की उपाधियाँ प्रदान कीं। उत्तर-पश्चिमी सीमा पर युसूफ शाहियों से लड़ते हुए मृत्यु हो गई।

राजा टोडरमल

(उपाधि: दीवान-ए-अशरफ) वित्त मंत्री, जो राजस्व व्यवस्था की देखरेख करते थे।

मानक वजन, माप और राजस्व जिलों की शुरुआत

की।

राजा मान सिंह एक मनसबदार, अकबर का रिश्तेदार।

अब्दुल रहीम — खान-ए-खाना

एक महान कवि; बाबरनामा का तुर्की में अनुवाद किया, बैरम खाँ के पुत्र थे।

मुल्ला दो-पियाजा मुगल बादशाह अकबर के सलाहकार और वजीर।

जहाँगीर (1605-1627 ई.) परिचय

- नूरुद्दीन जहाँगीर, सूफी संत शेख सलीम चिश्ती के नाम पर 'सलीम' के नाम से जाना जाता था।
- उसका जन्म राजपूत राजकुमारी मरियम-उज-जमानी से हुआ था।
- जहाँगीर का मकबरा लाहौर में है।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: साहित्य

1582	1574	1575	1605
साहित्य	चित्रकला	राजा टोडरमल	अब्दुल रहीम

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — साहित्य

मुख्य परीक्षा दृष्टि: उसका जन्म राजपूत राजकुमारी मरियम-उज-जमानी से हुआ था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: साहित्य • चित्रकला • राजा टोडरमल • अब्दुल रहीम • खान-ए-खाना | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1582, 1574, 1575, 1605, 1580

IUC विशेष स्मृति सूत्र #6: शिवाजी का अष्टप्रधान मंत्रिमंडल

ट्रिक: 'पेशवा प्रधानमंत्री, अमात्य/मजूमदार वित्त मंत्री, सुमंत/दबीर विदेश मंत्री, वाकियानवीस गुप्तचर व गृह, सुरुनवीस/चिटनीस पत्राचार, सर-ए-नौबत सेनापति, पंडितराव धार्मिक मामले, न्यायाधीश न्याय विभाग'।

सैन्य अभियान/विजय:

- **राज्यक्षेत्रीय विस्तार:** उसके शासन काल में बहुत कम प्रगति हुई।
- उसके पुत्र खुसरो द्वारा असफल विद्रोह, गुरु अर्जन देव ने उसका साथ दिया, खुसरो को पकड़ लिया गया और गुरु अर्जुन देव को फाँसी दे दी गई। (मुगलों द्वारा फाँसी दिए जाने वाले पहले सिख गुरु)।
- **बंगाल:** जहाँगीर ने इस क्षेत्र में अफगान विद्रोही उस्मान खाँ को वश में किया।

गुरु तेग बहादुर: 1675 ई. में औरंगजेब के आदेश पर मुगलों द्वारा मारे जाने वाले दूसरे सिख गुरु।

- **मेवाड़:** अपने बेटे खुर्रम (शाहजहाँ) के नेतृत्व में उसने राणा अमर सिंह के खिलाफ एक सैन्य अभियान के बाद मेवाड़ को अपने कब्जे में ले लिया।
- **दक्कन:** 1608 ई. में, अहमद नगर ने मलिक अंबर के नेतृत्व में स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। जहाँगीर के शासनकाल के दौरान, दक्कन में मुगल क्षेत्र अपरिवर्तित रहा।

जहाँगीर के शासनकाल के दौरान दो अंग्रेज यात्री भारत आए:

- **विलियम हॉकिन्स (1608-09) ई.):** वह कारखाना स्थापित करने के लिए जहाँगीर की सहमति प्राप्त करने में विफल रहा। उसे 400 का मनसब और 'इंगलिश खाँ' की उपाधि दी गई, क्योंकि वह तुर्की भाषा में पारंगत था।
- **सर या टॉमस रो (1615 ई.):** उसे सूरत में एक ब्रिटिश कारखाना स्थापित करने की अनुमति मिली।

नूरजहाँ का प्रभाव:

जहाँगीर को शासन की अपेक्षा, कला और चित्रकला में अधिक रुचि थी। उसकी फारसी पत्नी मेहरुन्निसा, जिसका नाम जहाँगीर ने नूर-जहाँ रखा, सिंहासन के पीछे की वास्तविक शक्ति बन गई।

- उसके नाम से सिक्के जारी किए गए और उसे बादशाह बेगम की उपाधि दी गयी।
- नूर-जहाँ ने दसवर्षों तक साम्राज्य पर शासन किया, लेकिन दिसंबर, 1645 ई. में जहाँगीर की मृत्यु के बाद उसकी शक्ति और प्रभाव समाप्त हो गया।

भारत में जहाँगीर का शासन — प्रशासन:

• जहाँगीर ने अपने शासनकाल में "दो-अस्पा-सिंह-अस्पा" प्रणाली को जोड़ा, जो मनसबदारी प्रणाली का एक संशोधन था, जिसमें एक मनसबदार अपने जात पद को बढ़ाए बिना ही एक बड़ी घुड़सवार सेना रख सकता था।

- दो-अस्पा - दो घोड़ों वाला एक सैनिक।
- सिंह-अस्पा - तीन घोड़ों वाला एक सैनिक।

• जहाँगीर पहला बादशाह था जिसने महसूस किया कि मराठा दक्कन में 'प्रभावशाली' थे और उसने उन्हें अपने पक्ष में लाने की कोशिश की। यह नीति शाहजहाँ द्वारा जारी रखी गयी।

स्थापत्यकला:

• जहाँगीर ने मोती मस्जिद का निर्माण लाहौर में करवाया था।

• जहाँगीर ने शालीमार बाग का निर्माण कश्मीर में किया गया था।

• जंजीर-ए-अदल (न्याय की जंजीर) को बादशाह से न्याय चाहने वालों के लिए एक सुविधा के रूप में आगरा के किले में लगाया गया था।

कला: जहाँगीर के अधीन मुगल चित्रकला ने प्रकृतिवाद और उच्चतम स्तर की वैज्ञानिक सटीकता हासिल की।

• आकृति शैली (Portrait Style) में उसकी विशेष रुचि थी। उसने अपने शासनकाल के दौरान चित्रों में आभामंडल (सिर के पीछे गोलाकार दिव्य प्रकाश) का उपयोग शुरू किया। [यूपीएससी 2019]

• मुरक्कास(Muraqqas) (एल्बमोंमें लगाएजानेवाले व्यक्तिगतचित्र)लोकप्रिय हो गए।

• उसके दरबार में कुछ प्रख्यात चित्रकार थे-

- आका रिजा
- अब्दुल हसन (नादिर-उल-जमान) - आका रिजा का पुत्र।
- उस्ताद मंसूर (नादिर-उल-अस्र) - एक प्रमुख प्रकृति चित्रकार।
- बिशन दास।

• जहाँगीर का प्रभाव महान डच चित्रकार रेम्ब्रांट तक पहुँचा, जिसने मुगल लघुचित्रों से प्रेरणा ली।

साहित्य:

• जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा तुज़ुक-ए-जहाँगीरी फारसी में लिखी। इससे कला में उसकी गहरी रुचि तथा पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं के चित्रण में वैज्ञानिक सटीकता हासिल करने के उसके प्रयासों के बारे में पता चलता है।

धार्मिक दृष्टिकोण:

• जहाँगीर ने अपनी धार्मिक नीति में अपने पिता की सुलह-ए-कुल नीति को जारी रखा।

• वह अक्सर मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर जाता था।

• वह विभिन्न प्रकार की आध्ययात्मिक चर्चा का स्वागत करता था।

• उसने एक वैष्णव संन्यासी गोसाईंजदरूप से मुलाकात की, और शेख अहमद सरहिंदी के साथ संवाद किया, जो नक्शबंदी सूफी संप्रदाय के एक प्रमुख व्यक्ति थे और अकबर की नीतियों के आलोचक थे।

शाहजहाँ (1628-1658 ई.) परिचय शाहजहाँ ने 1627 ई. में जहाँगीर की मृत्यु के बाद अमीरों और सेना के समर्थन से आगरा में सिंहासन संभाला। उसके शासनकाल में मुगल अपनी स्थापत्य उपलब्धियों और सांस्कृतिक गौरव के शिखर पर पहुँच गए।

भारत में प्रमुख घटनाएँ /युद्ध

• उसने 1629 ई. में खानदेश क्षेत्र मेंशिवाजी के पिता, शाहजी को पराजित किया।

• उसने 1632 ई. में हुगली में पुर्तगालियों को हराया (अवैध व्यापार प्रथाओं के लिए)।

• **दक्कन:** अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा के खिलाफ अभियान शुरू किया।

• **उत्तर-पश्चिम:** उज्बेगों से बल्ख को जब्त करने का अभियान असफल रहा और कंधार सफाविदों के हाथों हार गया। अफगान अमीर खान जहाँ लोदी ने विद्रोह किया, लेकिन उसे दबा दिया गया।

• बुंदेलों को पराजित किया और ओरछा पर कब्जा कर लिया।

प्रशासन:

• मनसबदारों की संख्या में असाधारण वृद्धि हुई, उन पर राज्य के राजस्व का तीन-चौथाई से अधिक खर्च हो जाता था।

• उसने शस्त्रागार के महत्त्वपूर्ण पहलुओं की उपेक्षा की, बेहतर आग्नेयास्त्रों के विकास में बहुत कम रुचि ली और आयुध विज्ञान में कोई निवेश नहीं किया।

• समर्पण के उच्चतम रूप सिजदा (पूर्ण साष्टांग प्रणाम) के स्थान पर चाहर तस्लीम (चार बार नमस्कार का तरीका) और जमीनबोस (जमीन को चूमना) की शुरुआत की गई।

धार्मिक नीति:

• रूढ़िवादी धार्मिक नीति अपनाई, जिसमें इस्लाम के भीतर पुनरुत्थानवादी ताकतों, खास तौर पर नक्शबंदी सूफियों का प्रभाव था।

• यह अकबर की अधिक उदार और समावेशी नीतियों से विचलन था।

स्थापत्यकला:

• मुगल साम्राज्य शाहजहाँ के अधीन अपनी स्थापत्यकला के चरमोत्कर्ष पर था।

• शाहजहाँ ने 1631 ई. में अपनी पत्नी मुमताज महल (अर्जुमंद बानो बेगम) की याद में ताज महल का निर्माण शुरू कराया। यह 1648 ई. पूर्ण रूप से बनकर तैयार हुआ।

  ◦ उस्ताद ईसा और ईसा मुहम्मद अफांदी मुख्य वास्तुकार थे, वहीं दूसरी ओर इस्माइल खाँ ने ताज महल के गुंबद को डिजाइन किया था।

• शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान मस्जिद-निर्माण का विकास हुआ, जिसमें उल्लेखनीय निर्माण निम्नलिखित थे:

  ◦ आगरा में मोती मस्जिद (पूरी तरह से सफेद संगमरमर से निर्मित)।

  ◦ आगरा में शीश महल और मुसम्मन बुर्ज।

  ◦ दिल्ली में जामा मस्जिद का निर्माण लाल पत्थर से किया गया था।

• शाहजहाँ के शासनकाल में किला-निर्माण अपने चरमोत्कर्ष पर था, जिसमें दिल्ली का लाल किला, रंग महल, दीवान-ए-आम और दीवान-ए-खास सम्मिलित थे।

• शाहजहाँ को शालीमार बाग के निर्माण और शाहजहाँनाबाद शहर की स्थापना का भी श्रेय दिया जाता है ।

• दिल्ली के लाल किले में दीवान-ए-खास (हॉल ऑफ प्राइवेट ऑडियंस, या मिनिस्टर्स रूम) में प्रसिद्ध मयूर सिंहासन शाहजहाँ के लिए बनाया गया था। । साहित्य

• इनायत खाँ ने 'शाहजहाँनामा' लिखी। (यह शाहजहाँ के शासनकाल का एक सचित्र इतिहास है)।

• उसके दरबारी इतिहासकार अब्दुल हमीद लाहौरी ने 'बादशाहनामा' लिखी। (शाहजहाँ के शासनकाल के आधिकारिक इतिहास के रूप में लिखी सचित्र कृति)।

उत्तराधिकार का युद्ध: 1657-1658 ई. में शाहजहाँ के पुत्रों में उत्तराधिकार को लेकर संघर्ष हुआ। मुगल उत्तराधिकार के इस युद्ध में, औरंगजेब विजयी हुआ और दारा शिकोह सहित उसके तीन भाई मारे गए। शाहजहाँ को आगरा में आजीवन कैद रखा गया।

• **दौराई का युद्ध (अजमेर) (मार्च, 1659 ई.):** यह औरंगजेब और दारा शिकोह के बीच अंतिम युद्ध था, जिसमें औरंगजेब विजयी हुआ।

दारा शिकोह (1615-1659 ई.) शाहजहाँ का सबसे बड़ा पुत्र था, जिसे "उदार मुस्लिम" बताया जाता है।

उसने हिंदू धर्म और इस्लाम के बीच घनिष्ठ संबंध पाया।

• उसकी कृतियों में "मज्म 'उल बह्रैन' (दो महासागरों का मिलन) और "सिर्र-ए-अकबर" (महान रहस्य) सम्मिलित हैं।

• उसने उपनिषदों और भगवद गीता जैसे हिंदू ग्रंथों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद भी किया।

औरंगजेब (1658 - 1707 ई.) परिचय

• औरंगजेब (आलमगीर, "विश्व विजेता") 1658 ई. में सिंहासन पर बैठा।

• उसके पचास वर्षों के शासनकाल को दो बराबर भागों में विभाजित किया गया है:

◦ **पहले पच्चीस वर्ष:** वह उत्तर में, मुख्य रूप से दिल्ली में रहा और दक्कन को अपने अधीनस्थ (वायसराय) को सौंपकर उत्तरी भारत के मामलों में व्यक्तिगत रूप से व्यस्त रहा।

◦ **1681 ई. के आस-पास :** उसके एक बेटे शहजादा अकबर के विद्रोह ने उसे दक्कन जाने के लिए प्रेरित किया। उसके बाद वह कभी दिल्ली नहीं लौटा, 1707 ई. में अहमद नगर में उसकी मृत्यु हो गई।

प्रमुख घटनाएँ /युद्ध:

- **सरायघाट का युद्ध (1671 ई.):** औरंगजेब ने अहोमों के खिलाफ सैन्य अभियान चलाया।
- **उत्तर में:**
  - जाटों के विद्रोह (मथुरा-1669 ई.) को नियंत्रित करने में सीमित सफलता मिली।
  - हरियाणा क्षेत्र के सतनामियों (1673 ई.) और सिखों (1675 ई.) के विद्रोहों को कुचल दिया गया।
  - मारवाड़ में (1678 ई.) जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद विद्रोहों को दबा दिया गया।
  - मेवाड़ के राणा का विद्रोह 1681 ई. में हस्ताक्षरित शांति संधि के साथ समाप्त हुआ।
- **दक्कन में:**
  - 1686 ई. में बीजापुर के आदिल शाही शासक सिकंदर आदिल शाह को पराजित किया और 1687 ई. में गोलकुंडा के शासक अबुल हसन कुतुबशाह को हराकर गोलकुंडा पर कब्जा कर लिया।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: धार्मिक नीति

1. धार्मिक नीति	**2. उत्तर-पश्चिम**
3. प्रशासन	**4. स्थापत्यकला**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — धार्मिक नीति

मुख्य परीक्षा दृष्टि: सरायघाट का युद्ध (1671 ई.): औरंगजेब ने अहोमों के खिलाफ सैन्य अभियान चलाया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: धार्मिक नीति • उत्तर-पश्चिम • प्रशासन • स्थापत्यकला • उत्तराधिकार का युद्ध | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1631, 1648, 1657, 1658, 1659

◦ शिवाजी ने गुरिल्ला रणनीति के माध्यम से मुगल सेनाओं का सामना किया (1680 ई. में उनकी मृत्यु तक), बाद में शिवाजी के पुत्रों ने इस रणनीति को औरंगजेब की मृत्यु तक जारी रखा।

धार्मिक दृष्टिकोण:

- गैर-मुसलमानों को हाशिए पर रखने की कठोर धार्मिक नीति के कारण विभिन्न विद्रोह हुए-
  - 1669 ई. और 1685 ई. में जाट विद्रोह,
  - 1672 ई. में सतनामी विद्रोह,
  - नौवें सिख गुरु तेग बहादुर को फाँसी दिया जाना, जिसके कारण 1675 ई. में सिख विद्रोह हुआ।
- दरबार में संगीत, शराब पीने और अफीम के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
- हिंदुओं पर जजिया और तीर्थयात्रा कर पुनः लगाया।
- उसने दरबारी संगीतकारों और शाही चित्रकारों को बर्खास्त कर दिया और झरोखा दर्शन की प्रथा को बंद कर दिया।
- उसने नक्शबंदी सूफी सिलसिला के प्रभाव में सौर संवत्के स्थान पर हिजरी संवत्लागू किया।
- नैतिक संहिताओंऔर शरिया को कायम रखने के लिए मुहतसिब नियुक्त किए गए।
- भूमि पर मूल लगान से ऊपर लगाया जाने वाला कर "अबवाब" बंद कर दिया गया।
- इस्लामी सिद्धांतों के कठोर पालन के लिए उसे अक्सर जिंदा पीर (जीवंत संत) था।

अमीर (Nobles):

• आनुवंशिकता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई थी और खानजादा (मनसबदारों के पुत्र और वंशज) अमीर वर्ग के लगभग आधे थे।

• उसके शासन काल में हिंदू अधिकारियों की संख्या सर्वाधिक थी।

◦ मनसबदारों मेंमराठों की संख्या लगभग 17% थी और शेखजादों के नाम से जाने जाने वाले भारतीय मुसलमानों की संख्या लगभग 12% थी।

इसके अतिरिक्त, खत्री और कायस्थ जैसे लिपिक समुदायों को भी मनसबदार के रूप में नियुक्त किया गया था।

• औरंगजेब ने अपने दो सर्वोच्च पद के अमीरों जय सिंह और जसवंत सिंह को मिर्जा राजा की उपाधि दी थी। इन उपाधियों को अर्जित की जा सकती थीं या उनके लिए भुगतान किया जा सकता था।

ईस्ट इंडिया कंपनी से संबंध:

मुगलों ने हिंद महासागर में समुद्री डकैती के लिए अंग्रेजी और अन्य कंपनियों को जिम्मेदार ठहराया था, जिसके कारण गंज-ए-सवाई घटना (1695 ई.) हुई। इस घटना में व्यापार औरमक्का की वार्षिक तीर्थयात्राओं के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मुगल जहाज पर समुद्री डाकु ओंद्वारा हमला किया गया था।

स्थापत्यकला:

• औरंगाबाद में अपनी बेगम रबिया-उद-दौरानी का एक मकबरा बनवाया। इसे "बीबी का मकबरा/दूसरा ताजमहल" के नाम से भी जाना जाता है।

• उसने लाल किलेके अंदर मोती मस्जिद और बादशाही मस्जिद (लाहौर) का भी निर्माण कराया।

कला और साहित्य:

• औरंगजेब एक निपुण वीणा वादक था।

• औरंगजेब ने ईश्वर दास नागर को संरक्षण दिया, जिन्होंने फतुहात-ए-आलमगिरी लिखी, जिसमें औरंगजेब के शासनकाल का विवरण है।

• मुगल सेवा में एक बुंदेला अधिकारी भीमसेन बुरहानपुरी द्वारा लिखित नुस्खा-ए-दिलखुश, औरंगजेब के शासनकाल के दौरान लिखी गयी थी। उत्तर मुगलकाल बहादुर शाह प्रथम (1707-1712 ई.) बहादुर शाह प्रथम को मुअज्जम के नाम से भी जाना जाता है, वह 60 के दशक में सिंहासन पर बैठा। 1712 ई. के आस-पास एक विद्रोही सिख नेता बंदा बहादुर के खिलाफ अभियान के दौरान उसकी मृत्यु हो गई।

प्रशासन:

• उसने अमीरों के प्रति एक उदार नीति अपनाई, उन्हें उनके पसंदीदा क्षेत्र दिए, जिससे वित्तीय तनाव पैदा हुआ, वहीं दूसरी ओर वास्तविक शक्ति कथित तौर पर वजीर जुल्फिकार खाँ के पास थी।

• उसकी प्रशासनिक अक्षमता के कारण मुगल इतिहासकारों ने उसे "शाह-ए-बेखबर" की उपाधि दी।

धार्मिक नीति: हिंदुओं के प्रति सहिष्णुता का प्रदर्शन किया, यद्यपि, उसने जजिया कर को समाप्त नहीं किया।

घटनाएँ /विजय:

• मराठों के साथ संधि करने में झिझक और उन्हें पूर्ण रियायतें देने में विफल रहने के कारण लगातार टकराव होते रहे।

• गुरु गोबिंद सिंह के साथ शांति की पहल की, लेकिन गुरु की मृत्यु के बाद हुए सिख विद्रोहों को दबाने के लिए उसने सिखों के खिलाफ सैन्य अभियानों का नेतृत्व किया।

• मारवाड़ और मेवाड़ की स्वतंत्रता को मान्यता दी, लेकिन उन्हें कट्टर सहयोगी नहीं बना सका।

जहाँदार शाह (1712-1713 ई.) बहादुर शाह की मृत्युके बाद मुगल राजनीति बदल गई,अमीर नृप-निर्माता(राजा बनाने वाला) बन गए और बादशाह उनकी कठपुतली बन गए। जहाँदार शाह प्रथम कठपुतली शासक था, जिसके शासनकाल में वास्तविक शक्ति जुल्फिकार खाँ (वजीर) के पास थी।

प्रशासनिक नीतियाँ:

• उसने मराठों, राजपूतों और अन्य हिंदू सरदारों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए।

- मारवाड़ के अजीत सिंह को "महाराजा" की उपाधि दी गई।
- आमेर के जय सिंह को मिर्जा संवाई राजा जय सिंह की उपाधि दी गई।
- बंदा बहादुर और सिखों के खिलाफ दमनकारी रुख बनाए रखा।

• उसने जजिया कर समाप्त करने का आदेश दिया।

• जागीरों के आवंटन को विनियमित करके और यह सुनिश्चित करके साम्राज्य की वित्तीय समस्याओं को हल करने का प्रयास किया गया कि अमीर अपने आधिकारिक सैन्य कोटा को बनाए रखें, लेकिन इजारा प्रथा, या राजस्व कृषि शुरू करने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा।

इजारा प्रथा एक राजस्व कृषि प्रणाली थी जिसमें भू-राजस्व एकत्र करने का कार्य एकमुश्त भुगतान के बदले में सबसे अधिक बोली लगाने वाले को सौंपा जाता था।

उसका शासनकाल 1713 ई. में उसके भतीजे फर्रु खसियर द्वारा आगरा में हराने के बाद समाप्त हो गया।

फर्रु खसियर (1713-1719 ई.) फर्रुखसियर शासन करने की अक्षमता और अयोग्य सलाहकारों पर निर्भरता के लिए जाना जाता था। उसने सैय्यद बंधुओं अब्दुल्ला खाँ (वजीर) और हुसैन अली खाँ बरहा (मीर बख्शी) की मदद से सिंहासन प्राप्त किया था।

• उनके द्वारा जजिया को समाप्त कर दिया और तीर्थयात्रा कर को समाप्त कर दिया गया।

• 1717 ई. में, फर्रुखसियर ने ईस्ट इंडिया कंपनी को महत्त्वपूर्ण व्यापारिक विशेषाधिकार प्रदान किए और बंगाल के रास्ते होने वाले व्यापार के लिए सीमा शुल्क में छूट दी।

मृत्यु: सैय्यद बंधुओं को व्यक्तिगत अधिकार सौंपने को तैयार नहीं होने के कारण 1719 ई. में फर्रुखसियर की हत्या कर दी गई।

मुहम्मद शाह (रंगीला) (1719-1748 ई.)

• मुहम्मद शाह निजाम-उल-मुल्क, चिन किलिच खाँ और मुहम्मद अमीर खाँ की मदद से 1720 ई. में सैय्यद बंधुओं को अपदस्थ कर दिया।

• **प्रशासन:** उसके शासनकाल में, कई राज्यों ने स्वतंत्रता की घोषणा की:
- निजाम-उल-मुल्क - दक्कन
- सआदत खाँ - अवध
- मुर्शिद कुली खाँ बिहार- बंगाल और उड़ीसा

• मुगल साम्राज्य की कमजोरी तब उजागर हुई जब 1739 ई. में नादिर शाह ने भारत पर आक्रमण किया।

नादिर शाह का भारत पर आक्रमण

• ईरानी बादशाह नादिर शाह को ईरान से अफगानों को खदेड़ने के लिए जाना जाता था। उसने 1739 ई. में करनाल के युद्ध में निर्णायक जीत के साथ भारत में प्रवेश किया, जिसके परिणामस्वरूप मुहम्मद शाह को आत्मसमर्पण करना पड़ा। उसने दिल्ली को लूटा और कोहिनूर हीरे और मयूर सिंहासन जैसे खजाने अपने साथ लूटकर ले गया।

• इससे मुगल साम्राज्य की कमजोरी उजागर हो गई, उसकी प्रतिष्ठा कम हो गयी और क्षेत्रीय शक्तियों को प्रोत्साहन मिला।

अहमद शाह अब्दाली (नादिर शाह का उत्तराधिकारी)

• उसने भारत पर कई बार आक्रमण किया।

• अब्दाली ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया था और आलमगीर द्वितीय को मुगल बादशाह के रूप में स्वीकार कर लिया था। उसने एक अफगान कार्यवाहक को जिम्मेदारी सौंपकर रोहिल्ला प्रमुख नजीबुद्दौला को अपना 'सर्वोच्च प्रतिनिधि' नियुक्त किया।

• 1758 ई. में, मराठा प्रमुख रघुनाथ राव ने नजीबुद्दौला को निष्कासित कर दिया और पंजाब पर विजय प्राप्त की। अब्दाली बदला लेने के लिए 1759 ई. में वापस लौटा और 1761 ई. में पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठों को निर्णायक रूप से पराजित किया और 1767 ई. में अंतिम आक्रमण किया।

आलमगीर द्वितीय (1754-1759 ई.) प्लासी का प्रसिद्ध युद्ध 1757 ई. में आलमगीर द्वितीय के शासनकाल के दौरान हुआ था। इस युद्ध के बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए बंगाल पर कब्जा करना आसान हो गया।

शाह आलम द्वितीय (1759-1806 ई.) शाह आलम द्वितीय ने मीर कासिम और शुजाउद्दौला के साथ मिलकर 1764 ई.

में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ युद्ध छेड़ा, लेकिन बक्सर के युद्ध में हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद, वह 1772 ई. तक एक ब्रिटिश पेंशनभोगी (पहला पेंशनभोगी) के रूप में इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में रहा, उसके बाद वह मराठा संरक्षण में दिल्ली लौट आया।

अकबर द्वितीय (1806-1837 ई.)

• अकबर द्वितीय शाह आलम द्वितीय का पुत्र था, उसने 1803 ई. के बाद अंग्रेजों द्वारा दिल्ली पर कब्जा किए जाने के बाद ब्रिटिश संरक्षण के तहत शासन किया। उसे राम मोहन रॉय को "राजा" की उपाधि देने के लिए जाना जाता है।

• उसकी पहचान एक प्रतिष्ठित कवि के रूप में थी, उसने हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देने के लिए फूल वालों की सैर की शुरुआत की।

• उसके शासनकाल के दौरान, ईस्ट इंडिया कंपनी ने स्वयं को मुगल बादशाह की अधीनता से मुक्त कर लिया और मुगल बादशाह के नाम पर सिक्के जारी करना बंद कर दिया।

बहादुर शाह द्वितीय (1837-1857 ई.)

• बहादुर शाह द्वितीय अंतिम मुगल सम्राट था, जो "जफर" उपनाम से उर्दू कविता लिखता था।

• बहादुर शाह जफर ने सन् 1857 ई. के विद्रोह में निर्णायक भूमिका निभाई और विद्रोहियों द्वारा उसे भारत का बादशाह घोषित किया गया।

• विद्रोह के बाद, उसे रंगून (आधुनिक म्यांमार) में निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा और 1862 ई. में उसकी वहीं मृत्यु हो गई।

मुगलों के पतन के कारण

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: नादिर शाह का भारत पर आक्रमण



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — नादिर शाह का भारत पर आक्रमण

मुख्य परीक्षा दृष्टि: विद्रोह के बाद, उसे रंगून (आधुनिक म्यांमार) में निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा और 1862 ई. में उसकी वहीं मृत्यु हो गई।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: नादिर शाह का भारत पर आक्रमण • मुगलों के पतन के कारण • मृत्यु • प्रशासन | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1713, 1719, 1717, 1748, 1720

• **कमजोर नेतृत्व और उत्तराधिकार संघर्ष:** उत्तराधिकार के स्पष्ट नियमों की कमी के कारण उत्तराधिकार के युद्ध हुए, जिससे विशेषकर औरंगजेब के बाद साम्राज्य कमजोर हो गया।

• **औरंगजेब की नीतियाँ:** धार्मिक रूढ़िवादिता ने गैर-मुस्लिम प्रजा के साथ संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया।

• **आर्थिक तनाव औरप्रशासनिक अक्षमता:** शाहजहाँ की अत्यधिक खर्चीली निर्माण परियोजनाओं और औरंगजेब के लंबे समय तक दक्षिणी अभियानों ने खजाने को काफी खाली कर दिया। उसका साम्राज्य इतना विशाल हो गया कि उसका प्रबंधन करना कठिन हो गया और बाद के मुगलों की प्रशासनिक अक्षमता के कारण दूर-दराज के प्रांतों ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

• **विदेशी आक्रमण और आंतरिक संघर्ष:** नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों ने साम्राज्य को अस्थिर कर दिया, जिससे वित्तीय तनाव और बढ़ गया। भ्रष्टाचार और आंतरिक कलह ने प्रशासनिक ढाँचे को कमजोर कर दिया।

• **स्वतंत्र राज्यों और क्षेत्रीय शक्तियों का उदय:** 18वीं शताब्दी में हैदराबाद, बंगाल और अवध जैसे लगभग स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ, जिसने साम्राज्य के विघटन में योगदान दिया। मराठा मुगल सत्ता को चुनौती देने वाले एक बड़े साम्राज्य की महत्त्वाकांक्षाओं को पोषित करते हुए पश्चिमी भारत में एकजुट हो गए।

• **भूमि के उपयोग के प्रश्न पर संघर्ष:** सीधे राजकोष भुगतान पर जागीर (अस्थायी भूमि आवंटन) और पैबाकी (आरक्षित भूमि से राजस्व) के उपयोगके कारण अमीरों और जमींदारों के बीच संघर्ष हुआ।

• **यूरोपीय शक्तियों का आगमन:** ब्रिटिश और अन्य यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों के उदय से नई राजनीतिक संस्थाओं का आगमन हुआ, जिससे अनेक चुनौतियाँ पैदा हुईंऔर पतनोन्मुख मुगल साम्राज्य के लिए इन चुनौतियों से निपटना लगभग असंभव था।

मराठा साम्राज्य

5 परिचय मराठों ने 1670के दशक में शिवाजी के नेतृत्व में मुगल शक्ति को कमजोर करने और 18वीं शताब्दी के मध्य तक संपूर्ण मध्य भारत में इसका स्थान लेने में निर्णायक भूमिका निभाई थी। उन्होंने 1674 ई. में तंजौर पर भी नियंत्रण स्थापित कर लिया और 1832 ई. में सर्फोजी द्वितीय के निधन तक नियंत्रण बनाए रखा।

मराठों के बारे में:

• विभिन्न कृषक जातियों का मिश्रण, जिन्होंने अपनी सैन्य सेवा पद्धतियों से स्वयं को प्रतिष्ठित किया और इसके बदले में भूमि अनुदान अर्जित किया।

• उन्होंने बहमनी साम्राज्य और परवर्ती राज्यों की सेनाओं में भी कार्य किया। इब्राहिम आदिल शाह जैसे बीजापुर के शासकों ने उन्हें अपनी दक्कनी और अफाकी इकाइयों के प्रतिसंतुलन (Counterbalance) के रूप में भी इस्तेमाल किया।

मराठों के उत्थान के कारण

• **क्षेत्र और भू-भाग:** वे कोंकण के संकीर्ण, रणनीतिक रूप से रक्षात्मक क्षेत्र में निवास करते थे, जो अपने ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों और एकांत घाटियों के लिए जाना जाता था।

• **विशेषता और कौशल:** सैन्य वीरता की विरासत और गुरिल्ला युद्ध पद्धति में प्रवीणता के साथ, तेजी से आश्चर्यजनक हमलों को अंजाम देना और आवश्यकतानुसार स्वायत्त रणनीतियों को अपनाना।

• तुकाराम, रामदास और एकनाथ के नेतृत्व में भक्ति आंदोलन ने अपने मराठी भजनों के साथ व्यापक सामाजिक मेलजोल बढ़ाया और उन्हें एकजुट किया।

• **अन्य कारण:** बीजापुर और गोलकुंडा के पतन के साथ-साथ संपूर्ण दक्कन के युद्धों ने शिवाजी को बिखरे हुए मराठों को एकजुट करने के लिए प्रेरित किया।

शिवाजी (1627-1680 ई.) परिचय शिवाजी का जन्म जुन्नार के पास शिवनेरी दुर्ग में शाहजी भोंसले और जीजाबाई के घर हुआ था। शिवाजी, तुकाराम और रामदास (उनके गुरु) जैसे संतों से प्रभावित थे।

सैन्य विजय

• अल्पायु में ही, उन्होंने 1646 ई. में बीजापुर सुल्तान से तोरणा किला छीन लिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने रायगढ़ किले पर कब्जा कर लिया और उसका पुनर्निर्माण करवाया। उन्होंने बारामती, इंदपुरा, पुरंदर और कोंडाना के किलों पर भी अधिकार कर लिया।

• 1656 ई.में वे अधिक लोकप्रिय हो गए क्योंकि उन्होंने जावली (सतारा जिला) को उसके मराठा प्रमुख से छीन लिया, ऊँचे इलाकों (मावल क्षेत्र) पर नियंत्रण कर लिया और प्रतापगढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया, जिससे आगे के विस्तार का मार्ग प्रशस्त हुआ।

• नौ-सैनिक महत्त्व को पहचानते हुए, उन्होंने जंजीरा के सिद्दियों का मुकाबला करने के लिए एक बेड़े का निर्माण करवाया। जंजीरा के सिद्दी कई बंदरगाहों का प्रबंधन करते थे और उनके पास एक बड़ी नौसेना थी। शिवाजी अपने प्रभावहीन तोपखाने के कारण वह उन पर विजय प्राप्त नहीं कर सके।

बीजापुर के विरुद्ध संघर्ष:

• शाहजहाँ की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के युद्ध में शामिल होने के लिए औरंगजेब के दक्कन से वापस चले जाने और बीजापुर में आदिल शाह द्वितीय के उदय ने संघर्ष की परिस्थितियाँ पैदा कर दीं थीं।

• शिवाजी ने बीजापुर पर आक्रमण कर उत्तरी कोंकण पर कब्जा कर लिया। इस घटना ने अली आदिल शाह द्वितीय को 1659 ई. में सेनापति अफजल खाँ को भेजने के लिए उकसाया, जिसकी सेना ने पवित्र पंढरपुर सहित कई हिंदू स्थलों को अपवित्र कर दिया।

• शिवाजी ने अफजल खाँ को मारकर इसका बदला लिया, इसके बाद पन्हाला किले और दक्षिणी कोंकण व कोल्हापुर के क्षेत्रों पर भी कब्जा कर लिया।

शिवाजी और मुगल:

• **1658 ई:** औरंगजेब बादशाह बना और उसने दक्कन में शाइस्ता खाँ (दक्कन का मुगल सूबेदार) को शिवाजी का दमन करने का काम सौंपा, जिसके परिणामस्वरूप पूना और चाकन पर कब्जा हो गया।

• **1663 ई:** जबशिवाजी ने पूना में घुसपैठ कीऔर शाइस्ता खाँ के शिविर पर हमला कर दिया, तो औरंगजेब ने शाइस्ता को दक्कन से वापस बुला लिया।

• **1664 ई:** शिवाजी ने एक महत्त्वपूर्ण मुगल बंदरगाह सूरत को लूट लिया, इसके बाद औरंगजेब कोउनका मुकाबला करने और बीजापुर पर कब्जा करने के लिए राजा जय सिंह को भेजना पड़ा। एक व्यापक घेराबंदी के कारण शिवाजी को संधि करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिससे 1665 ई. में पुरंदर की संधि का मार्ग प्रशस्त हुआ।

• **1666 ई:** जय सिंह ने शिवाजी को आगरा में मुगल दरबार में जाने के लिए राजी किया जहाँ उन्हें अनादर और अपमान का सामना करना पड़ा। उन्हें नजरबंद कर दिया गया, जिससे वह बच निकलने में सफल रहे।

• **1670 ई:** औरंगजेब ने बरार में शिवाजी की जागीर के एक हिस्से पर पुन: कब्जा कर लिया। शिवाजी ने जवाबी कार्रवाई करते हुए मुगल सेवा से अपने सैनिकों को वापस बुला लिया, पुरंदर की संधि में आत्मसमर्पण किए गए

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: मराठा साम्राज्य

1674	1832	1627	1680
मराठा साम्राज्य	मराठों के बारे में	मराठों के उत्थान के कारण	सैन्य विजय

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मराठा साम्राज्य

मुख्य परीक्षा दृष्टि: 1670 ई: औरंगजेब ने बरार में शिवाजी की जागीर के एक हिस्से पर पुन: कब्जा कर लिया। शिवाजी ने जवाबी कार्रवाई करते हुए मुगल सेवा से अपने सैनिकों को वापस बुला लिया, पुरंदर की संधि में आत्मसमर्पण किए गए

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: मराठा साम्राज्य • मराठों के बारे में • मराठों के उत्थान के कारण • सैन्य विजय • बीजापुर के विरुद्ध संघर्ष | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1674, 1832, 1627, 1680, 1646

IUC विशेष स्मृति सूत्र #7: कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष (8वीं-10वीं सदी)

ट्रिक: 'पाल (बंगाल/धर्मपाल), गुर्जर-प्रतिहार (पश्चिम/वत्सराज व नागभट्ट-II) और राष्ट्रकूट (दक्कन/ध्रुव)' — इस 200 वर्षीय संघर्ष में अंतत: गुर्जर-प्रतिहारों को कन्नौज पर स्थायी सफलता मिली।

किलों पर पुन: कब्जा कर लिया और सूरत पर फिर से हमला कर दिया।

1672 ई. तक, मराठों ने सूरत पर वार्षिक कर के रूप में चौथ (राजस्व का एक-चौथाई) लगा दिया।

• **1672 ई:** साल्हेर की लड़ाई में मराठों ने मुगलों के खिलाफ निर्णायक जीत हासिल की। साल्हेर किला वर्तमान नासिक के पास स्थित है।

पुरंदर की संधि के परिणाम:

• शिवाजी को 23 किले मुगलों को सौंपने पड़े।

• इसके बाद उन्हें मुगल मनसबदार के रूप में काम करना था और बीजापुर के खिलाफ मुगलों का साथ देना था।

• मुगलों ने शिवाजी को बीजापुर साम्राज्य के कुछ हिस्सों को अपने पास रखने के अधिकार को मान्यता दी।

• चूँकि शिवाजी को मुगलों की व्यक्तिगत सेवा से छूट दी गई थी, इसलिए उनके नाबालिग बेटे शंभाजी को 5,000 जात का मनसब प्रदान किया गया था।

राज्याभिषेक और दक्कन अभियान

1674 ई. में शिवाजी को "छत्रपति" (सर्वोच्च राजा) की उपाधि देते हुए, रायगढ़ में राज्याभिषेक किया गया। उनके राज्याभिषेक के दिन से एक नए संवत्राज्याभिषेक शक की शुरुआत हुई।

• उन्होंने स्वयं को "गायों और ब्राह्मणों का रक्षक" (गो-ब्राह्मण प्रतिपालक) और "धर्म का रक्षक" (धर्म परायण) बताया।

• उन्होंने 1677 ई. में गोलकुंडा (दक्कनी राज्यों में सबसे समृद्ध) के साथ मुगल विरोधी व बीजापुर विरोधी गठबंधन बनाया तथा बरार, खानदेश व बगलान में मुगल क्षेत्र और कनारा में बीजापुर क्षेत्र को तबाह कर दिया। उन्होंने पन्हाला किला और सतारा को सुरक्षित कर लिया।

• उन्होंने सेनजी और वेल्लोर के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की और अपने सौतेले भाई वेंकोजी (या एकोजी) को तंजौर पर शासन करने की अनुमति दी, सेनजी अपने उत्तराधिकारियों के लिए एक सहायक रक्षा पंक्ति के रूपमें सेवा कर रहे थे।

• उन्होंने फारसी के स्थान पर मराठी को दरबार की भाषा बना दिया और एक संस्कृत शब्दकोश 'राज-व्यवहार कोश' के संकलन का आदेश दिया।

शिवाजी के अंतिम दिन

1680 ई. मेंशिवाजी की मृत्यु होगई। उन्होंने स्वयं से अधिक शक्तिशाली, बीजापुर और मुगल सेनाओं के खिलाफ, सफलतापूर्वक एक साम्राज्य स्थापित किया और उसकी रक्षा की।

शिवाजी के बाद मराठा

• शंभाजी शिवाजी के उत्तराधिकारी बने। लगभग उसी समय विद्रोही शहजादा अकबर ने औरंगजेब की हिंदू विरोधी नीतियों के खिलाफ असहमति जताते हुए मराठा दरबार में शरण ली और 1681 ई. में खुद को बादशाह घोषित कर दिया। इसके अतिरिक्त, खानदेश में मुगल क्षेत्रों पर शंभाजी के हमलों ने औरंगजेब को दक्कन के लिए एक बड़े अभियान के लिए प्रेरित किया।

• औरंगजेब ने मेवाड़ के राजपूतों के साथ एक समझौता किया और बीजापुर (1686 ई.) और गोलकुंडा (1687 ई.) पर कब्जा करते हुए, दक्कन पर आक्रमण कर दिया।

• 1689 ई. में मुगलों ने शंभाजी को पकड़ लिया और उनकी हत्या कर दी।

• शंभाजी की हत्या के बाद, मराठों ने अपने नए शासक राजाराम के नेतृत्व में औरंगजेब के खिलाफ विरोध का प्रदर्शन किया।

  ◦ घेराबंदी के बावजूद, राजाराम जिनजी/सेनजी की ओर भाग गए और मुगल सेना के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध शुरू किया और मराठों के प्रभाव का विस्तार किया। यद्यपि, मुगलों ने शंभाजी के बेटे साहू को पकड़ लिया।

• मराठा आंदोलन अब और अधिक विकेंद्रीकृत हो गया, अलग-अलग सेनापतियों ने अपनी-अपनी सेनाएँ खड़ी कीं और अपनी इच्छानुसार मुगल सेना पर हमला किया। उन्होंने गुजरात और दक्कन क्षेत्रों में चौथ वसूलना भी शुरू कर दिया।

• मराठों पर औरंगजेब के हमलों से संघर्ष और बढ़ गया। 1700 ई.में राजाराम की मृत्यु के बाद, उनकी पत्नी ताराबाई ने अपने बेटे शिवाजी द्वितीय को राजा बनाया और खुद को राजप्रतिनिधि घोषित कर दिया।

• इस क्षेत्र में राजनीतिक उथल-पुथल का फायदा उठाकर यूरोपीय व्यापारिक कंपनियाँ, भारत में अपनी जड़ें मजबूत कर रही थीं।

शाहू का शासनकाल (1707-1749 ई.) और पेशवा का उदय

• शंभाजी के बेटे शाहू (जिन्हें औरंगजेब की मृत्यु के बाद रिहा कर दिया गया था) ने मराठा सिंहासन पर अपना दावा पेश किया। ताराबाई ने इसका विरोध किया, जिसके परिणामस्वरूप गृह युद्ध छिड़ गया। बालाजी विश्वनाथ के समर्थन से शाहू विजयी हुए और 1708 ई. में उन्होंने सिंहासन ग्रहण किया।

• कृतज्ञता में, शाहू ने 1713 ई. में बालाजी को पेशवा नियुक्त किया, जो अंततः वास्तविक शासक बन गया, जिसने पूना से शासन किया, वहीं दूसरी ओर शाहू सतारा में रहते थे।

प्रतिद्वंद्विता और उत्तराधिकार

• ताराबाई ने कोल्हापुर में एक समानांतर सरकार की स्थापना की। यद्यपि, 1714 ई. में उन्हें और उनके बेटे को राजाबाई (राजाराम की दूसरी पत्नी) और उनके बेटे (शंभाजी द्वितीय) ने कैद कर लिया। इसके बाद शंभाजी द्वितीय कोल्हापुर के सिंहासन पर बैठे और शाहू के आधिपत्य को स्वीकार कर लिया।

• **राजाराम द्वितीय/रामराजा (1749-1777 ई.):** वह शाहू के दत्तक पुत्र थे। ताराबाई ने उन्हें राजाराम के पौत्र के रूप में राज्य की बागडोर लेने के लिए प्रस्तुत किया। यद्यपि, पेशवा बाजीराव ने उन्हें नाममात्र के छत्रपति के रूप में बरकरार रखा। पेशवा की शक्ति छत्रपति की शक्ति पर लगभग पूरी तरह हावी हो गई थी।

• रामराजा के दत्तक पुत्र शाहू द्वितीय ने 1808 ई. में अपनी मृत्यु तक, एक अस्तित्विहीन शासक के रूप में शासन किया। उनके उत्तराधिकारी प्रताप सिंह को ब्रिटिश सरकार के खिलाफ साजिश रचने के आरोप में 1839 ई. में अंग्रेजों द्वारा अपदस्थ कर दिया गया।

• प्रताप सिंह की 1847 ई. में एक कैदी के रूप में मृत्यु हो गई। अंग्रेजों ने उनके छोटे भाई शाहजी अप्पा साहब (शाहजी द्वितीय) को 1839 ई.

राजा बना दिया। शाहजी द्वितीय की 1848 ई. में मृत्यु हो गई और उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं था।

मराठा प्रशासन

के द्रीय शासन शिवाजी की एक सलाहकार परिषद थी जिसे 'अष्ट प्रधान मंडल' कहा जाता था, इसमें आठ मंत्री थे।

मुख्य/पंत प्रधान (पेशवा) वह प्रधानमंत्री था तथा राज्य के सामान्य कल्याण और हितों की देखभाल करता था साथ ही राजा की अनुपस्थिति में उसके कर्तव्यों का निर्वहन करता था।

अमात्य/मजूमदार वित्त मंत्री वाकिया-नवीस (मंत्री) राजा की गतिविधियों और दरबार की कार्यवाही का रिकॉर्ड रखता था।

सुमंत (दबीर या विदेश सचिव) युद्ध, शांति और कूटनीति के बारे में सलाह देता था।

सचिव (सूरनवीस/ चिटनिस) राजा के साथ पत्र-व्यवहार का प्रबंध करता था और परगना के खातों की जाँच करता था।

पंडितराव (दानाध्यक्ष) धर्म, समारोह और नैतिकता संबंधी मामले देखता था।

न्यायाधीश मुख्य न्यायाधीश, नागरिक और सैन्य न्याय के लिए उत्तरदायी था।

सर/सरी-ए-नौबत (सेनापति) प्रधान सेनापति।

उनकी कार्यप्रणाली से संबंधित अन्य बिंदु:

- न्यायाधीश और पंडितराव को छोड़कर सभी मंत्रियों ने सैन्य अभियानों का नेतृत्व किया और सेनाओं की बागडोर संभाली।
- हर एक शाही फरमान को राजा व पेशवा की मंजूरी और मुहर के साथ-साथ चार अन्य प्रमुख मंत्रियों के समर्थन की आवश्यकता होती थी। वहाँ अठारह प्रशासनिक विभाग थे, प्रत्येक की देखरेख अलग-अलग मंत्री करते थे।
- शिवाजी ने राजशाही भूमि का विस्तार करके प्रभावशाली मराठा जमींदार परिवारों (देशमुख) को नियंत्रित किया।
- आज्ञापत्र - यह मराठा नीति के सिद्धांतों पर रामचंद्र पंत अमात्य द्वारा मोड़ी/मोडी लिपि में लिखा गया एक शाही आदेश था। इसे शिवाजी के आदर्शों,सिद्धांतोंऔर राज्यप्रशासनकीनीतियोंकाऔपचारिकदस्तावेजीकरण माना जाता था।

'मोड़ी' मराठी लिखने के लिए उपयोग की जाने वाली लिपि थी।

प्रांतीय शासन

- शिवाजी ने साम्राज्य (स्वराज) को पहले प्रांतों में, उसके बाद परगनों और तरफों में विभाजित किया। सबसे निचली इकाई गाँव थी जिसका मुखिया प्रधान या पटेल होता था।
  - प्रांतों को सूबेदार, कारकुन (या मुख्य देशाधिकारी) के अधीन प्रांतों के रूप में प्रचलित था।
  - तरफों का प्रमुख एक हवलदार होता था।
  - मौज़ा सबसे छोटी इकाई थी।
- कई प्रांतों के सूबेदारों के काम पर नियंत्रण और निगरानी के लिए सरसूबेदार होता था।
- **प्रत्येक सूबेदार के पास आठ अधीनस्थ अधिकारी होते थे:** दीवान, मजूमदार, फडणीस, सबणीस, कारखाणीस, चिटणीस, जमादार और पोटणीस।
- पुलिस अधिकारी को ग्रामीण क्षेत्र में फौजदार तथा शहरी क्षेत्र में कोतवाल कहा जाता था।
- जागीरें देने की परंपरा के स्थान पर सभी अधिकारियों को नकद वेतन दिया जाने लगा। जिन अधिकारियों को किसी स्थान का राजस्व सौंपा गया था, उनका नियंत्रण केवल आय पर था, लोगों पर नहीं। कोई भी पद वंशानुगत नहीं था।

राजस्व प्रशासन

- राजस्व व्यवस्था मलिक अंबर की काठी प्रणाली पर स्थापित की गई थी जिसमें भूमि की माप छड़ या काठी द्वारा की जाती थी।
- शिवाजी की राजस्व प्रणाली किसानों के प्रति उदार थी, जिसमें भूमि का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन किया जाता था और शुरू में राज्य की कर माँग, सकल उपज का 30% थी, जिसे बाद में बढ़ाकर 40% कर दिया गया।
  - अकाल के दौरान, शासन के द्वारा किसानों को कृषि आवश्यकताओं के लिए पुनर्भुगतान योग्य सहायता और अग्रिम ऋण प्रदान किए गए।
- **चौथ और सरदेशमुखी:** शिवाजी ने अपने साम्राज्य के निकटवर्ती प्रदेशों, विजित प्रदेशों और मुगल/बीजापुर के क्षेत्रों से चौथ (विजित जिले के राजस्व का एक-चौथाई) 25% और सरदेशमुखी (सरदेशमुख के रूप में उनकी स्थिति के आधार पर अतिरिक्त 10%) एकत्र किया।

सैन्य संगठन

मराठा गुरिल्ला युद्ध पद्धति (छापामार युद्ध पद्धति) के साथ-साथ एक नए हथियार 'बाघ नख (बाघ का पंजा)' का इस्तेमाल करने में भी निपुण थे।

पैदल सेना:

- पैदल सेना अत्यधिक गतिशील और छोटी थी, जिसमें मावली (पैदल सैनिक) की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी।
- आपातकाल के समय, किसान भी अंशकालिक सैनिकों के रूपमें कार्य करते थे।
- 9 सैनिकों वाली सबसे छोटी इकाई का नेतृत्व एक नाइक (कॉर्पोरल) करता था। 25 घुड़सवारों वाली प्रत्येक इकाई को एक हवलदार (सार्जेंट के पद के बराबर) के अधीन रखा गया था। एक जुमालदार के अधीन पाँच हवलदार और एक हजारी के अधीन दस जुमालदार होते थे।
- **घुड़सवार सेना को दो वर्गों में विभाजित किया गया था:**
  - बारगीर (ऐसे सैनिक जिनके घोड़े राज्य द्वारा दिए जाते थे), और
  - शिलेदार (भाड़े के घुड़सवार जिन्हें स्वयं घोड़ों की व्यवस्था करनी होती थी)।

न्याय व्यवस्था:

- न्याय व्यवस्था प्रारंभिक चरण में थी और गाँवों में कोई औपचारिक अदालतें तथा पंचायतें नहीं थीं।
- कानूनी कार्यवाही अग्नि परीक्षाओंऔर स्मृतियों से निर्देशित होती थी।
- न्यायाधीश दीवानी और फौजदारी दोनों मामलों में अपीलें सुनता था।
- हाजिर मजलिम अपील की अंतिम अदालत के रूप में कार्य करता था।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: मराठा प्रशासन

1. मराठा प्रशासन	2. प्रांतीय शासन
3. राजस्व प्रशासन	4. सैन्य संगठन

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मराठा प्रशासन

मुख्य परीक्षा दृष्टि: हाजिर मजलिम अपील की अंतिम अदालत के रूप में कार्य करता था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: मराठा प्रशासन • प्रांतीय शासन • राजस्व प्रशासन • सैन्य संगठन • पैदल सेना

पेशवाओं का शासन (1713-1818 ई.)

- पेशवा (फारसी मूल) का अर्थ "सर्वप्रमुख" या "प्रथम मंत्री" होता है। मुस्लिम शासकों द्वारा दक्कन में पेशवा प्रथा की शुरुआत की गई थी।
- बालाजी विश्वनाथ (1713-1720 ई.)
  - उन्होंने मराठा सम्राट शाहू को गृह युद्ध के बाद राज्य को स्थिर करने में मदद की; कान्होजी आंग्रे को यूरोपीय लोगों के खिलाफ शाहू का समर्थन करने के लिए राजी किया; जागीर अनुदानों को बहाल किया और पेशवा के पद को वंशानुगत बना दिया। उनका पुत्र बाजीराव प्रथम उनका उत्तराधिकारी बना।
  - बाजीराव प्रथम (1720-1740 ई.)
  - वह सभी नौ पेशवाओं में सबसे प्रसिद्ध था और उसे "थोरले" के नाम से भी जाना जाता था, जिसका अर्थ है 'बड़े' बाजी राव। वह शिवाजी के बाद छापामार युद्ध पद्धति का सबसे बड़ा समर्थक था।
- उन्होंने 1728 ई. में प्रशासनिक राजधानी को सतारासे पुणे स्थानांतरित कर दिया।
- उन्होंने मराठा सरदारों के बीच परिसंघ प्रणाली की शुरुआत की।

परिसंघ प्रणाली: इस प्रणाली के तहत, प्रत्येक मराठा प्रमुख को एक क्षेत्र सौंपा गया था जिसे स्वायत्त रूप से प्रशासित किया जा सकता था।

परिसंघ संबंधित स्थान — गायकवाड़ बड़ौदा — भोंसले नागपुर — होलकर इंदौर — सिंधिया ग्वालियर — पेशवा पूना

अभियान/विजय:

- कटक (कृष्णा) से अटक (Attock) तक मराठा शासन का विस्तार किया।
- मुगलों के खिलाफ हिंदू सरदारों का समर्थन सुरक्षित करने के लिए हिंदू-पद पादशाही (हिंदू साम्राज्य) के विचार को लोकप्रिय बनाया।
- हैदराबाद के निजाम, मालवा के राजपूत गवर्नर औरगुजरात के गवर्नर को हराया।
- उन्होंने 1722 ई. मेंपुर्तगालियों के साल्सेट और बसीन द्वीप पर कब्जा कर लिया। उन्होंने दक्कन में मुक्त व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए अंग्रेजों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए।

बालाजी बाजी राव (1740-1761 ई.) परिचय बालाजी बाजी राव पेशवा के रूप में अपने पिता बाजीराव प्रथम के उत्तराधिकारी बने। उन्हें नाना साहब के नाम से भी जाना जाता था।

उनके शासनकाल के दौरान, मराठा राजा शाहू की 1749 ई. में मृत्यु हो गई और उनके नामांकित उत्तराधिकारी रामराजा को पेशवा ने सतारा में कैद कर दिया। इस प्रकार, मराठा संघ की सर्वोच्च शक्ति पेशवा के हाथों में चली गई (1750 ई. के सांगोला समझौते द्वारा)।

- उन्होंने बंगाल के नवाब अलीवर्दी खाँ को हराया और 1752 ई. में मुगल बादशाह के साथ समझौता किया।
  - उन्होंने मुगल बादशाह को उत्तर-पश्चिम प्रांतों की चौथ के साथ-साथ आगरा तथा अजमेर के कुल राजस्व के बदले आंतरिक और बाहरी शत्रुओं से सुरक्षा का आश्वासन दिया।
  - इस समझौते का सम्मान करते हुए, मराठों ने पानीपत की तीसरी लड़ाई (1761 ई.) लड़ी जब अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया था।

उदगीर का युद्ध (1760 ई.)

- 1748 ई.मेंनिजाम-उल-मुल्कआसफजाह की मृत्युके बादउत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया।
- पेशवा ने निजाम के सबसे बड़े पुत्र का समर्थन किया और सदाशिव राव के नेतृत्व में एक सेना भेजी, जिसने 1760 ई. में उदगीर का युद्ध जीतकर बीजापुर, औरंगाबाद, दौलताबाद, अहमदनगर और बुरहानपुर पर कब्जा कर लिया।

पानीपत का तृतीय युद्ध (1761 ई.)

पृष्ठभूमि:

- अहमदशाह अब्दाली ने मुगलों के खिलाफ सैन्य अभियानों के माध्यम से अपनी स्थिति मजबूत कर ली और 1757 ई. तक मुल्तान, पंजाब और दिल्ली पर कब्जा कर लिया।
- मल्हार राव होल्कर और रघुनाथ राव के नेतृत्व में एक अभियान ने दिल्ली में अब्दाली के प्रतिनिधि को हटा दिया और 1758 ई.में सरहिंद और लाहौर पर कब्जा कर लिया।

युद्ध का क्रम:

- अब्दाली चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए अक्टूबर, 1759 ई. में भारत लौट आया और पंजाब पर पुनः कब्जा कर लिया।
- पेशवा ने दत्ताजी सिंधिया को पंजाब भेजा लेकिन वह युद्ध (1760 ई.) में हार गए। मल्हार राव होल्कर भी सिकंदरा में पराजित हुए।
- तब पेशवा ने सदाशिव रावके नेतृत्व में एक विशाल सेना की भर्ती की। उनके साथ होल्कर , सिंधिया और गायकवाड़ भी मिल गए।
- अब्दाली ने रोहिलखंड के नजीबुद्दौला और अवध के शुजाउद्दौला के साथ मिलकर जवाबी कार्रवाई की।
- अतः इस प्रकार देखा जा सकता है कि मराठा उत्तरी शक्तियों में से सहयोगी ढूँढ़ने में विफल रहे, क्योंकि उन्होंने पहले ही अवध के नवाब, सिख, जाट सरदारों और राजपूतों को अलग-थलग कर दिया था।

पानीपत के युद्ध के प्रभाव:

- मराठा बुरी तरह पराजित हुए, जिसमें विश्वास राव, सदाशिव राव सहित कई लोग हताहत हुए और अंततः 1761 ई. में पेशवा की मृत्यु हो गई।
- इस युद्ध के बाद, होल्कर और सिंधिया के सैनिक पीछे हट गए।
- मराठों ने शुरुआती असफलताओं के बावजूद मुगल बादशाह शाह आलम का समर्थन करते हुए एक दशक के भीतर उत्तरी सत्ता हासिल कर ली।

बालाजी बाजीराव के बाद पेशवा (1761-1772 ई.)

- माधव राव1761 ई. में रघुनाथ राव के राजप्रतिनिधित्व कालमें बालाजी बाजी राव के उत्तराधिकारी और पुत्र थे। उन्होंने निजाम (1763 ई.) और हैदर अली (1765-1767 ई. और 1772 ई.) को पराजित किया।
  - उन्होंने रोहिल्ला (पठान), राजपूत राज्यों और जाट सरदारों जैसी विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियों को अपने अधीन करते हुए उत्तरी भारत में नियंत्रण पुनः स्थापित किया और 1771 ई. में बादशाह शाह आलम द्वितीय को इलाहाबाद से दिल्ली में (ब्रिटिश-संरक्षण के तहत) पदस्थापित किया।
  - 1772 ई. में उनके अप्रत्याशित निधन से उनके प्रभावशाली शासनकाल का अंत हो गया।
- कई उत्तराधिकारों के बाद, रघुनाथ राव के पुत्र बाजी राव द्वितीय, माधव राव द्वितीय की मृत्यु के बाद अंतिम पेशवा बने।

आंग्ल-मराठा युद्ध

प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-1782 ई.)

- नारायण राव की मृत्यु के बाद पेशवा के उत्तराधिकार पर विवाद; रघुनाथ राव या राघोबा पेशवा बनना चाहते थे, जिसका पुणे के नाना फडणवीस ने विरोध किया।
  - सत्ता पर कब्जा करने के अपने प्रयास में विफल होने पर, राघोबा ने अंग्रेजों से समर्थन की अपील की। बंबई में कंपनी प्रशासन ने साल्सेट और बसीन द्वीप प्राप्त करने के बदले में रघुनाथ राव का समर्थन किया
- महादजी सिंधिया (मराठा राजनेता) और नागपुर के भोंसले के ब्रिटिश समर्थक बनने के कारण मराठों ने ठाणे और साल्सेट को ब्रिटिशों को सौंप दिया। 1782 ई. की सालबाई की संधि ने रघुनाथ राव को पेंशन दे दी, जिससे कंपनी और मराठों के बीच लगभग दो दशकों तक शांति बनी रही।

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-1806 ई.)

- नाना फड़णवीस की मृत्यु के बाद, सत्ता संघर्ष के बीच पेशवा बाजीराव द्वितीय को गद्दी से उतार दिया गया। उन्होंने अंग्रजों के साथ गठबंधन किया और गवर्नर-जनरल वेलेजली ने सहायक संधि (Subsidiary Alliance) लागू की।
- इसके परिणामस्वरूप 1802 ई. में बसीन की संधि हुई, जिसे मराठा राज्यों द्वारा अपमानजनक माना गया, जिससे द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध शुरू हो गया।
- भयंकर प्रतिरोध के बावजूद मराठा हार गए, वे दोआब, अहमदनगर, भरूच और सभी पहाड़ी क्षेत्र हार गए। उन्होंने सहायक संधि की ब्रिटिश शर्तों को स्वीकार कर लिया।

तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-1819 ई.)

- पेशवा की सहायता से त्र्यंबकजी के कैद से भागने और मराठा संघ के भीतर की साजिशों ने, अंग्रेजों और पेशवा के बीच तनाव बढ़ा दिया।
- 1817 ई. में, अंग्रेजों ने पेशवा को एक नई संधि के लिए मजबूर कर दिया, जिससे उन्हें अपना पद छोड़ना पड़ा व कोंकण के क्षेत्र को अंग्रेजों को सौंपना पड़ा। उन्हें गायकवाड़ की स्वतंत्रता को मान्यता देनी पड़ी, जिससे उनकी दुश्मनी बढ़ गई।
- पिंडारियों और अंग्रेजों के बीच लड़ाई के दौरान, पेशवा ने जवाबी कार्रवाई करते हुए पूना में ब्रिटिश रेजीडेंसी पर हमला कर दिया। इसके बाद आष्टा, खड़की और कोरेगाँव की लड़ाइयों में हार के बाद बाजीराव द्वितीय को अंततः 1818 ई. में एलफिं स्टन के सामने आत्मसमर्पण करना पड़ा।

तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध का परिणाम

- अंग्रेजों ने पेशवाई को समाप्त कर दिया और बाजीराव प्रथम द्वारा स्थापित मराठा संघ (भोंसले, होल्कर औरसिंधिया को सम्मिलित रूप से)को भंग करते हुए पेशवा के क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया। यद्यपि, जागीरदारों की जागीरें बहाल कर दी गईं।
- बाजीराव द्वितीय 1851 ई. में अपनीमृत्यु तक बंदी बने रहे औरवार्षिक पेंशन प्राप्त करते रहे।
- शिवाजी के वंशज प्रताप सिंह को सतारा के आस-पास एक खंडित राज्य के शासक के रूप में स्थापित किया गया और पूना के पूर्व रेजीडेंट माउंटस्टुअर्ट एलफिं स्टन ने बॉम्बे के गवर्नर की भूमिका निभाई।

आंग्ल-मराठा युद्ध — मापदण्ड प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध

(1775-1782) द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-1806) तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-1819) कारण रघुनाथ राव (राघोबा) और नाना फड़नवीस के मध्य पेशवा के उत्तराधिकार को लेकर विवाद।

बेसिन की संधि (1802) अंग्रेजों द्वारा पेशवा बाजी राव द्वितीय पर आरोपित की गई थी, जिसे मराठा राज्यों द्वारा अपमानजनक माना गया।

मराठा प्रमुखों और ब्रिटिश हस्तक्षेप के बीच — षड्यंत्र; त्रिम्बकजी के पलायन के कारण तनाव

और पेशवा के साथ विवाद।

प्रमुख कारक राघोबा ने साल्सेट और बेसिन के बदले अंग्रजों से समर्थन मांगा।

महादजी सिंधिया और भोंसले की अंग्रेजों के प्रति निष्ठा परिवर्तित ।

मराठों ने इसका विरोध किया, परंतु दिल्ली, अस्से और लासवारी जैसी लड़ाइयों में उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा। बेसिन की संधि ने सहायक गठबंधन को औपचारिक रूप दिया।

पेशवा ने पूना में ब्रिटिश रेजीडेंसी पर हमला किया।

अष्टा, किरकी और कोरेगाँव की लड़ाइयों में मराठों की पराजय का सामना करना पडा।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: आंग्ल-मराठा युद्ध



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — आंग्ल-मराठा युद्ध

मुख्य परीक्षा दृष्टि: अष्टा, किरकी और कोरेगाँव की लड़ाइयों में मराठों की पराजय का सामना करना पडा।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: आंग्ल-मराठा युद्ध • तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध का परिणाम • मापदण्ड प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1761, 1772, 1763, 1765, 1767

प्रमुख शासक रघुनाथ राव (राघोबा) नाना फड़नवीस महादजी सिंधिया ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी (बॉम्बे प्रशासन)।

पेशवा बाजी राव द्वितीय — गवर्नर जनरल वेलेस्ली

सिंधिया, होल्कर, भोंसले और गायकवाड़ संघ।

पेशवा बाजीराव द्वितीय

ब्रिटिश (एल्फिं स्टन) मराठा संघ के प्रमुख (सिंधिया, भोंसले और होल्कर।

परिणाम सालबाई की संधि (1782):

अंग्रेजों ने ठाणे और साल्सेट को अपने पास रखा।

राघोबा को पेंशन दी गई।

20 वर्षों तक शांति बनी रही।

अहमदनगर, भड़ौच, दोआब और पहाड़ी क्षेत्र

मराठों के हाथ से निकल गए।

सहायक गठबंधन की शर्तें स्वीकार कर ली गईं।

अंग्रेजों का मराठा राज्यों पर प्रभुत्व स्थापित हो गया।

मराठा संघ का अंत

अंग्रेजों ने पेशवाई को समाप्त कर दिया और पेशवा क्षेत्रों पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

प्रताप सिंह (शिवाजी के वंशज) को सतारा राज्य का शासक बनाया गया।

बाजी राव द्वितीय को पेंशन दी गई और 1851 में उनकी मृत्यु तक उन्हें बंदी बनाकर रखा गया।

अंग्रेजों ने जागीरदारों की जागीरें बहाल कर दी।

माउंटस्टुअर्ट एलफिं स्टन को बॉम्बे का गवर्नर नियुक्त किया गया।

संधि सालबाई की संधि (1782) बेसिन की संधि (1802) कोई विशिष्ट संधि नहीं हुई; मराठा क्षेत्रों पर औपचारिक रूप से ब्रिटिश नियंत्रण स्थापित किया गया।

पेशवाओं के अधीन मराठाप्रशासन (1714-1818 ई.) पेशवा की बढ़ती प्रतिष्ठा

- पेशवा, शिवाजी के अष्ट प्रधान (मंत्रिपरिषद) में से एक थे। यह पद शुरू में वंशानुगत नहीं था, लेकिन जैसे-जैसे राजा की शक्ति घटती गई, उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती गई।
- बालाजी विश्वनाथ (1713-1720 ई.) ने पेशवा के पद को सर्वोच्च और वंशानुगत बना दिया। शंभाजी के बाद उन्होंने प्रशासन पर नियंत्रण कर उसे सुव्यवस्थित किया।

केंद्रीय सचिवालय

- मराठा प्रशासन का केंद्र पूना स्थित पेशवा सचिवालय था, जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित थे:
- राजस्व, व्यय और गाँव एवं जिले के अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत लेखाओं का प्रबंधन करना।
- अन्य क्षेत्रों से प्राप्त सभी राजस्व, अनुदान और भुगतान का दैनिक रिकॉर्ड रखना।
- लोक सेवकों के वेतन और नागरिक, सैन्य और धार्मिक शीर्षों के तहत बजट का प्रबंधन करना। प्रांत
- बड़े प्रांतों में प्रांतीय गवर्नर के रूप में सर-सूबेदार होते थे। प्रांतों के प्रभागों को सूबा और प्रांत कहा जाता था।
- मामलतदार और कामविसदार जिलों में पेशवा के प्रतिनिधि थे और जिला प्रशासन की हर शाखा के लिए जिम्मेदार थे।
- देशमुख और देशपांडे जिले के प्रभारी लेखा अधिकारी होते थे, वे मामलतदारों और कामविसदारों की गतिविधियों पर नजर रखते थे। यह नियंत्रण और संतुलन की एक प्रणाली थी।
- परगना स्तर पर, देशपांडे लेखा और रिकॉर्ड रखते थे, वहीं दूसरी ओर देशमुख के पास कानूनी और पुलिस अधिकार थे।
- मराठा शासन ने सार्वजनिक धन के दुरुपयोग को रोकने के लिए मामलतदारों और अन्य अधिकारियों से भारी राशि (रसद) एकत्र की। यह किसी जिले में उनकी पहली नियुक्ति पर ली जाती थी।

राजस्व स्रोत

- भू-राजस्व प्राथमिक आय थी, पहले कृषि उपज का बंटवारा (शिवाजी के समय) किया जाता था, लेकिन बाद में खेती पर कर लगाया जाने लगा।
- भू-राजस्व का निर्धारण फसलों के प्रकार, सिंचाई की सुविधाओं और भूमि की उत्पादकता पर आधारित था।

ग्राम प्रशासन

- गाँव, प्रशासन की मूल इकाई थे और ये स्वावलंबी थे। गाँव का मुखिया पटेल होता था।
- पटेल (सरकार से वेतन नहीं मिलता था और वंशानुगत मुख्य अधिकारी होता था) केंद्र को राजस्व भेजने के लिए जिम्मेदार था, जिसकी सहायता के लिए लेखाकार और रिकॉर्ड-कीपर, कुलकर्णी थे।
- वंशानुगत सेवक सामुदायिक कार्य करते थे।
- गाँव के कारीगरों को बेगार या अनिवार्य श्रम करना पड़ता था। शहरी प्रशासन
- कस्बों और शहरों में कोतवाल मुख्य अधिकारी होता था। वह मजिस्ट्रेट के रूप में भी कार्य करता था।

• उसके कार्यों में शांति और व्यवस्था बनाए रखना, कीमतों पर नियंत्रण करना, नागरिक विवादों का निपटारा करना और सरकार को मासिक हिसाब भेजना शामिल था। पुलिस व्यवस्था

• प्रत्येक गाँव में चौकीदार नियुक्त किए गए। वे सामान्यत: महार जाति से थे।

• अशांत क्षेत्र के निवासियों को अतिरिक्त गृह कर देना पड़ता था क्योंकि शासन को अपराधों को नियंत्रित करने के लिए अनियमित पैदल सेना (Irregular Infantry) से सैनिक भेजने पड़ते थे।

न्याय व्यवस्था

• न्याय व्यवस्था अपने प्रारंभिक चरण में थी, संहिताबद्ध कानूनों और प्रक्रियाओं का अभाव था। न्याय प्रणाली में मध्यस्थता को प्राथमिकता दी गई।

• अनसुलझे मामलों को गाँव में पटेल द्वारा नियुक्त पंचायत और कस्बों में प्रमुख व्यापारियों द्वारा नियुक्त पंचायत में निर्णय के लिए भेज दिया जाता था। मामलतदार से अपील की जाती थी।

• आपराधिक मामलों में एक पदानुक्रम मौजूद था, जिसमें शीर्ष स्तर पर राजा छत्रपति थे, उसके बाद पेशवा, सर-सूबेदार, मामलतदार और पटेल थे, जिसमें जुर्म कबूल करने के लिए कोड़े मारने और यातना का सामान्य उपयोग होता था।

सैन्य संरचना

• **सेना:** इनकी सैन्य संरचना मुगलों की प्रणाली से काफी मिलती-जुलती थी। उन्होंने शिवाजी की स्थानीय मराठा भर्ती के विपरीत, पूरे भारत से सैनिकों की भर्ती की। सेना में विभिन्न समूहों का मिश्रण था, जिसमें अरब और सिख, प्रतिद्वंद्वी सरदारों के भाड़े के सैनिक सम्मिलित थे, जिससे आंतरिक विवाद पैदा हुए और मराठा एकता प्रभावित हुई।

• **घुड़सवार सेना:** यह मराठा सेना की मुख्य शक्ति थी। प्रत्येक जमींदार को हर वर्ष निर्धारित संख्या में घुड़सवार लाने के लिए बाध्य किया जाता था। इन घुड़सवारों को उनके घोड़ों की गुणवत्ता के आधार पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था।

• **पैदल सेना और तोपखाना :** पैदल सेना में अरब, रोहिल्ला, सिख और सिंधी सम्मिलित थे और उन्हें मराठा सैनिकों की तुलना में अधिक वेतन दिया जाता था। तोपखाने में पुर्तगाली, भारतीय ईसाई और बाद में अंग्रेज शामिल थे।

• **नौसेना:** उन्होंने मराठा बंदरगाहों की रक्षा की, समुद्री डकैती का मुकाबला किया और सीमा शुल्क एकत्र किया। बालाजी विश्वनाथ ने कोंकण, खंडेरी और विजयदुर्ग में नौसैनिक अड्डे स्थापित किए ।

पेशवा की बढ़ती प्रतिष्ठा

• पेशवा, शिवाजी के अष्ट प्रधान (मंत्रिपरिषद) में से एक थे। यह पद शुरू में वंशानुगत नहीं था, लेकिन जैसे-जैसे राजा की शक्ति घटती गई, उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती गई।

• बालाजी विश्वनाथ (1713-1720 ई.) ने पेशवा के पद को सर्वोच्च और वंशानुगत बना दिया। शंभाजी के बाद उन्होंने प्रशासन पर नियंत्रण कर उसे सुव्यवस्थित किया। केंद्रीय सचिवालय

• मराठा प्रशासन का केंद्र पूना स्थित पेशवा सचिवालय था, जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित थे:

• राजस्व, व्यय और गाँव एवं जिले के अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत लेखाओं का प्रबंधन करना।

• अन्य क्षेत्रों से प्राप्त सभी राजस्व, अनुदान और भुगतान का दैनिक रिकॉर्ड रखना।

• लोक सेवकों के वेतन और नागरिक, सैन्य और धार्मिक शीर्षों के तहत बजट का प्रबंधन करना। प्रांत

• बड़े प्रांतों में प्रांतीय गवर्नर के रूप में सर-सूबेदार होते थे। प्रांतों के प्रभागों को सूबा और प्रांत कहा जाता था।

• मामलतदार और कामविसदार जिलों में पेशवा के प्रतिनिधि थे और जिला प्रशासन की हर शाखा के लिए जिम्मेदार थे।

• देशमुख और देशपांडे जिले के प्रभारी लेखा अधिकारी होते थे, वे मामलतदारों और कामविसदारों की गतिविधियों पर नजर रखते थे। यह नियंत्रण और संतुलन की एक प्रणाली थी।

• परगना स्तर पर, देशपांडे लेखा और रिकॉर्ड रखते थे, वहीं दूसरी ओर देशमुख के पास कानूनी और पुलिस अधिकार थे।

• मराठा शासन ने सार्वजनिक धन के दुरुपयोग को रोकने के लिए मामलतदारों और अन्य अधिकारियों से भारी राशि (रसद) एकत्र की। यह किसी जिले में उनकी पहली नियुक्ति पर ली जाती थी।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: ग्राम प्रशासन

1. ग्राम प्रशासन	**2. सैन्य संरचना**
3. पेशवा की बढ़ती प्रतिष्ठा	**4. सेना**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — ग्राम प्रशासन

मुख्य परीक्षा दृष्टि: मराठा शासन ने सार्वजनिक धन के दुरुपयोग को रोकने के लिए मामलतदारों और अन्य अधिकारियों से भारी राशि (रसद) एकत्र की। यह किसी जिले में उनकी पहली नियुक्ति पर ली जाती थी।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: ग्राम प्रशासन • सैन्य संरचना • पेशवा की बढ़ती प्रतिष्ठा • सेना • घुड़सवार सेना | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1713, 1720

IUC विशेष स्मृति सूत्र #8: चोल कालीन भूमि के प्रकार (अभिलेखीय शब्दावली)

ट्रिक: 'वेल्लनवगाई = गैर-ब्राह्मण किसान भूमि, ब्रह्मदेय = ब्राह्मणों को दान, शालाभोग = विद्यालय रखरखाव भूमि, देवदान/तिरुनामट्टुक्कनी = मंदिर को दान, पल्लीच्चंदम = जैन संस्थानों को दान की गई भूमि'।

राजस्व स्रोत

• भू-राजस्व प्राथमिक आय थी, पहले कृषि उपज का बंटवारा (शिवाजी के समय) किया जाता था, लेकिन बाद में खेती पर कर लगाया जाने लगा।

• भू-राजस्व का निर्धारण फसलों के प्रकार, सिंचाई की सुविधाओं और भूमि की उत्पादकता पर आधारित था। ग्राम प्रशासन

• गाँव, प्रशासन की मूल इकाई थे और ये स्वावलंबी थे। गाँव का मुखिया पटेल होता था।

• पटेल (सरकार से वेतन नहीं मिलता था और वंशानुगत मुख्य अधिकारी होता था) केंद्र को राजस्व भेजने के लिए जिम्मेदार था, जिसकी सहायता के लिए लेखाकार और रिकॉर्ड-कीपर, कुलकर्णी थे।

• वंशानुगत सेवक सामुदायिक कार्य करते थे।

• गाँव के कारीगरों को बेगार या अनिवार्य श्रम करना पड़ता था। शहरी प्रशासन

• कस्बों और शहरों में कोतवाल मुख्य अधिकारी होता था। वह मजिस्ट्रेट के रूप में भी कार्य करता था।

• उसके कार्यों में शांति और व्यवस्था बनाए रखना, कीमतों पर नियंत्रण करना, नागरिक विवादों का निपटारा करना और सरकार को मासिक हिसाब भेजना शामिल था। पुलिस व्यवस्था

• प्रत्येक गाँव में चौकीदार नियुक्त किए गए। वे सामान्यतः महार जाति से थे।

• अशांत क्षेत्र के निवासियों को अतिरिक्त गृह कर देना पड़ता था क्योंकि शासन को अपराधों को नियंत्रित करने के लिए अनियमित पैदल सेना (Irregular Infantry) से सैनिक भेजने पड़ते थे।

न्याय व्यवस्था

• न्याय व्यवस्था अपने प्रारंभिक चरण में थी, संहिताबद्ध कानूनों और प्रक्रियाओं का अभाव था। न्याय प्रणाली में मध्यस्थता को प्राथमिकता दी गई।

• अनसुलझे मामलों को गाँव में पटेल द्वारा नियुक्त पंचायत और कस्बों में प्रमुख व्यापारियों द्वारा नियुक्त पंचायत में निर्णय के लिए भेज दिया जाता था। मामलतदार से अपील की जाती थी।

• आपराधिक मामलों में एक पदानुक्रम मौजूद था, जिसमें शीर्ष स्तर पर राजा छत्रपति थे, उसके बाद पेशवा, सर-सूबेदार, मामलतदार और पटेल थे, जिसमें जुर्म कबूल करने के लिए कोड़े मारने और यातना का सामान्य उपयोग होता था।

सैन्य संरचना

• **सेना:** इनकी सैन्य संरचना मुगलों की प्रणाली से काफी मिलती-जुलती थी। उन्होंने शिवाजी की स्थानीय मराठा भर्ती के विपरीत, पूरे भारत से सैनिकों की भर्ती की। सेना में विभिन्न समूहों का मिश्रण था, जिसमें अरब और सिख, प्रतिद्वंद्वी सरदारों के भाड़े के सैनिक सम्मिलित थे, जिससे आंतरिक विवाद पैदा हुए और मराठा एकता प्रभावित हुई।

• **घुड़सवार सेना:** यह मराठा सेना की मुख्य शक्ति थी। प्रत्येक जमींदार को हर वर्ष निर्धारित संख्या में घुड़सवार लाने के लिए बाध्य किया जाता था। इन घुड़सवारों को उनके घोड़ों की गुणवत्ता के आधार पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था।

• **पैदल सेना और तोपखाना :** पैदल सेना में अरब, रोहिल्ला, सिख और सिंधी सम्मिलित थे और उन्हें मराठा सैनिकों की तुलना में अधिक वेतन दिया जाता था। तोपखाने में पुर्तगाली, भारतीय ईसाई और बाद में अंग्रेज शामिल थे।

• **नौसेना:** उन्होंने मराठा बंदरगाहों की रक्षा की, समुद्री डकैती का मुकाबला किया और सीमा शुल्क एकत्र किया। बालाजी विश्वनाथ ने कोंकण, खंडेरी और विजयदुर्ग में नौसैनिक अड्डे स्थापित किए।

भक्ति और सूफी परंपराएँ

6 भक्ति आंदोलन भक्ति शब्द संस्कृत के मूल शब्द "भज्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है “सेवा करना” और इसे "भक्ति" या ईश्वर के प्रति प्रेमासक्ति (Passionate Love for the Divine) के रूप में परिभाषित किया गया है। यह भक्त और इष्ट देव के बीच संबंध पर केंद्रित है। भक्ति आंदोलन ने 8वीं से 18वीं शताब्दी ईस्वी तक भारतीय उपमहाद्वीप में नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण में क्रांतिकारी परिवर्तन किए।

भक्ति आंदोलन के अध्ययन करने के स्रोत:

• क्षेत्रीय भाषाओं में सृजित साहित्य, भक्ति गीत और काव्य ने प्राथमिक स्रोत के रूप में काम किया।
  ◦ जयदेव के "गीत गोविंद" में कृष्ण और राधा के बीच प्रेम का चित्रण किया गया है।
  ◦ अलवारों के तमिल भजन आदि।

• **जीवन-वृतांत:** भक्ति संतों के अनुयायियों या उनके संप्रदाय के सदस्यों द्वारा लिखे गए अपने गुरुओं के जीवन वृत्तांत में उनके जीवन और उपदेशों के बारे में जानकारी मिलती है।
  ◦ "जनम-साखी" गुरु नानक के जीवन पर आधारित है।

• मौखिक ज्ञान, मौखिक आख्यान और गाथाएँ।
  ◦ बुर्रा कथा - आंध्र प्रदेश का एक तेलुगु गाथागीत है।

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण:

• हिंदुओं में प्रचलित अंधविश्वास, धर्म को जटिल बना देता है।

• समाज में व्यप्त जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता और असमानता ने लोगों के विभिन्न वर्गोंके बीच असंतोषपैदाकिया।इसके अतिरिक्त,इस्लामने ईश्वरकीएकात्मकता और मनुष्य के बीच भाईचारे का प्रचार किया, जिसने उत्पीड़ित जनमानस को आकर्षित किया।

• भारत के विभिन्न हिस्सों में धार्मिक नेताओं ने कट्टरता, धर्मांधता और धार्मिक असहिष्णुता जैसी बुराइयों को दूर करने के लिए भक्ति नामक पूर्ण समर्पण भाव का प्रचार किया।

भक्ति आंदोलन की मुख्य विशेषताएँ :

• एके श्वरवाद (ईश्वर एक है) का प्रचार किया।

• मोक्ष (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति), केवल ईश्वर के प्रति प्रगाढ़ भक्ति और विश्वास से ही प्राप्त किया जा सकता है।

• मूर्ति पूजा की आलोचना की तथा कर्मकांड, तीर्थयात्राओं और उपवासों की निंदा की।

• गुरु एक मार्गदर्शक और उपदेशक के रूप में कार्य कर सकता है।

• सार्वभौमिक भाईचारे के सिद्धांतों का समर्थन किया और जाति व्यवस्था की निंदा की।

• इसने संदेश दिया कि अंधविश्वासी प्रथाओं को त्यागना होगा।

• किसी भी भाषा को पवित्र नहीं माना और आम जनमानस की भाषा में ही काव्य की रचना की।

भक्ति परंपरा को दो मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:

• **सगुण भक्ति (साकार या सगुण):** इसके अंतर्गत देवताओंऔर उनके मानव अवतारों की पूजा करने पर जोर दिया जाता है। जैसे : चैतन्य महाप्रभु द्वारा भगवान कृष्ण की पूजा।

• **निर्गुण भक्ति (निराकार या निर्गुण):** इसमें भगवान के अमूर्त रूप (निराकार)

की पूजा की जाती है। जैसे: सिख धर्म में ईश्वर निराकार है। प्रारंभिक समर्थक

• छठी शताब्दी के आस-पास प्रारंभिक भक्ति आंदोलनों का नेतृत्व दो समूहों द्वारा किया गया था:

  ◦ **अलवार (विष्णु के भक्त):** नम्मालवार, तिरुमंगैयालवार, आण्डाल और पेरियालवार प्रसिद्ध अलवार संत थे।

  ◦ **नयनार (शिव के भक्त):** अप्पार, सुंदरार, तिरुज्ञान संबंदार, और मणिकावचाकार प्रसिद्ध नयनार संत थे।

• उन्होंने दक्षिण भारत के विभिन्न भागों में आम जनता के बीच स्थानीय भाषा में प्रचार के माध्यम से प्रेम और भक्ति का अपना संदेश पहुँचाया। इससे वैदिक धर्म के कुछ अनुयायियों को प्राचीन वैदिक धर्म का पुनरुद्धार करने में मदद मिली।

• उन्होंने पवित्र स्थलों की पहचान करते हुए तमिल भजन गाए, जो बाद में प्रमुख मंदिरों और तीर्थ केंद्रों में विकसित हुए। उनके भजनों को मंदिर के अनुष्ठानों में एकीकृत किया गया और उनकी मूर्तियों की पूजा एक मंदिर परंपरा बन गई।

  ◦ **उदाहरण:** श्री रामनाथस्वामी मंदिर (रामेश्वरम; भगवान शिव को समर्पित)

जाति के प्रति दृष्टिकोण:

• अलवारों और नयनारों ने शिल्पकारों, किसानों और हाशिए पर पड़ी "अस्पृश्य" जातियों के विविध सामाजिक समूहों के समर्थन से जाति व्यवस्था और ब्राह्मणवादी प्रभुत्व को चुनौती दी।

साहित्य

अलवार और नयनारों ने अपनी परंपराओं के महत्त्व को वेदों के बराबर बताया।

• अलवार संत

• नालयिरादिव्यप्रबंधम – यह 12 अलवार संतों द्वारा रचित "चार हजार छंदों" का एक संग्रह है जिसका संकलन 10वीं शताब्दी में नाथमुनि द्वारा किया गया था और इसे प्रायः तमिल वेद के नाम से सुप्रसिद्ध है।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: भक्ति और सूफी परंपराएँ

1. **भक्ति और सूफी परंपराएँ**
2. **भक्ति आंदोलन के अध्ययन करने के स्रोत**
3. **भक्ति आंदोलन की मुख्य विशेषताएँ**
4. **साहित्य**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — भक्ति और सूफी परंपराएँ

मुख्य परीक्षा दृष्टि: नालयिरादिव्यप्रबंधम – यह 12 अलवार संतों द्वारा रचित "चार हजार छंदों" का एक संग्रह है जिसका संकलन 10वीं शताब्दी में नाथमुनि द्वारा किया गया था और इसे प्रायः तमिल वेद के नाम से सुप्रसिद्ध है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: भक्ति और सूफी परंपराएँ • भक्ति आंदोलन के अध्ययन करने के स्रोत • भक्ति आंदोलन की मुख्य विशेषताएँ • साहित्य • जीवन-वृतांत

• आण्डाल के भक्ति गीतों का संग्रह तिरुप्पावै है। आण्डाल की तमिल कृतियों में तिरुप्पावै और नचियार तिरुमोझी सम्मिलित हैं।

• **नयनार संत:** शैव साहित्य को पन्निरु तिरुमुरै (12 भाग) में संकलित किया गया था।

• तेवरम/थेवरम तमिल कवियों अप्पार, संबंदार और सुंदरार के भक्ति काव्य का संकलन है जो शैव तिरुमुरै के प्रारंभिक सात भागों का निर्माण करता है। आठवें भाग तिरुमुरै में मणिकवाचकार के भजन सम्मिलित हैं।

• मणिकवाचकार के गीतों को तिरुवाचकम के नाम से जाना जाता है।

• सेखिझार द्वारा लिखित पेरियापुराणम में नयनारों की जीवनियों का संकलन है। यह शैव सिद्धांत का बारहवाँ तिरुमुरै है।

महिला भक्त

महिलाएँ समाज के पारंपरिक पदानुक्रम में सबसे निचले पायदान पर थीं।

केवल ईश्वर के प्रति अपनी पूर्ण भक्ति के प्रदर्शन और अपने समकालीनों के साथ, अपनी आध्ययात्मिक समानता के लिए अटूट आग्रह के कारण इन महिलाओं को अपने वर्ग में अनिच्छा से स्वीकार किया गया। उनमें से कई ने तपस्या को मुक्ति की दिशा में महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में अस्वीकार कर दिया।

कुछ प्रसिद्ध महिला भक्त निम्नलिखित हैं:

- अक्कमहादेवी, जिन्हें अक्का या महादेवी के नाम से भी जाना जाता है, 12वीं शताब्दी में कर्नाटक के दक्षिणी क्षेत्र की शिव भक्त थीं।
- कराईक्कल अम्मैय्यार शिव भक्त थीं, उन्होंने अपने आध्ययात्मिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अत्यधिक तपस्या की।
- आण्डाल एक अलवार संत थीं, उन्होंने विष्णु के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करते हुए छंदों की रचना की।
- इन महिलाओं ने त्याग का मार्ग चुना, लेकिन औपचारिक धार्मिक परंपराओं में शामिल नहीं हुईं। उनके अस्तित्व और लेखन ने समाज में पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती दी।

चोल शासकों का भक्ति परंपरा से संबंध

- शाही संरक्षण प्राप्त करने के लिए भक्ति-भजनों में प्राय: बौद्ध धर्म और जैन धर्म का विरोध किया गया।
- चोल शासकों ने ब्राह्मणवादी और भक्ति परंपराओं को संरक्षण प्रदान किया, विष्णु और शिव मंदिरों के लिए भूमि दी और उनका निर्माण करवाया।

चोल शासकों ने संतों का समर्थन हासिल करने और शक्ति प्रदर्शन के लिए उनके विचारों को दोहराया। उदाहरण: चिदंबरम, तंजावुर और गंगैकोंडचोलपुरम में शिव मंदिर।

- चोल शासकों ने मंदिरों में तमिल शैव भजन (नयनार) के गायन को बढ़ावा दिया।
- 945 ई. के एक शिलालेख से संकेत मिलता है कि चोल शासक परांतक प्रथम ने एक शिव मंदिर में अप्पार, संबंदार और सुंदरार की धातु की मूर्तियाँ रखवाईं, जिनकी उनके त्योहारों के दौरान शोभायात्रा निकाली जाती थी।

छोटी और महान परंपराओं का मिश्रण

- ब्राह्मणों ने विभिन्न सामाजिक वर्गों की मान्यताओं और प्रथाओं को शामिल करना और अपनाना शुरू कर दिया, जिससे छोटी और बड़ी परंपराओं का मिश्रण हुआ। (महान परंपराएँ पुजारियों और शासकों जैसे प्रमुख सामाजिक वर्गों की प्रथाएँ हैं, वहीं दूसरी ओर छोटी परंपराएँ स्थानीय प्रथाएँ हैं)
- इस एकीकरण का एक उदाहरण पुरी, उड़ीसा में देखा जाता है, जहाँ प्रमुख देवता को जगन्नाथ के रूप में जाना जाने लगा और 12वीं शताब्दी में विष्णु के रूप में मान्यता दी गई, जो स्थानीय और पौराणिक परंपराओं के एकीकरण पर प्रकाश डालती है।।

वीरशैव/लि गायत परंपरा संस्थापक: बसवन्ना, कलचुरी शासक बिज्जला द्वितीय के मंत्री (12वीं शताब्दी के मध्य में)।

प्रथाएँ :

- शिव की पूजा लिंग के रूप में की जाती है और पुरुष सामान्य रूप से चाँदी के छोटी पेटी/के स में एक छोटा लिंग धारण करते हैं, जिसे बाएँ कंधे पर लटकाया जाता है।
- जंगम (घूमने वाले भिक्षु) को श्रद्धेय माना जाता है।
- अपने मृतकों को इस विश्वास के साथ दफनाते हैं किमृत्यु के बाद उनका शिव के साथ मिलन हो जाएगा और पुनर्जन्म नहीं होगा। उनमें धर्मशास्त्रों में दाह संस्कार जैसे अंतिम संस्कार की प्रथा वर्णित नहीं है।
- इस परंपरा ने जाति व्यवस्था के पारंपरिक रीति-रिवाजों का विरोध किया और पुनर्जन्म के सिद्धांत पर सवाल उठाया। [यूपीएससी 2016]
- विधवा पुनर्विवाह और युवावस्था के बाद विवाह जैसी प्रथाओं का समर्थन किया जिसे धर्मशास्त्रों में अस्वीकृत कर दिया गया था।

मुख्य विशेषताएँ :

- उन्होंने मूर्तिपूजा और अनेक देवताओं की पूजा को अस्वीकार करते हुए, भगवान शिव की अनन्य पूजा को बढ़ावा दिया।
- उन्होंने मंदिरों में जाने, विशेषकर शिवलिंग वाले मंदिरों में जाने और बलि-अनुष्ठानों में भाग लेने को हतोत्साहित किया। उनके अनुसार, पवित्र स्थानों की तीर्थयात्रा सच्ची आध्ययात्मिक शुद्धता सुनिश्चित नहीं करती। इनके द्वारा मंदिरों को दिए जाने वाले दान को, असमानता को बढ़ावा देने के रूप में देखा गया।

• ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म की मान्यताओंऔर प्रथाओं के अभिन्न अंग "पंच सूतक" (जन्म,मृत्यु,मासिकधर्म, लार और जातिसंपर्क)कापालनकरने से परहेज किया।

• षष्ठला, अष्टावरण और पंचाचार-

  ◦ षष्ठला ने भगवान शिव से एकाकार होने के छह चरण बताए।

  ◦ अष्टावर ण ने व्यक्तियों को आध्ययात्मिक बाधाओं से बचाया।

  ◦ पंचाचार में वीरशैव लोगों के विश्वास की रक्षा के लिए आवश्यक पाँच धार्मिक आसन सम्मिलित थे।

• कायक- इसके अंतर्गत उन्होंने सभी कार्यों में समानता पर बल दिया तथा समर्पण को महत्त्व दिया। उनका मानना था कि अपने कार्य के प्रति समर्पण से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

• लिंगायत परंपरा को कन्नड़ में 'वचनों' (भक्ति छंदों) के माध्यम से जाना जाता है, जो पुरुष और महिला दोनों अनुयायियों द्वारा रचित हैं।

तंत्रवाद

• शैव और बौद्ध धर्म दोनों ही इन विचारों से प्रभावित थे। अगली सहस्राब्दी में इन मान्यताओं को हिंदू के रूप में वर्गीकृत किया गया। तंत्रवाद के दो बुनियादी सिद्धांत होते हैं:

  ◦ यह वेदों की सत्ता को स्वीकार नहीं करता।

  ◦ प्रजनन संस्कार, तंत्रवाद का एक प्रमुख हिस्सा है।

• **तंत्रवाद का प्रारंभिक अप्रत्यक्ष पाठ्य संदर्भ:**

  ◦ बाणभट्ट कृत कादंबरी और हर्षचरित।

  ◦ महेंद्रवर्मन द्वारा रचित मत्तविलास प्रहसन।

  ◦ दण्डिन द्वारा रचित दशकुमारचरित।

• **पुरालेखीय साक्ष्य:** विश्वर्मन का शिलालेख (गंगाधर, राजस्थान) (423 ई.)

• **तांत्रिक साधनाएँ:**

  ◦ स्त्री तत्त्व (प्रकृति) का महत्त्व पुरुष तत्त्व (पुरुष) से अधिक है।

  ◦ उन्होंने अनुष्ठानों के दौरान जाति, पितृसत्ता और वर्ग भेदों की उपेक्षा की।

  ◦ तंत्रवाद मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करता, क्योंकि शरीर को ब्रह्मांड का एक सूक्ष्म रूप माना जाता है।

उत्तर भारत में धार्मिक उफान

(Religious Ferment in North India)

• उत्तर भारत में शासकों द्वारा समर्थित मंदिरों में विष्णु औरशिव की पूजा की जाती थी, लेकिन 14वीं शताब्दी तक अलवार और नयनार जैसे संत दिखाई नहीं दिए।

• नाथपंथी, सिद्धाचार और योगी धार्मिक समूह थे जो स्थानीय भाषा में तर्कों का उपयोग करके , रूढ़िवादी अनुष्ठानों और सामाजिक व्यवस्था की आलोचना करते थे। उन्होंने मोक्ष के मार्ग के रूप में योगासन, प्राणायाम और ध्यान जैसे अभ्यासों के माध्यम से मन और शरीर के गहन प्रशिक्षण का समर्थन किया।

• तुर्कों के आगमन और 13वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत की स्थापना ने राजपूत राज्यों और उनसे जुड़े ब्राह्मणों को कमजोर कर दिया और इस क्षेत्र के सांस्कृतिक और धार्मिक संबंधों में बदलाव ला दिया।

भक्ति आंदोलन

आदि शंकराचार्य (788-820 ई.)

• आदि शंकराचार्य का जन्म केरल के कलाडी में हुआ था। उनके आगमन से संस्कृत में दार्शनिक भक्ति संवाद की शुरुआत हुई।

• उन्होंने अद्वैत वेदांत (अद्वैतवाद) के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। शंकर का अद्वैत या गैर-द्वैतवाद दर्शन, वेदांत और उपनिषद पर आधारित था।

• शंकर संप्रदाय की दो मुख्य विशेषताएँ, मठों की स्थापना और संस्कृत ग्रंथों का संरक्षण था। बौद्ध धर्म को जड़ से उखाड़ने और स्मार्त (पंच देव के उपासक-परंपरावादी) मठों की स्थापना करने के उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप विभिन्न स्थानों जैसे शृंगेरी, द्वारका, बद्रीनाथ और पुरी में मठों की स्थापना हुई, जिनका नेतृत्व ब्राह्मण मठाधीशों ने किया।

• शंकर ने शैव और वैष्णव पूजा को वैदिक धर्म के दो समान रूप से महत्त्वपूर्ण पहलुओं के रूप में देखा।

• के दारनाथ में शंकराचार्य की 12 फुट की प्रतिमा स्थापित की गई। रामानुज (1017-1137 ई.)

• रामानुज दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध धर्म सुधारक थे, उन्होंने उत्तर भारत के कुछ पवित्र स्थानों की तीर्थयात्रा की।

• उन्होंने आदि शंकराचार्य की अद्वैतवादी विचारधारा को चुनौती दी और विशिष्टाद्वैत (गुणात्मक अद्वैतवाद) (Qualified Monoism) का प्रतिपादन किया।

• रामानुज ने वर्णाश्रम व्यवस्था के बाहर के सामाजिक समूहों में भक्ति के सिद्धांत का प्रचार करने में रुचि ली। उन्होंने मंदिर अधिकारियों को वर्ष में कम से कम एक बार मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति देने के लिए राजी किया। उनका दृढ़ विश्वास था कि विष्णु की तीव्र भक्ति मोक्ष प्राप्त करने का सबसे अच्छा साधन है।

[यूपीएससी 2022]

• उनके उपदेश उपनिषदों और भगवद गीता पर आधारित थे और एक आम भाषा में दिए जाते थे।

• वह श्रीरंगम संप्रदाय के उपदेशों से प्रभावित थे। रामानुज इसमें शामिल हो गए और बाद में उन्हें श्रीरंगम में एक मठ का मठाधीश घोषित किया गया।

• उनके शिष्य रामानंद ने बाद में उत्तर भारत में उनके संदेशों का प्रचार-प्रसार किया।

• उनकी मृत्यु के एक सदी बाद एक विभाजन हुआ जो वेदांत देसीकर और मनावला मामुनि के तहत दो अलग-अलग संप्रदायों में विकसित हुआ।

• हाल ही में, रामानुजाचार्य की 1,000वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में हैदराबाद में स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी (Statue of Equality) का निर्माण किया गया था।

नामदेव (1270-1350 ई.) वरकरी सम्प्रदाय भगवान विट्ठल के प्रति भक्ति से वारकरी संप्रदाय की उत्पत्ति हुई, जिसने पंढरपुर (महाराष्ट्र) की वार्षिक तीर्थयात्रा पर जोर दिया। महाराष्ट्र के वैष्णव संत कवि जैसे कि ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ और तुकाराम भगवान विट्ठल के भक्त थे।

• नामदेव का जन्म एक दर्जी परिवार में हुआ था। उन्होंने महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन को लोकप्रिय बनाया और वारकरी संप्रदाय से निकटता से जुड़े रहे।

• ज्ञानदेव के प्रभाव से वे भक्ति के मार्ग पर आ गए।

• उन्होंने मराठी और हिंदी में अनेक अभंग (ईश्वर की प्रशंसा में रचित और गाए जाने वाले गीत) लिखे। बाद में उनके कुछ छंद गुरु ग्रंथ साहिब में भी जोड़े गए।

• सच्चे हृदय से ईश्वर से प्रेम करके पवित्र जीवन जीना और दृढ़ भक्ति के साथ अपना सब कुछ उन्हें समर्पित कर देना ही उनके संदेश का सार है।

ज्ञानेश्वर (1275-1296 ई.)

• ज्ञानेश्वर महाराष्ट्र के संत थे, जो विष्णु को विठोबा या कृष्ण के रूप में पूजते थे।

• उन्होंने भगवद गीता का संस्कृत से मराठी में अनुवाद किया, जिसे ज्ञानेश्वरी कहा जाता है।

रामानंद (1400-1470 ई.)

• रामानंद, रामानुज के अनुयायी थे और हिंदी में वैष्णव धर्म का प्रचार करते थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपने भक्ति के सिद्धांत का प्रचार स्थानीय भाषा हिंदी में किया।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: तंत्रवाद



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — तंत्रवाद

मुख्य परीक्षा दृष्टि: रामानंद, रामानुज के अनुयायी थे और हिंदी में वैष्णव धर्म का प्रचार करते थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपने भक्ति के सिद्धांत का प्रचार स्थानीय भाषा हिंदी में किया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: तंत्रवाद • उत्तर भारत में धार्मिक उफान • भक्ति आंदोलन • पुरालेखीय साक्ष्य • तांत्रिक साधनाएँ | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 423 ई, 820 ई, 1137, 2022, 1270

• वे राम के अनन्य उपासक थे, उन्होंने बनारस में शिक्षा प्राप्त की। रामानंद ने राम और सीता के प्रति प्रेम और भक्ति के दर्शन पर आधारित अपने संप्रदाय की स्थापना करके , वैष्णववाद में आमूल-चूल परिवर्तन किया। उन्होंने विष्णु के स्थान पर राम की पूजा की।

• उन्होंने ईश्वरके समक्ष समानता का समर्थन किया और जाति व्यवस्था, विशेषकर ब्राह्मणों की सर्वोच्चता को अस्वीकार किया।

• उन्होंने सभी जातियों और पृष्ठभूमि के अनुयायियों का स्वागत किया और उनके बारह प्रमुख शिष्य थे, जिनमें संत कबीर, रविदास एवं पद्मावती नाम की एक महिला शामिल थी।

• रामानंद के अनुसार, "किसी भी व्यक्ति को किसी व्यक्ति का संप्रदाय या जाति नहीं पूछनी चाहिए।" कबीर (1398-1448 ई.)

• कबीर संभवतः एक बुनकर थे, जिनका जन्म वाराणसी में हुआ था।

• उन्होंने स्वामी रामानन्द से वेदांत दर्शन की शिक्षा ली।

• तजकिरा-ए-औलिया-ए-हिंद (मुस्लिम संतों की जीवनी) के अनुसार, वे मुस्लिम सूफी संत शेख तकी के शिष्य थे। [यूपीएससी 2019]

• उनकी कविताओं में अनेक विचारों को अभिव्यक्ति मिली है, जिसमें सूफी और हिंदू विचारों जैसे 'जिक्र' और 'नाम-सिमरन' का मिश्रण है। उन्होंने बताया कि अल्लाह और ईश्वर, राम और रहीम एक ही हैं। उनका मूर्ति पूजा और बहुदेववाद में कोई विश्वास नहीं था। उन्होंने जाति व्यवस्था की निंदा की साथ ही उन्होंने मुस्लिम ढोंग की भी निंदा की।

• **कबीर के पद तीन अलग-अलग परंपराओं में मौजूद हैं:**
  ◦ कबीर के बीजक को कबीरपंथ (कबीर मार्ग या संप्रदाय) द्वारा संरक्षित किया गया है। [यूपीएससी 2014]
  ◦ राजस्थान में दादूपंथ कृत कबीर ग्रंथावली।
  ◦ आदि ग्रंथ साहिब।

• उनकी कविताएँ परम यथार्थ को व्यक्त करने की जटिलता का संकेत देने के लिए प्रायः रोजमर्रा के अर्थों को उलट-पुलट कर देती हैं (उलटबांसी)।

बाबा गुरु नानक (1469-1538 ई.)

• ननकाना साहिब (रावी नदी के पास) में जन्म।

• उन्होंने प्रमुखता से निर्गुण भक्ति का समर्थन किया, एक निराकार, लिंगहीन परम सत्ता में विश्वास किया जिसे "रब" कहा जाता है।

• उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों के अनुष्ठानों, बलिदानों और धर्मग्रंथों को अस्वीकार कर दिया और "सबद" भजनों के माध्यम से ईश्वर का नाम जप करके उससे जुड़ने पर जोर दिया।

• उन्होंने अपने अनुयायियों का एक समुदाय स्थापित किया और सामूहिक पूजा या सामूहिक पाठ पर केंद्रित "संगत" के लिए दिशा-निर्देश निर्धारित किए। उन्होंने सिकंदर लोदी (1489-1517 ई.) के काल में और जब बाबर मुगल वंश को मजबूत कर रहा था, सिख धर्म की स्थापना की। [यूपीएससी 2013]

• गुरु नानक के उपदेश आदि ग्रंथ में संकलित हैं।

अन्य सिख गुरु:

• दूसरे सिख गुरु, गुरु अंगद ने 'गुरुमुखी' लिपि की शुरुआत की।

• पाँचवें गुरु, गुरु अर्जन ने उनके भजनों कोआदि ग्रंथ साहिब में संकलित किया, जिसमें उनके उत्तराधिकारियों और बाबा फरीद, रविदास और कबीर जैसे कवियों के छंद भी सम्मिलित हैं।

• दसवें (अंतिम) गुरु, गुरु गोबिंद सिंह ने, नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर की रचनाओं को शामिल करके इसका विस्तार किया, जिन्हें गुरु ग्रंथ साहिब (गुरुमुखी लिपि में लिखा गया) के नाम से सुप्रसिद्ध है। गुरु गोबिंद सिंह के बाद ग्रंथ साहिब को गुरु मान लिया गया।

• गुरु ग्रंथ साहिब में रामानंद, नामदेव, कबीर और शेख फरीद जैसे कई भक्ति कवियों और सूफी संतों की रचनाएँ भी सम्मिलित हैं।

• गुरु गोबिंद सिंह ने सिख धर्म के पाँच प्रतीकों (5 ककार) को परिभाषित किया। ये पाँच प्रतीक थे – के श, कृपाण, कंघा, कड़ा, कच्छा।

वल्लभाचार्य (1479-1531 ई.)

• पुष्टिमार्ग (अनुग्रह मार्ग) के संस्थापक वल्लभाचार्य ने वात्सल्य भक्ति के माध्यम से बाल कृष्ण की भक्ति पर जोर दिया।

• उन्होंने पूरे भारत की यात्रा की और अपनी तीर्थयात्राओं के दौरान चौरासी पुष्टिमार्ग केंद्रों की स्थापना की।

• उन्होंने शुद्धाद्वैत (शुद्ध अद्वैतवाद) का सिद्धांत प्रतिपादित किया।

• वैष्णव भक्तों के लिए गृहस्थ जीवन का समर्थन किया। चैतन्य (1485-1533 ई.)

• चैतन्य को 'चैतन्य महाप्रभु' कहा जाता था, उनके भजन बंगाल में लोकप्रिय हैं। वे कृष्ण को समर्पित एक बंगाली संत थे।

• उन्होंने एक पुनरुत्थानवादी आंदोलन शुरू किया, क्योंकि वह अन्य सभी देवताओं पर कृष्ण की श्रेष्ठता स्थापित करना चाहते थे। उनका आंदोलन बंगाल और उड़ीसा में लोकप्रिय हुआ।

• उनके अनुयायी उन्हें विष्णु का अवतार मानते थे। उन्होंने प्रेम और सहिष्णुता का समर्थन किया और जातिगत असमानताओं का विरोध किया।

• उन्होंने बंगाल में 'संकीर्तन' (सार्वजनिक ईश्वर-स्तुति गान) को लोकप्रिय बनाया। शंकरदेव (1499-1569 ई.)

• शंकरदेव ने भगवद गीता और भागवत पुराण से प्रेरणा लेते हुए, अपने भगवती धर्म उपदेशों के माध्यम से असम में (खास तौर पर कामरूप क्षेत्र में) वैष्णववाद का प्रचार किया।

• उन्होंने विष्णु के प्रति समर्पण पर जोर दिया और 'नाम कीर्तन' - भक्त मंडलियों (सतसंग) में ईश्वर के नाम जप का समर्थन किया।

• उन्होंने आध्ययात्मिक विकास के लिए 'सत्र' (मठ) और 'नाम घर' (प्रार्थना कक्ष) का समर्थन किया।

• "कीर्तन-घोष" (ब्रजावली भाषा में लिखित) शंकरदेव की एक उल्लेखनीय काव्य रचना है।

तुलसीदास (1532-1623 ई.)

• तुलसीदास ने अवधी में राम कथा के प्रस्तुतीकरण के माध्यम से राम पंथ को लोकप्रिय बनाया।

• उनकी उल्लेखनीय रचनाओं में जानकी मंगल, पार्वती मंगल, रामचरितमानस, विनय पत्रिका, दोहावली, गीतावली सम्मिलित हैं।

• वे अकबर और जहाँगीर के समकालीन थे। तुकाराम (1608-1649 ई.)

• तुकाराम ने मराठी में अभंग (भक्ति काव्य के रूप) लिखे, जो पंढरपुर के भगवान विठोबा की प्रशंसा में लिखे भक्ति गीत थे।

• वे छत्रपति शिवाजी, जहाँगीर, शाहजहाँ और एकनाथ एवं रामदास जैसे संतों के समकालीन थे।

• वे निराकार ईश्वर में विश्वास करते थे और वैदिक बलिदानों, तीर्थयात्राओं और मूर्ति पूजा को अस्वीकार करते थे।

• उन्होंने समानता और भाईचारे को बढ़ावा दिया और हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देने का प्रयास किया। इस विषय पर उनके कुछ छंद भी हैं।

गुरु रामदास (1608-1681 ई.)

• गुरु रामदास छत्रपति शिवाजी के प्रसिद्ध गुरु और आध्ययात्मिक मार्गदर्शक थे।

• उन्होंने ईश्वर के समक्ष सभी मनुष्यों की समानता पर बल दिया।

• वे न केवल एक धार्मिक उपदेशक थे, बल्कि एक दूरदर्शी राष्ट्र-निर्माता भी थे। जनाबाई (1258-1350 ई.)

• जनाबाई का जन्म महाराष्ट्र में एक 'निम्न' जाति के परिवार में हुआ था, उन्होंने नामदेव की शिष्या के रूप में सेवा की।

• उन्होंने अपनी निम्न-जाति के दर्जे और घरेलू जीवन की सीमाओं की चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए, 300 से अधिक कविताएँ लिखीं।

मीराबाई (1498-1546 ई.)

• मीराबाई का जन्म मेड़ता (राजस्थान) में हुआ था। वह राणा जोधाजी की परपोती थीं। उनका विवाह मेवाड़ के राणा सांगा के पुत्र भोज राज से हुआ। वह महल से भाग गईंऔर वैवाहिक जीवन को त्याग कर घुमक्कड़ संत के रूप में रहने लगीं।

उन्होंने तीव्र वेदना की अभिव्यक्ति वाले गीतों की रचना की और स्वयं को कृष्ण के प्रति समर्पित कर दिया।

• वह भक्ति परंपरा में सगुण भक्ति का समर्थन करने वाली एक प्रमुख महिला कवयित्री थीं। उन्होंने राग-गोविंद की रचना की।

• मीराबाई के गुरु, रैदास चमड़े का काम करने वाले थे, इससे पता चलता है कि उन्होंने जातिगत मानदंडों को अस्वीकार कर दिया था।

• यद्यपि, उन्होंने कोई संप्रदाय नहीं बनाया, लेकिन उनके गीत गुजरात और राजस्थान में वंचित समुदायों के बीच लोकप्रिय हैं।

सूरदास

• सूरदास आगरा के अंधे कवि (Blind Bard of Agra) के नाम से मशहूर थे। यह माना जाता है कि सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे।

• सूरदास ने साकार ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति के धर्म का प्रचार किया। उन्होंने भगवान कृष्ण के बारे में प्रेरक हिंदी काव्य की रचना की।

• कृष्ण की बाल लीला, सूरदास के काव्य का पहला प्रमुख विषय है।

• उनकी लोकप्रिय कृतियाँ सूर सागर, सूर सारावली और साहित्य लहरी हैं। उनकी प्रमुख कृति सूर सागर में, भगवान कृष्ण के जन्म से लेकर मथुरा प्रस्थान तक की कहानी का वर्णन है।

बहिनाबाई या बहिना (1628-1700 ई.)

• बहिनाबाई महाराष्ट्र की संत कवि थीं, उन्होंने मराठी भाषा में अनेक अभंग लिखे जिनमें महिलाओं के दैनिक श्रम का चित्रण किया गया है।

• उनकी कविताएँ आत्मकथात्मक हैं, जिनमें उनके जीवन के विभिन्न चरणों और कृष्ण के एक रूप भगवान विठोबा के प्रति उनके प्रगाढ़ प्रेम के कारण वैवाहिक संघर्षों का वर्णन है।

• उन्होंने अपने दिव्य प्रेम के प्रति समर्पित रहते हुए, अपने वैवाहिक कर्तव्यों का सम्मान किया, जैसा कि अपने पतियों के प्रति महिलाओं की जिम्मेदारियाँ से संबंधित उनके छंदों में परिलक्षित होता है।

• ब्राह्मण पृष्ठभूमि से होने के बावजूद, वह निम्न जाति के संत कवि तुकाराम का सम्मान करती थीं और पारंपरिक शुद्धता के मानदंडों पर भक्ति को प्राथमिकता देती थीं।

सूफी आंदोलन — परिचय

सूफीवाद, जिसे इस्लामी ग्रंथों में "तसव्वुफ" के नाम से जाना जाता है, इस्लाम की एक रहस्यवादी विचारधारा है। सूफी शब्द की उत्पत्ति के संबंध में विवाद है।

कुछ लोगों का मानना है कि इसकी उत्पत्ति "सूफ" (ऊनी कंबल) से हुई है, जिसका मुख्य अभिप्राय सूफियों द्वारा पहने जाने वाले ऊनी कपड़ों से है, जबकिकुछ लोगों का मानना है कि इसकी उत्पत्ति "सफा" (पवित्रता), या "सुफ्फा" से हुई है, जिसका तात्पर्य पैगंबर की मस्जिद के पास एक मंच से है जहाँ समर्पित अनुयायी धर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए एकत्र होते थे। इसका सार ईश्वर के साथ गहरा, व्यक्तिगत जुड़ाव तलाशना है।

भारत में सूफीवाद की उत्पत्ति:

• जैसे-जैसे मुस्लिम साम्राज्य का विस्तार हुआ, सूफी आंदोलन ने बड़े उत्साह के साथ इस्लाम का प्रचार किया तथा यह पूरे मुस्लिम जगत में फैल गया।

• भारत में इसकी शुरुआत व्यापार के आगमन के साथ हुई, जब विदेशी व्यापारी पश्चिमी तट पर बसने लगे। बाद में, लगातार मुस्लिम आक्रमणों के कारण सूफियों को भारत में प्रमुखता मिली।

• दातागंज के शेख अली हुजवारी भारत के पहले प्रतिष्ठित सूफी थे। उन्होंने अपनी पुस्तक कश्फुल-उल-महजुब के माध्यम से भारत में भविष्य के सूफियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने सूफीवाद के मूल सिद्धांतों, जैसे ईश्वर की पूजा, ईश्वर से प्रेम, ईश्वर का ज्ञान, शुद्धि और प्रलय पर जोर दिया।

सूफी आंदोलन की जानकारी के महत्त्वपूर्ण श्रोत: साहित्य:

• **मालफु जात:** अमीर हसन सिज्जी देहलवी द्वारा संकलित शेख निजामुद्दीन औलिया के संवादों का संग्रह।

• **मकतूबत:** सूफी गुरुओं द्वारा अपने शिष्यों को संबोधित पत्र।

  ◦ मकतूबत-ए-इमाम रब्बानी प्रसिद्ध नक्शबंदी शेख अहमद सरहिंदी के पत्र हैं, जिनकी विचारधारा प्राय: अकबर के उदार और गैर-सांप्रदायिक विचारों से भिन्न थी।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: सूरदास

1532	1623	1608	1649
सूरदास	सूफी आंदोलन	भारत में सूफीवाद की उत्पत्ति	मालफु जात

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — सूरदास

मुख्य परीक्षा दृष्टि: मकतूबत: सूफी गुरुओं द्वारा अपने शिष्यों को संबोधित पत्र।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: सूरदास • सूफी आंदोलन • भारत में सूफीवाद की उत्पत्ति • मालफु जात • मकतूबत | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** *1532, 1623, 1608, 1649, 1681*

IUC विशेष स्मृति सूत्र #9: फिरोज शाह तुगलक द्वारा लगाए गए 4 कर

ट्रिक: 'खराज (लगान), खुम्स (युद्ध लूट का 1/5 भाग), जजिया (ब्राह्मणों पर भी लगाने वाला प्रथम सुल्तान) और जकात (मुसलमानों पर धार्मिक कर) + हब-ए-शर्ब (सिंचाई कर — उपज का 1/10)'।

• **तजकिरा (जीवनियाँ):** मीर खुर्द किरमानी का सियार-उल-औलिया भारत में लिखा गया पहला सूफी तजकिरा था। यह मुख्य रूप से चिश्ती संतों से संबंधित था। सबसे प्रसिद्ध तजकिरा अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी (मृत्यु 1642 ई.) का अखबार-उल-अखयार है। तजकिरा के लेखक अक्सर अपने स्वयं के सिलसिले की श्रेष्ठता स्थापित करने और अपनी आध्यात्मिक वंशावली का महिमामंडन करने का प्रयास करते थे।

• **कविता और संगीत:** खास तौर पर सूफी सभाओं(समा) में संगीत का उपयोग आध्ययात्मिक प्रेरणा और अभिव्यक्ति का स्रोत रहा है। उदाहरण के लिए, ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने समा (महबूब-ए-इलाही) नामक संगीत गायन को लोकप्रिय बनाया।

सूफीवाद के मुख्य सिद्धांत: [यूपीएससी 2012]

• ईश्वरीय वास्तविकता (हकीकत) के साथ सीधा संवाद केवल ऐसे शेख, पीर या मुर्शीद की सख्त निगरानी में सूफी पथ (तारिका) को पार करके स्थापित किया जा सकता है, जिसने खुद इसे सफलतापूर्वक पार किया हो।

• शिष्य (मुरीद) ने आत्म-त्याग, एकाग्रता प्राप्त करने के लिए ईश्वर के नाम का स्मरण (जिक्र) और चिंतन जैसे आध्ययात्मिक क्रियाओं का अभ्यास करके इन 'चरणों' के माध्यम से प्रगति की।

• सूफियों ने एक भावपूर्ण संगीत गायन (समा) का आयोजन किया। समा के अभ्यास का उद्देश्य परमानंद की रहस्यमय स्थिति को प्रेरित करना था।

• धर्मशाला (खानकाह) सूफी संप्रदाय की गतिविधियों का केंद्र था, जिसकी व्यवस्था बंदोबस्त और दान द्वारा की जाती थी। यहवह स्थान था जहाँ पीरअपने शिष्यों को आध्ययात्मिक प्रशिक्षण देता था। खानकाह की लोकप्रियता और शिष्यों को आकर्षित करने की क्षमता 'पीर' की प्रतिष्ठा पर निर्भर करती थी।

• सूफी अनुष्ठानिक प्रथाओं के मुकाबले व्यक्तिगत आध्ययात्मिकता पर अधिक जोर देते हैं।

• उन्होंने ध्यान, जप और कुरान की व्यक्तिगत व्याख्याओं के माध्यम से ईश्वर के साथ गहरा संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। वे तवक्कुल में भी विश्वास करते थे,जिसका अर्थ है ईश्वरकी योजना पर पूरी तरह भरोसा करना। वस्तुतः यह नियंत्रण का पालन करने के विचार का प्रतीक है।

सूफीवाद के प्रमुख सिलसिले:

सुफीवाद के अनेक छोटे-बड़े सिलसिले थे। उनमें से कुछ की स्थापना भारत में ही हुई थी। प्रमुख सिलसिला इस प्रकार हैं

- चिश्तिया सिलसिला
- कादरिया सिलसिला
- सुहरावर्दिया सिलसिला
- नक्शबन्दिया सिलसिला छोटे सिलसिला एक या दूसरे प्रमुख सिलसिला की शाखा के रूप में उभरे।

चिश्तिया सिलसिला

• चिश्तिया सिलसिले की स्थापना भारत में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने की थी, जो अपने सहकर्मी (मार्गदर्शक) ख्वाजा उस्मान के आदेश पर मध्य एशिया से भारत आए थे। वह 1192 ई. में मुहम्मद गोरी की सेना के साथ आए और अजमेर में बस गए। उन्होंने कहा कि भक्ति संगीत ईश्वर के निकट आने का एक तरीका है।

• यह स्थानीय रीति-रिवाजों को सफलतापूर्वक अपनाने और भारतीय भक्ति परंपराओं को शामिल करने के कारण सबसे प्रभावशाली सूफी समूह था।

• शेख के सामने झुकना, आगंतुकों को पानी देना, दीक्षार्थियों का सिर मुंडवाना और योगाभ्यास जैसी प्रथाएँ, स्थानीय परंपराओं को आत्मसात करने के प्रयासों को दर्शाती हैं।

चिश्ती खानकाह में जीवन:

• खानकाह सामाजिक जीवन का केंद्र था। इसमें रहने और प्रार्थना करने के लिए विशेष आरक्षित कक्ष और एक हॉल था, जिसमें शेख का परिवार, परिचारक और शिष्य रहते थे। संभावित मंगोल खतरे के दौरान स्थानीय लोगों ने खानकाह में शरण माँगी थी।

• आगंतुकों में अमीर हसन सिज्जी और अमीर खुसरो जैसे कवि और दरबारी इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी सम्मिलित थे।

चिश्ती भक्ति

• आध्ययात्मिक कृपा (बरकत) पाने के लिए सूफी संतों की कब्रों की तीर्थयात्रा (जियारत) एक आम प्रथा है। इसमेंदिव्य परमानंद के लिए कव्वालों द्वारा संगीत, नृत्य और रहस्यमय भजन सम्मिलित हैं, जो स्वदेशी भक्ति परंपराओं का मिश्रण करते हैं।

• ख्वाजा मुईनुद्दीन की दरगाह "गरीब नवाज" सबसे अधिक पूजनीय है।

- दिल्ली-गुजरात व्यापार मार्ग पर स्थित होने के कारण यह यात्रियों के बीच लोकप्रिय हो गई।

• सूफी 'जिक्र' (दिव्य नाम) और 'समा' या रहस्यमय संगीत प्रदर्शन के माध्यम से ईश्वर का आह्वान करते हैं, जो चिश्तियों के लिए एक प्रमुख पहलू है, जो स्वदेशी भक्ति परंपराओं को जोड़ता है।

भाषाएँ और संप्रेषण:

• दिल्ली में चिश्ती सूफियों ने संप्रेषण के लिए आम भाषा हिंदवी का इस्तेमाल किया।

• सूफी कवि अक्सर लंबी कविताओं का इस्तेमाल करते थे, जिसमें मानवीय प्रेम को दिव्य प्रेम का प्रतीक बताया जाता था।

◦ उदाहरण के लिए- मलिक मुहम्मद जायसी के "पद्मावत" में पद्मिनी और रतनसेनकी कहानी के माध्यम से आत्मा के परमात्मा से मिलन को दर्शाया गया है।

• बीजापुर और कर्नाटक में सूफी काव्य की रचना खास तौर पर दक्खिनी में हुई, जो चिश्ती सूफियों से जुड़ी उर्दू भाषा का एक रूप है। इस क्षेत्र के सूफियों ने कन्नड़ वचनों की भक्ति परंपरा से प्रेरणा ली।

सूफी संत एवं उनका मुगल साम्राज्य से संबंध:

• चिश्ती परंपरा ने सादगी बरकरार रखी लेकिन, राजनीतिक अलगाव नहीं रखा और शासकों से अनुदान और कर-मुक्त भूमि स्वीकार की।

◦ उदाहरण के लिए, ख्वाजा मुईनुद्दीन की दरगाह को 15वीं शताब्दी के अंत में मालवा के सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी से धन प्राप्त हुआ था।

• उनकी धर्मपरायणता, विद्वता और कथित चमत्कारी क्षमताओं ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया, जिससे राजाओं को वांछित समर्थन प्राप्त हुआ।

◦ उदाहरण के लिए, सम्राट अकबर अक्सर ख्वाजा मुईनुद्दीन (अजमेर) की दरगाह पर जाते थे और उदारतापूर्वक दान देते थे। उन्होंने दरगाह परिसर में एक मस्जिद का निर्माण करवाया। शाहजहाँ भी अपनी बेटी जहाँआरा के साथ दरगाह पर जाते थे।

जहाँआरा ने मुनिस-उल-अरवाह (आत्माओं का विश्वासपात्र) लिखी जो शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की जीवनी है।

• दिल्ली सल्तनत के शासकों ने उलेमाओं के शरिया कानून के दबाव को संतुलित करने के लिए सूफियों की शरण माँगी, जिनका दैवीय सत्ता के साथ सीधा संबंध था।

◦ उदाहरण के लिए, सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ख्वाजा मुईनुद्दीन की दरगाह पर आने वाले पहले सुल्तान थे।

• सुल्तानों और सूफियों के बीच टकराव के कुछ उदाहरण भी सामने आए, जो अक्सर विशिष्ट अनुष्ठानों, जैसे सिजदा (घुटने पर बैठकर सुल्तान के सामने सिर झुकाना) और पैबोस (सुल्तान के पैर चूमना) से उत्पन्न होते थे।

◦ उदाहरण के लिए, मुहम्मद तुगलक द्वारा अपनाई गई नीतियों पर चिश्ती सूफियों की असहमति।

• सुल्तानों और सूफियों के बीच संघर्ष के उदाहरण देखे गए, जो अक्सर विशिष्ट अनुष्ठानों, जैसे सिजदा (प्रणाम) और पैबोस (पैर चूमना) से उत्पन्न होते थे।

◦ **उदाहरण:** मुहम्मद तुगलक द्वारा अपनाई गई नीतियों पर चिश्ती सूफियों की असहमति।

• सूफी शेखों को कभी-कभी उपाधियों से सम्मानित किया जाता था। उदाहरण के लिए, निजामुद्दीन औलिया के शिष्य उन्हें सुल्तान-उल-मशाइख कहकर संबोधित करते थे।

• दिल्ली के सुल्तानों के अधीन सुहरावर्दी और मुगलों के अधीन नक्शबंदी जैसे सूफियों का विशेष महत्त्व था। फिर भी, अध्ययात्मवाद और राज्य से दान के प्रति उनके दृष्टिकोण के मामले में उनकी संगति के तरीके चिश्तियों से भिन्न थे।

◦ उदाहरण के लिए, बहाउद्दीन जकारिया ने अधिक सांसारिक दृष्टिकोण अपनाते हुए इल्तुतमिश से शेख-उल-इस्लाम की उपाधि और धन प्राप्त किया।

• कुछ सूफियों ने दरबारी पद भी स्वीकार कर लिए। चिश्ती सिलसिले के प्रमुख सूफी संत सूफी संत महत्त्वपूर्ण बातें दरगाह का स्थान समय शेख मुईनुद्दीन सिज्जी/मुईनुद्दीन चिश्ती गौरी की विजय के समय भारत आए। अजमेर (राजस्थान) (1143-1235 ई.) ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी कुतुबमीनार उन्हीं को समर्पित है। दिल्ली (1173 – 1235 ई.) शेख फरीदुद्दीन गंज-ए शकर/बाबा फरीद गुरु ग्रंथ साहिब में उनके द्वारा लिखे गए भजन सम्मिलित हैं। अजोधन (पाकिस्तान) (1178-1271 ई.) शेख निजामुद्दीन औलिया दिल्ली के लगातार सात सुल्तानों के शासनकाल के साक्षी रहे। दिल्ली (1238-1325 ई.) शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए देहलवी इन्हें रोशन चिराग-ए-दिल्ली या 'दिल्ली का रोशन चिराग' के नाम से भी जाना जाता है।

दिल्ली (1274-1337 ई.) शेख निजामुद्दीन औलिया वे बाबा फरीद के शिष्य थे। उन्होंने आम जनता के साथ-साथ अभिजात वर्ग का मार्गदर्शन किया। राजा उन्हें बहुत सम्मान देते थे और विशेषकर आक्रमण के समय अक्सर उनसे उपदेश लेते थे। उनके खानकाह में हमेशा भीड़ लगी रहती थी। उन्होंने अपने पास आने वाले सभी लोगों को भोजन और आश्रय दिया और कभी भी जाति, पंथ या रंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया।

• शेख निजामुद्दीन औलिया के शिष्य अमीर खुसरो ने ख्याल (Qual) छंद पेश किया, जिसे कव्वाली प्रदर्शन के आरंभ या अंत में गाया जाता था।

• कव्वाली फारसी, हिंदवी और उर्दू भाषाओं का मिश्रण है और उपमहाद्वीप के पवित्र स्थान में इसकी व्यापक परंपरा रही है।

• उनके उपदेश अमीर हसन सिज्जी की पुस्तक 'फवायद-उल-फुआद' में संकलित हैं।

• उन्हें 'महबूब-ए-इलाही' के नाम से भी जाना जाता था। कादरिया सिलसिला

• **संस्थापक:** अब्दुल कादिर जिलानी जो फारस -अरब से भारत में आए थे। शाह नमतुल्लाह इससे जुड़े एक अन्य संत थे।

• मुहिबुल्लाह शाह, मियाँ मीर और दारा शिकोह (शाहजहाँ के सबसेबड़े पुत्र) इस सिलसिला के प्रतिनिधि सूफी थे।

• कादरी, चिश्तियों से बहुत अलग नहीं थे सिवाय इसके कि वे अपने बड़ों के प्रति निष्ठा रखते थे।

• भारत में कादरिया सिलसिला 14वीं शताब्दी के आखिरी दशकों में काफी देर से शुरू हुआ। इब्न अल-अरबी के शामिल होने के कारण यह सिलसिला भारत सहित मुस्लिम जगत में और अधिक लोकप्रिय हो गया।

• इसलिए, इसके अधिकांश अनुयायी अस्तित्व की एकता (Unity of Existence) के अत्यंत विवादास्पद सिद्धांत, वहादत-उल-वुजूद के कट्टर समर्थक थे।

• अन्य तीन प्रमुख सिलसिलों की तुलना में कादरिया सिलसिला भारत में कम महत्त्वपूर्ण रहा।

• उर्दू कवि हसरत मोहानी और मुहम्मद इकबाल इसी सिलसिले से जुड़े थे। सुहरावर्दी सिलसिला

• **संस्थापक:** शेख शहाबुद्दीन सुहरावर्दी मकतूल। उन्होंने सूफीवाद में प्रकाश (नूर) का सिद्धांत पेश किया।

• शेख निजामुद्दीन औलिया के समकालीन बहाउद्दीन जकारिया भारत में सुहरावर्दी सिलसिला के सबसे महत्त्वपूर्ण सूफी थे। उन्होंने इसे, विशेषकर उत्तरी भारत में, लोकप्रिय बनाया।

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मध्यकालीन भारत का इतिहास — खंड 54

मुख्य परीक्षा दृष्टि: शेख निजामुद्दीन औलिया के समकालीन बहाउद्दीन जकारिया भारत में सुहरावर्दी सिलसिला के सबसे महत्त्वपूर्ण सूफी थे। उन्होंने इसे, विशेषकर उत्तरी भारत में, लोकप्रिय बनाया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: संस्थापक | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** *1143, 1235, 1173, 1178, 1271*

• चिश्ती संतों के विपरीत, सुहरावर्दी मानवता को बेहतर सेवाएँ प्रदान करने के लिए धन संचय को अपरिहार्य मानते थे।

• चिश्तिया सिलिसिला की तुलना में बाद में पेश किया गया यह सिलसिला, अल्प समय के लिए ही लोकप्रिय रहा।

नक्शबंदी सिलसिला

• **संस्थापक:** ख्वाजा बहा-उल-दीन नक्शबंद।

• इसे ख्वाजा नसीर-उल-दीन उबैदुल्ला अहरार द्वारा लोकप्रिय बनाया गया। वे तुर्की साम्राज्य के समरकंद शहर में रहते थे। उन्होंने तैमूर वंश के राजकुमारों को ताशकंद जैसे राज्यों पर आक्रमण करने और उन्हें अपने राज्य में मिलाने के लिए प्रोत्साहित किया।

• बाबर के आक्रमण के साथ भारत में नक्शबंदिया सिलसिला की शुरुआत हुई।

• नक्शबंदिया सिलसिला चिश्तिया, कादरिया और सुहरावर्दी सिलसिला की तुलना में कम सहिष्णु था।

• अन्य तीन सिलसिलों के विपरीत, नक्शबंदियों ने अपनी उत्पत्ति पहले खलीफा अबू बक्र से मानी।

• उनके शुद्धतावादी दृष्टिकोण ने उन्हेंकठोर और कट्टरपंथी बना दिया। उन्होंने मुगल बादशाहों को हिंदूप्रजा पर जजिया (एक प्रकार का कर) लगाने की सिफारिश की।

यद्यपि, मुगल बादशाहों ने कभी भी उनकी सलाह पर काम नहीं किया।

• एक प्रसिद्ध नक्शबंदी संत शेख अहमद सरहिंदी ने "सुलह-ए-कुल" (सभी धर्मों और अपने धर्म के साथ समझौता), "दीन-ए-इलाही" - अल्लाह के धर्म की नीति के लिए अकबर की तीखी आलोचना की, जिसे अकबर ने अपने मिशन को पूरा करने के लिए स्थापित किया था।

• आरंभिक नक्शबंदियों का झुकाव इब्न अल-अरबी के सिद्धांत वहादत-उल-वदजूद (अस्तित्व की एकता) की ओर था।

• बाद में शेख अहमद सरहिंदी ने एक और सिद्धांत प्रतिपादित किया जिसे प्रतीति की एकता (Unity of Appearance) वहादुल-उल-शाहूद के नाम से जाना जाता है। उत्तरवर्ती नक्शबंदियों ने इसका भी अनुशरण किया।।

• इस सिलसिले ने ख्वाजा खुर्द, अहमद सरहिंदी, ख्वाजा मासूम, शाह वली-उल्लाह और उनके बेटे शाह अब्दुल अजीज जैसे कई उल्लेखनीय संत दिए।

• शाह वली-उल्लाह इस सिलसिला के एक और उत्कृष्ट सूफी थे। उन्होंने यह भी कहा कि वहादुत-उल-वुजूद तथा वहादुत-उल-शाहूद रहस्यवादी यात्रा में केवल दो चरण हैं।

भक्ति और सूफी संवाद:

• उन दोनों के बीच खूब संवाद हुए। विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच लोकप्रिय नाथपंथी योगी रहस्यवाद पर चर्चा के लिए चिश्ती खानकाहों का दौरा करते थे।

योग ग्रंथों के अनुवादों ने सूफियों को ध्यान पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

• चिश्ती सूफियों ने मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के बीच आपसी समझ को बढ़ावा देते हुए, योगियों के नैतिक मूल्यों को अपनाया। इस संवाद से सांस्कृतिक संश्लेषण हुआ, जिसमें खास तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषाओं में रहस्यवादी काव्य और समकालिक धार्मिक साहित्य की रचना शामिल थी।

उदाहरण के लिए, चिश्तियों द्वारा हिंदवी का प्रयोग।

महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम

भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ प्रमुख धार्मिक उपदेशक 500-800 ई. तमिलनाडु में अप्पार, संबंदार, सुंदरमूर्ति 800-900 ई. तमिलनाडु में नम्मलवार, मणिक्कवाचकार, आंडाल, टोंडाराडिप्पोडी 1000-1100 ई. पंजाब में अल हुजविरी, दाता गंज बख्श; तमिलनाडु में रामानुजाचार्य 1100-1200 ई. कर्नाटक में बसवन्ना 1200-1300 ई. महाराष्ट्र में ज्ञानदेव, मुक्ताबाई; राजस्थान में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती; पंजाब में बहाउद्दीन जकारिया और फरीदुद्दीन गंज-ए शकर; दिल्ली में कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी 1300-1400 ई. कश्मीर में लाल देद: सिंध में लाल शाहबाज कलंदर; दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया: उत्तर प्रदेश में रामानंद; महाराष्ट्र में चोखामेला और बिहार में शराफुद्दीन याह्या मनेरी 1400-1500 ई. उत्तर प्रदेश में कबीर, रैदास, सूरदास; पंजाब में बाबा गुरु नानक; गुजरात में वल्लभाचार्य; ग्वालियर में अब्दुल्ला शत्तारी; गुजरात में मुहम्मद शाह आलम; गुलबर्गा में मीर सैय्यद मुहम्मद गेसू दराज, असम में शंकरदेव; महाराष्ट्र में तुकाराम 1500-1600 ई. बंगाल में श्री चैतन्य; राजस्थान में मीराबाई; उत्तर प्रदेश में शेख अब्दुल कुद्दूस गंगोही, मलिक मुहम्मद जायसी, तुलसीदास 1600-1700 ई. हरियाणा में शेख अहमद सरहिंदी; पंजाब में मियाँ मीर

विदेशी यात्रियों की नजर से 7 अल-बरूनी (किताब-उल-हि द) परिचय

• अल-बरूनी का जन्म 973 ई. में खवारिज्म (उज्बेकिस्तान) में हुआ था।

• वह सीरियाई, अरबी, फारसी, हिब्रू और संस्कृत भाषा में दक्ष था।

• 1017 ई. में, ख्वारिज्म पर सुल्तान महमूद के आक्रमण के दौरान अल-बरूनी गजनी चला गया और वहीं बस गया।

ख्वारिज्मका क्षेत्र आधुनिकतुर्क मेनिस्तान,उज्बेकिस्तानऔरकजाकिस्तान में स्थित है।

• पंजाब को गजनवी साम्राज्य में शामिल कर लेने से उसे उत्तर भारत में बड़े पैमाने पर यात्रा करने और संस्कृत भाषा सीखने एवं भारतीय संस्कृति का अध्ययन करने में मदद मिली।

अनुवाद:

• अल-बरूनी ने खगोल विज्ञान, गणित और चिकित्सा संबंधी संस्कृत ग्रंथों का अरबी में अनुवाद किया। उन्होंने पतंजलि के व्ययाकरण का अरबी में अनुवाद किया।

• उसने संस्कृत को उसकी विशाल शब्दावली और जटिल विभक्तियों के कारण, एक चुनौतीपूर्ण भाषा के रूप में पाया।

• उसने यूनानी गणितज्ञ यूक्लिड की कृतियों का संस्कृत में अनुवाद किया। किताब-उल-हिंद (तहकीक-ए-हिंद/ भारत का इतिहास) यह अरबी में लिखा गया एक विस्तृत ग्रंथ है, जिसमें धर्म, दर्शन, खगोल विज्ञान, कीमिया (रसायन विद्या), रीति-रिवाज, सामाजिक जीवन, कानून और माप विज्ञान (माप विज्ञान और इसके अनुप्रयोग) जैसे विविध विषयों को शामिल किया गया है।

अल-बरूनी का जाति व्यवस्था पर विवरण

• अल-बरूनी का जाति व्यवस्था पर विवरण वेदों, पुराणों, भगवद गीता, पतंजलि की कृतियों और मनुस्मृति पर आधारित था।

  ◦ उस समय सामाजिक विभाजन केवल भारत में ही नहीं था। प्राचीन फारस में पहले से ही चार सामाजिक वर्ग थे।

  ◦ ब्राह्मणवादी कठोर जाति व्यवस्था की उपस्थिति को स्वीकार किया।

  ◦ प्रदूषण की अवधारणा को यह तर्क देते हुए अस्वीकार कर दिया कि यह प्रकृति के नियमों का खंडन करती है।

• यद्यपि, अंत्यज वर्ग (निम्न जाति में पैदा हुए) ने अर्थव्यवस्था के लिए सस्ता श्रम प्रदान किया। उन्हें अक्सर सामाजिक उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता था, फिर भी उन्हें आर्थिक नेटवर्क में शामिल किया जाता था।

"हिंदू" शब्द की उत्पत्ति हिंदू शब्द की उत्पत्ति मूलतः फारसी भाषा से हुई है जिसका प्रयोग सिंधु नदी के पूर्व के क्षेत्र को दर्शाने के लिए किया जाता था। अरब लोग ने इस क्षेत्र को "अल-हिंद" और इसके लोगों को "हिंदी" कहते थे। बाद में, तुर्कों ने सिंधु नदी के पूर्व में बसे लोगों के लिए "हिंदू" शब्द का प्रयोग किया, वहीं दूसरी ओर उनके क्षेत्र के लिए "हिंदुस्तान" का प्रयोग किया, और उनकी भाषा के लिए "हिंदवी" शब्द का प्रयोग किया। यद्यपि, यह उस समय धार्मिक पहचान को इंगित नहीं करता था तथा धार्मिक पहचान बहुत बाद में इस शब्द के साथ जुड़ी।

इब्न बतूता (रिहला) परिचय

• इब्न बतूता का जन्म तैंजियर (मोरक्को) में हुआ था।

• वह अपनी 'यात्राओं की पुस्तक' रिहला के लिए प्रसिद्ध है जो 14वीं शताब्दी में उपमहाद्वीप के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की जानकारी प्रदान करती है।

• इब्न बतूता यात्राओं के माध्यम से प्राप्त अनुभवजन्य ज्ञान को महत्त्व देता था।

• उसने सीरिया, इराक, फारस, यमन, ओमानऔर पूर्वी अफ्रीकी व्यापारिक बंदरगाहों की यात्रा की।

दिल्ली में सेवा और दक्षिण — एशिया एवं उससे आगे की यात्रा

• इब्न बतूता मध्य एशिया से होते हुए 1333 ई. में सिंध पहुँचा। वह कला और साहित्य के संरक्षक के रूप में मुहम्मद बिन तुगलक की प्रतिष्ठा से आकर्षित होकर दिल्ली के लिए रवाना हुआ।

• उसकी विद्वता से प्रभावित होकर मुहम्मद बिन तुगलक ने उसे दिल्ली का काजी (न्यायाधीश) नियुक्त किया और बाद में 1342 ई. में उसेमंगोल शासक के पास सुल्तान के दूत के रूप में चीन भेजा।

• इब्न बतूता ने मध्य भारत से होते हुए मालाबार तट, मालदीव (काजी के रूप में 18 महीने तक रहा), श्रीलंका, बंगाल, असम और सुमात्रा की यात्रा की और अंत में चीनी बंदरगाह शहर जायतुन (क्वानझोउ) तक पहुँचा। 1347 ई. में मोरक्को लौटने का निर्णय लेने से पहले उसने चीन मेंबीजिंग तक की यात्रा की, जिसके लिए उनकी तुलनाअक्सर मार्को पोलो (वेनिस के यात्री) से की जाती है, जिसने 13वीं शताब्दी के अंत में चीन और भारत की यात्रा की थी।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: अनुवाद



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — अनुवाद

मुख्य परीक्षा दृष्टि: उसकी विद्वता से प्रभावित होकर मुहम्मद बिन तुगलक ने उसे दिल्ली का काजी (न्यायाधीश) नियुक्त किया और बाद में 1342 ई. में उसेमंगोल शासक के पास सुल्तान के दूत के रूप में चीन भेजा।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: अनुवाद • अल-बरूनी का जाति व्यवस्था पर विवरण • दिल्ली में सेवा और दक्षिण • एशिया एवं उससे आगे की यात्रा | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 973 ई, 1333, 1342, 1347

नारियल और पान: इब्न बतूता का विवरण

नारियल और पान उसके लिए दो अपरिचित पौधे थे। उसने पान को अंगूर की बेलों के समान पेड़ के रूप में वर्णित किया है, जिसे मुख्य रूप से इसकी पत्तियों के लिए उगाया जाता था।

भारतीय शहरों पर दृष्टिकोण

दिल्ली: उसने दिल्ली का विस्तृत वर्णन करते हुए इसे अट्ठाईस दरवाजों वाला शहर बताया है, जिसमें बदायूँ दरवाजा (सबसे बड़ा), मांडवी दरवाजा (अंदर अनाज बाजार) और गुल दरवाजा (एक बाग के पास) थे।

दौलताबाद (महाराष्ट्र)

- इब्न बतूता ने दौलताबाद का विस्तृत वर्णन किया है जो आकार में दिल्ली के समान था।
- बाजार नकेवल आर्थिक केंद्र के रूपमें, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में भी काम करते थे। अधिकांश बाजारों में मस्जिद और मंदिर दोनों थे, और कुछ बाजारों में नर्तकों, संगीतकारों एवं गायकों के सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए स्थान उपलब्ध थे।

शहरों की समृद्धि

- भारतीय कृषि अत्यधिक उत्पादक थी (किसान सालाना दो फसलें उगाते थे)।
- उपमहाद्वीप, अंतर-एशियाई व्यापार नेटवर्क में अच्छी तरह से एकीकृत था, जिसमें भारतीय वस्त्रों की माँग बहुत अधिक थी।
- राज्य ने लगभग सभी व्यापार मार्गों पर सराय और अतिथिगृहों का निर्माण करवाया था।
- डाक प्रणाली बहुत कुशल थी (व्यापारी सूचना भेज सकतेथे, लंबी दूरी तक ऋण भेज सकते थे और तत्काल आवश्यक सामान भेज सकते थे)।
- यद्यपि, गुलामी प्रचलित थी। गुलाम खुलेआम बाजारों में बेचे जाते थे और नियमित रूप से उपहार के रूप में दिए जाते थे।

फ्रांस्वा बर्नि यर (मुगल साम्राज्य में यात्राएँ) परिचय

- फ्रांस्वा बर्नियर का जन्म फ्रांस में हुआ था, वह एक डॉक्टर, राजनीतिक दार्शनिक और इतिहासकार था।
- वह दानिशमंद खाँ (औरंगजेब के दरबार में एक प्रमुख अधिकारी) के संरक्षण में अवसरों की तलाश में मुगल साम्राज्य पहुँचा था।
- उसने भारत में 12 वर्ष (1656-1668 ई.) तक जीवन व्यतीत किया। उसने मुगल राजकुमार दारा शिकोह के चिकित्सक के रूप में सेवा की। उसने अक्सर मुगल सेना के साथ यात्राएँ कीं।
- उसने अपनी पुस्तक "ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर" में विस्तृत टिप्पणियाँ और समालोचनात्मक जानकारी प्रदान की।
- उसकी प्रमुख कृति फ्रांस के राजा लुई चौदहवें को समर्पित थी।

पूर्व और पश्चिम की तुलना: (बर्नियर की टिप्पणियाँ)

- उसने अपनी यात्रा के अनुभवों का दस्तावेजीकरण किया और भारत की तुलना यूरोप से की, जिसमें उसने भारत को पीछे पाया। उसने इसे अक्सर हीन/पतित पूर्व (Degenerate East) कहा।
- उसने महिलाओं के साथ होने वाले व्यवहार- सती प्रथा, कृषि और गैर-कृषि श्रम जैसी व्यायवसायिक गतिविधियों में भागीदारी पर प्रकाश डाला। कुल मिलाकर, महिलाएँ अपने घरों के निजी स्थानों तक ही सीमित नहीं थीं।
- मुगल भारत में भूमि के निजी स्वामित्व की अनुपस्थिति, मूल रूप से यूरोप से भिन्न थी।
- **प्रभाव:** उसने मोंटेस्क्यू को प्रभावित किया, जिसने प्राच्य निरंकुशता का विचार (Idea of Oriental Despotism) विकसित किया।

जटिल सामाजिक वास्तविकता

- कारीगरों द्वारा अपने उत्पादों को बेहतर बनाने के लिए, उनको प्रोत्साहन की कमी थी, क्योंकि राज्य द्वारा विनियोजित मुनाफा प्रगति में बाधक था।
- विनिर्माण में गिरावट देखने को मिली।
- एक समृद्ध व्यापारी समुदाय था जो लंबी दूरी का व्यापार करता था।
- भारत में कीमती धातुओं का, निर्यात के बदले बड़ी मात्रा में आयात हुआ।
- **शहरी जनसंख्या:** 17वीं शताब्दी के दौरान, लगभग 15% आबादी शहरों में रहती थी, जो इसी अवधि के दौरान पश्चिमी यूरोप की तुलना में अधिक थी।
- बर्नियर ने मुगल शहरों को "छावनी शहरों (Camp Towns)" के रूप में वर्णित किया जो शाही संरक्षण पर निर्भर थे, अर्थात जब शाही दरबार शाही संरक्षण से बाहर चला गया तो उनका तेजी से पतन हुआ, जो यह दर्शाता है कि उनके पास व्यवहार्य सामाजिक और आर्थिक आधार का अभाव था।

• विभिन्न प्रकार के नगर अस्तित्व में थे, जिनमें विनिर्माण नगर, व्यापारिक नगर, बंदरगाह नगर, पवित्र केंद्र और तीर्थ नगर सम्मिलित थे।

• ज्याँ-बैप्टिस्ट टैवर्नियर (फ्रांस) एक प्रसिद्ध रत्न व्यापारी और यात्री था। टैवर्नियर ने 1666 ई. में टैवर्नियर ब्लू डायमंड खोजा अथवा खरीदा था, जिसने उसे सबसे प्रसिद्ध बना दिया। उसने भारतीय हीरों और हीरे की खदानों के बारे में विस्तृत वर्णन किया। विवरणों से ज्ञात होता है कि उसने लगभग कम छह बार भारत की यात्रा की। [यूपीएससी 2018]

अवधि (शताब्दी) कालावधि संबंधित शासक यात्री (देश) दसवीं 914-928 ई. राष्ट्रकूट, गुर्जर-प्रतिहार अल-मसूदी (ईराक) 973-1048 ई. महमूद गजनवी अल-बरूनी (उज्बेकिस्तान) 940-1019 ई. फिरदौसी (ईरान) - "पूर्व का होमर" तेरहवीं 1227 ई. गुलाम वंश (सल्तनत) मिन्हाज-उस-सिराज (ईरान) 1292-93 ई. पांड्य मार्को पोलो (इटली)

चौदहवीं 1304-77 ई. मुहम्मद बिन तुगलक इब्न बतूता (मोरक्को) पंद्रहवीं 1420 ई. देवराय द्वितीय (विजयनगर) निकोलो डी कोंटी (इटली) 1440 का दशक अब्दुर रज्जाक समरकंदी (उज्बेकिस्तान) 1469 ई. बहमनी अफानसी निकितिन (रूस) सोलहवीं 1518 ई. विजयनगर डुआर्टे बारबोसा, मृत्यु 1521 ई. (पुर्तगाल) 1520 ई. कृष्णदेव राय डोमिंगो पेस (पुर्तगाल) 1536-1600 ई. अकबर एंटोनियो मोनसेरेट (स्पेन) सत्रहवीं 1600-67 ई. शाहजहाँ कैप्टन विलियम हॉकिं स, पीटर मुंडी (इंग्लैंड) 1605-89 ई. शाहजहाँ और औरंगजेब ज्याँ-बैप्टिस्ट टैवर्नियर (फ्रांस) 1620-88 ई. औरंगजेब फ्रांस्वा बर्नियर (फ्रांस)

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: मध्यकालीन भारत का इतिहास — खंड 58

1304	1420	1440	1469
प्रमुख चरण #1	प्रमुख चरण #2	प्रमुख चरण #3	प्रमुख चरण #4

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मध्यकालीन भारत का इतिहास — खंड 58

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इस खंड के अंतर्गत 'मध्यकालीन भारत का इतिहास — खंड 58' से जुड़े मूलभूत सिद्धांतों, संरचनात्मक विशेषताओं और परीक्षा उपयोगी तथ्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: मध्यकालीन भारत का इतिहास — खंड 58 | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1304, 1420, 1440, 1469, 1518

IUC विशेष स्मृति सूत्र #10: प्रमुख सूफी सिलसिले एवं उनके संस्थापक (भारत में)

ट्रिक: 'चिश्ती = ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती (अजमेर), सुहरावर्दी = बहाउद्दीन जकारिया (मुल्तान), कादिरी = शाह नियामतुल्लाह व मियाँ मीर, नक्शबंदी = ख्वाजा बाकी बिल्लाह व शेख अहमद सरहिंदी (मुजद्दद)'।

परिशिष्ट

8 मध्यकालीन इतिहास में राजवंशों का कालक्रम भारत का उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी भाग राजवंश/वंश मुख्य शासक समय अवधि प्रमुख योगदान/महत्त्व प्रतिहार नागभट्ट प्रथम, मिहिर भोज, महेंद्रपाल 8वीं-11वीं शताब्दी ई.पू. अरब आक्रमणों के विरुद्ध उत्तर भारत की रक्षा की, कला और साहित्य को संरक्षण प्रदान किया और उत्तर भारत में क्षेत्रीय शक्ति को मजबूत किया।

बुन्देलखण्ड के चंदेल यशोवर्मन, धंग, विद्याधर 9वीं-13वीं शताब्दी ई.पू. खजुराहो के मंदिरों का निर्माण कराया, मध्य भारत में क्षेत्रीय प्रभुत्व स्थापित किया।

परमार वाक्पति मुंज, भोज 9वीं-14वीं शताब्दी ई.पू. मालवा में भोजेश्वर मंदिर जैसे प्रमुख वास्तुशिल्पीय कार्यों का निर्माण किया गया।

ढिल्लिका के तोमर

(दिल्ली) अनंगपाल प्रथम, अनंगपाल द्वितीय 9वीं-12वीं शताब्दी ई.पू. ढिल्लिका (दिल्ली) शहर की स्थापना की, तथा बाद में दिल्ली सल्तनत की आधारशिला रखी।

शाकंभरी के चाहमान

(चौहान) विग्रहराज चतुर्थ, पृथ्वीराज चौहान 10वीं-12वीं शताब्दी ई.पू. उत्तर भारत में आक्रमणों का विरोध करने में निर्णायक भूमिका निभाई।

पृथ्वीराज चौहान ने तराइन की लडाई में मुहम्मद गौरी के विरुद्ध युद्ध लड़ा।

त्रिपुरी के कलचुरी कोकल्ल प्रथम, गांगेयदेव 10वीं-12वीं शताब्दी ई.पू. मध्य भारत पर नियंत्रण स्थापित हुए कलचुरी शैली के मंदिर वास्तुकला के विकास में योगदान दिया।

गुजरात के चालुक्य

(सोलंकी)।

मूलराज, भीम प्रथम, सिद्धराज जयसिम्ह 950-1300 ई.पू. मोढेरा के सूर्य मंदिर जैसी वास्तुकला को बढ़ावा दिया, महमूद गजनवी का विरोध किया और जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया।

कर्कोट वंश ललितादित्य मुक्तापीड 7वीं-9वीं शताब्दी ई.पू. कश्मीर पर शासन किया तथा अपने साम्राज्य का मध्य एशिया तक विस्तार किया, मार्तण्ड सूर्य मंदिर का निर्माण कराया और संस्कृत संस्कृति एवं साहित्य को बढ़ावा दिया।

गहड़वाल वंश गोविंदचंद्र, जयचंद्र 11वीं-12वीं शताब्दी ई.पू. चन्दावर के युद्ध (1194) में मुहम्मद गौरी से पराजित होने से पूर्व कन्नौज की राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाई।

गुलाम वंश कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, रजिया सुल्तान, बलबन 1206-1290 ई.पू. दिल्ली सल्तनत की स्थापना की, इंडो-इस्लामिक वास्तुकला (जैसे, कुतुब मीनार) की शुरुआत की, प्रशासनिक सुधार लागू किए और सेना को सुदृढ़ किया।

खिलजी वंश जलालुद्दीन खिलजी, अलाउद्दीन खिलजी 1290-1320 ई.पू. दिल्ली सल्तनत की सीमाओं का विस्तार किया, मंगोल आक्रमणों का विरोध किया, बाजार नियंत्रण नीतियों को स्थापित किया और वास्तुशिल्प से संबंधित नवाचारों को बढ़ावा दिया।

तुगलक वंश गयासुद्दीन तुगलक, मुहम्मद बिन तुगलक, फिरोज शाह तुगलक 1320-1414 ई.पू. विवादास्पद सुधार लागू किए गए (जैसे, मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा राजधानी का स्थानांतरण), नहरों जैसे बुनियादी ढाँचे का विकास किया गया तथा प्रशासनिक सुधारों पर बल दिया गया।

नासिरुद्दीन महमूद शाह तुगलक तुगलक वंश का अंतिम सुल्तान था। उसके शासनकाल के दौरान ही तैमूर ने 1398 ई. में भारत पर आक्रमण किया था।

सैय्यद वंश खिज्र खान, मुबारक

शाह 1414-1451 ई.पू. यह अपेक्षाकृत कमजोर राजवंश था, तैमूर साम्राज्य के जागीरदार के रूप में कार्य करता था, उसे लगातार विद्रोहों का सामना करना पड़ा, तथा केंद्रीय सत्ता को बनाये रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा।

लोदी वंश बहलोल लोदी, सिकंदर लोदी, इब्राहिम लोदी 1451-1526 ई.पू. यह दिल्ली सल्तनत का अंतिम राजवंश था जिसने प्रशासनिक और सैन्य एकीकरण का प्रयास किया, लेकिन पानीपत के युद्ध (1526) में बाबर से पराजय का सामना करना पड़ा, परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई।

मुगल साम्राज्य बाबर, अकबर, शाहजहाँ, औरंगजेब 1526-1707 ई.पू. एक केंद्रीकृत साम्राज्य का विस्तार किया, सांस्कृतिक संश्लेषण को बढ़ावा दिया गया तथा ताजमहल और लाल किले जैसी स्थापत्य कला की विरासत स्थापित हुई।

भारत का पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भाग

राजवंश/वंश प्रमुख शासक समय अवधि प्रमुख योगदान/महत्त्व शैलोद्भव राजवंश सैन्यभित माधववर्मन (श्रीनिवास) 6वीं-8वीं शताब्दी ई. ओडिशा के कुछ हिस्सों पर शासन किया, शैव धर्म को बढ़ावा दिया और भुवनेश्वर मंदिरों सहित प्रारंभिक ओडिशा मंदिर वास्तुकला में योगदान दिया।

कामरूप साम्राज्य

(वर्मन राजवंश) भास्करवर्मन 4वीं-12वीं शताब्दी ई.पू. असम में के न्द्रित, हूण आक्रमणों का प्रतिरोध किया तथा हर्षवर्धन और चीनी यात्रियों के साथ संबंध स्थापित किये।

पाल राजवंश गोपाल, धर्मपाल, देवपाल 8वीं-12वीं शताब्दी ई.पू. विक्रमशिला विश्विद्यालय (धर्मपाल) की स्थापना की। नालंदा विश्विद्यालय का पुनरुद्धार, बंगाल और बिहार में बौद्ध धर्म का अत्यधिक प्रभाव।

सेना (पूर्वी बंगाल) विजयसेन, बल्लालसेन, लक्ष्मणसेन 11वीं-13वीं शताब्दी ई.पू. बंगाल में पालों को प्रतिस्थापित किया हिंदू धर्म को बढ़ावा दिया, बंगाली संस्कृति और साहित्य में योगदान दिया और ढाके श्वरी मंदिर का निर्माण कराया।

दिल्ली सल्तनत के इख्तियार उद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने 1203-1204 में सेन राजा लक्ष्मण सेन को उनकी राजधानी नवद्वीप में हराया और बंगाल के अधिकांश हिस्से को जीता।

सोमवंशी (ओडिशा) ययाति प्रथम, उद्योतके सरी 9वीं-12वीं शताब्दी ई.पू. भुवनेश्वर में लिंगराज जैसे मंदिरों का निर्माण किया, शैव धर्म को बढ़ावा दिया।

वेंगी के चालुक्य (पूर्वी चालुक्य) कुब्ज विष्णुवर्धन 7वीं-12वीं शताब्दी ई.पू. आंध्र के इतिहास में निर्णायक भूमिका निभाई, तेलुगु साहित्य को संरक्षण प्रदान किया और मंदिर वास्तुकला का विकास किया।

कंबोज (बंगाल) राजेंद्र कंबोज 10वीं शताब्दी ई.पू. बंगाल पर थोड़े समय के लिए नियंत्रण स्थापित किया क्षेत्रीय शक्तियों को मजबूत किया गया।

पूर्वी गंग अनंतवर्मन चोडगंग 11वीं-15वीं शताब्दी ई.पू. कोणार्क में प्रसिद्ध सूर्य मंदिर का निर्माण कराया तथा ओडिशा में जगन्नाथ पूजा को संरक्षण दिया।

अहोम राजवंश सुकफा, रुद्र सिंहा, लाचित — बोड़फुकन

13वीं-19वीं शताब्दी ई.पू. असम को एकीकृत किया, मुगल आक्रमणों का प्रतिरोध किया और एक अद्वितीय प्रशासनिक प्रणाली और ताई-अहोम संस्कृति विकसित की।

गजपति राजवंश कपिलेन्द्र देव, पुरूषोत्तम देव 15वीं-16वीं शताब्दी ई.पू. ओडिशा पर शासन किया, जगन्नाथ पूजा को बढ़ावा एवं संरक्षण प्रदान किया, तथा आंध्र और बंगाल में विस्तार किया।

भारत का मध्य और दक्षिणी भाग

राजवंश/वंश प्रमुख शासक समय अवधि प्रमुख योगदान/महत्त्व गंग (पश्चिमी गंग) दुर्विनीत, शिवमार द्वितीय 14वीं-10वीं शताब्दी ई.पू. इन्होने कर्नाटक पर शासन किया, जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया और श्रवणबेलगोला में गोमतेश्वर प्रतिमा का निर्माण कराया।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: सैय्यद वंश खिज्र खान, मुबारक

1. **सैय्यद वंश खिज्र खान, मुबारक**
2. **भारत का पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भाग**
3. **कामरूप साम्राज्य**
4. **बोड़फुकन**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — सैय्यद वंश खिज्र खान, मुबारक

मुख्य परीक्षा दृष्टि: गजपति राजवंश कपिलेन्द्र देव, पुरूषोत्तम देव 15वीं-16वीं शताब्दी ई.पू. ओडिशा पर शासन किया, जगन्नाथ पूजा को बढ़ावा एवं संरक्षण प्रदान किया, तथा आंध्र और बंगाल में विस्तार किया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: सैय्यद वंश खिज्र खान, मुबारक • भारत का पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भाग • कामरूप साम्राज्य • बोड़फुकन • भारत का मध्य और दक्षिणी भाग | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1414, 1451, 1526, 1707, 1203

राष्ट्रकूट दन्तिदुर्ग, ध्रुव तृतीय, गोविंद — तृतीय, अमोघवर्ष प्रथम

8वीं-10वीं शताब्दी ई.पू. दक्कन और उत्तर भारत के कुछ हिस्सों पर प्रभुत्व स्थापित किया, कन्नड़ साहित्य को बढ़ावा दिया, और एलोरा (कृष्ण प्रथम) में कैलाश मंदिर जैसे अद्भुत वास्तुशिल्प का निर्माण किया।

देवगिरि के यादव भिल्लम पंचम , रामचन्द्र 12वीं-14वीं शताब्दी ई.पू. देवगिरी में शासन स्थापित किया, अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमणों का विरोध किया, लेकिन अंततः 1307 ई. में दिल्ली सल्तनत की अधीनता स्वीकार ली।

कल्याणी के चालुक्य

(परवर्ती) विक्रमादित्य षष्ठ, सोमेश्वर प्रथम 10वीं-12वीं शताब्दी ई.पू. इन्होने चालुक्य विरासत को बनाए रखा, मंदिर वास्तुकला में योगदान दिया और चोल आक्रमण का विरोध किया।

चोल (साम्राज्य) विजयालय, राजराज प्रथम, राजेंद्र प्रथम 9वीं-13वीं शताब्दी ई.पू. चोलों द्वारा समुद्री और प्रादेशिक स्तर तक अपनी पराकाष्ठा का विस्तार किया गया, बृहदेश्वर मंदिर (राजा राजा प्रथम) का निर्माण कराया, तथा दक्षिण पूर्व एशिया में नौसैनिक अभियान संचालित किये।

पांड्य मारवर्मन सुंदर पाण्ड्य, जटावर्मन सुंदर पाण्ड्य छठी-14वीं शताब्दी ई.पू. इन्होने मंदिर निर्माण (जैसे, मीनाक्षी मंदिर) को बढ़ावा दिया, तमिल साहित्य और दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापारिक संबंधों के लिए जाना जाता है।

होयसल विष्णुवर्धन, बल्लाल द्वितीय 10वीं-14वीं शताब्दी ई.पू. होयसल शासकों द्वारा हैलेबिदु में होयसलेश्वर मंदिर जैसे अद्भुत वास्तुशिल्प का निर्माण किया गया तथा कन्नड़ साहित्य को बढ़ावा दिया।

काकतीय रुद्रमा देवी, गणपति देव 12वीं-14वीं शताब्दी ई.पू. आंध्र प्रदेश पर शासन किया, वारंगल के किले का निर्माण करवाया और दिल्ली सल्तनत के आक्रमणों का मुकाबला किया।

विजयनगर साम्राज्य हरिहर प्रथम और बुक्का, देवराय द्वितीय, कृष्णदेवराय 14वीं-17वीं शताब्दी ई.पू. विजयनगर साम्राज्य को कला, साहित्य और वास्तुकला के स्वर्ण युग के नाम से सुप्रसिद्ध है, हम्पी के स्मारकों का निर्माण किया और बहमनी सल्तनत का विरोध किया।

बहमनी साम्राज्य अलाउद्दीन हसन बहमन — शाह, मुहम्मद गवान

14वीं-16वीं शताब्दी ई.पू. दक्कन में इंडो-इस्लामिक संस्कृति की स्थापित किया और बाद में दक्कन सल्तनत की नींव रखी।

दक्खिन/दक्कन के सल्तनत - 16वीं-17वीं शताब्दी ई.पू. ये बहमनी सल्तनत के उत्तराधिकारी थे, जिन्हें इंडो-इस्लामिक कला और वास्तुकला के लिए जाने जाते हैं।

बीजापुर सल्तनत इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय, मुहम्मद आदिल शाह 1490-1686 ई. इन्हें गोल गुम्बज जैसी स्थापत्य कला की उपलब्धियों और दखिनी साहित्य सहित सांस्कृतिक संरक्षण के लिए जाना जाता है.

गोलकुंडा सल्तनत कुली कुतुब-उल-मुल्क, अब्दुल्ला कुतुब शाह 1518-1687 ई. यह गोलकुंडा के किले, दक्कन लघु चित्रकला के संरक्षण और हीरा व्यापार के लिए प्रसिद्ध है।

अहमदनगर सल्तनत मलिक अहमद निज़ाम शाह, चाँद बीबी 1490-1636 ई. मुगल आक्रमणों का प्रतिरोध करने और इंडो-इस्लामिक वास्तुकला को बसंरक्षण प्रदान करने में निर्णायक भूमिका निभाई।

बीदर सल्तनत कासिम बरीद प्रथम, अमीर — बरीद द्वितीय

1492–1619 ई. इंडो-इस्लामिक वास्तुकला के रूप में जाने जाना वाला बीदर का किला एक उल्लेखनीय संरचना है।

बरार सल्तनत फतुल्लाह इमाद-उल-मुल्क, अला-उद-दीन इमाद शाह 1490–1574 ई. बरार सल्तनत, अहमदनगर सल्तनत में शामिल होने से पूर्व यह कुछ समय तक फली-फूली।

मराठा संभाजी, शिवाजी 17वीं-19वीं शताब्दी ई. मराठा साम्राज्य ने एक मजबूत हिंदू साम्राज्य की स्थापना की, युद्ध की गुरिल्ला रणनीति को विकसित किया और मुगल शासन का विरोध किया।

पेशवा: बालाजी विश्वनाथ, बाजीराव — प्रथम, माधवराव प्रथम

18वीं शताब्दी ई. मराठा साम्राज्य का प्रशासन किया, तथा उसका क्षेत्र विस्तार किया और पानीपत के तृतीय युद्ध (1761) में निर्णायक भूमिका निभाई।

महत्त्वपूर्ण विद्वान, कवि और नाटककार

कलाकार राजवंश संरक्षक/राजा प्रमुख कार्य/रचना महत्त्व माघ प्रतिहार नागभट्ट प्रथम (लगभग 750-780 ई.) शिशुपालवध इन्होनें महाकाव्य, संस्कृत काव्य की रचना की जो अलंकृत कविता की उत्कृष्ट कृति है।

राजशेखर गुर्जर-प्रतिहार महेंद्रपाल प्रथम (लगभग 885-910 ई.) और महिपाल प्रथम (913-944 ई.) काव्यमीमांसा यह काव्यशास्त्र का एक ग्रंथ और कवियों और नाटककारों के लिए एक मार्गदर्शिक है।

अमोघवर्ष I राष्ट्रकुट अमोघवर्ष प्रथम

(लगभग 814-878 ई.) कविराजमार्ग और रणमालिका इन्होने कन्नड़ काव्यशास्त्र पर सर्वप्रथम कार्य, जिसने कन्नड़ साहित्य की नींव/आधार का कार्य किया।

स्वयंभू राष्ट्रकुट - - ये महान अपभ्रंश कवि थे और उनके पुत्र संभवतः राष्ट्रकूट दरबार से संबंधित थे कविचक्रवर्ती पोन्ना राष्ट्रकुट कृष्ण तृतीय (लगभग 939-967 ई.) शांतिपुराण ये प्रसिद्ध कन्नड़ कवि थे जो, कन्नड़ साहित्य के तीन "रत्नों" में से एक है।

संध्ययाकर नंदी पाल रामपाल (1077–1130 ई.) रामचरितम्यह इतिहास और किं वदंती को एकसाथ कर लिखी गई एक संस्कृत ऐतिहासिक कविता हैजिसमे, पाल राजवंश के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

राजा भोज प्रतिहार राजा भोज (1010-1055 ई.) सरस्वती-कण्ठाभरण, राजमार्तण्ड ये एक विद्वान शासक थे जो संस्कृत साहित्य और दर्शन में अपने योगदान के लिए जाने जाते हैं।

सोमदेव कश्मीर राजा अनंत (1028-1063 ई.) कथासरित्सागर यह भारतीय लोककथाओं, पौराणिक कथाओं और किं वदंतियों का संकलन करने वाला संस्कृत महाकाव्य है।

कल्हण कश्मीर राजा जयसिम्हा

(1128-1155 ई.) राजतरंगिणी इसमें कश्मीर का प्रथम ऐतिहासिक इतिहास / विवरण प्राप्त होता है, जिसमें इतिहास और किं वदंतियों का मिश्रण है।

आदिकवि पम्पा पश्चिमी चालुक्य अरिके सरी द्वितीय (10वीं शताब्दी ई.पू.) आदि पुराण, विक्रमार्जुन विजया कन्नड़ साहित्य के अग्रदूत, जिन्हें कन्नड़ का "आदिकवि" (प्रथम कवि) माना जाता है।

कविचक्रवर्ती — रन्ना — पश्चिमी चालुक्य तैलप द्वितीय

(10वीं शताब्दी ई.पू.) गदायुद्ध प्रसिद्ध कन्नड़ कवि जो अपनी विशद कथा शैली और जैन प्रभावों के लिए जाने जाते हैं।

बिल्हण पश्चिमी चालुक्य विक्रमादित्य षष्ठ

(1076-1126 ई.) विक्रमांकदेवचरित इन रचना में इनके संरक्षकों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है और यह समकालीन इतिहास का दस्तावेजीकरण करने वाली जीवनीपरक काव्य है।

विज्ञानेश्वर पश्चिमी चालुक्य विक्रमादित्य षष्ठ (1076-1126 ई.) मिताक्षरा यह याज्ञवल्क्य स्मृति पर लिखी गई टीका है जो; हिंदू न्यायशास्त्र का आधारभूत ग्रन्थ है।

नन्नय्य वेंगी के चालुक्य राजराजा नरेंद्र

(1022-1061 ई.) - इन्होनें महाभारत का तेलुगू में अनुवाद प्रारंभ किया, जिससे शास्त्रीय तेलुगू साहित्य का उदय हुआ।

जयदेव पूर्वी गंग नरसिम्हदेव प्रथम

(1238-1264 ई.) गीत गोविंद इनमे संस्कृत में भक्ति काव्य की महिमा/गुणगान किया गया है, वैष्णववाद और भक्ति परंपरा का के न्द्र।

तिक्कन्न काकतीय रुद्रमा देवी (1262-1289 ई.) निर्वचनोत्तर रामायण इन्होनें महाभारत का तेलुगु में अनुवाद किया, जिससे तेलुगु साहित्य समृद्ध हुआ।

पुरंदरदास - - देवरनाम (भक्ति गीत) कर्नाटक संगीत के जनक, कन्नड़ और संस्कृत में हजारों भक्ति गीतों की रचना की।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: महत्त्वपूर्ण विद्वान, कवि और नाटककार



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — महत्त्वपूर्ण विद्वान, कवि और नाटककार

मुख्य परीक्षा दृष्टि: पुरंदरदास - - देवरनाम (भक्ति गीत) कर्नाटक संगीत के जनक, कन्नड़ और संस्कृत में हजारों भक्ति गीतों की रचना की।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: महत्त्वपूर्ण विद्वान, कवि और नाटककार • अमोघवर्ष I राष्ट्रकुट अमोघवर्ष प्रथम • कल्हण कश्मीर राजा जयसिम्हा • कविचक्रवर्ती • रन्ना | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 780 ई, 910 ई, 944 ई, 878 ई, 967 ई

कनक दास विजयनगर - नल चरित्र, नारा — सिंहस्तव, हरिभक्तिसार

और रामधन्य चरित्र ये भक्ति कवि-संत थे तथा इन्होनें भगवान कृष्ण के प्रति समानता और भक्ति को बढ़ावा देने वाली कन्नड़ में रचनाएँ की।

कृष्णदेव राय विजयनगर कृष्णदेव राय

(जन्म 1509-1529 ई.) अमुक्तमाल्यद इन्होनें प्रशासन और भक्ति पर तेलुगु महाकाव्य की रचना की, जिसमें अंडाल और भगवान रंगनाथ की कहानी को दर्शाया गया है।

मल्लाना विजयनगर सलुव नरसिम्हा

(जन्म 1485-1491 ई.) भावचिंता- रत्न, वीर शैवामृत इन्होने वीरशैववाद पर दार्शनिक कार्य किया, जो विजयनगर साम्राज्य के सामाजिक-धार्मिक ताने-बाने को दर्शाता है।

अल्लसानि पेदन्न — विजयनगर कृष्णदेव राय

(जन्म 1509-1529 ई.) मनुचरितम्, हरिकथासारम्ये "आंध्र कविता पितामह" (तेलुगु कविता के जनक) माने जाते हैं; इनकी रचनाएँ नैतिकता और भक्ति पर केंद्रित हैं।

तेनाली रामकृष्ण — विजयनगर कृष्णदेव राय

(जन्म 1509-1529 ई.) पांडुरंगा महत्यम्, उद्भटार्घ चरितम्, घटिकाचल महत्यम्भक्ति के साथ हास्य का मिश्रण किया; अपनी विद्वता और तेलुगु साहित्य में योगदान के लिए जाने जाते हैं।

कविराज माधव

कवि विजयनगर कृष्णदेव राय (जन्म 1509-1529 ई.) मदालसा चरित, सत्यवेदु परिणय ये एक प्रसिद्ध कवि थे, उनकी रचनाएँ शास्त्रीय संस्कृत साहित्यिक परंपराओं को प्रतिबिंबित करती हैं।

क्षेत्रय्या - - पदम (भक्ति गीत) ये एक भक्ति कवि थे जो भगवान कृष्ण पर के न्द्रित तेलुगु में भक्ति रचनाओं के लिए जाने जाते हैं।

अमीर ख़ुसरो दिल्ली सल्तनत

(खिलजी, तुगलक) अलाउद्दीन खिलजी, गयासुद्दीन तुगलक तुगलकनामा, किरान-उस-सादेन इन्हें "भारत का तोता," कहाँ गया ये एक सूफी कवि थे जिन्होंने फ़ारसी, हिंदवी और अरबी में अपनी रचनाएँ लिखी तथा; गजल और कव्वाली की शुरुआत की।

जियाउद्दीन बरनी — दिल्ली सल्तनत

(तुगलक) - तारीख-ए-फ़िरोज़ शाही, फ़तवा-ए-जहाँदारी इतिहासकार और राजनीतिक विचारक, जिन्होंने दिल्ली सल्तनत के इतिहास का वृत्तांत लिखा।

राजा मान सिंह — तोमर — दिल्ली सल्तनत

(मालवा) राजा मान सिंह तोमर (1486-1516 ई.) मानकुतूहल इन्होनें ध्रुपद संगीत को संरक्षण प्रदान किया इसका दरबार संगीत और कला का केंद्र बन गया।

अबुल फजल मुगल साम्राज्य (अकबर) अकबर (1551-1602 ई.) अकबरनामा, आइन-ए-अकबरी अकबर के दरबारी इतिहासकार, मुगल प्रशासन और अकबर की नीतियों का वृत्तांत प्रस्तुत किया।

फै जी मुगल साम्राज्य (अकबर) अकबर (1547-1595 ई.) नल-दमयंती, संस्कृत कृतियों का अनुवाद अकबर के दरबारी कवि, फारसी में अपनी रचनाएँ लिखी; संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद किया।

तानसेन मुगल साम्राज्य (अकबर) अकबर (16वीं शताब्दी ई.पू.) हिंदुस्तानी शास्त्रीय रचनाएँ अकबर के दरबार में प्रसिद्ध संगीतकार; गायन की ध्रुपद शैली के निर्माण का श्रेय इन्हें ही जाता है।

बदायूनी मुगल साम्राज्य (अकबर) अकबर (1540-1615 ई.) मुन्तख़ाब-उत-तवारीख अकबर की नीतियों की आलोचना करने वाले इतिहासकार, अबुल फ़ज़ल के कार्यों को वैकल्पिक परिप्रेक्ष्य प्रदान किया।

अब्दुर रहीम — खान-ए-खाना

मुगल साम्राज्य (अकबर) अकबर (1556-1627 ई.) रहीम सतसई (हिंदी दोहे) उन्होंने भक्ति और सूफी परंपराओं का मिश्रण करते हुए हिंदी और फारसी में दोहों की रचना की।

मिर्ज़ा गालिब मुगल साम्राज्य (परवर्ती काल) - दीवान-ए-ग़ालिब प्रसिद्ध उर्दू और फारसी कवि;

विशेष अध्ययन मॉड्यूल 1: दिल्ली सल्तनत एवं चोल साम्राज्य: प्रशासनिक सुधार, राजस्व प्रणाली एवं शब्दावली

इक्ता प्रणाली, अलाउद्दीन के बाजार सुधार, मुहम्मद बिन तुगलक के प्रयोग एवं चोल स्थानीय स्वशासन (उत्तरमेरूर अभिलेख)

सल्तनत कालीन प्रशासनिक ढाँचा एवं चोल ग्राम स्वशासन प्रणाली

• 1. केंद्रीय सल्तनत प्रशासन (4 मुख्य स्तंभ)

1. दीवान-ए-विजारत (वजीर — वित्त व राजस्व), 2. दीवान-ए-अर्ज (आरिज-ए-मुमालिक — सैन्य विभाग, बलबन द्वारा गठित), 3. दीवान-ए-इंशा (शाही पत्राचार), 4. दीवान-ए-रिसालत (विदेश व धार्मिक मामले)।

• 2. इक्ता प्रणाली (इल्तुतमिश द्वारा संस्थागत)

सैन्य व प्रशासनिक अधिकारियों (मुक्ता/वली) को नकद वेतन के बदले राजस्व वसूली हेतु दी गई भूमि। मुक्ता अपने खर्च व सेना के बाद शेष राजस्व ('फवाजिल') सुल्तान के खजाने में जमा करता था।

• 3. अलाउद्दीन खिलजी के सैन्य व बाजार सुधार

स्थायी सेना को नकद वेतन, घोड़ों को दागने ('दाग') व सैनिकों का हुलिया ('चेहरा') रखने की प्रथा; भूमि की पैमाइश ('मसाहत' — विश्वा इकाई) और उपज का 50% खराज; 3 बाजार व 'शहना-ए-मंडी' की नियुक्ति।

• 4. चोल स्थानीय स्वशासन (परान्तक-I का उत्तरमेरूर अभिलेख)

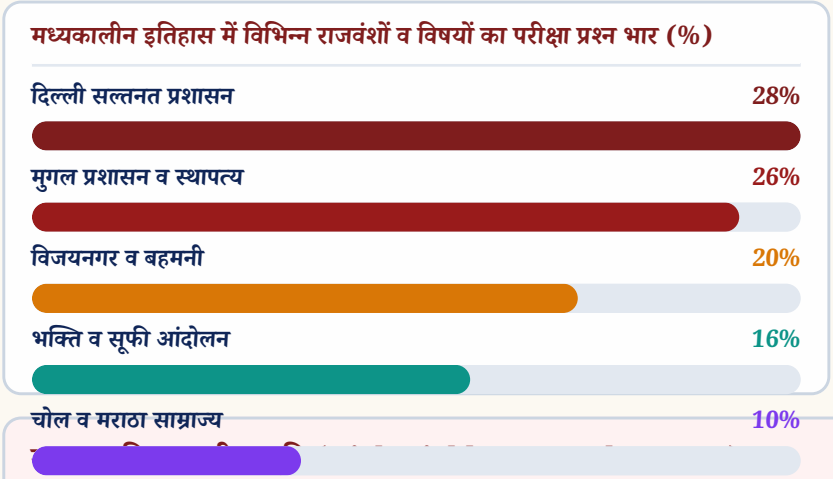
'उर' (सामान्य ग्राम सभा), 'सभा/महासभा' (अग्रहार/ब्राह्मण ग्रामों की सभा) और 'नगरम' (व्यापारियों की सभा)। 'वारियम' (समितियों) के सदस्यों का चुनाव 'कुडवोलाई प्रणाली' (ताड़पत्र लॉटरी) से होता था।

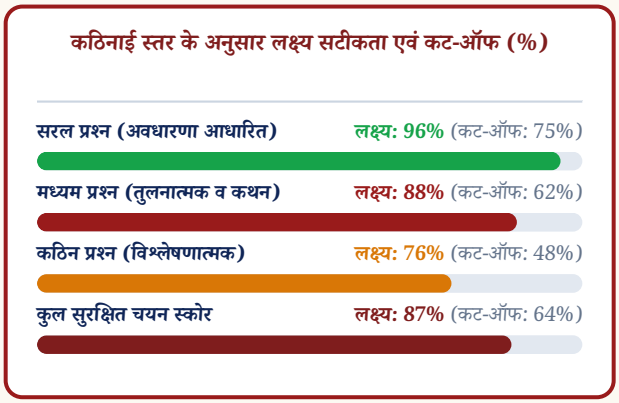
तुलनात्मक विश्लेषण एवं परीक्षा मास्टर सारणी

सल्तनत/मुगल शब्दावली	संबंधित विभाग / अर्थ एवं प्रशासनिक भूमिका	संबंधित शासक / विशेष तथ्य
खालसा भूमि (Khalisa Land)	सीधे केंद्रीय नियंत्रण वाली भूमि जिसका राजस्व सीधे शाही कोष में जाता था	अलाउद्दीन खिलजी ने दोआब की अधिकांश भूमि को खालसा में बदला
बरीद-ए-मुमालिक एवं मुन्हीयान	बरीद = गुप्तचर विभाग का प्रमुख; मुन्हीयान = गुप्तचर/खुफिया एजेंट	बलबन और अलाउद्दीन खिलजी के गुप्तचर तंत्र के मुख्य आधार
सराय-ए-अदल एवं दीवान-ए-रियासत	सराय-ए-अदल = निर्मित वस्तुओं व कपड़ों का बाजार; रियासत = बाजार नियंत्रक	अलाउद्दीन खिलजी ने मलिक याकूब को दीवान-ए-रियासत नियुक्त किया
तकावी / सोंधर (Sondhar)	किसानों को बीज, हल व कुएँ के लिए दिया जाने वाला कृषि ऋण	मुहम्मद बिन तुगलक ने 'दीवान-ए-अमीर कोही' के तहत सोंधर ऋण बाँटे
हक-ए-शर्ब एवं दार-उल-शफा	हक-ए-शर्ब = 10% सिंचाई कर; दार-उल-शफा = नि:शुल्क सरकारी अस्पताल	फिरोज शाह तुगलक (उलेमा की अनुमति से सिंचाई कर व 5 बड़ी नहरें बनवाईं)
गजे-सिकंदरी एवं गुलरुखी	गजे-सिकंदरी = 30 इंच का भूमि मापक पैमाना; गुलरुखी = फारसी कविता उपनाम	सिकंदर लोदी (1504 ई. में आगरा शहर की स्थापना की)

डेटा ग्राफ एवं प्रमुख अध्ययन बिंदु: दिल्ली सल्तनत एवं चोल साम्राज्य: प्रशासनिक सुधार, राजस्व प्रणाली एवं शब्दावली

IUC Academy • उच्च-उपज तथ्य एवं स्मृति सूत्र





परीक्षा तथ्य #1: इल्तुतमिश ने 'तुर्कान-ए-चिहलगानी' (40 तुर्क सरदारों का दल) का गठन किया और शुद्ध अरबी सिक्के — चाँदी का 'टंका' (175 ग्रेन) और ताँबे का 'जीतल' जारी किए; बलबन ने चिहलगानी का दमन किया।

परीक्षा तथ्य #2: मुहम्मद बिन तुगलक ने कृषि के विकास व फसल चक्र (Crop Rotation) के लिए 'दीवान-ए-अमीर कोही' की स्थापना की और मोरक्को यात्री 'इब्नबतूता' (पुस्तक: रेहला) को दिल्ली का काजी नियुक्त किया।

IUC स्पेशल स्मृति ट्रिक्स (Memory Mnemonics)

1. दिल्ली सल्तनत के 5 राजवंश (कालक्रम: 1206-1526): ट्रिक: 'गुलाब खिले तो सांस लो' — 1. गुलाम/मामलूक वंश (1206-1290, कुतुबुद्दीन ऐबक), 2. खिलजी वंश (1290-1320, जलालुद्दीन), 3. तुगलक वंश (1320-1414, गयासुद्दीन — सर्वाधिक लंबा शासन 94 वर्ष), 4. सैयद वंश (1414-1451, खिज्र खाँ), 5. लोदी वंश (1451-1526, बहलोल लोदी — प्रथम अफगान वंश)।

2. सल्तनत कालीन प्रमुख विभाग एवं संस्थापक: ट्रिक: 'अर्ज बलबन, मुस्तखराज व रियासत अलाउद्दीन, कोही मुहम्मद तुगलक, खैरात व बंदगान फिरोज तुगलक' — दीवान-ए-अर्ज (सैन्य: बलबन), दीवान-ए-मुस्तखराज (राजस्व बकाया: अलाउद्दीन), दीवान-ए-अमीर कोही (कृषि: मुहम्मद बिन तुगलक), दीवान-ए-बंदगान (दास) व खैरात (दान): फिरोज शाह तुगलक।

विशेष अध्ययन मॉड्यूल 2: विजयनगर साम्राज्य, मुगल प्रशासन (मनसबदारी व दहसाला) एवं विदेशी यात्री

कृष्णदेव राय का स्वर्णकाल, नायंकर व आयंगर व्यवस्था, अकबर की जब्ती/दहसाला प्रणाली एवं मुगल स्थापत्य

मुगल मनसबदारी-जागीरदारी एवं विजयनगर की नायंकर-आयंगर व्यवस्था

• 1. विजयनगर: नायंकर एवं आयंगर व्यवस्था

नायंकर व्यवस्था: सैन्य नायकों ('अमर-नायक') को सैन्य सेवा के बदले दी गई भूमि ('अमरम')। आयंगर व्यवस्था: ग्राम प्रशासन के लिए 12 वंशानुगत अधिकारियों का समूह जिन्हें कर-मुक्त भूमि ('मान्यम') मिलती थी।

• 2. कृष्णदेव राय (1509-1529 ई. — तुलुव वंश)

बाबरनामा में भारत का सबसे शक्तिशाली शासक बताया गया। तेलुगु में 'अमुक्तमाल्यद' (प्रशासन व राजनीति पर ग्रंथ) और संस्कृत में 'जाम्बवती कल्याणम' की रचना; दरबार में तेलुगु के 8 महान कवि ('अष्टदिग्गज' — अल्लसानी पेद्दना प्रमुख)।

• 3. मुगल मनसबदारी प्रणाली (अकबर द्वारा 1575 में प्रारंभ)

मंगोल दशमलव प्रणाली पर आधारित; दो घटक: 'जात' (व्यक्तिगत पद व वेतनमान) और 'सवार' (रखे जाने वाले घुड़सवारों की संख्या)। जहाँगीर ने 'दु-अस्पा सिंह-अस्पा' और शाहजहाँ ने 'माहवार (Month-scale)' प्रथा जोड़ी।

• 4. टोडरमल बंदोबस्त (आईन-ए-दहसाला — 1580 ई.)

10 वर्षों (1570-1580) के औसत उत्पादन और कीमतों के आधार पर नकद राजस्व (1/3 भाग) निर्धारण। भूमि का 4 वर्गों में विभाजन: पोलज (प्रतिवर्ष खेती), परौती (1-2 वर्ष परती), चाचर (3-4 वर्ष परती), बंजर (5+ वर्ष परती)।

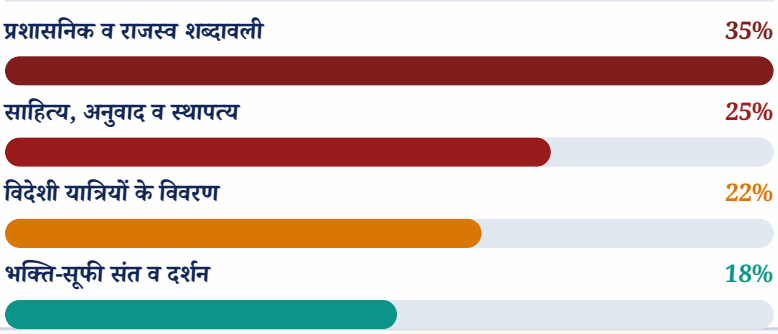
तुलनात्मक विश्लेषण एवं परीक्षा मास्टर सारणी

विदेशी यात्री का नाम	मूल देश एवं कालखंड	किस भारतीय शासक के दरबार में आया?	प्रमुख यात्रा वृत्तांत एवं ऐतिहासिक विवरण
अल-बरूनी (11वीं सदी)	ख्वारिज्म (उज्बेकिस्तान)	महमूद गजनवी के साथ भारत आया	पुस्तक: 'किताब-उल-हिंद' (तहकीक-ए-हिंद) — भारतीय विज्ञान, दर्शन व समाज का वर्णन
इब्नबतूता (1333-1347 ई.)	मोरक्को (अफ्रीका)	मुहम्मद बिन तुगलक (दिल्ली सल्तनत)	पुस्तक: 'रेहला' (अरबी) — सल्तनत की डाक प्रणाली (उलूक व दावा) की प्रशंसा
निकोलो डी कोंटी एवं अब्दुर्रज्जाक	इटली (1420) व फारस (1443)	देवराय प्रथम एवं देवराय द्वितीय (विजयनगर)	विजयनगर की भव्य घेराबंदी, महानवमी डिब्बा और समृद्ध बाजारों का वर्णन
डोमिंगो पायस एवं दुआर्ते बारबोसा	पुर्तगाल (16वीं सदी)	कृष्णदेव राय (तुलुव वंश, विजयनगर)	विजयनगर की तुलना रोम से की; सिंचाई टैंक व सती प्रथा का उल्लेख
फरनाओ नूनिज (1535-1537 ई.)	पुर्तगाल (घोड़ा व्यापारी)	अच्युतदेव राय (विजयनगर)	विजयनगर में महिलाओं की उच्च स्थिति (कुश्ती, ज्योतिष, लेखाकार) का वर्णन
फ्रांस्वा बर्नियर एवं टैवर्नियर	फ्रांस (17वीं सदी)	शाहजहाँ एवं औरंगजेब (मुगल काल)	बर्नियर (चिकित्सक — 'ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर'), टैवर्नियर (हीरा व्यापारी)

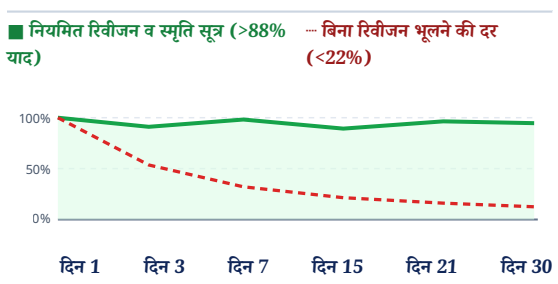
डेटा ग्राफ एवं प्रमुख अध्ययन बिंदु: विजयनगर साम्राज्य, मुगल प्रशासन (मनसबदारी व दहसाला) एवं विदेशी यात्री

IUC Academy • उच्च-उपज तथ्य एवं स्मृति सूत्र

विजयनगर, मुगल एवं भक्ति-सूफी खंड से पूछे जाने वाले मुख्य आयाम (%)



नियमित रिवीजन (1-3-7-21 दिन नियम) एवं स्मृति धारण ग्राफ



उच्च-प्राथमिकता परीक्षा दृष्टि (High-Yield Exam Takeaways)

परीक्षा तथ्य #1: अकबर ने फतेहपुर सीकरी में 1575 में 'इबादतखाना' (प्रार्थना भवन) खोला, 1579 में 'महजरनामा' जारी किया, 1582 में 'दीन-ए-इलाही (तौहीद-ए-इलाही)' और 'इलाही संवत' प्रारंभ किया तथा अनुवाद विभाग ('मकतबखाना') स्थापित किया (महाभारत का फारसी अनुवाद = 'रज्मनामा')।

परीक्षा तथ्य #2: शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह ने 52 उपनिषदों का फारसी में 'सिर्र-ए-अकबर' (महान रहस्य) नाम से अनुवाद किया और हिंदू-इस्लाम समन्वय पर 'मज्म-उल-बहरैन' (दो समुद्रों का संगम) की रचना की।

IUC स्पेशल स्मृति ट्रिक्स (Memory Mnemonics)

1. विजयनगर साम्राज्य के 4 राजवंश एवं संस्थापक: ट्रिक: 'संगम हरि-बुक्का, सालुव नरसिंह, तुलुव वीर नरसिंह (कृष्णदेव राय), अरावीडु तिरुमल' — विजयनगर में आने वाले विदेशी यात्री: निकोलो कोंटी (देवराय-I), अब्दुर्रज्जाक (देवराय-II), बारबोसा व डोमिंगो पायस (कृष्णदेव राय), नूनिज (अच्युतदेव राय)।

2. बाबर द्वारा लड़े गए 4 प्रमुख युद्ध (1526-1529): ट्रिक: '26 में पानी पिया, 27 में खाना खाया, 28 में चल दिया, 29 में घर गया और 30 में मर गया' — पानीपत प्रथम (1526, इब्राहिम लोदी), खानवा (1527, राणा सांगा — गाजी उपाधि), चंदेरी (1528, मेदिनी राय), घाघरा (1529, अफगान)।

विशेष अध्ययन मॉड्यूल 3: विजयनगर साम्राज्य, बहमनी सल्तनत एवं मराठा प्रशासन (अष्टप्रधान)

संगम-सालुव-तुलुव-अराविडु वंश, कृष्णदेव राय का स्वर्णकाल, नायंकारा-आयंगर व्यवस्था एवं शिवाजी का प्रशासन

दक्षिण एवं दक्कन के मध्यकालीन साम्राज्यों के 4 मुख्य स्तंभ

• 1. विजयनगर के 4 राजवंश (1336–1646)

संगम (हरिहर व बुक्का - 1336), सालुव (सालुव नरसिंह), तुलुव (वीर नरसिंह, कृष्णदेव राय 1509-29), अराविडु (तिरुमल); 1565 में तालीकोटा/राक्षसी-तंगड़ी का युद्ध।

• 2. नायंकारा एवं आयंगर प्रणाली

अमर-नायक (सैन्य कमांडर जिन्हें कर वसूली हेतु 'अमरम' भूमि दी जाती थी); आयंगर व्यवस्था (ग्राम प्रशासन हेतु 12 वंशानुगत अधिकारियों की नियुक्ति)।

• 3. बहमनी साम्राज्य का 5 राज्यों में विघटन

अलाउद्दीन हसन बहमन शाह (1347); विघटन: बीजापुर (आदिलशाही), अहमदनगर (निजामशाही), गोलकुंडा (कुतुबशाही), बीदर (बरीदशाही), बरार (इमादशाही)।

• 4. छत्रपति शिवाजी का प्रशासन

अष्टप्रधान मंत्रिपरिषद (पेशवा, अमात्य/मजूमदार, वाकियानवीस, सुमंत/दबीर, सचीव/शुरुनवीस, सेनापति/सर-ए-नौबत, पंडितराव, न्यायाधीश); चौथ (1/4) व सरदेशमुखी (1/10)।

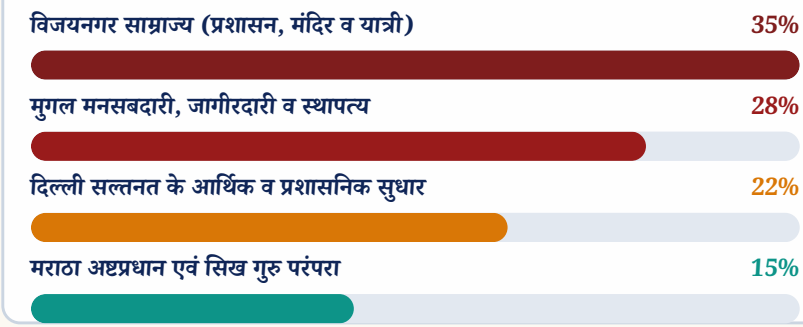
तुलनात्मक विश्लेषण एवं परीक्षा मास्टर सारणी

प्रशासनिक पद / शब्दावली	साम्राज्य / काल	प्रमुख दायित्व एवं परीक्षा महत्त्व
अष्टदिग्गज (आठ तेलुगु कवि)	कृष्णदेव राय (विजयनगर)	अल्लसानी पेद्दना ('मनुचरितम' — आंध्र कविता पितामह), तेनाली रामकृष्ण; कृष्णदेव राय ने तेलुगु में 'आमुक्तमाल्यदा' व संस्कृत में 'जाम्बवती कल्याणम' लिखी
अष्टप्रधान (8 मंत्री)	छत्रपति शिवाजी (मराठा)	पेशवा (प्रधानमंत्री), अमात्य (वित्त/राजस्व मंत्री), सुमंत (विदेश मंत्री), सर-ए-नौबत (सेनापति)
दीवान-ए-अमीर-कोही	मुहम्मद बिन तुगलक	कृषि के विस्तार व सुधार हेतु स्थापित विभाग; किसानों को 'सोंधर' व 'तकावी' कृषि ऋण दिए गए
दीवान-ए-खैरात व दार-उल-शफा	फिरोज शाह तुगलक	अनाथों/विधवाओं की सहायता हेतु दान विभाग एवं नि:शुल्क सरकारी चिकित्सालय (दार-उल-शफा)

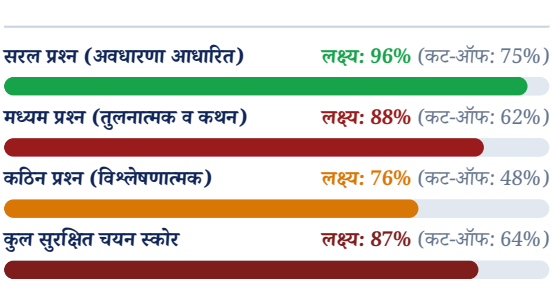
डेटा ग्राफ एवं प्रमुख अध्ययन बिंदु: विजयनगर साम्राज्य, बहमनी सल्तनत एवं मराठा प्रशासन (अष्टप्रधान)

IUC Academy • उच्च-उपज तथ्य एवं स्मृति सूत्र

विजयनगर, मुगल प्रशासन एवं मराठा साम्राज्य से प्रश्न भार (%)



कठिनाई स्तर के अनुसार लक्ष्य सटीकता एवं कट-ऑफ (%)



उच्च-प्राथमिकता परीक्षा दृष्टि (High-Yield Exam Takeaways)

परीक्षा तथ्य #1: विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय की प्रशंसा बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-बाबरी' (बाबरनामा) में भारत के सबसे शक्तिशाली शासक के रूप में की थी।

IUC स्पेशल स्मृति ट्रिक्स (Memory Mnemonics)

1. अकबर के नवरत्न याद रखने की ट्रिक: ट्रिक: 'BAT BAT MDH' — B=Birbal (बीरबल), A=Abul Fazl (अबुल फजल), T=Tansen (तानसेन), B=Bhagwan Das (भगवान दास), A=Abdul Rahim Khan-i-Khana (अब्दुर्रहीम खानखाना), T=Todar Mal (टोडरमल), M=Man Singh (मानसिंह), D=Mulla Do Pyaza (मुल्ला दो प्याजा), H=Hakim Humam (हकीम हुमाम)।

2. शिवाजी का अष्टप्रधान मंत्रिमंडल: ट्रिक: 'पेशवा प्रधानमंत्री, अमात्य/मजूमदार वित्त मंत्री, सुमंत/दबीर विदेश मंत्री, वाकियानवीस गुप्तचर व गृह, सुरुनवीस/चिटनीस पत्राचार, सर-ए-नौबत सेनापति, पंडितराव धार्मिक मामले, न्यायाधीश न्याय विभाग'।

IUC Academy विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं अभ्यास खंड — मध्यकालीन भारत का इतिहास

गहन परीक्षा-उन्मुख विश्लेषण • तुलनात्मक सारणियाँ • महत्वपूर्ण सूत्र • व्याख्या सहित हल प्रश्न

प्रामाणिक आधिकारिक संदर्भ स्रोत (Official Reference Portals): एनसीईआरटी — विजयनगर साम्राज्य स्थापत्य एवं प्रशासन • एनसीईआरटी — भक्ति-सूफी परंपराएँ • इग्नू ई-ज्ञानकोश — दिल्ली सल्तनत प्रशासन • इग्नू ई-ज्ञानकोश — चोल स्थानीय स्वशासन

संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग — सिविल सेवा परीक्षा विशेष अध्ययन ग्रंथ

यह सर्वांगीण, 100% शुद्ध देवनागरी हिंदी और पूर्णतः कॉपीराइट-मुक्त अध्ययन सामग्री संघ एवं राज्य सिविल सेवा प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुरूप तैयार की गई है। इसमें पूर्व-मध्यकालीन त्रिपक्षीय संघर्ष और चोल ग्राम स्वशासन से लेकर दिल्ली सल्तनत, विजयनगर-बहमनी, मुगल साम्राज्य, मराठा अष्टप्रधान तथा भक्ति-सूफी आंदोलन तक के 6 विश्लेषणात्मक मॉड्यूल (प्रत्येक में विस्तृत व्याख्या, 4-नोड संरचनात्मक आरेख, तुलनात्मक सारणी तथा प्रतिशत डेटा चार्ट) और 10 मौलिक स्मृति ट्रिक्स समाहित हैं।

मॉड्यूल 1: त्रिपक्षीय संघर्ष (पाल, गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट) एवं चोल स्थानीय स्वशासन

1.1 कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष (8वीं से 10वीं शताब्दी ईस्वी)

सम्राट हर्षवर्धन के पतन के पश्चात् उत्तर भारत में राजनीतिक सर्वोच्चता का केंद्र पाटलिपुत्र के स्थान पर **कन्नौज (महोदय श्री)** बन गया। गंगा-यमुना दोआब के उपजाऊ कृषि क्षेत्र, उत्तरापथ के व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण और चक्रवर्ती सम्राट के प्रतीक के रूप में कन्नौज पर अधिकार करने के लिए आठवीं से दसवीं शताब्दी के मध्य **पाल, गुर्जर-प्रतिहार और राष्ट्रकूट राजवंशों के बीच दीर्घकालिक त्रिपक्षीय संघर्ष** चला।

- **पाल राजवंश (बंगाल एवं बिहार):** 750 ईस्वी में गोपाल ने बंगाल में व्याप्त अराजकता (मत्स्यन्याय) को समाप्त कर पाल वंश की नींव रखी। उनके पुत्र धर्मपाल (770–810 ई.) ने कन्नौज पर आक्रमण कर इंद्रायुध को अपदस्थ किया और चक्रायुध को आश्रित शासक बनाया तथा प्रसिद्ध **विक्रमशिला महाविहार** और सोमपुर महाविहार की स्थापना की। देवपाल ने जावा के शैलेंद्र वंशीय शासक बालपुत्रदेव के अनुरोध पर नालंदा में बौद्ध विहार के लिए 5 गाँव दान दिए।
- **गुर्जर-प्रतिहार राजवंश (मालवा एवं राजपूताना):** हरिश्चंद्र एवं नागभट्ट प्रथम द्वारा स्थापित इस वंश ने पश्चिमी सीमा पर अरब आक्रमणकारियों का सफल प्रतिरोध किया। वत्सराज ने त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत की, किंतु नागभट्ट द्वितीय ने धर्मपाल को पराजित कर कन्नौज पर अधिकार किया। इस वंश के महानतम शासक **मिहिरभोज (836–885 ई.)** ने 'आदिवराह' की उपाधि धारण की और कन्नौज को अपनी स्थायी राजधानी बनाया। बगदाद के यात्री अल-मसूदी ने प्रतिहारों की अश्वसेना और सामरिक शक्ति की प्रशंसा की है।
- **राष्ट्रकूट राजवंश (दक्कन - मान्यखेत):** दंतिदुर्ग ने 753 ईस्वी में बादामी के चालुक्यों को पराजित कर हिरण्यगर्भ महादान यज्ञ किया और राष्ट्रकूट साम्राज्य स्थापित किया। ध्रुव (धारावर्ष) दक्षिण से उत्तर भारत की राजनीति में हस्तक्षेप कर वत्सराज और धर्मपाल दोनों को पराजित करने वाला प्रथम शासक था। गोविंद तृतीय ने नागभट्ट द्वितीय को हराया, जबकि **अमोघवर्ष प्रथम** ने कन्नड़ भाषा के प्रथम काव्यशास्त्रीय ग्रंथ 'कविराजमार्ग' की रचना की। कृष्ण प्रथम ने एलोरा के प्रसिद्ध एकाश्मक कैलाश मंदिर का निर्माण कराया।

1.2 चोल साम्राज्य एवं स्थानीय स्वशासन (उत्तरमेरूर अभिलेख)

नौवीं शताब्दी के मध्य में विजयालय (850 ई.) ने पल्लवों के सामंत के रूप में तंजावुर पर अधिकार कर **चोल साम्राज्य का पुनरुत्थान** किया। राजराज प्रथम (985–1014 ई.) ने उत्तरी श्रीलंका और मालदीव को जीता तथा तंजावुर में द्रविड़ स्थापत्य के शिखर 'बृहदेश्वर (राजराजेश्वर) मंदिर' का निर्माण करवाया। उनके पुत्र **राजेंद्र प्रथम (1014–1044 ई.)** ने पूर्ण श्रीलंका, गंगा घाटी (जिसके उपलक्ष्य में 'गंगैकोंडचोल' की उपाधि और गंगैकोंडचोलपुरम नगर बसाया) तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया के श्रीविजय साम्राज्य के विरुद्ध सफल नौसैनिक अभियान चलाया, जिससे बंगाल की खाड़ी 'चोल झील' में परिवर्तित हो गई।

चोल प्रशासन की सर्वाधिक अनूठी विशेषता उसकी **स्वायत्त ग्रामीण स्वशासन प्रणाली (उर, सभा और नगरम)** थी, जिसका विस्तृत संविधान परांतक प्रथम के शासनकाल के **उत्तरमेरूर अभिलेख (919 ई. एवं 921 ई.)** में मिलता है। ग्रामों में तीन प्रकार की स्वायत्त सभाएँ कार्यरत थीं: **उर** (गैर-ब्राह्मण करदाता किसानों की सामान्य ग्राम सभा), **सभा या महासभा** (अग्रहार या ब्रह्मदेय गाँवों के वयस्क ब्राह्मण भू-स्वामियों की स्वायत्त संस्था) और **नगरम** (व्यापारिक निगमों एवं वणिक बस्तियों की प्रशासनिक परिषद)। महासभा अपनी कार्यप्रणाली 30 वार्डों (कुडम्ब) से 'कुडवोलाई' (मिट्टी के घड़े से ताड़पत्र की पर्ची निकालने की लॉटरी पद्धति) द्वारा चुनी गई उपसमितियों (वारियम) के माध्यम से संचालित करती थी—जैसे तोट्टवारियम (उद्यान समिति), एरिवारियम (तालाब एवं सिंचाई समिति) और पोनवारियम (स्वर्ण जाँच समिति)।

4-नोड संरचनात्मक आरेख 1: चोल साम्राज्य का प्रशासनिक विकेंद्रीकरण एवं स्थानीय स्वशासन

नोड 1: मंडलम
केंद्रीय साम्राज्य व प्रांत
चोल साम्राज्य 8–9 'मंडलम' (प्रांतों) में विभाजित था, जहाँ राजकुमार या वरिष्ठ अधिकारी वायसराय के रूप में नियुक्त होते थे।
नोड 2: वलनाडु
कमिश्नरी / मंडल इकाई
प्रत्येक मंडलम कई 'वलनाडु' (आधुनिक कमिश्नरी के समतुल्य) में विभक्त था, जो नदियों की प्राकृतिक सीमाओं पर आधारित थे।
नोड 3: नाडु
जिला व नाट्टार परिषद
वलनाडु के अंतर्गत 'नाडु' (जिला) आते थे; इनकी स्थानीय परिषद को 'नाट्टार' कहा जाता था जो भू-राजस्व का आकलन करती थी।
नोड 4: कुर्रम / ग्राम
उर, सभा व वारियम
सबसे निचली इकाई स्वायत्त ग्राम थी, जहाँ उर, सभा और नगरम द्वारा कुडवोलाई लॉटरी से वारियम (समितियाँ) चुनी जाती थीं।

राजवंश	संस्थापक एवं राजधानी	प्रमुख शासक एवं सैन्य उपलब्धि	सांस्कृतिक व प्रशासनिक योगदान	प्रामाणिक स्रोत
पाल वंश	गोपाल (750 ई.); मुंगेर / पाटलिपुत्र	धर्मपाल व देवपाल; कन्नौज में चक्रायुध की नियुक्ति	विक्रमशिला, ओदंतपुरी व सोमपुर महाविहार; वज्रयान बौद्ध संरक्षण	IUC अकादमी
गुर्जर-प्रतिहार	नागभट्ट प्रथम (730 ई.); उज्जैन व कन्नौज	मिहिरभोज व महेंद्रपाल प्रथम; कन्नौज पर अंतिम विजय	अरब आक्रमणों का प्रतिरोध; राजशेखर ('कर्पूरमंजरी') को आश्रय	IUC अकादमी
राष्ट्रकूट वंश	दंतिदुर्ग (753 ई.); मान्यखेत (मालखेड)	ध्रुव, गोविंद तृतीय, कृष्ण तृतीय; उत्तर व दक्षिण अभियान	एलोरा का कैलाश मंदिर (कृष्ण प्रथम); एलिफेंटा गुफाएँ; कन्नड़ साहित्य	इतिहास अभिलेख
चोल साम्राज्य	विजयालय (850 ई.); तंजावुर व गंगैकोंडचोलपुरम	राजराज प्रथम व राजेंद्र प्रथम; श्रीलंका व श्रीविजय विजय	उत्तरमेरूर ग्राम स्वशासन, बृहदेश्वर मंदिर, नटराज कांस्य प्रतिमा	विकिपीडिया

चार्ट डेटा 1.1: पूर्व-मध्यकालीन प्रमुख साम्राज्यों की सापेक्षिक शासन-अवधि हिस्सेदारी (%)
चोल साम्राज्य (850–1279 ई., 429 वर्ष)
31.8%
पाल राजवंश (750–1150 ई., 400 वर्ष)
29.6%
गुर्जर-प्रतिहार (730–1036 ई., 306 वर्ष)
22.7%
राष्ट्रकूट वंश (753–973 ई., 220 वर्ष)
15.9%
विश्लेषण: कुल संयुक्त शासन-काल (1,355 वर्ष) में चोल साम्राज्य (31.8%) और पाल राजवंश (29.6%) का स्थायित्व सर्वाधिक रहा, जबकि प्रतिहारों (22.7%) ने कन्नौज पर अंतिम विजय प्राप्त की (योग = 100.0%)।

मॉड्यूल 2: दिल्ली सल्तनत (गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैयद, लोदी) — प्रशासन एवं स्थापत्य

2.1 पाँच राजवंशों का राजनीतिक विकास एवं प्रशासनिक नवाचार

1206 ईस्वी से 1526 ईस्वी तक 320 वर्षों के कालखंड में दिल्ली सल्तनत पर तुर्क और अफगान मूल के पाँच राजवंशों ने शासन किया: **गुलाम/मामलुक वंश (1206–1290 ई.)**, **खिलजी वंश (1290–1320 ई.)**, **तुगलक वंश (1320–1414 ई.)**, **सैयद वंश (1414–1451 ई.)** और **लोदी वंश (1451–1526 ई.)**। इग्नू (ई-ज्ञानकोश) के दिल्ली सल्तनत अध्ययन के अनुसार, कुतुबुद्दीन ऐबक ने सल्तनत की नींव रखी, किंतु **इल्तुतमिश (1210–1236 ई.)** ने बगदाद के खलीफा से खिलअत प्राप्त कर, 'तुर्कान-ए-चिहलगानी' (चालीस गुलाम सरदारों का दल) का गठन कर, शुद्ध अरबी सिक्के (चाँदी का टंका 175 ग्रेन और ताँबे का जीतल) चलाकर तथा **इक्ता व्यवस्था** को संस्थागत रूप देकर सल्तनत को वास्तविक स्थायित्व प्रदान किया।

• **बलबन का राजत्व सिद्धांत एवं खिलजी क्रांति:** गियासुद्दीन बलबन (1266–1287 ई.) ने चालीसा दल का दमन किया, सुल्तान को 'जिल्ले-इलाही' (ईश्वर की छाया) और 'नियाबत-ए-खुदाई' घोषित किया, दरबार में **सिजदा और पाबोस** तथा नौरोज़ उत्सव प्रारंभ किया और मंगोल आक्रमणों के विरुद्ध सैन्य विभाग **दीवान-ए-अर्ज** का पुनर्गठन किया। इसके पश्चात् **अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316 ई.)** ने धर्म को राजनीति से पृथक रखा, 4,75,000 घुड़सवारों की स्थायी केंद्रीय सेना को नकद वेतन दिया, घोड़ों को दागने (दाग) और सैनिकों का हुलिया (चेहरा) लिखने की प्रथा चलाई तथा उपज का 50% भू-राजस्व (खराज) मसाहत (भूमि की पैमाइश, इकाई: विश्वा) के आधार पर निर्धारित किया।

• **बाज़ार नियंत्रण एवं तुगलक काल के प्रयोग:** अलाउद्दीन ने सैनिकों को कम वेतन में आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराने हेतु 'दीवान-ए-रियासत' और 'शहना-ए-मंडी' के अधीन तीन बाज़ार (गल्ला मंडी, सराय-ए-अदल, तथा घोड़ों-दासों का बाज़ार) स्थापित किए। **मुहम्मद बिन तुगलक (1325–1351 ई.)** ने दोआब में कर वृद्धि, दिल्ली से दौलताबाद राजधानी परिवर्तन, सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन और कृषि विकास हेतु **दीवान-ए-अमीर कोही** (तकावी/सौंधर ऋण) जैसे दूरदर्शी किंतु असफल प्रयोग किए। फिरोजशाह तुगलक ने सिंचाई हेतु 5 बड़ी नहरें बनवाईं (हक-ए-शर्ब 10% सिंचाई कर), इक्ता को वंशानुगत बनाया तथा दीवान-ए-खैरात (दान विभाग) और दीवान-ए-बंदगान (दास विभाग) स्थापित किए।

2.2 केंद्रीय व प्रांतीय प्रशासन तथा इंडो-इस्लामिक स्थापत्य

सल्तनत प्रशासनिक संरचना में सुल्तान की सहायता के लिए चार प्रमुख मंत्री होते थे: **दीवान-ए-विजारत** (वजीर — वित्त व राजस्व), **दीवान-ए-अर्ज** (आरिज-ए-मुमालिक — सैन्य संगठन), **दीवान-ए-इंशा** (दबीर-ए-मुमालिक — शाही पत्राचार) और **दीवान-ए-रिसालत** (विदेश एवं धार्मिक मामले)। प्रांतों को **इक्ता** (प्रभारी: मुक्ती या वली) में, इक्ता को **शिक** (जिला, प्रभारी: शिकदार) में और शिक को **परगना** (आमिल व मुशरिफ) तथा ग्राम (खुत, मुकद्दम, चौधरी) में बाँटा गया था।

स्थापत्य कला में तुर्कों ने भारतीय धरनी और कोष्ठक शैली के साथ **वास्तविक मेहराब और गुंबद** तथा गारे-चूने व सुर्खी का समन्वय कर इंडो-इस्लामिक शैली का विकास किया। कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, अढ़ाई दिन का झोपड़ा, कुतुबमीनार, अलाउद्दीन खिलजी का **अलाई दरवाज़ा** (वैज्ञानिक विधि से निर्मित प्रथम शुद्ध गुंबद व घोड़े की नाल के आकार का मेहराब), तुगलक काल की ढलवाँ दीवारें (गियासुद्दीन तुगलक का मकबरा) और लोदी काल का **दोहरा गुंबद** (सिकंदर लोदी का मकबरा व मोठ की मस्जिद) इस युग की स्थापत्य उपलब्धियाँ हैं।

4-नोड संरचनात्मक आरेख 2: दिल्ली सल्तनत के चार केंद्रीय प्रशासनिक स्तंभ
नोड 1: विजारत
दीवान-ए-विजारत
प्रधानमंत्री (वजीर) के अधीन वित्त, भू-राजस्व वसूली, खालसा भूमि तथा महालेखाकार (मुशरिफ व मुस्तौफी) का सर्वोच्च विभाग।
नोड 2: अर्ज
दीवान-ए-अर्ज
बलबन द्वारा गठित सैन्य विभाग; आरिज-ए-मुमालिक द्वारा सैनिकों की भर्ती, दाग व हुलिया तथा रसद प्रबंधन।
नोड 3: इंशा
दीवान-ए-इंशा
दबीर-ए-खास के नेतृत्व में सुल्तान के शाही फरमानों का प्रारूपण और प्रांतीय इक्तादारों के साथ गोपनीय पत्राचार।
नोड 4: रिसालत व कजा
दीवान-ए-रिसालत
विदेश नीति, कूटनीतिक संबंध तथा सद्र-उस-सुदूर और काजी-उल-कुजात के माध्यम से धार्मिक अनुदान व न्याय प्रशासन।

राजवंश एवं काल	संस्थापक एवं प्रमुख शासक	प्रमुख प्रशासनिक एवं आर्थिक सुधार	स्थापत्य कला के प्रमुख स्मारक	स्रोत लिंक
गुलाम वंश (1206–1290 ई.)	कुतुबुद्दीन ऐबक; इल्तुतमिश, रजिया, बलबन	इक्ता प्रणाली, चालीसा दल, टंका-जीतल मुद्रा, दीवान-ए-अर्ज, सिजदा-पाबोस	कुतुबमीनार, सुल्तानगढ़ी, इल्तुतमिश व बलबन का मकबरा (प्रथम शुद्ध मेहराब)	राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी
खिलजी वंश (1290–1320 ई.)	जलालुद्दीन खिलजी; अलाउद्दीन खिलजी	दाग व हुलिया, नकद वेतन, 50% खराज (मसाहत), बाज़ार नियंत्रण, दीवान-ए-मुस्तखराज	अलाई दरवाज़ा, सीरी का किला, हजार सितून महल, जमातखाना मस्जिद	ई-ज्ञानकोश
तुगलक वंश (1320–1414 ई.)	गियासुद्दीन तुगलक; मुहम्मद बिन तुगलक, फिरोज तुगलक	दीवान-ए-कोही (कृषि), सांकेतिक मुद्रा, 5 नहरें (हक-ए-शर्ब), दीवान-ए-खैरात व बंदगान	तुगलकाबाद दुर्ग (ढलवाँ दीवारें), जहाँपनाह नगर, फिरोजशाह कोटला, खानेजहाँ तेलंगानी मकबरा	IUC अकादमी

सैयद एवं लोदी वंश (1414–1526 ई.)	खिज्र खाँ (सैयद); बहलोल, सिकंदर व इब्राहिम लोदी	अफगान समानता का सिद्धांत, 'गजे-सिकंदरी' (30 इंच भूमि माप), आगरा की स्थापना (1504 ई.)	मुबारक शाह का अष्टभुजाकार मकबरा, सिकंदर लोदी का दोहरा गुंबद मकबरा, मोठ की मस्जिद	इग्नू कोष

चार्ट डेटा 2.1: दिल्ली सल्तनत (1206–1526 ई., 320 वर्ष) में पाँच राजवंशों का शासन प्रतिशत (%)
तुगलक वंश (1320–1414 ई., 94 वर्ष)
29.4%
गुलाम / मामलुक वंश (1206–1290 ई., 84 वर्ष)
26.2%
लोदी वंश (1451–1526 ई., 75 वर्ष)
23.4%
सैयद वंश (1414–1451 ई., 37 वर्ष)
11.6%
खिलजी वंश (1290–1320 ई., 30 वर्ष)
9.4%
विश्लेषण: दिल्ली सल्तनत के कुल 320 वर्षों में तुगलक वंश ने सर्वाधिक 29.4% (94 वर्ष) और खिलजी वंश ने सबसे कम 9.4% (30 वर्ष) शासन किया (कुल योग = 100.0%)।

मॉड्यूल 3: विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य — प्रशासन, समाज एवं स्थापत्य

3.1 विजयनगर के चार राजवंश तथा नायंकार व आयंगर व्यवस्था

मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में दक्षिण भारत में उठे राजनीतिक विद्रोहों के मध्य 1336 ईस्वी में संगम के दो पुत्रों **हरिहर प्रथम एवं बुक्का प्रथम** ने गुरु माधव विद्यारण्य और वेदों के भाष्यकार सायण की प्रेरणा से तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर **विजयनगर साम्राज्य (हम्पी) की स्थापना** की। इस साम्राज्य पर क्रमशः चार राजवंशों ने शासन किया: **संगम वंश (1336–1485 ई.)**, **सालुव वंश (1485–1505 ई.)**, **तुलुव वंश (1505–1570 ई.)** और **अराविडु वंश (1570–1646 ई.)**। संगम वंशीय देवराय प्रथम ने तुंगभद्रा पर बाँध बनवाया (इतालवी यात्री निकोलो कोंटी का आगमन) और देवराय द्वितीय ('गजबेटकर' — हाथियों का शिकारी) के काल में फारसी राजदूत अब्दुर्रज्जाक हम्पी आया।

तुलुव वंशीय **कृष्णदेव राय (1509–1529 ई.)** विजयनगर के महानतम सम्राट थे, जिन्हें बाबर ने 'बाबरनामा' में भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बताया है। उन्होंने तेलुगु में प्रशासनिक ग्रंथ **'आमुक्तमाल्यद'** और संस्कृत में 'जाम्बवती कल्याणम' की रचना की; उनके दरबार में तेलुगु साहित्य के आठ दिग्गज कवि **'अष्टदिग्गज'** (प्रमुख: अल्लसानी पेद्दना — 'मनुचरितम') सुशोभित थे। उन्होंने पुर्तगाली गवर्नर अल्बुकर्क से मित्रता की तथा 'आंध्रभोज' और 'यवनराज स्थापनाचार्य' की उपाधियाँ धारण कीं।

- **नायंकार (अमर-नायक) व्यवस्था:** **इग्नू के विजयनगर संस्थागत अध्ययन** के अनुसार, सेनानायकों को 'नायक' या 'अमर-नायक' कहा जाता था। राजा उन्हें वेतन के बदले या अधीनस्थ सेना (पैदल, घुड़सवार व हाथी) के रखरखाव हेतु विशेष भू-क्षेत्र प्रदान करता था जिसे **'अमरम'** कहा जाता था। अमर-नायक वर्ष में एक बार राजा को भेंट भेजते थे और राजकीय दरबार में अपनी स्वामीभक्ति प्रकट करते थे।
- **आयंगर व्यवस्था एवं राजस्व:** चोल कालीन स्वायत्त ग्राम सभाओं के स्थान पर विजयनगर ने ग्रामीण प्रशासन के संचालन हेतु प्रत्येक गाँव में **12 वंशानुगत अधिकारियों के समूह (**'आयंगर'**)** की नियुक्ति की। इन्हें राज्य की ओर से कर-मुक्त भूमि (**'मान्य'**) दी जाती थी और इनकी अनुमति के बिना ग्राम की भूमि का क्रय-विक्रय नहीं हो सकता था। भू-राजस्व (**'शिष्ट'**) उपज का 1/6 से 1/4 भाग होता था, जिसका प्रबंधन 'अठवन' विभाग करता था।

3.2 बहमनी साम्राज्य, रायचूर दोआब संघर्ष एवं स्थापत्य कला

1347 ईस्वी में हसन गंगू ने **अलाउद्दीन हसन बहमन शाह** की उपाधि धारण कर दक्कन में बहमनी साम्राज्य (राजधानी: गुलबर्गा, बाद में शहाबुद्दीन अहमद प्रथम द्वारा बीदर स्थानांतरित) की स्थापना की। कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के मध्य स्थित उपजाऊ **रायचूर दोआब**, कृष्णा-गोदावरी डेल्टा और मराठवाड़ा के कोंकण बंदरगाहों (घोड़ों के आयात) पर नियंत्रण के लिए विजयनगर और बहमनी में निरंतर संघर्ष चला। बहमनी वजीर **महमूद गवाँ (1463–1481 ई.)** ने साम्राज्य को 8 'तरफ' (प्रांतों) में विभाजित किया और बीदर में प्रसिद्ध तीन-मंजिला मदरसा बनवाया। आगे चलकर बहमनी साम्राज्य पाँच स्वतंत्र दक्कन सल्तनतों में विभक्त हो गया: **बरार (इमादशाही)**, **बीजापुर (आदिलशाही)**, **अहमदनगर (निजामशाही)**, **गोलकुंडा (कुतुबशाही)** और **बीदर (बरीदशाही)**। 23 जनवरी 1565 को **तालीकोटा (राक्षसी-तंगड़ी या बन्नीहट्टी) के युद्ध** में बरार को छोड़कर शेष चार सल्तनतों के संघ ने रामराय को पराजित कर विजयनगर को ध्वस्त कर दिया।

स्थापत्य में विजयनगर ने **कल्याणमंडप**, **अम्मन मंदिर**, विशाल **रायगोपुरम** तथा विट्ठलस्वामी मंदिर (सप्तस्वर संगीतमय स्तंभ व पाषाण रथ) एवं हजारा राम मंदिर बनवाए, जबकि बीजापुर में मुहम्मद आदिलशाह का **गोल गुंबद** दक्कनी स्थापत्य का शिखर है।

4-नोड संरचनात्मक आरेख 3: विजयनगर साम्राज्य का प्रशासनिक एवं नायंकार-आयंगर पदानुक्रम
नोड 1: राय व परिषद
सम्राट (राय) व प्रधानी
राजा सर्वोच्च शक्ति था; उसकी सहायता के लिए महाप्रधानी के नेतृत्व में केंद्रीय मंत्रिपरिषद और 'अठवन' राजस्व विभाग था।
नोड 2: मंडलम
प्रांत व महामंडलेश्वर
साम्राज्य 6 प्रांतों (मंडलम) में विभाजित था, जहाँ राजपरिवार के राजकुमार या 'महामंडलेश्वर' गवर्नर नियुक्त होते थे।
नोड 3: अमरम क्षेत्र
नायंकार (अमर-नायक)
सैन्य कमांडरों (नायकों) को सेना रखने के बदले 'अमरम' भूमि दी जाती थी; वे राजा को वार्षिक कर व सैन्य सहायता देते थे।
नोड 4: उर / ग्राम
12 आयंगर अधिकारी
प्रत्येक ग्राम का प्रशासन 12 वंशानुगत 'आयंगर' अधिकारियों (कर्णम, तलारी आदि) द्वारा संचालित था जिन्हें 'मान्य' भूमि मिलती थी।

विश्लेषणात्मक आयाम	विजयनगर साम्राज्य (1336–1646 ई.)	बहमनी साम्राज्य एवं दक्कन सल्तनतें (1347–1527 ई.)	स्रोत लिंक
संस्थापक एवं राजधानी	हरिहर एवं बुक्का (1336 ई.); अनेगुंडी, विजयनगर (हम्पी), पेनुकोंडा व चंद्रगिरि	अलाउद्दीन हसन बहमन शाह (1347 ई.); गुलबर्गा (अहसानाबाद) एवं बीदर (मुहम्मदाबाद)	बैजूज़ आईएएस
प्रमुख राजवंश / उत्तराधिकारी राज्य	संगम, सालुव, तुलुव एवं अराविडु वंश (4 क्रमिक राजवंश)	विघटन से 5 राज्य: बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर, बरार और बीदर	एनसीईआरटी
प्रशासनिक एवं सैन्य आधार	नायंकार (अमरम भूमि) एवं ग्रामीण 12-सदस्यीय आयंगर व्यवस्था; अठवन विभाग	'तरफ' (प्रांत, प्रभारी: तरफदार); महमूद गवाँ के सुधार; अफाकी बनाम दक्कनी अमीर गुट	ई-ज्ञानकोश
स्थापत्य एवं सांस्कृतिक विरासत	विट्ठलस्वामी मंदिर, हजारा राम मंदिर, विरूपाक्ष मंदिर, कमल महल, महानवमी डिब्बा	महमूद गवाँ का मदरसा (बीदर), गोल गुंबद व इब्राहिम रौजा (बीजापुर), चारमीनार (हैदराबाद)	एनसीईआरटी

चार्ट डेटा 3.1: विजयनगर साम्राज्य (1336–1646 ई., 310 वर्ष) में राजवंशों का कालखंड प्रतिशत (%)
संगम वंश (1336–1485 ई., 149 वर्ष)
48.1%
अराविडु वंश (1570–1646 ई., 76 वर्ष)
24.5%
तुलुव वंश (1505–1570 ई., 65 वर्ष)
21.0%
सालुव वंश (1485–1505 ई., 20 वर्ष)
6.4%
विश्लेषण: विजयनगर के 310 वर्षीय इतिहास में संस्थापक संगम वंश ने सर्वाधिक 48.1% (149 वर्ष) शासन किया, जबकि कृष्णदेव राय का तुलुव वंश 21.0% कालखंड में साम्राज्य के उत्कर्ष का साक्षी बना (योग = 100.0%)।

मॉड्यूल 4: मुगल साम्राज्य — प्रशासन, मनसबदारी, जागीरदारी, स्थापत्य एवं चित्रकला

4.1 केंद्रीय व प्रांतीय प्रशासन तथा मनसबदारी एवं जागीरदारी प्रणाली

1526 ईस्वी में पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर द्वारा स्थापित मुगल साम्राज्य को **सम्राट अकबर (1556–1605 ई.)** ने एक सुसंगठित अखिल भारतीय प्रशासनिक ढाँचा प्रदान किया। अबुल फजल के 'आईन-ए-अकबरी' के अनुसार राजत्व को ईश्वरीय प्रकाश (**फर्र-ए-इजदी**) और सर्वधर्म समभाव (**सुलह-ए-कुल**) पर आधारित किया गया। केंद्रीय प्रशासन में **वकील-ए-मुतलक** के पश्चात् चार प्रमुख मंत्री थे: **दीवान-ए-कुल (वजीर)** — वित्त एवं राजस्व प्रमुख; **मीर बख्शी** — सैन्य विभाग

प्रमुख, जो मनसबदारों की नियुक्ति का प्रमाण-पत्र ('सरखत') जारी करता था; **मीर सामां** — शाही कारखानों और महल की आपूर्ति का प्रमुख; तथा **सद्र-उस-सुदूर** — धार्मिक अनुदान ('मदद-ए-माश' या 'सयूरगल') और न्याय विभाग का प्रमुख। 1580 ईस्वी में अकबर ने साम्राज्य को 12 **सूबों** (प्रांतों — औरंगजेब के काल में 21 सूबे) में बाँटा, जहाँ सूबेदार (सिपहसालार) और प्रांतीय दीवान के बीच शक्ति संतुलन स्थापित किया गया।

• **मनसबदारी व्यवस्था (जात एवं सवार):** अकबर ने अपने शासन के 19वें वर्ष (1575 ई.) में दशमलव पद्धति पर आधारित **मनसबदारी प्रणाली** प्रारंभ की, जिसने सैन्य और नागरिक दोनों सेवाओं को एकीकृत कर दिया (10 से 10,000 तक के मनसब; 5,000 से ऊपर प्रायः शहजादों के लिए)। 1595–96 ईस्वी में मनसब को दोहरे अंकों में विभाजित किया गया: **'जात'** (अधिकारी का व्यक्तिगत पद, दरबार में वरीयता और वेतन निर्धारित करता था) और **'सवार'** (उसके द्वारा रखे जाने वाले घुड़सवार सैनिकों की वास्तविक संख्या दर्शाता था)। सवार संख्या के आधार पर मनसबदारों की तीन श्रेणियाँ थीं—प्रथम श्रेणी (सवार = जात), द्वितीय श्रेणी (सवार ≥ 1/2 जात), और तृतीय श्रेणी (सवार < 1/2 जात)।

• **जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब के परिवर्तन एवं जागीरदारी संकट:** जहाँगीर ने जात का वेतन बढ़ाए बिना अधिक घुड़सवार रखने हेतु **'दु-अस्पा सिंह-अस्पा'** (दोगुने व तिगुने घोड़े) प्रथा चलाई। **शाहजहाँ के शासनकाल में 'जमा' (अनुमानित राजस्व) और 'हासिल' (वास्तविक वसूली) के अंतर** को समायोजित करने के लिए **'माहवार अनुपात' (शशमाहा/सेहमाहा)** तथा 1/3, 1/4 और 1/5 सवार रखने का नियम लागू किया गया। औरंगजेब ने आपातकालीन सैन्य खर्च के लिए 'मशरूत' (सशर्त) मनसब दिया। मनसबदारों को नकद वेतन के स्थान पर जो राजस्व-प्रदत्त भूमि दी जाती थी उसे **'जागीर' (तनख्वाह जागीर, वतन जागीर, मशरूत व अल-तमगा जागीर)** कहते थे। औरंगजेब के अंतिम वर्षों में मनसबदारों की संख्या बढ़ने और वितरण हेतु खालसा/पैबाकी भूमि कम पड़ने से गंभीर **'जागीरदारी संकट' (बेजागीरी)** उत्पन्न हुआ।

4.2 टोडरमल की दहसाला पद्धति, मुगल स्थापत्य एवं चित्रकला

राजा टोडरमल ने 1580 ईस्वी में **'आईन-ए-दहसाला' (जब्ती प्रणाली)** लागू की, जिसमें पिछले 10 वर्षों (1570–1580 ई.) के औसत उत्पादन और औसत मूल्यों के 1/3 भाग (33.3%) को राज्य के राजस्व अंश के रूप में नकद निर्धारित किया गया। भूमि को उर्वरता के आधार पर चार वर्गों में बाँटा गया: **पोलज** (प्रतिवर्ष खेती), **परौती** (1–2 वर्ष परती), **चाचर** (3–4 वर्ष परती) और **बंजर** (5 या अधिक वर्ष परती)।

मुगल स्थापत्य एवं संस्कृति में बाबर ने चारबाग पद्धति प्रारंभ की। हुमायूँ का मकबरा (हाजी बेगम द्वारा निर्मित, वास्तुकार: मिर्जा गियास बेग) भारत में **संगमरमर के दोहरे गुंबद** और चारबाग शैली का प्रथम भव्य स्मारक है। अकबर ने लाल बलुआ पत्थर से आगरा का किला और फतेहपुर सीकरी (बुलंद दरवाज़ा, पंचमहल, दीवान-ए-खास, शेख सलीम चिश्ती की दरगाह) बनवाए। जहाँगीर के काल में **एतमादुद्दौला के मकबरे (आगरा)** में सर्वप्रथम पूर्णतः श्वेत संगमरमर और **'पित्रा दुरा' (संगमरमर में बहुमूल्य रत्नों की जड़ावट)** का प्रयोग हुआ। शाहजहाँ का काल स्थापत्य का स्वर्णयुग था (ताजमहल — मुख्य वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी, दिल्ली का लाल किला व जामा मस्जिद)। **मुगलकालीन चित्रकला** में हुमायूँ ने मीर सैयद अली और अब्दुस्समद की सहायता से 'दास्तान-ए-अमीर हम्जा' (हम्जानामा) प्रारंभ कराया, अकबर ने दशवंत और बसावन के साथ चित्रशाला व 'रज्मनामा' (महाभारत का अनुवाद) तैयार कराया, तथा जहाँगीर के अधीन उस्ताद मंसूर (पक्षी व प्रकृति चित्रकार) और अबुल हसन (छवि चित्रकार) ने मुगल चित्रकला को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया।

4-नोड संरचनात्मक आरेख 4: मुगल साम्राज्य की प्रशासनिक एवं मनसबदारी-जागीरदारी कार्यप्रणाली
नोड 1: बादशाह व केंद्र
सम्राट, दीवान व मीर बख्शी
बादशाह सर्वोच्च सत्ता था; दीवान-ए-कुल वित्त/जागीर आवंटन और मीर बख्शी सैन्य मनसब व 'सरखत' का नियंत्रण करता था।
नोड 2: मनसब निर्धारण
जात एवं सवार पद
'जात' से अधिकारी का वेतन व पदानुक्रम तथा 'सवार' से उसके द्वारा रखे जाने वाले घुड़सवार दस्ता (दाग व चेहरा) तय होता था।
नोड 3: जागीर आवंटन
जमा एवं हासिल आकलन
वेतन के बदले 'तनख्वाह जागीर' (3–4 वर्ष में स्थानांतरणीय) या राजपूत राजाओं को वंशानुगत 'वतन जागीर' आवंटित की जाती थी।
नोड 4: दहसाला वसूली
परगना, आमिल व जमींदार
आमिलगुजार, कानूनगो और जमींदार द्वारा पोलज/परौती भूमि से 10 वर्षीय दहसाला दर (1/3 उपज) पर राजस्व संग्रह।

मुगल सम्राट एवं काल	मनसबदारी एवं प्रशासनिक सुधार	प्रमुख स्थापत्य कला स्मारक	चित्रकला एवं प्रमुख चित्रकार	स्रोत लिंक

बाबर एवं हुमायूँ (1526–1556 ई.)	पादशाह की उपाधि, तोपखाने व तुलुगमा युद्ध पद्धति का प्रयोग, दीनपनाह प्रशासन	काबुली बाग मस्जिद (पानीपत), दीनपनाह (दिल्ली), हुमायूँ का मकबरा (1565 ई.)	मीर सैयद अली व अब्दुस्समद; हम्जानामा की शुरुआत	शोध पत्रिका
अकबर (1556–1605 ई.)	जात-सवार मनसबदारी (1575/1595), दहसाला पद्धति (1580), 12 सूबों का गठन, सुलह-ए-कुल	आगरा किला, फतेहपुर सीकरी, बुलंद दरवाज़ा, पंचमहल, इलाहाबाद व लाहौर दुर्ग	दशवंत, बसावन, मीर सैयद अली; रज्मनामा व तूतीनामा चित्रण	बीएन कॉलेज
जहाँगीर (1605–1627 ई.)	'दु-अस्पा सिंह-अस्पा' मनसब, न्याय की जंजीर, 12 राजकीय अध्यादेश (दस्तूर-उल-अमल)	अकबर का मकबरा (सिकंदरा — गुंबद विहीन), एतमादुद्दौला का मकबरा (प्रथम पित्रा दुरा)	उस्ताद मंसूर (नादिर-उल-अस्र), अबुल हसन (नादिर-उज-जमां), बिशनदास	IUC अकादमी
शाहजहाँ एवं औरंगजेब (1627–1707 ई.)	माहवार अनुपात (शशमाहा/सेहमाहा), 1/3–1/5 सवार नियम, मशरूत मनसब, जागीरदारी संकट	ताजमहल, लाल किला (दिल्ली), मोती मस्जिद (आगरा व दिल्ली), बीबी का मकबरा (औरंगाबाद)	मीर हाशिम, फकीर उल्लाह; औरंगजेब द्वारा दरबारी चित्रशाला बंद	ई-चेतना

चार्ट डेटा 4.1: मुगल साम्राज्य (166 संप्रभु शासन-वर्ष) में 6 प्रमुख सम्राटों का शासन अनुपात (%)
सम्राट अकबर (1556–1605 ई., 49 वर्ष)
29.5%
औरंगजेब आलमगीर (1658–1707 ई., 49 वर्ष)
29.5%
शाहजहाँ (1628–1658 ई., 30 वर्ष)
18.1%
जहाँगीर (1605–1627 ई., 22 वर्ष)
13.3%
हुमायूँ (1530–40 व 1555–56 ई., 12 वर्ष)
7.2%
बाबर (1526–1530 ई., 4 वर्ष)
2.4%
विश्लेषण: 1526 से 1707 ईस्वी के मध्य सूर्यवंश/सूर अंतराल (1540–1555 ई.) को छोड़कर मुगलों के 166 संप्रभु वर्षों में अकबर और औरंगजेब ने संयुक्त रूप से 59.0% कालखंड तक शासन किया (योग = 100.0%)।

मॉड्यूल 5: मराठा साम्राज्य — छत्रपति शिवाजी का प्रशासन एवं अष्टप्रधान मंडल

5.1 स्वराज्य का उदय एवं अष्टप्रधान मंत्रिपरिषद

सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में **छत्रपति शिवाजी महाराज (1630–1680 ई.)** ने दक्कन की भौगोलिक परिस्थितियों, दुर्ग श्रृंखलाओं और मावल युवकों को संगठित कर एक संप्रभु 'हिंदवी स्वराज्य' की स्थापना की। 1665 ईस्वी में मिर्जा राजा जयसिंह के साथ **पुरंदर की संधि** (जिसमें 23 किले मुगलों को सौंपे गए और 12 किले शिवाजी के पास रहे) के पश्चात् 1674 ईस्वी में काशी के विद्वान गंगाभट्ट द्वारा **रायगढ़ दुर्ग** में उनका विधिवत राज्याभिषेक संपन्न हुआ।

शिवाजी महाराज के केंद्रीय प्रशासन की धुरी आठ मंत्रियों की सलाहकार परिषद 'अष्टप्रधान मंडल' थी। अष्टप्रधान किसी आधुनिक मंत्रिमंडल की भाँति सामूहिक उत्तरदायित्व वाली संस्था नहीं थी, बल्कि प्रत्येक मंत्री व्यक्तिगत रूप से छत्रपति के प्रति उत्तरदायी था और कोई भी पद वंशानुगत नहीं था। **पंडितराव और न्यायाधीश को छोड़कर शेष सभी 6 मंत्रियों को सैन्य अभियानों का नेतृत्व करना अनिवार्य था।** बाद में छत्रपति शाहू महाराज (1713 ई.) के काल से बालाजी विश्वनाथ और बाजीराव प्रथम के अधीन पेशवा का पद वंशानुगत और वास्तविक सत्ता का केंद्र बन गया।

5.2 राजस्व प्रणाली (काठी पैमाइश, चौथ एवं सरदेशमुखी) तथा सैन्य व दुर्ग संगठन

मराठा स्वराज्य की राजस्व एवं सैन्य व्यवस्था मलिक अंबर की रैयतवाड़ी पद्धति से प्रेरित थी। 1679 ईस्वी में अन्नाजी दत्तो ने भूमि सर्वेक्षण कराकर माप की इकाई के रूप में **'काठी' (गट्ठा)** का प्रयोग किया (20 काठी = 1 बीघा, 120 बीघा = 1 चावर)। प्रारंभ में भू-राजस्व उपज का 33% था, जिसे अन्य स्थानीय करों व

चुंगियों को समाप्त कर **40% निर्धारित** किया गया। किसानों के साथ राज्य ने सीधा संपर्क स्थापित कर 'देशमुख' और 'देशपांडे' जैसे वंशानुगत मध्यस्थों के विशेषाधिकार सीमित कर दिए।

- **चौथ (25% या 1/4 भाग):** यह मराठा 'स्वराज्य' की सीमा से बाहर स्थित मुगल या दक्कनी क्षेत्रों ('मुल्क-ए-कदीम' के बाह्य प्रदेशों) से वसूला जाने वाला सैन्य कर था, जो उस क्षेत्र के कुल राजस्व का **एक-चौथाई (25%)** होता था। इसके बदले में मराठे उस क्षेत्र पर आक्रमण न करने और बाह्य आक्रमण से सुरक्षा का आश्वासन देते थे।
- **सरदेशमुखी (10% या 1/10 भाग):** शिवाजी महाराज ने स्वयं को महाराष्ट्र के समस्त देशमुखों का सर्वोच्च प्रमुख (**'सरदेशमुख'**) घोषित किया और इस वंशानुगत कानूनी अधिकार के आधार पर कुल राजस्व के ऊपर **10% अतिरिक्त कर** के रूप में सरदेशमुखी वसूल की।
- **सैन्य एवं दुर्ग प्रशासन:** घुड़सवार सेना ('पागा') दो भागों में विभाजित थी—**'बारगीर'** (वे स्थायी शाही घुड़सवार जिन्हें राज्य की ओर से घोड़े व शस्त्र दिए जाते थे) और **'सिलहदार'** (वे स्वतंत्र सैनिक जो अपना घोड़ा और हथियार स्वयं लाते थे)। 25 घुड़सवारों पर एक हवलदार, 5 हवलदारों पर एक जुमलादार और 10 जुमलादारों पर एक हजारी होता था। 240 से अधिक दुर्गों के नियंत्रण हेतु प्रत्येक किले में समान दर्जे के तीन अधिकारी नियुक्त किए जाते थे ताकि कोई एक गद्दारी न कर सके: **हवलदार** (मराठा जाति — दुर्ग की सुरक्षा व चाबियों का प्रभारी), **सरे-नौबत** (मराठा — दुर्ग की सेना का प्रमुख) और **सबनीस** (ब्राह्मण — नागरिक प्रशासन व लेखा-जोखा)।

4-नोड संरचनात्मक आरेख 5: मराठा स्वराज्य का प्रशासनिक, राजस्व एवं दुर्ग पदानुक्रम
नोड 1: छत्रपति व केंद्र
छत्रपति एवं अष्टप्रधान
छत्रपति सर्वोच्च संप्रभु शासक थे; पेशवा, अमात्य व सेनापति सहित 8 गैर-वंशानुगत मंत्री केंद्रीय विभागों का संचालन करते थे।
नोड 2: प्रांत (सूबा)
सर-कारकून व सूबेदार
स्वराज्य को उत्तरी, दक्षिणी व दक्षिण-पूर्वी प्रांतों में बाँटा गया था, जहाँ 'सर-सूबेदार' या 'मोकासादार' प्रशासन देखते थे।
नोड 3: तर्फ व मौजा
हवलदार, कारकून व पटेल
प्रांत 'परगना/तर्फ' (कारकून) और 'मौजा' (गाँव) में विभक्त थे, जहाँ पटेल (पाटिल) व कुलकर्णी काठी पैमाइश से कर वसूलते थे।
नोड 4: दुर्ग त्रयी
हवलदार, सबनीस, सरे-नौबत
प्रत्येक किले में शक्ति संतुलन हेतु तीन समकक्ष अधिकारी (हवलदार, सबनीस, सरे-नौबत) तथा कारखानेदार (रसद प्रभारी) नियुक्त थे।

अष्टप्रधान पदनाम	प्रशासनिक उपाधि / विभाग	प्रमुख राजकीय उत्तरदायित्व एवं सैन्य भूमिका	स्रोत लिंक
1. पेशवा (मुख्य प्रधान)	प्रधानमंत्री (सामान्य प्रशासन)	संपूर्ण राज्य प्रशासन व अर्थव्यवस्था की देखरेख; राजा की अनुपस्थिति में राजकीय मुहर लगाना व सैन्य नेतृत्व	विकिपीडिया
2. अमात्य (मजूमदार)	वित्त एवं राजस्व मंत्री	राज्य की आय-व्यय के खातों की जाँच करना और महालेखाकार के रूप में राजस्व विवरण प्रमाणित करना	मराठी विकि
3. वाकियानवीस (मंत्री)	गृह एवं गुप्तचर मंत्री	राजा की दैनिक सुरक्षा, दरबारी कार्यवाही का अभिलेखन, गुप्तचर तंत्र और राजमहल के आंतरिक मामलों का प्रबंधन	महासराव नोट्स
4. चिटनीस (सुरुनवीस / सचिव)	राजकीय पत्राचार सचिव	शाही पत्रों की भाषा-शैली को शुद्ध करना तथा परगने और महलों के हिसाब-किताब की जाँच करना	विकिपीडिया
5. सुमंत (दबीर)	विदेश मंत्री	अन्य राज्यों से संधि-विग्रह, विदेशी राजदूतों का स्वागत और बाह्य कूटनीतिक मामलों में छत्रपति को परामर्श देना	विकिपीडिया
6. सरे-नौबत (सेनापति)	सर्वोच्च सैन्य कमांडर	सैनिकों की भर्ती, संगठन, प्रशिक्षण, बारगीर व सिलहदार घुड़सवारों का अनुशासन तथा युद्ध संचालन	महासराव नोट्स
7. पंडितराव (दानाध्यक्ष)	धार्मिक एवं दान मामलों के प्रमुख	विद्वानों व मंदिरों को अनुदान, धार्मिक अनुष्ठानों की तिथि तय करना (युद्ध में भाग लेने से मुक्त)	विकिपीडिया

8. न्यायाधीश	मुख्य न्यायिक अधिकारी	हिंदू धर्मशास्त्रों व परंपराओं के आधार पर दीवानी और फौजदारी मुकदमों की सुनवाई (युद्ध से मुक्त)	विकिपीडिया

चार्ट डेटा 5.1: मराठा राजस्व एवं समकालीन कराधान दरों का तुलनात्मक प्रतिशत (%)
अन्नाजी दत्तो संशोधित भू-राजस्व दर
40.0%
प्रारंभिक शिवकालीन / मुगल जब्ती दर (1/3)
33.3%
मराठा 'चौथ' सैन्य सुरक्षा कर (1/4 भाग)
25.0%
मराठा 'सरदेशमुखी' वंशानुगत हक (1/10 भाग)
10.0%
विश्लेषण: स्वराज्य के भीतर किसानों से काठी सर्वेक्षण द्वारा 40% भू-राजस्व लिया जाता था, जबकि बाह्य क्षेत्रों से 25% चौथ और 10% सरदेशमुखी वसूल की जाती थी।

मॉड्यूल 6: भक्ति एवं सूफी आंदोलन — दार्शनिक मत, संत परंपरा एवं सिलसिले

6.1 भक्ति आंदोलन का उद्भव, वेदांत के पंच दर्शन एवं निर्गुण-सगुण धारा

एनसीईआरटी के भक्ति-सूफी परंपरा अध्ययन के अनुसार, भक्ति आंदोलन का प्रारंभ छठी से नौवीं शताब्दी के मध्य दक्षिण भारत (तमिलनाडु) में विष्णु भक्त **आलवार संतों (संख्या: 12, संकलन: 'नलईरा दिव्यप्रबंधम' — तमिल वेद, एकमात्र महिला संत: अंडाल)** और शिव भक्त **नयनार संतों (संख्या: 63, संकलन: 'तिरुमुरै/तेवरम' — अपार, संबंदर, सुंदरार व मणिक्कवाचकर)** द्वारा हुआ। आठवीं शताब्दी में केरल के **आदि शंकराचार्य** ने 'अद्वैतवाद' (ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या) का प्रतिपादन किया और भारत की चारों दिशाओं में चार मठों (ज्योतिर्मठ, गोवर्धन मठ, शारदा मठ, शृंगेरी मठ) की स्थापना की। बारहवीं शताब्दी में कर्नाटक में बसवन्ना ने जाति-विरोधी **वीरशैव (लिंगायत)** आंदोलन चलाया।

चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी में **स्वामी रामानंद** भक्ति को दक्षिण से उत्तर भारत लाए और संस्कृत के स्थान पर जनभाषा हिंदी में उपदेश दिए। उत्तर भारत में भक्ति दो प्रमुख धाराओं में प्रवाहित हुई: **निर्गुण भक्ति (ज्ञानाश्रयी शाखा)**—जिसमें कबीरदास ('बीजक' — साखी, सबद, रमैनी), गुरु नानक देव (सिख धर्म के प्रवर्तक, लंगर व संगत प्रथा), संत रैदास (रायदास) और दादू दयाल ('निपख' आंदोलन) ने निराकार ईश्वर की उपासना और जातिप्रथा व मूर्तिपूजा के खंडन पर बल दिया; तथा **सगुण भक्ति (प्रेमाश्रयी/राम एवं कृष्ण भक्ति शाखा)**—जिसमें गोस्वामी तुलसीदास ('रामचरितमानस'), सूरदास ('सूरसागर', अष्टछाप के प्रमुख कवि), मीराबाई, चैतन्य महाप्रभु (बंगाल में संकीर्तन प्रथा व अचिंत्य भेदाभेद) और शंकरदेव (असम में 'एकशरण संप्रदाय' व सत्रिया नृत्य) ने साकार अवतारों की आराधना की। महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ और तुकाराम ने पंढरपुर के विठोबा को केंद्र बनाकर **'वारकरी संप्रदाय'** तथा समर्थ रामदास ('दासबोध') ने **'धरकरी संप्रदाय'** को लोकप्रिय बनाया।

6.2 सूफी आंदोलन एवं प्रमुख सिलसिले (चिश्ती, सुहरावर्दी, कादिरी व नक्शबंदी)

सूफीवाद (तसव्वुफ) इस्लाम के भीतर एक रहस्यवादी और उदारवादी आंदोलन था, जो पीर (गुरु) और मुरीद (शिष्य) की परंपरा, खानकाह (आश्रम) जीवन, समां (संगीत सभा) और जियारत (दरगाह यात्रा) पर आधारित था। अबुल फजल ने आईन-ए-अकबरी में 14 सूफी सिलसिलों का उल्लेख किया है, जिन्हें शरिया के पालन के आधार पर **'बा-शरा'** (इस्लामी कानून मानने वाले) और **'बे-शरा'** (घुमक्कड़ कलंदर, मदारी आदि) में बाँटा गया था।

- **चिश्ती सिलसिला:** भारत में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती (1192 ई., दरगाह: अजमेर शरीफ) द्वारा स्थापित यह सबसे लोकप्रिय सिलसिला था। चिश्ती संतों ने राजकीय संरक्षण और धन से दूरी बनाए रखी। प्रमुख संतों में कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी (दिल्ली), बाबा फरीद (गंज-ए-शकर — जिनकी रचनाएँ गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित हैं), **शेख निजामुद्दीन औलिया** ('महबूब-ए-इलाही', जिन्होंने 7 सुल्तानों का काल देखा और गियासुद्दीन तुगलक के संदर्भ में कहा: 'हुनूज दिल्ली दूर अस्त') तथा शेख नसीरुद्दीन महमूद ('चिराग-ए-देहलवी') शामिल थे।

- **सुहरावर्दी, कादिरी एवं नक्शबंदी सिलसिले:** इग्नू के सूफी परंपरा अध्ययन के अनुसार, मुल्तान और सिंध में बहाउद्दीन जकारिया द्वारा स्थापित **सुहरावर्दी सिलसिले** के संतों ने राजकीय पद ('शेख-उल-इस्लाम') और सरकारी अनुदान स्वीकार किए। **कादिरी सिलसिले** के प्रमुख संत मियाँ मीर (जिन्होंने अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की नींव रखी) और शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र **दारा शिकोह** ('मज्म-उल-बहरैन' व 52 उपनिषदों का 'सिर्र-ए-अकबर' नाम से फारसी अनुवाद) थे। इसके विपरीत, ख्वाजा बाकी बिल्लाह और **शेख अहमद सरहिंदी ('मुजद्दिद अलिफ सानी')** का **नक्शबंदी सिलसिला** अत्यंत कट्टरवादी था, जिसने संगीत (समां) और अकबर की उदार नीतियों का विरोध किया।

4-नोड संरचनात्मक आरेख 6: मध्यकालीन धार्मिक-सांस्कृतिक आंदोलन का चतुष्कोणीय प्रवाह
नोड 1: दक्षिण से उद्भव
आलवार, नयनार व आचार्य
तमिलनाडु के आलवार-नयनार संतों तथा शंकराचार्य व रामानुजाचार्य के वेदांत दर्शनों से भक्ति आंदोलन की सैद्धांतिक नींव पड़ी।
नोड 2: निर्गुण धारा
कबीर, नानक व रैदास
रामानंद के शिष्यों द्वारा उत्तर भारत में निराकार ब्रह्म की उपासना, जातिवाद विरोध तथा हिंदू-मुस्लिम समन्वय का प्रसार।
नोड 3: सगुण धारा
तुलसी, सूर, मीरा व चैतन्य
ब्रज, अवधी, बांग्ला और मराठी जैसी क्षेत्रीय लोकभाषाओं में राम-कृष्ण काव्य, संकीर्तन और वारकरी संप्रदाय का उत्कर्ष।
नोड 4: सूफी समन्वय
चिश्ती खानकाह व वहदत
इब्न-अल-अरबी के 'वहदत-उल-वजूद' (ईश्वर की एकता), चिश्ती खानकाहों, समां संगीत और दारा शिकोह के उपनिषद अनुवाद से साझा संस्कृति।

दार्शनिक मत / सूफी सिलसिला	प्रवर्तक आचार्य / भारत में संस्थापक	मूल दार्शनिक सिद्धांत एवं प्रमुख विशेषताएँ	स्रोत लिंक
अद्वैतवाद (8वीं शती)	आदि शंकराचार्य (केरल)	ब्रह्म ही एकमात्र परम सत्य है, जगत मिथ्या (माया) है तथा जीव और ब्रह्म में कोई तात्विक भेद नहीं है; ज्ञानमार्ग पर बल।	राजआरएएस
विशिष्टाद्वैतवाद (11वीं शती)	रामानुजाचार्य (श्रीसंप्रदाय)	ब्रह्म (ईश्वर) सगुण है तथा चित् (जीव) और अचित् (जगत) ब्रह्म के ही विशिष्ट अंग हैं; ज्ञान से अधिक भक्ति व प्रपत्ति को महत्व।	IUC अकादमी
द्वैतवाद एवं द्वैताद्वैतवाद	माध्वाचार्य (ब्रह्म संप्रदाय) व निम्बार्काचार्य (सनकादि)	माध्वाचार्य: ईश्वर, जीव और जगत पूर्णत: भिन्न (द्वैत) हैं; निम्बार्क: जीव व जगत ब्रह्म से भिन्न होते हुए भी उस पर आश्रित (भेदाभेद) हैं।	राजआरएएस
शुद्धाद्वैतवाद (15वीं शती)	वल्लभाचार्य (रुद्र संप्रदाय / पुष्टिमार्ग)	माया के संबंध से रहित शुद्ध ब्रह्म ही जगत का कारण है; भगवान श्रीकृष्ण के अनुग्रह ('पुष्टिमार्ग') से ही मोक्ष संभव है।	विकिपीडिया
चिश्ती बनाम सुहरावर्दी सिलसिला	मुइनुद्दीन चिश्ती (अजमेर) व बहाउद्दीन जकारिया (मुल्तान)	चिश्ती: राजकीय संरक्षण का त्याग, गरीबी, समां (संगीत) व जनसेवा; सुहरावर्दी: राजकीय पदों और धन का स्वीकार व रूढ़िवादिता।	ई-ज्ञानकोश
कादिरी बनाम नक्शबंदी सिलसिला	अब्दुल कादिर जिलानी (मियाँ मीर) व ख्वाजा बाकी बिल्लाह	कादिरी: वहदत-उल-वजूद (उदार समन्वय, दारा शिकोह); नक्शबंदी: वहदत-उल-शुहूद (शेख अहमद सरहिंदी, संगीत विरोधी व कट्टर)।	एनसीईआरटी

चार्ट डेटा 6.1: भक्ति एवं सूफी आंदोलन के उप-विषयों का विश्लेषणात्मक भार प्रतिशत (%)
निर्गुण व सगुण भक्ति संत परंपरा
34.0%
वेदांत के 5 दार्शनिक मत (अद्वैत आदि)
26.0%
चिश्ती व अन्य प्रमुख सूफी सिलसिले
24.0%
सूफी शब्दावली एवं क्षेत्रीय भक्ति साहित्य
16.0%
विश्लेषण: सिविल सेवा परीक्षाओं के सांस्कृतिक इतिहास खंड में संत-दर्शन (60.0%) और सूफी सिलसिले व साहित्य (40.0%) का संतुलित अनुपात रहता है (कुल योग = 100.0%)।

विशेष खंड: मध्यकालीन भारत के इतिहास हेतु 10 अद्वितीय स्मृति सूत्र

प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा में राजवंशों के कालानुक्रम, प्रशासनिक पदों, दार्शनिक मतों और विदेशी यात्रियों को बिना किसी भ्रम के तुरंत याद रखने के लिए 10 मौलिक और कॉपीराइट-मुक्त हिंदी स्मृति ट्रिक्स नीचे दी गई हैं:

1. कन्नौज का त्रिपक्षीय संघर्ष एवं अंतिम विजेता
सूत्र: "कन्नौज के पा-प-रा में प्रतिहार जीता"
व्याख्या: कन्नौज के लिए **पा** (पाल वंश - बंगाल), **प** (गुर्जर-प्रतिहार वंश - राजपूताना/मालवा) और **रा** (राष्ट्रकूट वंश - दक्कन) के बीच संघर्ष हुआ, जिसमें अंततः **प्रतिहार वंश** (मिहिरभोज/नागभट्ट द्वितीय) विजयी रहा।
2. चोल कालीन स्थानीय स्वायत्त सभाओं की पहचान
सूत्र: "सामान्य उर, ब्राह्मण सभा, व्यापारी नगर में बसे"
व्याख्या: उर = सामान्य (गैर-ब्राह्मण) करदाता किसानों की सभा; **सभा / महासभा** = ब्रह्मदेय/अग्रहार गाँवों के ब्राह्मणों की सभा; **नगरम** = व्यापारिक व वणिक समुदाय की प्रशासनिक परिषद।
3. दिल्ली सल्तनत के 5 राजवंशों का सही कालानुक्रम (1206–1526 ई.)
सूत्र: "गुलाब खिले तो सुगंध लो"
व्याख्या: गुलाब = गुलाम/मामलुक वंश (1206–1290), **खिले** = खिलजी वंश (1290–1320), **तो** = तुगलक वंश (1320–1414), **सुगंध** = सैयद वंश (1414–1451), **लो** = लोदी वंश (1451–1526)।
4. दिल्ली सल्तनत के प्रमुख विभाग एवं उनके संस्थापक सुल्तान
सूत्र: "बलबन की अर्जी, अलाउद्दीन का रियासती मुस्तखराज, मुहम्मद की कोही, फिरोज की खैरात-बंदगी"
व्याख्या: बलबन = दीवान-ए-अर्ज (सैन्य); **अलाउद्दीन खिलजी** = दीवान-ए-रियासत (बाज़ार) व दीवान-ए-मुस्तखराज (बकाया राजस्व); **मुहम्मद बिन तुगलक** = दीवान-ए-अमीर कोही (कृषि); **फिरोज तुगलक** = दीवान-ए-खैरात (दान) व दीवान-ए-बंदगान (दास)।
5. विजयनगर साम्राज्य के 4 राजवंशों और उनके संस्थापकों का क्रम
सूत्र: "संगम के हरि-बुक ने सालुव नरसिंह और तुलुव वीर को अराविडु तिरुमल भेजा"
व्याख्या: 1. **संगम वंश** (हरिहर व बुक्का, 1336 ई.) → 2. **सालुव वंश** (सालुव नरसिंह, 1485 ई.) → 3. **तुलुव वंश** (वीर नरसिंह, 1505 ई.) → 4. **अराविडु वंश** (तिरुमल, 1570 ई.)।
6. विजयनगर आने वाले प्रमुख विदेशी यात्री एवं समकालीन शासक
सूत्र: "देव प्रथम के निकोलो, देव द्वितीय के रज्जाक, कृष्ण के बारबोसा-पायस, अच्युत के नूनिज"
व्याख्या: देवराय प्रथम = निकोलो कोंटी (इटली); **देवराय द्वितीय** = अब्दुर्रज्जाक (फारस); **कृष्णदेव राय** = दुआर्ते बारबोसा एवं डोमिंगो पायस (पुर्तगाल); **अच्युतदेव राय** = फर्नाओ नूनिज (पुर्तगाल)।
7. बहमनी साम्राज्य से टूटे 5 दक्कन राज्यों के राजवंश एवं संस्थापक
सूत्र: "बीजा के आदिल यूसुफ, अहमद के निजाम मलिक, बरार के इमाद फतह, गोल के कुतुब कुली, बीदर के बरीद अमीर"
व्याख्या: बीजापुर = आदिलशाही (यूसुफ आदिलशाह); **अहमदनगर** = निजामशाही (मलिक अहमद); **बरार** = इमादशाही (फतहउल्लाह इमादशाह); **गोलकुंडा** = कुतुबशाही (कुली कुतुबशाह); **बीदर** = बरीदशाही (अमीर अली बरीद)।
8. 6 महान मुगल सम्राटों एवं उनके मकबरों के स्थान का क्रम
सूत्र: "बा-हु-अ-ज-शा-औ के मकबरे: काबुल-दिल्ली-सिकंदरा, लाहौर-आगरा-औरंगाबाद"
व्याख्या: बाबर = काबुल; **हुमायूँ** = दिल्ली; **अकबर** = सिकंदरा (आगरा); **जहाँगीर** = शाहदरा (लाहौर); **शाहजहाँ** = आगरा (ताजमहल); **औरंगजेब** = खुल्दाबाद (छत्रपति संभाजीनगर / औरंगाबाद)।
9. शिवाजी के अष्टप्रधान मंडल के 8 मंत्री एवं उनके कार्य
सूत्र: "पेशवा प्रधान, अमात्य धनवान, मंत्री घर-ध्यान, सचिव पत्र-मान, सुमंत विदेश-जान, सेनापति रण-शान, पंडित-न्यायाधीश युद्ध से अनजान"
व्याख्या: पेशवा (प्रधानमंत्री), **अमात्य** (वित्त), **मंत्री/वाकियानवीस** (गृह/दरबार), **सचिव/चिटनीस** (पत्राचार), **सुमंत/दबीर** (विदेश), **सेनापति/सरे-नौबत** (सेना), तथा **पंडितराव** (धर्म) व **न्यायाधीश** (न्याय) — जो युद्ध में नहीं जाते थे।
10. वेदांत के 5 प्रमुख भक्ति दार्शनिक मत एवं उनके प्रवर्तक आचार्य
सूत्र: "शंकर अद्वैत, रामानुज विशिष्ट, माध्व द्वैत में निम्बार्क द्वैताद्वैत, वल्लभ शुद्ध पुष्ट"
व्याख्या: शंकराचार्य = अद्वैतवाद; **रामानुजाचार्य** = विशिष्टाद्वैतवाद; **माध्वाचार्य** = द्वैतवाद; **निम्बार्काचार्य** = द्वैताद्वैतवाद (भेदाभेद); **वल्लभाचार्य** = शुद्धाद्वैतवाद (पुष्टिमार्ग)।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास (लगभग 750 ई. से 1707/1757 ई. तक) को दो प्रमुख चरणों में विभाजित किया जाता है: **पूर्व-मध्यकाल (750–1200 ई.)**, जिसमें कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष, राजपूत राज्यों का उत्कर्ष और चोल साम्राज्य का चरमोत्कर्ष देखा गया; तथा **उत्तर-मध्यकाल (1206–1707 ई.)**, जिसमें दिल्ली सल्तनत, विजयनगर-बहमनी साम्राज्य, भक्ति एवं सूफी आंदोलन, मुगल साम्राज्य और छत्रपति शिवाजी महाराज के नेतृत्व में मराठा शक्ति का उदय हुआ (NCERT Tracing Changes; NCERT Delhi 12th to 15th Century; NCERT The Mughals)। इस खंड में छह विस्तृत अध्याय-स्तरीय तुलनात्मक सारणियों, विशेष तथ्य पेटिकाओं, परीक्षा सतर्कता बिंदुओं, स्मृति सूत्रों तथा 40 विस्तृत हल प्रश्नों (प्रश्न 41 से 80) का समावेश किया गया है (ASI World Heritage; IUC Academy)।

अध्याय 1: पूर्व-मध्यकालीन भारत, त्रिपक्षीय संघर्ष एवं प्रमुख राजपूत राजवंश (750–1200 ई.)

सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात उत्तर भारत में राजनीतिक शक्ति का केंद्र पाटलिपुत्र के स्थान पर समृद्ध गंगा-यमुना दोआब में स्थित **कन्नौज (कान्यकुब्ज / महोदय श्री)** बन गया। आठवीं से दसवीं शताब्दी के मध्य कन्नौज पर आधिपत्य के लिए पश्चिमी भारत के **गुर्जर-प्रतिहार**, पूर्वी भारत (बंगाल-बिहार) के **पाल** और दक्कन के **राष्ट्रकूट** राजवंशों के बीच लगभग दो सौ वर्षों तक **'त्रिपक्षीय संघर्ष'** चला (NCERT Empires and Kingdoms; NCERT Kings and Kingdoms)।

सारणी 1.1 (भाग 2): त्रिपक्षीय संघर्ष की शक्तियाँ, राजपूत राजवंश एवं तुर्क आक्रमणों का तुलनात्मक विवरण

राजवंश / राजनीतिक शक्ति	राजधानी एवं मुख्य क्षेत्र	प्रमुख शासक	प्रमुख स्थापत्य, साहित्यिक कृतियाँ एवं ऐतिहासिक युद्ध	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
गुर्जर-प्रतिहार वंश	उज्जयिनी एवं तत्पश्चात **कन्नौज** (उत्तर एवं पश्चिमी भारत)	नागभट्ट प्रथम (संस्थापक — अरबों को रोका); वत्सराज (त्रिपक्षीय संघर्ष प्रारंभ); नागभट्ट द्वितीय (कन्नौज को राजधानी बनाया); **मिहिर भोज ('आदिवराह' एवं 'प्रभास')**; महेंद्रपाल प्रथम; महिपाल प्रथम	मिहिर भोज की ग्वालियर प्रशस्ति; महेंद्रपाल व महिपाल के दरबार में संस्कृत कवि **राजशेखर** ('कर्पूरमंजरी', 'काव्यमीमांसा', 'विद्धशालभंजिका' व 'बालरामायण'); बगदाद के यात्री अल-मसूदी का आगमन; त्रिपक्षीय संघर्ष में अंतिम रूप से कन्नौज पर प्रतिहारों का अधिकार	NCERT Empires and Kingdoms
शाकंभरी एवं अजमेर के चौहान (चाहमान) वंश	अहिच्छत्रपुर (नागौर), अजमेर एवं दिल्ली (इंद्रप्रस्थ)	वासुदेव (संस्थापक); अजयराज (अजमेर नगर बसाया); **विग्रहराज चतुर्थ ('बीसलदेव')**; **पृथ्वीराज तृतीय ('राय पिथौरा', 1177–1192 ई.)**	विग्रहराज चतुर्थ ने संस्कृत नाटक **'हरकेलि'** लिखा (जिसके अंश अजमेर के अढ़ाई दिन का झोपड़ा की दीवारों पर उत्कीर्ण हैं) और दरबारी सोमदेव ने 'ललित विग्रहराज' लिखा; पृथ्वीराज तृतीय के दरबार में **चंदबरदाई** ('पृथ्वीराज रासो') व **जयानक** ('पृथ्वीराज विजय'); **तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई. — पृथ्वीराज विजयी)** एवं **द्वितीय युद्ध (1192 ई. — मुहम्मद गोरी विजयी)**	NCERT Kings and Kingdoms
जेजाकभुक्ति (बुंदेलखंड) के चंदेल वंश	खजुराहो एवं महोबा (कालिंजर दुर्ग)	नन्नुक (संस्थापक); यशोवर्मन; **धंगदेव**; गंडदेव; **विद्याधर**; कीर्तिवर्मन; परमार्दिदेव (आल्हा और ऊदल सेनानायक)	**खजुराहो के भव्य मंदिर समूह** (ASI World Heritage) — यशोवर्मन का लक्ष्मण (चतुर्भुज) मंदिर, धंग का विश्वनाथ मंदिर व विद्याधर का **कंदरिया महादेव मंदिर**; कीर्तिवर्मन के दरबारी कृष्ण मिश्र ने प्रबोधात्मक नाटक 'प्रबोधचंद्रोदय' लिखा	ASI World Heritage
मालवा के परमार एवं कन्नौज के गहड़वाल	**परमार:** उज्जयिनी व धारा नगरी; **गहड़वाल:** वाराणसी व कन्नौज	**परमार:** उपेंद्र/कृष्णराज, मुंज ('वाक्पति द्वितीय'), **राजा भोज (1000–1055 ई.)**; **गहड़वाल:** चंद्रदेव (संस्थापक), गोविंदचंद्र, **जयचंद्र**	राजा भोज ने धारा में 'सरस्वती कंठाभरण' (भोजशाला) व भोपाल में भोजताल बनवाया तथा 'समरांगण सूत्रधार' (वास्तुशास्त्र) व 'आयुर्वेद सर्वस्व' लिखा; गहड़वालों ने तुर्क आक्रमण से रक्षा हेतु **'तुरुष्क दंड'** कर लगाया; **1194 ई. के चंदावर युद्ध** में मुहम्मद गोरी ने जयचंद्र को हराया (श्रीहर्ष जयचंद्र के दरबारी थे)	IUC Academy
गुजरात (अन्हिलवाड़ा) के चालुक्य / सोलंकी वंश	अन्हिलवाड़ा (पाटन, गुजरात)	मूलराज प्रथम (संस्थापक); **भीम प्रथम**; जयसिंह सिद्धराज; **कुमारपाल**; मूलराज द्वितीय एवं भीम द्वितीय	भीम प्रथम के सामंत विमलशाह ने माउंट आबू में **दिलवाड़ा का संगमरमर जैन मंदिर** बनवाया और रानी **उदयमती** ने पाटन में सप्त-मंजिला बावड़ी **'रानी-की-वाव'** (ASI World Heritage, 2014 में विश्व धरोहर व ₹100 के नोट पर अंकित) बनवाई; प्रसिद्ध जैन आचार्य **हेमचंद्र** ('परिशिष्टपर्वन') को संरक्षण; **1178 ई. में कायदरा (माउंट आबू) के युद्ध** में मूलराज द्वितीय/भीम द्वितीय (माता नायिका देवी) ने मुहम्मद गोरी को भारत में पहली बार पराजित किया	ASI World Heritage

राजवंश / राजनीतिक शक्ति	राजधानी एवं मुख्य क्षेत्र	प्रमुख शासक	प्रमुख स्थापत्य, साहित्यिक कृतियाँ एवं ऐतिहासिक युद्ध	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
बंगाल का सेन वंश एवं गजनवी-गोरी आक्रमण	नदिया (लखनौती) व विक्रमपुर; गजनी एवं गोर	**सेन:** सामंत सेन, विजय सेन, **बल्लाल सेन** ('दानसागर' व 'अद्भुतसागर'), **लक्ष्मण सेन**; **तुर्क:** महमूद गजनवी (1000–1027 ई. में 17 आक्रमण) एवं मुइज्जुद्दीन मुहम्मद बिन साम (गोरी)	लक्ष्मण सेन के दरबार में **जयदेव ('गीतगोविंद')**, धोयी ('पवनदूत') और हलायुध रहते थे; **महमूद गजनवी** ने 1025 ई. में सोमनाथ मंदिर (भीम प्रथम के काल में) पर आक्रमण किया; उसके दरबारी: **अल-बरूनी** ('किताब-उल-हिंद'), **फिरदौसी** ('शाहनामा'), **उत्बी** ('तारीख-ए-यामिनी') व **बैहाकी** ('तारीख-ए-सुबुक्तगीन')	IUC Academy

क्या आप जानते हैं?

• **अल-बरूनी की 'किताब-उल-हिंद' (तहकीक-ए-हिंद):** 973 ई. में ख्वारिज्म (आधुनिक उज्बेकिस्तान) में जन्मे अबू रेहान मुहम्मद इब्न अहमद **अल-बरूनी** 1017 ई. में महमूद गजनवी के साथ भारत आए। उन्होंने वाराणसी व पंजाब में रहकर संस्कृत भाषा सीखी, पतंजलि के योगसूत्र व यूक्लिड के ग्रंथों का अनुवाद किया और अरबी भाषा में **80 अध्यायों** वाली कालजयी कृति **'किताब-उल-हिंद'** लिखी। प्रत्येक अध्याय का प्रारंभ एक प्रश्न से, फिर संस्कृत परंपरा पर आधारित विवरण से और अंत में अन्य संस्कृतियों के साथ तुलना से होता है। इसमें भारतीय तालाब निर्माण कला ('पवित्र स्थानों पर चबूतरों व सीढ़ियों वाले कुंड') की मुक्तकंठ से प्रशंसा की गई है (IUC Academy)।

• **मुहम्मद गोरी के सिक्कों पर देवी लक्ष्मी की आकृति:** मुहम्मद गोरी ने उत्तर भारत की विजय के बाद स्थानीय अर्थव्यवस्था में निरंतरता बनाए रखने के लिए कन्नौज के गहड़वाल राजाओं के सिक्कों के अनुकरण पर ऐसे स्वर्ण/मिश्रित सिक्के ('देहलीवाल') जारी किए, जिनके **एक ओर बैठी हुई देवी लक्ष्मी की आकृति** और **दूसरी ओर देवनागरी लिपि में 'श्री महमद बिन साम'** अंकित था (National Museum Coins Gallery)।

परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ)

• **त्रिपक्षीय संघर्ष का प्रारंभ बनाम अंतिम विजेता:** त्रिपक्षीय संघर्ष की **शुरुआत गुर्जर-प्रतिहार शासक वत्सराज** ने की थी, दक्कन की ओर से इसमें हस्तक्षेप करने वाला **प्रथम शासक राष्ट्रकूट नरेश ध्रुव ('धारावर्ष')** था, और लगभग दो शताब्दियों के संघर्ष के बाद कन्नौज पर **अंतिम विजय गुर्जर-प्रतिहारों** की हुई (NCERT Empires and Kingdoms)।

• **पृथ्वीराज रासो बनाम पृथ्वीराज विजय: 'पृथ्वीराज रासो'** की रचना चंदबरदाई ने पिंगल/ब्रज मिश्रित हिंदी में की, जबकि **'पृथ्वीराज विजय'** नामक संस्कृत ऐतिहासिक महाकाव्य की रचना कश्मीरी राजकवि **जयानक** ने पृथ्वीराज चौहान के जीवनकाल में ही की थी (IUC Academy)।

• **नालंदा और विक्रमशिला का विध्वंस किसने किया?** 1199–1202 ई. के आसपास नालंदा, ओदंतपुरी और विक्रमशिला बौद्ध महाविहारों को नष्ट करने वाला सेनापति महमूद गजनवी या कुतुबुद्दीन ऐबक नहीं, अपितु मुहम्मद गोरी का एक अन्य तुर्क सेनानायक **इख्तियारुद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार खलजी** था, जिसने बाद में बंगाल में लक्ष्मण सेन की राजधानी नदिया पर भी आक्रमण किया (IUC Academy)।

★ **स्मृति ट्रिक**

• **मुहम्मद गोरी के भारत में प्रमुख सैन्य अभियान (कालानुक्रम 1175–1205 ई.) — सूत्र: "मुल्तान (75) पाटन (78) तराइन (91-92) चंदावर (94)"**

1. **1175 ई.: मुल्तान** पर प्रथम आक्रमण (कर्माथी शासकों पर विजय)।
2. **1178 ई.: पाटन (गुजरात) / माउंट आबू का युद्ध** — सोलंकी शासक मूलराज द्वितीय / भीम द्वितीय से गोरी की भारत में **प्रथम पराजय**।
3. **1191 ई.: तराइन का प्रथम युद्ध** — पृथ्वीराज तृतीय (चौहान) द्वारा गोरी की पराजय।
4. **1192 ई.: तराइन का द्वितीय युद्ध** — पृथ्वीराज तृतीय की पराजय और दिल्ली-अजमेर में तुर्क सत्ता की स्थापना।
5. **1194 ई.: चंदावर का युद्ध** — कन्नौज के गहड़वाल शासक जयचंद्र की पराजय (NCERT Kings and Kingdoms)।

अध्याय 2: दिल्ली सल्तनत — राजनीतिक विस्तार, प्रशासनिक संस्थाएँ एवं आर्थिक सुधार (1206–1526 ई.)

1206 ई. से 1526 ई. तक 320 वर्षों की अवधि में दिल्ली सल्तनत पर पाँच क्रमिक राजवंशों — **मामलूक/इल्बरी (गुलाम) वंश (1206–1290 ई.), खलजी वंश (1290–1320 ई.), तुगलक वंश (1320–1414 ई.), सैय्यद वंश (1414–1451 ई.) और लोदी वंश (1451–1526 ई.)** — ने शासन किया (NCERT Delhi 12th to 15th Century)।

सारणी 2.1 (भाग 2): दिल्ली सल्तनत के प्रमुख सुल्तान, उनके प्रशासनिक विभाग एवं आर्थिक-सैन्य सुधार

राजवंश एवं सुल्तान	शासनकाल एवं प्रमुख उपाधियाँ	स्थापित केंद्रीय विभाग एवं प्रमुख सुधार	मुद्रा, राजस्व, सैन्य व्यवस्था एवं स्थापत्य उपलब्धि	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
कुतुबुद्दीन ऐबक एवं इल्तुतमिश (मामलूक वंश)	**ऐबक (1206–10):** 'लाखबख्श', 'कुरानख्वाँ', 'सिपहसालार' (राजधानी: लाहौर); **इल्तुतमिश (1210–36):** 'सुल्तान-ए-आजम', 'गुलामों का गुलाम' (राजधानी: दिल्ली)	इल्तुतमिश द्वारा **40 तुर्क सरदारों का दल ('तुर्कान-ए-चहलगानी' / 'चालीसा')** तथा प्रांतीय सैन्य-राजस्व प्रशासन हेतु **'इक्ता प्रणाली'** का संस्थागत गठन; 1229 ई. में बगदाद के अब्बासी खलीफा अल-मुस्तंसिर बिल्लाह से मान्यता ('खिलअत') प्राप्त करने वाला प्रथम सुल्तान	शुद्ध अरबी सिक्के — चाँदी का **'टंका'** (175 ग्रेन) और ताँबे का **'जीतल'**; ऐबक द्वारा दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा और शेख ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में **कुतुब मीनार** (ASI World Heritage) की नींव, जिसे इल्तुतमिश ने चार मंजिल तक पूर्ण कराया; इल्तुतमिश को 'मकबरा शैली का जनक' (सुल्तानगढ़ी) कहा जाता है	NCERT Delhi 12th to 15th Century; ASI World Heritage
गियासुद्दीन बलबन (1266–1287 ई., मामलूक वंश)	'उलूग खाँ' (नासिरुद्दीन महमूद द्वारा प्रदत्त), 'जिल्ले-इलाही' (ईश्वर की छाया) एवं 'नियाबत-ए-खुदाई'	मंगोल आक्रमणों का सामना करने के लिए **'दीवान-ए-अर्ज'** (केंद्रीय सैन्य विभाग) और गुप्तचर विभाग (**'बरीद-ए-मुमालिक'**) का गठन; 'तुर्कान-ए-चहलगानी' का दमन	राजत्व का कठोर फारसी सिद्धांत — दरबार में **'सिजदा' (घुटनों पर बैठकर सिर झुकाना)** और **'पाबोस' (सुल्तान के चरण चूमना)** प्रथा तथा फारसी नववर्ष **'नौरोज'** उत्सव का प्रारंभ; विद्रोहियों के प्रति **'रक्त और लौह' (Blood and Iron)** की नीति; दिल्ली में लाल महल व बलबन का मकबरा (प्रथम वास्तविक मेहराब/True Arch)	NCERT Delhi 12th to 15th Century
अलाउद्दीन खलजी (1296–1316 ई., खलजी वंश)	'सिकंदर-ए-सानी' (द्वितीय सिकंदर — अपने सिक्कों पर अंकित कराया); बचपन का नाम: अली गुरशास्प	बाजार नियंत्रण हेतु **'दीवान-ए-रियासत'** (प्रमुख: मलिक याकूब) व प्रत्येक बाजार का अधीक्षक **'शहना-ए-मंडी'**; बकाया भू-राजस्व की वसूली हेतु **'दीवान-ए-मुस्तखराज'** का गठन	स्थायी सेना को **नकद वेतन**, घोड़ों को दागने (**'दाग'**) और सैनिकों का हुलिया लिखने (**'चेहरा/हुलिया'**) की प्रथा; भूमि की पैमाइश (**'मसाहत'** — इकाई: **'बिस्वा'**) कराकर उपज का **50% (1/2 भाग)** **'खराज'** निर्धारित किया तथा **'घरी' (आवास कर)** और **'चरी' (दुधारू पशु कर)** लगाए; अलाई दरवाजा, सीरी का किला व हजार सितून महल का निर्माण; मलिक काफूर द्वारा दक्षिण अभियान	NCERT Delhi 12th to 15th Century
गियासुद्दीन एवं मुहम्मद बिन तुगलक (1320–1351 ई., तुगलक वंश)	**गियासुद्दीन (1320–25):** 'गाजी मलिक'; **मुहम्मद बिन तुगलक (1325–51):** 'जूना खाँ', 'उलूग खाँ'	मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा कृषि के विस्तार एवं अकाल राहत हेतु **'दीवान-ए-अमीर-कोही'** (कृषि विभाग) की स्थापना, किसानों को **'तकावी/सौंधर' कृषि ऋण** और सर्वप्रथम **'अकाल संहिता'** का निर्माण	गियासुद्दीन तुगलक नहरें बनवाने वाला प्रथम सुल्तान व तुगलकाबाद दुर्ग का निर्माता; मुहम्मद बिन तुगलक की **5 महत्वाकांक्षी योजनाएँ:** (1) दोआब में कर वृद्धि, (2) दिल्ली से **देवगिरि (दौलताबाद)** राजधानी परिवर्तन (1327 ई.), (3) चाँदी के टंके के बराबर ताँबे/काँसे की **सांकेतिक मुद्रा (Token Currency)** का प्रचलन (1329–30 ई.), (4) खुरासान और (5) कराचिल अभियान; 1333 ई. में मोरक्को यात्री **इब्न बतूता ('रेहला')** का आगमन	NCERT Delhi 12th to 15th Century
फिरोजशाह तुगलक (1351–1388 ई., तुगलक वंश)	अपनी आत्मकथा **'फुतूहात-ए-फिरोजशाही'** लिखी; एलफिंस्टन व इलियट द्वारा 'सल्तनत युग का अकबर' कहा गया	**'दीवान-ए-खैरात'** (अनाथ व मुस्लिम कन्याओं के विवाह हेतु दान विभाग), **'दीवान-ए-बंदगान'** (1,80,000 दासों के लिए विभाग), **'दार-उल-शफा'** (निःशुल्क चिकित्सालय) और **'दफ्तर-ए-रोजगार'** (रोजगार दफ्तर)	24 कष्टप्रद करों को समाप्त कर शरीयत सम्मत केवल **4 कर — खराज (लगान), खुम्स (लूट का धन), जजिया (ब्राह्मणों पर भी लगाया) और जकात (मुसलमानों पर धार्मिक कर)** तथा सिंचाई पर उपज का 1/10 भाग **'हक-ए-शर्ब'** लगाया; 5 बड़ी नहरें व 300 नए नगर (हिसार, फिरोजाबाद, जौनपुर, फतेहाबाद, फिरोजपुर) बसाए; टोपरा व मेरठ से अशोक के स्तंभ दिल्ली मंगवाए; 'अद्धा' व 'बिख' सिक्के चलाए	NCERT Delhi 12th to 15th Century
सैय्यद एवं लोदी वंश (1414–1526 ई. — प्रथम अफगान वंश)	**सैय्यद:** खिज्र खाँ ('रैयत-ए-आला'); **लोदी:** बहलोल लोदी (संस्थापक), **सिकंदर लोदी ('गुलरुखी')**, इब्राहिम लोदी	सिकंदर लोदी ने **1504 ई. में आगरा नगर** की स्थापना कर 1506 ई. में उसे राजधानी बनाया; भूमि मापन हेतु 30 इंच (39 अंगुल) का प्रामाणिक पैमाना **'गज-ए-सिकंदरी'** चलाया	सिकंदर लोदी ने अनाज से जकात (चुंगी) हटाया, आयुर्वेद ग्रंथ का फारसी में **'फरहंग-ए-सिकंदरी'** और संगीत ग्रंथ का **'लज्जत-ए-सिकंदरशाही'** नाम से अनुवाद कराया तथा 'गुलरुखी' उपनाम से फारसी कविताएँ लिखीं; **21 अप्रैल 1526 को पानीपत के प्रथम युद्ध** में बाबर के हाथों इब्राहिम लोदी (युद्धभूमि में मारा जाने वाला दिल्ली का एकमात्र सुल्तान) की पराजय	ASI World Heritage; IUC Academy

क्या आप जानते हैं?

• **अलाउद्दीन खलजी के चार प्रकार के बाजार और मूल्य नियंत्रण:** जियाउद्दीन बरनी की कृति **'तारीख-ए-फिरोजशाही'** और अमीर खुसरो की **'खजाइन-उल-फुतूह'** के अनुसार, अलाउद्दीन ने विशाल स्थायी सेना को कम वेतन में रखने के लिए दिल्ली में चार अलग-अलग बाजार स्थापित किए: (1) **गल्ला बाजार (मंडी):** अनाज का बाजार (जहाँ बंजारों का पंजीकरण होता था और दोआब से नकद के बदले अनाज के रूप में लगान वसूला जाता था); (2) **सराय-ए-अदल:** कपड़े, शक्कर, जड़ी-बूटी, मेवे और दीपक के तेल का सरकारी सहायता प्राप्त बाजार (यहाँ मुल्तानी व्यापारियों को अग्रिम ऋण दिया जाता था); (3) **घोड़ों, मवेशियों और दासों का बाजार** (दलाली समाप्त करने हेतु); और (4) **सामान्य दैनिक वस्तुओं का बाजार**। बाजार की गुप्त सूचना देने वाले अधिकारियों को **'बरीद'** और **'मुन्हियान'** कहा जाता था (NCERT Delhi 12th to 15th Century)।

• **कुतुब मीनार से जुड़े चार शासक:** दिल्ली के महरौली स्थित **कुतुब मीनार** (ASI World Heritage, 1993 में विश्व धरोहर; ऊँचाई 72.5 मीटर) की नींव 1199 ई. में **कुतुबुद्दीन ऐबक** ने रखी (प्रथम मंजिल), इसे **इल्तुतमिश** ने चार मंजिल तक पूरा कराया, 1369 ई. में बिजली गिरने से चौथी मंजिल क्षतिग्रस्त होने पर **फिरोजशाह तुगलक** ने चौथी व पाँचवीं मंजिल का निर्माण लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर से कराया, और 1503 ई. में **सिकंदर लोदी** ने भी इसकी मरम्मत करवाई।

परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ)

• **दीवान-ए-अर्ज बनाम दीवान-ए-रियासत बनाम दीवान-ए-मुस्तखराज बनाम दीवान-ए-कोही:**

1. **दीवान-ए-अर्ज (सैन्य विभाग): बलबन** द्वारा स्थापित (अलाउद्दीन ने इसे केवल पुनर्गठित कर दाग व चेहरा लागू किया)।
2. **दीवान-ए-रियासत (बाजार नियंत्रण) व दीवान-ए-मुस्तखराज (बकाया राजस्व वसूली): अलाउद्दीन खलजी** द्वारा स्थापित।
3. **दीवान-ए-अमीर-कोही (कृषि विभाग): मुहम्मद बिन तुगलक** द्वारा स्थापित।
4. **दीवान-ए-खैरात (दान विभाग) व दीवान-ए-बंदगान (दास विभाग): फिरोजशाह तुगलक** द्वारा स्थापित (NCERT Delhi 12th to 15th Century)।

• **खुम्स (लूट का धन) का बँटवारा:** इस्लामी कानून (शरीयत) के अनुसार युद्ध में लूटे गए धन (**'खुम्स'**) का 4/5 भाग (80%) सैनिकों में बाँटा जाता था और केवल 1/5 भाग (20%) राजकोष में जमा होता था, किंतु **अलाउद्दीन खलजी और मुहम्मद बिन तुगलक** ने इस नियम को उलट कर **4/5 भाग (80%) राजकोष** में रखा और केवल 1/5 भाग सैनिकों को दिया (IUC Academy)।

★ **स्मृति ट्रिक**

• **दिल्ली सल्तनत के पाँचों राजवंशों का क्रम और शासन अवधि — सूत्र: "गु-ल खिले तो साँस लो"**

1. **गु-ल: गुलाम (मामलूक/इल्बरी) वंश** (1206–1290 ई. = 84 वर्ष) — संस्थापक: कुतुबुद्दीन ऐबक।
2. **खिले: खलजी वंश** (1290–1320 ई. = **30 वर्ष, सबसे कम समय**) — संस्थापक: जलालुद्दीन फिरोज खलजी।
3. **तो: तुगलक वंश** (1320–1414 ई. = **94 वर्ष, सर्वाधिक लंबा समय**) — संस्थापक: गियासुद्दीन तुगलक।
4. **साँस: सैय्यद वंश** (1414–1451 ई. = 37 वर्ष) — संस्थापक: खिज्र खाँ।
5. **लो: लोदी वंश** (1451–1526 ई. = 75 वर्ष, प्रथम अफगान वंश) — संस्थापक: बहलोल लोदी (NCERT Delhi 12th to 15th Century)।

अध्याय 3: विजयनगर साम्राज्य, बहमनी सल्तनत एवं क्षेत्रीय राज्य (1336–1650 ई.)

मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के उत्तरार्द्ध में दक्षिण भारत में दो शक्तिशाली राज्यों का उदय हुआ: **1336 ई.** में तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर संत विद्यारण्य के आशीर्वाद से **हरिहर और बुक्का** द्वारा स्थापित **विजयनगर साम्राज्य (हम्पी)** (ASI World Heritage), तथा **1347 ई.** में अलाउद्दीन हसन बहमन शाह (हसन गंगू) द्वारा स्थापित **बहमनी साम्राज्य (गुलबर्गा व बीदर)**। इन दोनों राज्यों के मध्य कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच स्थित उपजाऊ **'रायचूर दोआब'**, कृष्णा-गोदावरी डेल्टा और मराठवाड़ा के कोंकण बंदरगाहों पर नियंत्रण के लिए निरंतर संघर्ष चला (IUC Academy)।

सारणी 3.1 (भाग 2): विजयनगर के चारों राजवंश, विदेशी यात्री, बहमनी के पाँच राज्य एवं प्रांतीय राज्य

राजवंश / राज्य	कालखंड एवं संस्थापक	प्रमुख शासक एवं विदेशी यात्री	प्रशासनिक व्यवस्था, साहित्य एवं स्थापत्य स्मारक	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
संगम एवं सालुव वंश (विजयनगर के प्रथम दो वंश)	**संगम वंश (1336–1485 ई.):** हरिहर प्रथम एवं बुक्का प्रथम (पिता संगम के नाम पर); **सालुव वंश (1485–1505 ई.):** सालुव नरसिंह (प्रथम बलापहार)	बुक्का प्रथम ('वेदमार्ग प्रतिष्ठापक'); **देवराय प्रथम** (तुंगभद्रा पर बाँध; इतालवी यात्री **निकोलो डी कोंटी** का आगमन — 1420 ई.); **देवराय द्वितीय** ('गजबेटकर' व 'इम्माडि देवराय' — सेना में तुर्क धनुर्धरों की भर्ती; फारस के राजदूत **अब्दुर रज्जाक** का आगमन — 1443 ई.)	राजधानियाँ: आनेगोंडी → विजयनगर (हम्पी) → पेनुकोंडा → चंद्रगिरि; देवराय द्वितीय के दरबार में तेलुगु कवि श्रीनाथ रहते थे और स्वयं राजा ने संस्कृत में 'महानाटक सुधानिधि' लिखा	ASI World Heritage; IUC Academy

राजवंश / राज्य	कालखंड एवं संस्थापक	प्रमुख शासक एवं विदेशी यात्री	प्रशासनिक व्यवस्था, साहित्य एवं स्थापत्य स्मारक	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
तुलुव एवं अरावीडु वंश (विजयनगर के अंतिम दो वंश)	**तुलुव वंश (1505–1570 ई.):** वीर नरसिंह (द्वितीय बलापहार); **अरावीडु वंश (1570–1646 ई.):** तिरुमल (राजधानी: पेनुकोंडा)	**कृष्णदेव राय (1509–1529 ई.)** — 'आंध्रभोज', 'अभिनव भोज', 'यवनराज्य स्थापनाचार्य' (बाबर ने 'बाबरनामा' में भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बताया; पुर्तगाली यात्री **दुआर्ते बारबोसा** व **डोमिंगो पायस** का आगमन); **अच्युतदेव राय** (पुर्तगाली यात्री **फर्नाओ नूनिज** का आगमन); **सदाशिव राय** (वास्तविक शक्ति मंत्री रामराय के हाथ में)	कृष्णदेव राय ने तेलुगु में राजनीति ग्रंथ **'आमुक्तमाल्यदा'** और संस्कृत में **'जाम्बवती कल्याणम्'** लिखा; दरबार में तेलुगु के 8 महान कवि **'अष्टदिग्गज'** (अल्लसानी पेद्दना — 'मनुचरितम्', तेनाली रामकृष्ण — 'पांडुरंग महात्म्यम्'); हम्पी में **हजारा राम मंदिर, विट्ठलस्वामी मंदिर (सप्तस्वर स्तंभ व पत्थर का रथ)** और नागलपुरम नगर का निर्माण; **23 जनवरी 1565 को तालीकोटा (राक्षसी-तंगड़ी / बन्नीहट्टी) के युद्ध** में विजयनगर की पराजय	ASI World Heritage
विजयनगर प्रशासन एवं अर्थव्यवस्था	प्रांत: मंडलम → कोट्टम/वलनाडु → नाडु → मेलाग्राम (50 गाँव) → उर (ग्राम)	केंद्रीय सचिवालय: 'अठवण' (राजस्व विभाग); स्वर्ण मुद्रा: **'वराह' (पैगोडा / पोन)** एवं लघु स्वर्ण सिक्के 'प्रताप' व 'फणम'	**नायंकार व्यवस्था:** सेनानायकों ('नायक' या 'अमरनायक') को सैन्य टुकड़ी रखने के बदले दी जाने वाली कर-मुक्त भूमि **'अमरम'** कहलाती थी; **आयगार व्यवस्था:** ग्राम प्रशासन के संचालन हेतु नियुक्त **12 वंशानुगत ग्रामीण अधिकारियों** का समूह (कर्णम, तलारी, रेड्डी आदि), जिन्हें वेतन के बदले कर-मुक्त भूमि ('मानियम') मिलती थी; अच्युतदेव राय ने नायकों पर नियंत्रण हेतु 'महामंडलेश्वर' नियुक्त किए	IUC Academy
बहमनी साम्राज्य एवं दक्कन की पाँच सल्तनतें	**1347 ई.:** अलाउद्दीन हसन बहमन शाह (गुलबर्गा); शहाबुद्दीन अहमद प्रथम ने **बीदर** को राजधानी बनाया	ताजुद्दीन फिरोज शाह; मुहम्मद शाह तृतीय का महान प्रधानमंत्री **महमूद गवाँ** ('ख्वाजा जहाँ' व 'मलिक-उत-तुज्जार' — बीदर में तीन मंजिला मदरसा बनवाया व साम्राज्य को 8 'तरफ' /प्रांतों में बाँटा); कलीमुल्लाह अंतिम शासक	बहमनी से टूटकर बनी **5 दक्कनी सल्तनतें:** (1) **बरार (1484):** फतेहुल्लाह इमादशाह (**इमादशाही** — 1574 में अहमदनगर में विलय); (2) **बीजापुर (1489):** यूसुफ आदिलशाह (**आदिलशाही** — इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय ने 'किताब-ए-नौरस' लिखी; मुहम्मद आदिलशाह का **गोल गुंबद**); (3) **अहमदनगर (1490):** मलिक अहमद (**निजामशाही** — चाँद बीबी व मलिक अंबर); (4) **गोलकुंडा (1512):** कुली कुतुबशाह (**कुतुबशाही** — मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने 1591 में **हैदराबाद व चारमीनार** बनवाया); (5) **बीदर (1526):** अमीर अली बरीद (**बरीदशाही** — 'दक्कन की लोमड़ी')	ASI Monuments
जौनपुर, मालवा, गुजरात एवं मेवाड़ के क्षेत्रीय राज्य	उत्तरी एवं पश्चिमी भारत के स्वतंत्र प्रांतीय राज्य	**जौनपुर (शर्की वंश):** मलिक सरवर ('ख्वाजा जहाँ') व इब्राहिम शाह शर्की ('पूर्व का सिराज' — अटाला मस्जिद); **गुजरात:** महमूद बेगड़ा (चंपानेर-पावागढ़, 2004 विश्व धरोहर) व बहादुर शाह; **कश्मीर:** जैन-उल-आबिदीन ('कश्मीर का अकबर' — जजिया हटाया, गोहत्या रोकी व राजतरंगिणी-महाभारत का फारसी अनुवाद); **मेवाड़: राणा कुंभा (1433–68)** व **राणा साँगा (संग्राम सिंह)**	राणा कुंभा ने मालवा के सुल्तान महमूद खलजी प्रथम पर सारंगपुर विजय (1437 ई.) के उपलक्ष्य में **चित्तौड़गढ़ में 9 मंजिला 'विजय स्तंभ' (कीर्ति स्तंभ)** बनवाया (वास्तुकार: मंडन) तथा संगीत ग्रंथ **'संगीतराज'** व 'संगीत मीमांसा' लिखा (राजस्थान के 6 पहाड़ी किले — चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, गागरोन, आमेर व जैसलमेर — 2013 में यूनेस्को विश्व धरोहर बने)	ASI World Heritage

क्या आप जानते हैं?

• **तालीकोटा (राक्षसी-तंगड़ी) के युद्ध (1565 ई.) में बरार ने भाग क्यों नहीं लिया?** 23 जनवरी 1565 को लड़े गए तालीकोटा के युद्ध में विजयनगर (रामराय) के विरुद्ध दक्कन की चार मुस्लिम सल्तनतों — **बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुंडा और बीदर** — ने संयुक्त मोर्चा बनाया था, जिसका नेतृत्व अली आदिलशाह ने किया था। पाँचवीं सल्तनत **बरार (इमादशाही)** इस संघ में शामिल नहीं हुई थी क्योंकि अहमदनगर के साथ उसकी पुरानी शत्रुता थी (IUC Academy)।

• **हम्पी के स्मारक समूह (कर्नाटक):** यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हम्पी (ASI World Heritage, 1986) के ध्वंसावशेषों को **1800 ई. में अभियंता और पुराविद् कर्नल कॉलिन मैकेंजी** ने प्रकाश में लाया था और पंपादेवी तथा विरुपाक्ष मंदिर के पुरोहितों की स्मृतियों के आधार पर यहाँ का प्रथम सर्वेक्षण मानचित्र तैयार किया था। हम्पी का रथ ₹50 के भारतीय करेंसी नोट पर अंकित है।

परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ)

• **विजयनगर आने वाले विदेशी यात्रियों और उनके समकालीन शासकों का सुमेलन:**

1. **निकोलो डी कोंटी (इटली): देवराय प्रथम** के काल में (1420 ई.)।
2. **अब्दुर रज्जाक (फारस के शासक शाहरुख का राजदूत): देवराय द्वितीय** के काल में (1443 ई.)।
3. **दुआर्ते बारबोसा और डोमिंगो पायस (पुर्तगाल): कृष्णदेव राय** के काल में।
4. **फर्नाओ नूनिज (पुर्तगाल का अश्व व्यापारी): अच्युतदेव राय** के काल में।
5. **सीजर फ्रेडरिक (इटली): तालीकोटा युद्ध (1565 ई.) के ठीक बाद** सदाशिव राय के काल में विजयनगर आया (IUC Academy)।

★ **स्मृति ट्रिक**

• **विजयनगर साम्राज्य के चारों राजवंशों और उनके संस्थापकों का क्रम — सूत्र: "स-सा-तु-अ (हरि-सा-वीर-तिरु)"**

1. **स (हरि): संगम वंश** (1336–1485 ई.) — संस्थापक: **हरि**हर एवं बुक्का।
2. **सा (सा): सालुव वंश** (1485–1505 ई.) — संस्थापक: **सा**लुव नरसिंह।
3. **तु (वीर): तुलुव वंश** (1505–1570 ई.) — संस्थापक: **वीर** नरसिंह (इसी वंश के शासक कृष्णदेव राय थे)।
4. **अ (तिरु): अरावीडु वंश** (1570–1646 ई.) — संस्थापक: **तिरु**मल (IUC Academy)।

अध्याय 4: भक्ति एवं सूफी आंदोलन — सामाजिक-धार्मिक समन्वय एवं साहित्य

दक्षिण भारत में छठी से नवीं शताब्दी के मध्य तमिल क्षेत्र के वैष्णव संतों (**'आलवार' — कुल 12 संत**, संकलन: 'नलईरा दिव्यप्रबंधम'; एकमात्र महिला संत: **अंडाल** 'दक्षिण की मीरा') और शैव संतों (**'नयनार' — कुल 63 संत**, संकलन: 'तेवरम/तिरुमुरई'; प्रमुख संत: अप्पार, संबंदर, सुंदरार व मणिक्कवाचकर) ने भक्ति आंदोलन की शुरुआत की (NCERT Tracing Changes)। चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी में स्वामी रामानंद इसे उत्तर भारत में लाए। समानांतर रूप से इस्लाम की रहस्यवादी उदार धारा के रूप में चिश्ती और सुहरावर्दी जैसे **सूफी सिलसिलों** ने प्रेम, संगीत ('समा') और मानवतावाद का संदेश दिया (IUC Academy)।

सारणी 4.1 (भाग 2): प्रमुख दार्शनिक आचार्य, निर्गुण-सगुण भक्ति संत एवं सूफी सिलसिले

आचार्य / संत / सिलसिला	कालखंड एवं कार्यक्षेत्र	प्रतिपादित दर्शन / संप्रदाय	प्रमुख रचनाएँ, शिष्य परंपरा एवं विशिष्ट तथ्य	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
षड्-वेदांत आचार्य (शंकर से चैतन्य तक)	**शंकराचार्य** (8वीं शती, कलाडी केरल); **रामानुजाचार्य** (11वीं–12वीं शती, श्रीपेरुंबुदूर); **मध्वाचार्य** (13वीं शती, उडुपी); **निम्बार्काचार्य**; **वल्लभाचार्य**; **चैतन्य महाप्रभु**	**अद्वैतवाद** (शंकराचार्य — 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या', स्मार्त संप्रदाय); **विशिष्टाद्वैतवाद** (रामानुज — श्री संप्रदाय); **द्वैतवाद** (मध्वाचार्य — ब्रह्म संप्रदाय); **द्वैताद्वैत/भेदाभेद** (निम्बार्क — सनकादि संप्रदाय); **शुद्धाद्वैतवाद** (वल्लभाचार्य — रुद्र संप्रदाय / पुष्टिमार्ग); **अचिंत्य भेदाभेद** (चैतन्य — गौड़ीय संप्रदाय)	शंकराचार्य ने भारत की चारों दिशाओं में **चार मठ (ज्योतिर्मठ बद्रीनाथ, गोवर्धन पुरी, शारदा द्वारका, शृंगेरी मैसूर)** स्थापित किए; वल्लभाचार्य के पुत्र **विट्ठलनाथ** ने कुंभनदास व सूरदास सहित 8 कवियों की **'अष्टछाप'** मंडली बनाई; चैतन्य महाप्रभु ने भजन-कीर्तन ('संकीर्तन') को लोकप्रिय बनाया	IUC Academy
निर्गुण भक्ति धारा (ज्ञानमार्गी संत)	**रामानंद** (प्रयाग व काशी — दक्षिण व उत्तर के सेतु); **कबीरदास** (15वीं शती, वाराणसी-मगहर, सिकंदर लोदी के समकालीन); **गुरु नानक देव** (1469–1539 ई., तलवंडी/ननकाना साहिब — करतारपुर); **रैदास (रविदास)**; **दादू दयाल** (अहमदाबाद-नराना राजस्थान)	रामानंद ने संस्कृत के स्थान पर लोकभाषा हिंदी में उपदेश दिया; कबीर व नानक ने जाति-पाँति, मूर्तिपूजा व बाह्य आडंबरों का खंडन कर निराकार ईश्वर ('निर्गुण राम' / 'अकाल पुरख') की उपासना पर बल दिया; दादू दयाल ने **'निपख' (निष्पक्ष) संप्रदाय** और 'ब्रह्म संप्रदाय' चलाया	कबीर की वाणी **'बीजक' (साखी, सबद, रमैनी)** तथा सिखों के 'आदि ग्रंथ' में संकलित है; गुरु नानक ने **'लंगर' (सांझा भोजनालय)** व 'संगत' प्रारंभ की; पाँचवें सिख गुरु **अर्जन देव** ने 1604 ई. में **'आदि ग्रंथ'** का संकलन और अमृतसर में हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) का निर्माण किया; दसवें गुरु **गोविंद सिंह** ने 1699 ई. में **'खालसा पंथ'** की स्थापना की	IUC Academy

आचार्य / संत / सिलसिला	कालखंड एवं कार्यक्षेत्र	प्रतिपादित दर्शन / संप्रदाय	प्रमुख रचनाएँ, शिष्य परंपरा एवं विशिष्ट तथ्य	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
सगुण भक्ति धारा एवं असम आंदोलन	**तुलसीदास** (1532–1623 ई., अकबर व जहाँगीर के समकालीन); **सूरदास**; **मीराबाई** (मेड़ता/मेवाड़ — रैदास की शिष्या, भोजराज की पत्नी); **शंकरदेव** (15वीं–16वीं शती, असम)	**रामभक्ति शाखा:** गोस्वामी तुलसीदास; **कृष्णभक्ति शाखा:** सूरदास, मीराबाई व रसखान; **असम का एकशरण संप्रदाय:** श्रीमंत शंकरदेव (मूर्तिपूजा रहित केवल कृष्ण/विष्णु की शरण)	तुलसीदास ने 1574 ई. में अवधी भाषा में **'रामचरितमानस'** और ब्रजभाषा में **'विनयपत्रिका'**, **'कवितावली'**, **'गीतावली'** व **'दोहावली'** लिखी; सूरदास ने **'सूरसागर'**, **'सूरसारावली'** व **'साहित्य लहरी'** की रचना की; असम में शंकरदेव ने **'कीर्तन-घोष'**, धार्मिक नाटक **'अंकिया नाट'**, सत्रीया नृत्य और उपासना केंद्र **'सत्र'** व **'नामघर'** स्थापित किए	IUC Academy
महाराष्ट्र का वारकरी एवं धरकरी संप्रदाय	13वीं से 17वीं शताब्दी, पंढरपुर (महाराष्ट्र) के **विट्ठल (विठोबा)** देवता के उपासक	**ज्ञानेश्वर (ज्ञानदेव)**; **नामदेव** (दर्जी — वारकरी परंपरा व उत्तर भारत में भी सक्रिय, गुरु ग्रंथ साहिब में पद संकलित); **एकनाथ**; **तुकाराम** (शिवाजी के समकालीन); **समर्थ गुरु रामदास**	ज्ञानेश्वर ने मात्र 15 वर्ष की आयु में भगवद्गीता पर मराठी टीका **'ज्ञानेश्वरी' (भावार्थदीपिका)** लिखी; एकनाथ ने 'भारुड' व भावार्थ रामायण लिखी; तुकाराम के छंद **'अभंग'** कहलाते हैं; **समर्थ गुरु रामदास** (धरकरी संप्रदाय — परमार्थ व स्वराज्य का समन्वय) छत्रपति शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु थे और उन्होंने **'दासबोध'** ग्रंथ लिखा	IUC Academy
चिश्ती सूफी सिलसिला (भारत में सबसे लोकप्रिय सिलसिला)	**ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती** (1192 ई. में मुहम्मद गोरी के साथ भारत आए; खानकाह/दरगाह: **अजमेर** — 'गरीब नवाज'); कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी (दिल्ली); **बाबा फरीद** (गंजे-शकर, अजोधन/पाकपत्तन); **शेख निजामुद्दीन औलिया** (दिल्ली — 'महबूब-ए-इलाही'); नसीरुद्दीन महमूद 'चिराग-ए-देहलवी'; शेख सलीम चिश्ती (फतेहपुर सीकरी)	चिश्ती संत राजकीय संरक्षण व धन-संपत्ति से दूर रहते थे, गरीबों के लिए लंगर चलाते थे, संगीत गोष्ठी (**'समा'** / **कव्वाली**) और यौगिक प्राणायाम (**'हब्स-ए-दम'**) को अपनाते थे; औलिया को योगियों द्वारा **'सिद्ध'** कहा जाता था	बाबा फरीद की रचनाएँ **'गुरु ग्रंथ साहिब'** में शामिल हैं (वे बलबन के दामाद थे); निजामुद्दीन औलिया ने **दिल्ली के 7 सुल्तानों का शासन देखा** किंतु किसी के दरबार में नहीं गए (गियासुद्दीन तुगलक के संदर्भ में कहा — "हुनूज दिल्ली दूर अस्त" अर्थात् दिल्ली अभी दूर है); औलिया के प्रिय शिष्य **अमीर खुसरो** ('तूती-ए-हिंद') और **अमीर हसन सिज्जी** ('फवायद-उल-फुआद' के संकलनकर्ता) थे	ASI World Heritage; IUC Academy
सुहरावर्दी, कादिरी, सत्तारी एवं नक्शबंदी सिलसिले	**सुहरावर्दी:** शेख बहाउद्दीन जकारिया (मुल्तान); **सत्तारी:** शाह अब्दुल्ला सत्तारी व मुहम्मद गौस (ग्वालियर — तानसेन के गुरु); **कादिरी:** शेख अब्दुल कादिर जिलानी, मियाँ मीर व मुल्ला शाह; **नक्शबंदी:** ख्वाजा बाकी बिल्लाह व **शेख अहमद सरहिंदी**	सुहरावर्दी संत राजकीय पद ('शेख-उल-इस्लाम') और धन स्वीकार करते थे; कादिरी संप्रदाय के संत **मियाँ मीर** ने अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की नींव रखी और शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र **दारा शिकोह** इसके अनुयायी थे	नक्शबंदी सिलसिला सबसे कट्टरपंथी था जो संगीत ('समा') का विरोधी था; इसके संत **शेख अहमद सरहिंदी** (जहाँगीर व अकबर के समकालीन) ने स्वयं को **'मुजद्दिद-अलिफ-सानी'** (इस्लाम का सुधारक) कहा और इब्न-उल-अरबी के उदार **'वहदत-उल-वजूद'** (ईश्वर व सृष्टि की एकता) के विरुद्ध **'वहदत-उल-शुहूद'** का सिद्धांत दिया	IUC Academy

क्या आप जानते हैं?

• **अमीर खुसरो ('तूती-ए-हिंद' / तोता-ए-हिंद, 1253–1325 ई.) का बहुआयामी योगदान:** उत्तर प्रदेश के एटा (पटियाली) में जन्मे अबुल हसन यामीनुद्दीन **अमीर खुसरो** ने बलबन के पुत्र शहजादा मुहम्मद से लेकर गियासुद्दीन तुगलक तक **दिल्ली के 7 से अधिक सुल्तानों का काल देखा**। उन्होंने भारतीय और ईरानी रागों के समन्वय से **'कव्वाली'**, **'खयाल'** गायकी, **'सितार'** (वीणा व तंबूरा के मेल से) और **'तबला'** के विकास में योगदान दिया, **'सबक-ए-हिंदी'** नामक नवीन फारसी काव्य शैली और खड़ी बोली/हिंदवी पहेलियों-मुकरियों की रचना की, तथा अपनी मसनवी **'नूह सिपेहर'** में भारत की जलवायु, पशु-पक्षियों, संस्कृत भाषा और शतरंज व शून्य के भारतीय आविष्कार का गौरवगान किया (IUC Academy)।

• **सूफी शब्दावली:** सूफी आश्रम को **'खानकाह' (या जमातखाना)**, आध्यात्मिक गुरु को **'पीर' या 'मुर्शिद'**, शिष्य को **'मुरीद'**, उत्तराधिकारी को **'वली' या 'खलीफा'**, संत के वार्तालाप के संकलन को **'मलफूजात'**, पत्रों के संग्रह को **'मकतूबात'** और संतों की जीवनियों को **'तजकिरा'** कहा जाता था।

परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ)

• **चैतन्य महाप्रभु बनाम चंडीदास बनाम शंकरदेव: चैतन्य महाप्रभु** और **चंडीदास** दोनों का संबंध **बंगाल** की वैष्णव (कृष्ण) भक्ति से था (चैतन्य ने जगन्नाथ पुरी में भी लंबा समय बिताया), जबकि **श्रीमंत शंकरदेव** का संबंध **असम (कामरूप)** के 'एकशरण' आंदोलन से था (IUC Academy)।

• **बीजापुर (गुलबर्गा) के प्रसिद्ध चिश्ती संत 'गेसूदराज':** मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा राजधानी दौलताबाद ले जाने के समय और उसके बाद शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए-देहलवी के शिष्य **सैय्यद मुहम्मद गेसूदराज ('बंदानवाज')** ने गुलबर्गा (कर्नाटक) को दक्षिण भारत में चिश्ती सिलसिले का केंद्र बनाया और दक्खिनी उर्दू गद्य की प्रथम पुस्तक **'मिराज-उल-आशिकीन'** लिखी (IUC Academy)।

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
स्मृति ट्रिक - प्रमुख वेदांत आचार्यों और उनके दर्शनों का अचूक सूत्र — "अ-शंकर, वि-रामा, द्वै-मध्व, द्वैता-निम्बार्क, शुद्ध-वल्लभ" 1. अ-शंकर: अद्वैतवाद

चरण 2
शंकराचार्य (केवल ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है)। 2. वि-रामा: विशिष्टाद्वैतवाद

चरण 3
रामानुजाचार्य (चित् और अचित् से विशिष्ट ब्रह्म)। 3. द्वै-मध्व: द्वैतवाद

चरण 4
मध्वाचार्य / आनंदतीर्थ (ईश्वर और जीव दोनों पूर्णतः भिन्न हैं)। 4. द्वैता-निम्बार्क: द्वैताद्वैतवाद (भेदाभेद)

चरण 5
निम्बार्काचार्य (सूर्य और उसकी किरणों की भाँति भेद और अभेद दोनों)। 5. शुद्ध-वल्लभ: शुद्धाद्वैतवाद (पुष्टिमार्ग)

चरण 6
वल्लभाचार्य** (माया के संबंध से रहित शुद्ध ब्रह्म) (IUC Academy)।

अध्याय 5: मुगल साम्राज्य — राजनीतिक इतिहास, मनसबदारी-जागीरदारी एवं भू-राजस्व व्यवस्था (1526–1707 ई.)

पितृपक्ष से तैमूर लंग (पाँचवीं पीढ़ी) और मातृपक्ष से चंगेज खाँ (चौदहवीं पीढ़ी) के वंशज **जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर** ने 1526 ई. में पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी को पराजित कर भारत में **मुगल (चगताई तुर्क) साम्राज्य** की स्थापना की (NCERT The Mughals)। बीच में **शेरशाह सूरी (1540–1545 ई.)** के द्वितीय अफगान साम्राज्य ने भू-राजस्व, मुद्रा और सड़क प्रशासन की वह आधारशिला रखी, जिस पर सम्राट **अकबर (1556–1605 ई.)** ने टोडरमल की आईन-ए-दहसाला (जब्ती प्रणाली), मनसबदारी-जागीरदारी और 'सुलह-ए-कुल' की नीति द्वारा विशाल मुगल साम्राज्य का निर्माण किया (ASI Fatehpur Sikri)।

सारणी 5.1 (भाग 2): मुगल सम्राट (बाबर से औरंगजेब तक), शेरशाह सूरी एवं प्रशासनिक-राजस्व संस्थाएँ

शासक एवं शासनकाल	प्रमुख युद्ध एवं राजनीतिक अभियान	केंद्रीय प्रशासन एवं मनसबदारी विकास	भू-राजस्व, मुद्रा एवं धार्मिक-सामाजिक नीतियाँ	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
बाबर (1526–1530 ई.) एवं हुमायूँ (1530–40, 1555–56 ई.)	**बाबर के 4 युद्ध:** (1) **पानीपत का प्रथम युद्ध** (21 अप्रैल 1526 — इब्राहिम लोदी; 'तुलुगमा' युद्ध नीति व उस्मानी विधि से तोपों का प्रयोग: उस्ताद अली व मुस्तफा), (2) **खानवा का युद्ध** (17 मार्च 1527 — राणा साँगा; 'जिहाद' का नारा, 'तमगा' कर माफ व 'गाजी' उपाधि), (3) **चंदेरी का युद्ध** (29 जनवरी 1528 — मेदिनी राय), (4) **घाघरा का युद्ध** (6 मई 1529 — महमूद लोदी व अफगान); **हुमायूँ के युद्ध:** देवरा (1531), **चौसा का युद्ध (1539)**, **कन्नौज/बिलग्राम का युद्ध (1540)** व **सरहिंद का युद्ध (1555)**	बाबर ने पादशाह की उपाधि धारण की (1507, काबुल) और तुर्की भाषा में आत्मकथा **'तुजुक-ए-बाबरी' (बाबरनामा)** लिखी; हुमायूँ ने दिल्ली में **'दीनपनाह'** नगर बसाया (उसी के पुस्तकालय 'शेरमंडल' की सीढ़ियों से गिरकर 1556 में मृत्यु — लेनपूल ने कहा: "हुमायूँ जीवन भर लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुए ही उसकी मृत्यु हो गई")	बाबर ने भूमि मापन हेतु **'गज-ए-बाबरी'**, उद्यान लगाने की **'चारबाग'** पद्धति (आगरा में आरामबाग) और 'मुबइयान' पद्य शैली प्रारंभ की तथा उदारता के कारण **'कलंदर'** कहलाया (काबुली में चाँदी का 'शाहरुखी' व कंधार में 'बाबरी' सिक्का चलाया)	NCERT The Mughals; ASI Fatehpur Sikri
शेरशाह सूरी (1540–1545 ई., सूर वंश — बचपन का नाम: फरीद खाँ)	बहार खाँ लोहानी ने 'शेर खाँ' उपाधि दी; चौसा (1539) व बिलग्राम (1540) में हुमायूँ को हराकर दिल्ली की गद्दी प्राप्त की; रायसीन अभियान (पूरनमल, 1543); **मारवाड़ अभियान (मालदेव, 1544 — गिरी-सुमेल युद्ध:** "एक मुट्ठी बाजरे के लिए मैं हिंदुस्तान की बादशाहत खो देता"); **कालिंजर अभियान (1545)** में 'उक्का' आग्नेयास्त्र फटने से मृत्यु	साम्राज्य को **47 'सरकारों' (जिलों)** और सरकारों को **'परगनों'** में बाँटा — **सरकार स्तर पर:** 'शिकदार-ए-शिकदारान' (सैन्य/प्रशासन) व 'मुंसिफ-ए-मुंसिफान' (न्याय/राजस्व); **परगना स्तर पर:** 'शिकदार', 'आमिल/मुंसिफ', 'फोतदार' (कोषाध्यक्ष) व दो 'कारकुन' (हिंदी व फारसी लिपिक)	भूमि मापन हेतु **'सन की डंडी'** व सिकंदरी गज (39 अंगुल) का प्रयोग, **'पट्टा'** (लगान निर्धारण पत्र) व **'कबूलियत'** (किसान का सहमति पत्र) प्रथा, उपज का 1/3 लगान ('रई' दर सूची) और अकाल राहत हेतु 2.5% 'जरीबाना' व 5% 'मुहाशिलाना' शुल्क; पुराने सिक्के बंद कर **चाँदी का 'रुपया' (178 ग्रेन)** व **ताँबे का 'दाम' (380 ग्रेन — अनुपात 1:64)** चलाया; सोनारगाँव से पेशावर तक **'सड़क-ए-आजम' (जी.टी. रोड)** व 1700 सरायों का निर्माण	ASI Monuments; IUC Academy

शासक एवं शासनकाल	प्रमुख युद्ध एवं राजनीतिक अभियान	केंद्रीय प्रशासन एवं मनसबदारी विकास	भू-राजस्व, मुद्रा एवं धार्मिक-सामाजिक नीतियाँ	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर (1556–1605 ई.)	14 फरवरी 1556 को कलानौर (पंजाब) में 13 वर्ष की आयु में राज्याभिषेक (संरक्षक: **बैरम खाँ** 'खान-ए-खानाँ'); **पानीपत का द्वितीय युद्ध (5 नवंबर 1556 — हेमू 'विक्रमादित्य' की पराजय)**; मालवा (1561), आमेर (1562 — भारमल की पुत्री हरखाबाई से विवाह), गोंडवाना (1564 — रानी दुर्गावती), चित्तौड़ (1567–68 — जयमल व पत्ता), गुजरात विजय (1572–73), **हल्दीघाटी का युद्ध (18 जून 1576 — महाराणा प्रताप बनाम मानसिंह व आसफ खाँ)**, असीरगढ़ का अंतिम अभियान (1601)	1573–74 में साम्राज्य का **12 (बाद में 15) सूबों** में विभाजन; केंद्रीय मंत्री: **वकील** (प्रधानमंत्री), **दीवान-ए-आला / वजीर** (वित्त व राजस्व), **मीर बख्शी** (सैन्य प्रमुख — 'सरखत' जारी करता था), **मीर समाँ** (शाही कारखाने व महल) और **सद्र-उस-सुदूर** (धार्मिक दान — 'मदद-ए-माश' या 'सयूरगल' भूमि व न्याय); दशमलव प्रणाली पर आधारित **'मनसबदारी प्रथा'** में **'जात' (व्यक्तिगत पद व वेतन)** और **'सवार' (घुड़सवारों की संख्या)** का द्वैध वर्गीकरण (1595 ई.)	1580 ई. में राजा **टोडरमल** द्वारा **'आईन-ए-दहसाला' (जब्ती प्रणाली)** लागू — 10 वर्षों (1570–80) के औसत उत्पादन व मूल्यों के आधार पर 1/3 नकद लगान; कृषि की निरंतरता के आधार पर **4 प्रकार की भूमि: पोलज (प्रतिवर्ष खेती), परौती (1–2 वर्ष खाली), चाचर (3–4 वर्ष खाली) और बंजर (5 वर्ष या अधिक खाली)**; **सामाजिक-धार्मिक सुधार:** दास प्रथा का अंत (1562), तीर्थयात्रा कर समाप्त (1563), **जजिया कर समाप्त (1564)**, फतेहपुर सीकरी में **इबादतखाना (1575)**, **मजहरनामा (1579 — मुबारक द्वारा प्रारूप)**, **दीन-ए-इलाही / तौहीद-ए-इलाही (1582 — बीरबल एकमात्र हिंदू अनुयायी, पुरोहित: अबुल फजल)** व **इलाही संवत् (1583)**	NCERT The Mughals; ASI Fatehpur Sikri
नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर (1605–1627 ई., बचपन का नाम: सलीम)	राज्याभिषेक के बाद **12 अध्यादेश ('आइन-ए-जहाँगीरी')** जारी किए और आगरा किले के शाहबुर्ज से यमुना तट तक सोने की **'न्याय की जंजीर' (60 घंटियाँ)** लगवाई; 1606 में शहजादे खुसरो का विद्रोह व सिखों के पाँचवें गुरु अर्जन देव को मृत्युदंड; **1615 ई. में मेवाड़ (राणा अमरसिंह) से सम्मानजनक संधि**; अहमदनगर के वजीर **मलिक अंबर** से संघर्ष; 1622 में फारस के शाह अब्बास द्वारा **कंधार** मुगलों से छीना गया	मनसबदारी में जात पद बढ़ाए बिना अधिक सैनिक रखने के लिए **'दु-अस्पा' (दोगुने घोड़े) और 'सिह-अस्पा' (तिगुने घोड़े)** की प्रथा प्रारंभ की; 1611 ई. में मेहरुन्निसा **(नूरजहाँ** — 'नूरमहल', पिता: मिर्जा गियास बेग 'एतमाद-उद-दौला', भाई: आसफ खाँ) से विवाह और 'नूरजहाँ गुट (जुनता)' का प्रभाव	ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रतिनिधि **कैप्टन विलियम हॉकिंस (1608–11 ई. — जहाँगीर ने 400 का मनसब व 'इंग्लिश खाँ' उपाधि दी)** और ब्रिटेन के राजा जेम्स प्रथम के राजदूत **सर थॉमस रो (1615–19 ई.)** का आगमन; तंबाकू की खेती (पुर्तगालियों द्वारा लाई गई) पर प्रतिबंध लगाया; उच्च-कोटि की जागीर **'अल्तमगा जागीर'** प्रारंभ की	NCERT The Mughals
शहाबुद्दीन मुहम्मद शाहजहाँ (1628–1658 ई., बचपन का नाम: खुर्रम)	1632 ई. में पुर्तगालियों को हुगली से बाहर निकाला; **1633 ई. में अहमदनगर का मुगल साम्राज्य में पूर्ण विलय** तथा 1636 ई. में बीजापुर और गोलकुंडा के साथ संधि; मध्य एशिया (बल्ख व बदख्शाँ) अभियान (1646–47); 1649 ई. में कंधार मुगलों के हाथ से स्थायी रूप से निकल गया; 1657–58 में चारों पुत्रों (दारा शिकोह, शुजा, औरंगजेब व मुराद) के बीच **उत्तराधिकार का युद्ध**	जमा (अनुमानित राजस्व) और हासिल (वास्तविक प्राप्त राजस्व) के अंतर को संतुलित करने के लिए मनसबदारी में **'माहवार' (Month-Scale / शशमाहा व तिमाहा)** प्रणाली लागू की; **1648 ई.** में राजधानी आगरा से **शाहजहाँनाबाद (दिल्ली)** स्थानांतरित की	सिजदा और पाबोस प्रथा को समाप्त कर उसके स्थान पर **'चहार-तस्लीम'** की प्रथा तथा इलाही संवत् के स्थान पर पुनः **हिजरी संवत्** लागू किया; फ्रांसीसी यात्री **जीन-बैप्टिस्ट टैवर्नियर (जौहरी — 6 बार भारत आया)**, **फ्रांस्वा बर्नियर (चिकित्सक — 'ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर')** व इतालवी यात्री **निकोलो मनुची ('स्टोरियो डो मोगोर')** का आगमन	ASI World Heritage Agra
मुहीउद्दीन मुहम्मद औरंगजेब (1658–1707 ई.)	उपाधि: **'आलमगीर'**, व्यक्तिगत आचरण के कारण **'जिंदा पीर'** व 'दरवेश'; दो बार राज्याभिषेक (1658 व 1659 ई.); मीर जुमला का असम अभियान (1662); राजा जयसिंह के माध्यम से शिवाजी के साथ **पुरंदर की संधि (जून 1665)**; जाट (गोकुला, राजाराम व चूड़ामन), सतनामी (1672, नारनौल), बुंदेला (छत्रसाल), सिख (1675 में नौवें गुरु **तेग बहादुर** का बलिदान) व राजपूत विद्रोह (दुर्गादास राठौड़ व शहजादा अकबर); **1686 ई. में बीजापुर** और **1687 ई. में गोलकुंडा का मुगल साम्राज्य में विलय**	औरंगजेब के शासनकाल में मुगल साम्राज्य में **सर्वाधिक 20 (या 21) सूबे** थे और सेना में **हिंदू मनसबदारों का प्रतिशत सर्वाधिक (लगभग 33%)** था; किंतु दक्कन के लंबे युद्धों के कारण मनसबदारों की संख्या बढ़ने और जागीर भूमि कम पड़ने **('बेजागीरी')** से गंभीर **जागीरदारी संकट** उत्पन्न हुआ	सिक्कों पर कलमा खुदवाना, नौरोज उत्सव, झरोखा दर्शन (1669), तुलादान प्रथा व दरबारी संगीत पर प्रतिबंध लगाया; नैतिक आचरण की देखरेख हेतु **'मुहतसिब'** नियुक्त किए; **1679 ई. में हिंदुओं पर पुनः 'जजिया कर' लगाया**; हनफी फिकह पर आधारित इस्लामी कानून की संहिता **'फतवा-ए-आलमगीरी'** का संकलन करवाया; 3 मार्च 1707 को अहमदनगर में मृत्यु (मकबरा: खुलदाबाद/छत्रपति संभाजीनगर)	NCERT The Mughals

क्या आप जानते हैं?

• **मनसबदारी और जागीरदारी में सूक्ष्म अंतर:** एनसीईआरटी (NCERT The Mughals) के अनुसार, मुगल मनसबदारों को अपना वेतन नकद में भी मिल सकता था (**'नकदी मनसबदार'**) और राजस्व आवंटन (**'जागीर'**) के रूप में भी। दिल्ली सल्तनत के 'इक्तादारों' के विपरीत, मुगल मनसबदार (जागीरदार) सामान्यतः अपनी जागीरों में स्वयं निवास नहीं करते थे और न ही वहाँ प्रशासन चलाते थे; उन्हें केवल अपने नौकरों के माध्यम से अपनी जागीर से निर्धारित राजस्व वसूलने का अधिकार था, जबकि वे स्वयं साम्राज्य के किसी अन्य भाग में सैन्य या प्रशासनिक सेवा देते थे। उनकी जागीरें प्रत्येक 3–4 वर्ष में स्थानांतरित (**'तनख्वाह जागीर'**) कर दी जाती थीं (केवल राजपूत राजाओं की पैतृक भूमि **'वतन जागीर'** अहस्तांतरणीय होती थी)।

• **मुगलकालीन किसानों की तीन श्रेणियाँ:** (1) **खुदकाश्त:** वे किसान जो उसी गाँव में रहते थे जहाँ उनकी अपनी भूमि थी; (2) **पाहीकाश्त:** वे किसान जो दूसरे गाँवों में जाकर ठेके या कम लगान पर खेती करते थे; और (3) **मुजारियान:** किरायेदार या बटाईदार किसान जिनके पास अपनी पर्याप्त भूमि नहीं होती थी (IUC Academy)।

परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ)

• **अकबर के काल की भूमि स्वामित्व श्रेणियाँ बनाम कृषि निरंतरता श्रेणियाँ:**

1. **स्वामित्व व प्रशासन के आधार पर भूमि के 3 प्रकार: खालसा भूमि** (सीधे शाही राजकोष में राजस्व देने वाली भूमि), **जागीर भूमि** (मनसबदारों को वेतन के बदले आवंटित भूमि) और **सयूरगल / मदद-ए-माश** (विद्वानों व धार्मिक व्यक्तियों को सद्र-उस-सुदूर द्वारा दी गई कर-मुक्त अनुदान भूमि)।
2. **कृषि की निरंतरता व उर्वरता के आधार पर भूमि के 4 प्रकार: पोलज, परौती, चाचर और बंजर**।
3. **भू-राजस्व निर्धारण की 3 प्रणालियाँ: जब्ती / आईन-ए-दहसाला** (मापन आधारित), **गल्लाबख्शी / बटाई** (भावली, खेत बटाई, लंक बटाई व रास बटाई) और **नसक / कंकूत** (पूर्व आकलन या अनुमान आधारित) (NCERT The Mughals)।

★ **स्मृति ट्रिक**

• **शाहजहाँ के पुत्रों के बीच उत्तराधिकार के पाँच प्रमुख युद्ध (1658–1659 ई.) — सूत्र: "बहादुर धर्म से सामूगढ़ और खजुआ होते हुए देवराई गया"**

1. **बहादुरपुर का युद्ध (फरवरी 1658, वाराणसी के पास):** शाही सेना (सुलेमान शिकोह व राजा जयसिंह) ने **शाहशुजा** को हराया।
2. **धरमत का युद्ध (अप्रैल 1658, उज्जैन के पास):** औरंगजेब और मुराद की संयुक्त सेना ने शाही सेना (**महाराजा जसवंत सिंह व कासिम खाँ**) को हराया।
3. **सामूगढ़ का निर्णायक युद्ध (मई 1658, आगरा के पास):** औरंगजेब ने **दारा शिकोह** को निर्णायक रूप से पराजित किया।
4. **खजुआ का युद्ध (जनवरी 1659, फतेहपुर उ.प्र. के पास):** औरंगजेब ने **शाहशुजा** को पराजित किया।
5. **देवराई की घाटी का युद्ध (अप्रैल 1659, अजमेर के पास):** औरंगजेब ने **दारा शिकोह** को अंतिम रूप से पराजित कर मृत्युदंड दिया (IUC Academy)।

अध्याय 6: मध्यकालीन स्थापत्य कला, चित्रकला, साहित्य एवं मराठा उत्कर्ष

मध्यकालीन भारत में इंडो-इस्लामिक (भारतीय-फारसी) स्थापत्य कला में **मेहराब और गुंबद (Arcuate Style)** का भारतीय **शहतीर और कोष्ठक (Trabeate Style)** के साथ अद्भुत समन्वय हुआ (ASI Fatehpur Sikri)। मुगल काल में हुमायूँ और अकबर से प्रारंभ हुई चित्रकला जहाँगीर के काल में अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँची, जबकि शाहजहाँ के काल को मुगल संगमरमर स्थापत्य का स्वर्ण युग कहा जाता है (ASI World Heritage Agra)। सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दक्कन में **छत्रपति शिवाजी महाराज (1627/1630–1680 ई.)** ने अष्टप्रधान प्रशासन और छापामार युद्ध नीति के बल पर स्वतंत्र हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की (IUC Academy)।

सारणी 6.1 (भाग 2): मुगल स्थापत्य, चित्रकला, फारसी साहित्य एवं छत्रपति शिवाजी का अष्टप्रधान प्रशासन

अध्ययन क्षेत्र / विषय	प्रमुख शासक / संरक्षक	प्रमुख स्मारक / कलाकार / ग्रंथ / पदाधिकारी	विशिष्ट स्थापत्य, कलात्मक एवं प्रशासनिक विशेषताएँ	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
हुमायूँ एवं अकबर कालीन स्थापत्य (लाल बलुआ पत्थर प्रधान)	हाजी बेगम (हुमायूँ की विधवा पत्नी) एवं सम्राट अकबर	**हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली** (1565–72 ई., वास्तुकार: मिर्जा मिराक गियास — 1993 में विश्व धरोहर); **आगरा का किला** (1983 में विश्व धरोहर), लाहौर व इलाहाबाद का किला; **फतेहपुर सीकरी** (1571–85 ई. — 1986 में विश्व धरोहर) और **सिकंदरा में अकबर का मकबरा**	**हुमायूँ का मकबरा** भारत में चारबाग पद्धति और संगमरमर के **दोहरे गुंबद (Double Dome)** वाला प्रथम भव्य मुगल मकबरा है ('ताजमहल का पूर्वगामी'); **फतेहपुर सीकरी** में जोधाबाई का महल, पंचमहल (बौद्ध विहार शैली), दीवान-ए-खास (केंद्रीय स्तंभ), मरियम की कोठी, बीरबल का महल, जामा मस्जिद, **शेख सलीम चिश्ती का संगमरमर मकबरा** और गुजरात विजय की स्मृति में निर्मित **176 फीट ऊँचा 'बुलंद दरवाजा'** स्थित हैं	ASI World Heritage; ASI Fatehpur Sikri

अध्ययन क्षेत्र / विषय	प्रमुख शासक / संरक्षक	प्रमुख स्मारक / कलाकार / ग्रंथ / पदाधिकारी	विशिष्ट स्थापत्य, कलात्मक एवं प्रशासनिक विशेषताएँ	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
जहाँगीर, शाहजहाँ एवं औरंगजेब कालीन स्थापत्य (सफेद संगमरमर एवं पिएत्रा दुरा)	नूरजहाँ, शाहजहाँ एवं औरंगजेब	आगरा में नूरजहाँ द्वारा निर्मित **एतमाद-उद-दौला का मकबरा** (1626 ई.); लाहौर (शाहदरा) में जहाँगीर का मकबरा; आगरा में **ताजमहल** (1631–53 ई., मुख्य वास्तुकार: **उस्ताद अहमद लाहौरी** व उस्ताद ईसा — 1983 में विश्व धरोहर), आगरा किले की **मोती मस्जिद**; दिल्ली का **लाल किला** (2007 में विश्व धरोहर) व **जामा मस्जिद**; औरंगजेब द्वारा दिल्ली के लाल किले में **मोती मस्जिद**, लाहौर की **बादशाही मस्जिद** और औरंगाबाद में **बीबी का मकबरा** (राबिया-उद-दुर्रानी का मकबरा — 1679 ई.)	**एतमाद-उद-दौला का मकबरा** पूर्णतः सफेद संगमरमर से निर्मित प्रथम मुगल इमारत है जिसमें सर्वप्रथम **'पिएत्रा दुरा' (Pietra Dura — संगमरमर में अर्ध-कीमती रत्नों की जड़ावट)** का प्रयोग हुआ; मकराना के सफेद संगमरमर से निर्मित **ताजमहल** (ASI Taj Mahal) मुगल स्थापत्य की पराकाष्ठा है; औरंगाबाद के **बीबी का मकबरा** को 'दक्कन का ताज' या 'ताजमहल की फूहड़ नकल' कहा जाता है	ASI World Heritage Agra
मुगल चित्रकला एवं संगीत	हुमायूँ, अकबर एवं जहाँगीर (जहाँगीर का काल चित्रकला का स्वर्ण युग)	**हुमायूँ-अकबर के फारसी चित्रकार:** मीर सैयद अली ('जुदाई') व ख्वाजा अब्दुस्समद ('शीरीकलम'); **अकबर के भारतीय चित्रकार: दसवंत** ('रज्मनामा' से संबद्ध) व **बसावन**; **जहाँगीर के चित्रकार: उस्ताद मंसूर ('नादिर-उल-अस्र')**, **अबुल हसन ('नादिर-उल-जमाँ')**, बिशनदास (छवि चित्रण विशेषज्ञ), मनोहर व गोवर्धन	अकबर के काल में सूती कपड़े पर 1400 चित्रों वाली **'हम्जानामा' (दास्तान-ए-अमीर हम्जा)** और महाभारत के फारसी अनुवाद **'रज्मनामा'** का चित्रांकन हुआ तथा भित्ति चित्रकारी प्रारंभ हुई; जहाँगीर के काल में हस्तलिपि चित्रण के स्थान पर **छवि चित्र (Portrait), पशु-पक्षी व प्रकृति चित्रण (उस्ताद मंसूर द्वारा साइबेरियाई सारस व बंगाल का अनोखा पुष्प)** तथा आभामंडल (Halo) का चित्रण हुआ; अकबर के दरबार में **तानसेन (रामतनु पांडेय — उपाधि: 'कंठाभरण वाणीविलास')** व बैजू बावरा थे	ASI Fatehpur Sikri; National Museum India
मुगलकालीन फारसी साहित्य एवं अनुवाद विभाग	बाबर से औरंगजेब तक (अकबर ने **फैजी** के अधीन अनुवाद विभाग स्थापित किया)	**बाबरनामा:** अब्दुर्रहीम खानखाना द्वारा तुर्की से फारसी अनुवाद; **हुमायूँनामा:** गुलबदन बेगम; **अकबरनामा (3 जिल्द, तीसरी जिल्द 'आईन-ए-अकबरी'):** अबुल फजल; **मुंतखब-उत-तवारीख:** अब्दुल कादिर बदायूँनी (अकबर का आलोचक); **तबकात-ए-अकबरी:** निजामुद्दीन अहमद; **तुजुक-ए-जहाँगीरी:** जहाँगीर व मौतबिद खाँ; **पादशाहनामा:** अब्दुल हमीद लाहौरी; **आलमगीरनामा:** मुहम्मद काजिम; **मुंतखब-उल-लुबाब:** खफी खाँ	**संस्कृत ग्रंथों के फारसी अनुवाद:** महाभारत = **'रज्मनामा'** (बदायूँनी, नकीब खाँ व फैजी); रामायण = बदायूँनी; पंचतंत्र = **'अनवर-ए-सुहैली'** (अबुल फजल) व 'यार-ए-दानिश'; लीलावती (गणित) = **फैजी**; राजतरंगिणी = मुल्ला शाह मुहम्मद; अथर्ववेद = हाजी इब्राहिम सरहिंदी; शाहजहाँ के पुत्र **दारा शिकोह** ने 52 उपनिषदों का **'सिर्र-ए-अकबर' (महान रहस्य)** नाम से फारसी अनुवाद किया और हिंदू-इस्लाम समन्वय पर **'मज्म-उल-बहरैन' (दो समुद्रों का संगम)** लिखा	IUC Academy
छत्रपति शिवाजी महाराज का जीवन एवं सैन्य अभियान (1627/1630–1680 ई.)	जन्म: शिवनेर दुर्ग (पुणे); पिता: शाहजी भोंसले; माता: **जीजाबाई**; संरक्षक: दादोजी कोंडदेव; आध्यात्मिक गुरु: **समर्थ रामदास**; राजधानी: **रायगढ़**	तोरण दुर्ग पर प्रथम अधिकार (1646); जावली विजय (1656); बीजापुर के सेनापति **अफजल खाँ का वध (1659, प्रतापगढ़)**; मुगल सूबेदार **शाइस्ता खाँ पर पुणे के लाल महल में रात्रि आक्रमण (1663)**; **सूरत की प्रथम लूट (1664)**; मिर्जा राजा जयसिंह के साथ **पुरंदर की संधि (जून 1665 — 35 में से 23 किले मुगलों को सौंपे)**; आगरा के जयपुर भवन से पलायन (1666); **सूरत की दूसरी लूट (1670)**; **6 जून 1674 को रायगढ़ में काशी के विद्वान गंगाभट्ट द्वारा राज्याभिषेक** ('छत्रपति' व 'हैंदव धर्मोद्धारक' उपाधि); कर्नाटक (जिंजी) का अंतिम अभियान (1677–78)	**अष्टप्रधान मंत्रिपरिषद (8 मंत्री):** (1) **पेशवा (मुख्य प्रधान):** प्रधानमंत्री व सामान्य प्रशासन, (2) **अमात्य (मजूमदार):** वित्त एवं राजस्व मंत्री, (3) **वाकियानवीस (मंत्री):** दरबारी कार्यवाही व गुप्तचर, (4) **सुमंत (दबीर):** विदेश मंत्री, (5) **सुरुनवीस (चिटनीस):** राजकीय पत्राचार, (6) **सर-ए-नौबत (सेनापति):** सैन्य प्रमुख, (7) **पंडितराव:** धार्मिक अनुदान प्रमुख, और (8) **न्यायाधीश:** मुख्य न्यायिक अधिकारी (पंडितराव और न्यायाधीश को छोड़कर शेष सभी 6 मंत्रियों को सैन्य नेतृत्व भी करना पड़ता था)	IUC Academy
मराठा भू-राजस्व एवं सैन्य व्यवस्था	स्वराज्य क्षेत्र ('मलिक अंबर' की व्यवस्था पर आधारित काठी या जरीब से मापन) एवं पड़ोसी मुगल/दक्कनी क्षेत्र	घुड़सवार सेना के दो भाग: (1) **'बरगीर'** (शाही घुड़सवार जिन्हें घोड़े व शस्त्र राज्य देता था) और (2) **'शिलहदार'** (स्वतंत्र सैनिक जो अपने घोड़े व शस्त्र स्वयं लाते थे); पैदल सेना: **'पाइक'**; कोलाबा में शक्तिशाली नौसेना	स्वराज्य भूमि से उपज का 33% से बढ़ाकर **40% (2/5 भाग) भू-राजस्व** नकद या अनाज में वसूला जाता था; पड़ोसी क्षेत्रों से दो विशिष्ट कर वसूले जाते थे: (1) **'चौथ' (उपज का 1/4 अर्थात् 25%)** — मराठा आक्रमण से सुरक्षा के बदले वसूला जाने वाला कर; और (2) **'सरदेशमुखी' (उपज का 1/10 अर्थात् 10%)** — महाराष्ट्र का पुश्तैनी 'सरदेशमुख' (प्रमुख मुखिया) होने के कानूनी अधिकार के दावे के रूप में वसूला जाने वाला अतिरिक्त कर	IUC Academy

क्या आप जानते हैं?

• **दोहरा गुंबद (Double Dome) और चारबाग शैली का विकास:** सल्तनत काल में **दोहरे गुंबद** (जिसमें गुंबद का एक भीतरी खोखला आवरण छत के अनुपात को बनाए रखता है और बाहरी ऊँचा गुंबद इमारत को भव्य ऊँचाई प्रदान करता है) का प्रथम प्रयोग सिकंदर लोदी के काल में निर्मित **ताज खाँ के मकबरे (1501 ई.) और सिकंदर लोदी के मकबरे (1517 ई., लोदी गार्डन, दिल्ली)** में हुआ, जिसे मुगल काल में **हुमायूँ के मकबरे** और **ताजमहल** में संगमरमर के साथ चरम पूर्णता प्रदान की गई (ASI World Heritage)।

• **मुगलकालीन तीन मोती मस्जिदें:** भारत में तीन प्रसिद्ध 'मोती मस्जिद' हैं:

1. **लाहौर के किले की मोती मस्जिद: जहाँगीर** (या शाहजहाँ के प्रारंभिक काल) से संबद्ध।
2. **आगरा के किले की मोती मस्जिद: शाहजहाँ** द्वारा शुद्ध सफेद संगमरमर से निर्मित।
3. **दिल्ली के लाल किले की मोती मस्जिद: औरंगजेब** द्वारा 1659–60 ई. में अपने व्यक्तिगत नमाज कक्ष के रूप में निर्मित (ASI Monuments)।

परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ)

• **तुजुक-ए-बाबरी बनाम तुजुक-ए-जहाँगीरी की मूल भाषा:** मुगलों की राजकीय एवं दरबारी भाषा **फारसी** थी, किंतु **बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-बाबरी' (बाबरनामा) अपनी मातृभाषा 'चगताई तुर्की'** में लिखी थी (जिसका बाद में अकबर के काल में अब्दुर्रहीम खानखाना ने फारसी में अनुवाद किया), जबकि **जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' सीधे 'फारसी' भाषा** में लिखी थी (बाबर और जहाँगीर केवल दो मुगल सम्राट थे जिन्होंने अपनी आत्मकथाएँ स्वयं लिखीं) (IUC Academy)।

• **अष्टदिग्गज बनाम अष्टप्रधान बनाम अष्टछाप:**

1. **अष्टदिग्गज:** विजयनगर के शासक **कृष्णदेव राय** के दरबार के **8 तेलुगु कवि**।
2. **अष्टप्रधान: छत्रपति शिवाजी महाराज** के प्रशासन के **8 केंद्रीय मंत्री**।
3. **अष्टछाप:** वल्लभाचार्य के पुत्र **गोस्वामी विट्ठलनाथ** द्वारा स्थापित कृष्णभक्ति धारा के **8 ब्रजभाषा कवि** (सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास) (IUC Academy)।

★ **स्मृति ट्रिक**

• **छत्रपति शिवाजी के प्रमुख सैन्य अभियानों व घटनाओं का कालानुक्रम (1659–1674 ई.) — सूत्र: "अफजल (59) शाइस्ता (63) सूरत (64) पुरंदर (65) आगरा (66) रायगढ़ राज्याभिषेक (74)"**

1. **1659 ई.:** बीजापुर के सेनापति **अफजल खाँ** का प्रतापगढ़ के पास वध।
2. **1663 ई.:** मुगल सूबेदार **शाइस्ता खाँ** पर पुणे के लाल महल में रात्रि प्रहार।
3. **1664 ई.:** मुगल बंदरगाह **सूरत की प्रथम लूट** (1670 ई. में दूसरी लूट)।
4. **1665 ई. (जून):** मिर्जा राजा जयसिंह के साथ **पुरंदर की संधि** (23 किले मुगलों को दिए)।
5. **1666 ई.: आगरा** में औरंगजेब के दरबार में उपस्थिति और जयपुर भवन की कैद से चतुराईपूर्ण पलायन।
6. **1674 ई. (6 जून): रायगढ़ दुर्ग** में काशी के पंडित गंगाभट्ट द्वारा विधिवत **राज्याभिषेक** (IUC Academy)।

मध्यकालीन भारत का इतिहास: व्याख्या सहित बहुविकल्पीय प्रश्न कोष (प्रश्न 41 से 80)

अभ्यास प्रश्न #1 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 41. आठवीं से दसवीं शताब्दी के मध्य कन्नौज (महोदय श्री) पर आधिपत्य के लिए चले प्रसिद्ध 'त्रिपक्षीय संघर्ष' में निम्नलिखित में से कौन-से तीन राजवंश सम्मिलित थे?

• (क) गुर्जर-प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट

• (ख) गुर्जर-प्रतिहार, चंदेल और परमार

• (ग) पाल, सेन और चोल

• (घ) चालुक्य, पल्लव और राष्ट्रकूट

• **सही उत्तर:** (क) गुर्जर-प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट

• **विस्तृत व्याख्या:** एनसीईआरटी (NCERT Empires and Kingdoms; NCERT Kings and Kingdoms) के अनुसार, सम्राट हर्षवर्धन के पश्चात उत्तर भारत की राजनीतिक प्रतिष्ठा के प्रतीक और समृद्ध गंगा व्यापार मार्ग के केंद्र **कन्नौज** पर नियंत्रण के लिए पश्चिम के **गुर्जर-प्रतिहार**, पूर्व (बंगाल-बिहार) के **पाल** और दक्कन के **राष्ट्रकूट** राजवंशों के बीच लगभग दो शताब्दियों तक 'त्रिपक्षीय संघर्ष' चला। प्रतिहार शासक वत्सराज ने इसकी शुरुआत की,

राष्ट्रकूट नरेश ध्रुव ने उत्तर भारत में अभियान कर वत्सराज व धर्मपाल दोनों को पराजित किया, और अंततः गुर्जर-प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय व मिहिर भोज ने कन्नौज को अपनी स्थायी राजधानी बनाया।

अभ्यास प्रश्न #2 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 42. गुजरात के पाटन में सरस्वती नदी के तट पर स्थित यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल 'रानी-की-वाव' (रानी की बावड़ी) का निर्माण किस सोलंकी (चालुक्य) शासक की स्मृति में उनकी रानी उदयमती ने ग्यारहवीं शताब्दी में करवाया था?

- (क) मूलराज प्रथम
- (ख) भीमदेव प्रथम
- (ग) जयसिंह सिद्धराज
- (घ) कुमारपाल
- **सही उत्तर:** (ख) भीमदेव प्रथम
- **विस्तृत व्याख्या:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI World Heritage) के अनुसार, गुजरात के पाटन (प्राचीन अन्हिलवाड़ा) में स्थित **'रानी-की-वाव'** का निर्माण ग्यारहवीं शताब्दी में सोलंकी राजवंश के शासक **भीमदेव प्रथम (1022–1064 ई.)** की स्मृति में उनकी विधवा रानी **उदयमती** ने करवाया था। मारू-गुर्जर स्थापत्य शैली में निर्मित यह सात मंजिला सीढ़ीदार बावड़ी एक उल्टे मंदिर (Inverted Temple) के रूप में जल की पवित्रता को समर्पित है, जिसमें भगवान विष्णु के दशावतारों (शेषशायी विष्णु, वराह, वामन, कल्कि) और अप्सराओं की 500 से अधिक मुख्य मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। इसे 2014 में यूनेस्को विश्व धरोहर घोषित किया गया।

अभ्यास प्रश्न #3 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 43. महमूद गजनवी के साथ भारत आए विद्वान अल-बरूनी और उसकी कृति 'किताब-उल-हिंद' (तहकीक-ए-हिंद) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह ग्रंथ अरबी भाषा में लिखा गया है और 80 अध्यायों में विभाजित है, जिसमें भारत के धर्म, दर्शन, खगोल विज्ञान, रीति-रिवाज और माप-तौल प्रणालियों का विवेचन है।
2. अल-बरूनी ने बनारस और पंजाब के विद्वानों से संस्कृत सीखी तथा पतंजलि के योगसूत्र और यूक्लिड के गणितीय कार्यों का अनुवाद किया।
3. अल-बरूनी ने 'किताब-उल-हिंद' में समकालीन राजनीतिक युद्धों का ही मुख्य रूप से दरबारी गुणगान किया है और सामाजिक-वैज्ञानिक विषयों की उपेक्षा की है।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- (क) केवल 1 और 2
- (ख) केवल 2 और 3
- (ग) केवल 1 और 3
- (घ) 1, 2 और 3 सभी
- **सही उत्तर:** (क) केवल 1 और 2
- **विस्तृत व्याख्या:** कथन 3 असत्य है क्योंकि अल-बरूनी की **'किताब-उल-हिंद'** दरबारी युद्धों का वृत्तांत नहीं, अपितु ग्यारहवीं शताब्दी के भारतीय समाज, विज्ञान, दर्शन, वर्ण-जाति व्यवस्था और पंचांग का एक तटस्थ, विश्वकोशीय एवं आलोचनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। अरबी भाषा में लिखे गए इसके प्रत्येक अध्याय (कुल 80 अध्याय) का प्रारंभ एक प्रश्न से होता है, तत्पश्चात संस्कृत ग्रंथों के आधार पर भारतीय अवधारणा का विवरण और अंत में यूनानी या सूफी परंपराओं से उसकी तुलना प्रस्तुत की गई है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #4 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 44. चाहमान (चौहान) वंश के किस शासक ने दिल्ली के तोमरों को पराजित किया, संस्कृत में 'हरकेलि' नाटक की रचना की तथा किसके दरबारी कवि सोमदेव ने 'ललित विग्रहराज' नाटक लिखा?

- (क) अजयराज

• (ख) अर्णोराज

• (ग) विग्रहराज चतुर्थ ('बीसलदेव')

• (घ) पृथ्वीराज तृतीय ('राय पिथौरा')

• **सही उत्तर:** (ग) विग्रहराज चतुर्थ ('बीसलदेव')

• **विस्तृत व्याख्या:** शाकंभरी और अजमेर के चौहान शासक **विग्रहराज चतुर्थ ('बीसलदेव', 1150–1164 ई.)** एक महान विजेता होने के साथ-साथ उच्च कोटि के विद्वान और कवि भी थे ('कविबांधव')। उन्होंने 1151 ई. के आसपास तोमरों से ढिल्लिका (दिल्ली) छीनकर उन्हें अपना सामंत बनाया (**NCERT Kings and Kingdoms**)। उन्होंने भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' के कथानक पर आधारित संस्कृत नाटक **'हरकेलि'** की रचना की, जिसकी पंक्तियाँ अजमेर के सरस्वती मंदिर (जिसे बाद में कुतुबुद्दीन ऐबक ने 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' मस्जिद में परिवर्तित कर दिया) की प्रस्तर शिलाओं पर आज भी उत्कीर्ण हैं। उनके दरबारी कवि **सोमदेव** ने **'ललित विग्रहराज'** नामक नाटक लिखा।

अभ्यास प्रश्न #5 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 45. दिल्ली सल्तनत के किस सुल्तान को 'गुलामों का गुलाम' कहा जाता है, जिसने लाहौर के स्थान पर दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया, चाँदी का 'टंका' और ताँबे का 'जीतल' जारी किया तथा 1221 ई. में ख्वारिज्म के राजकुमार जलालुद्दीन मांगबर्नी को शरण न देकर भारत को चंगेज खाँ के मंगोल आक्रमण से बचाया?

• (क) कुतुबुद्दीन ऐबक

• (ख) शम्सुद्दीन इल्तुतमिश

• (ग) गियासुद्दीन बलबन

• (घ) अलाउद्दीन खलजी

• **सही उत्तर:** (ख) शम्सुद्दीन इल्तुतमिश

• **विस्तृत व्याख्या:** इल्बरी तुर्क **शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (1210–1236 ई.)** को दिल्ली सल्तनत का **'वास्तविक संस्थापक'** माना जाता है। वह मुहम्मद गोरी के गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक का गुलाम और दामाद था, इसलिए उसे **'गुलामों का गुलाम'** कहा जाता है। उसने 1215 ई. में तराइन के तृतीय युद्ध में ताजुद्दीन यल्दौज को और 1228 ई. में नासिरुद्दीन कुबाचा को पराजित किया। 1221 ई. में जब मंगोल विजेता **चंगेज खाँ** ख्वारिज्म के शाह के पुत्र **जलालुद्दीन मांगबर्नी** का पीछा करते हुए सिंधु नदी के तट तक आ पहुँचा, तो इल्तुतमिश ने कूटनीतिक दूरदर्शिता का परिचय देते हुए मांगबर्नी को शरण देने से इनकार कर दिया, जिससे नवजात दिल्ली सल्तनत चंगेज खाँ के विध्वंस से सुरक्षित रह सकी (**NCERT Delhi 12th to 15th Century**)।

अभ्यास प्रश्न #6 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 46. मध्यकालीन भारत की प्रथम और एकमात्र महिला मुस्लिम शासिका रजिया सुल्तान (1236–1240 ई.) के संदर्भ में तेरहवीं शताब्दी के इतिहासकार मिनहाज-उस-सिराज ने अपनी किस कृति में लिखा कि "वह अपने सभी भाइयों से अधिक योग्य और सक्षम थी, किंतु स्त्री होना ही उसके पतन का कारण बना"?

• (क) ताज-उल-मासिर

• (ख) तबकात-ए-नासिरी

• (ग) तारीख-ए-फिरोजशाही

• (घ) फुतूह-उस-सलातीन

• **सही उत्तर:** (ख) तबकात-ए-नासिरी

• **विस्तृत व्याख्या:** एनसीईआरटी (**NCERT Delhi 12th to 15th Century**) के अनुसार, सुल्तान इल्तुतमिश ने अपने जीवित पुत्रों को अयोग्य पाकर अपनी पुत्री **रजिया** को अपना उत्तराधिकारी नामित किया था। रजिया ने दिल्ली की जनता के सहयोग से लाल वस्त्र पहनकर न्याय माँगा और 1236 ई. में सिंहासन प्राप्त किया। उसने पर्दा प्रथा त्याग कर पुरुषों के समान **'कुबा' (चोगा) और 'कुलाह' (टोपी)** पहनकर खुले दरबार में बैठना प्रारंभ किया तथा गैर-तुर्क अभीसीनियाई अधिकारी जमालुद्दीन याकूत को 'अमीर-ए-आखूर' (अश्वशाला प्रधान) नियुक्त किया। तुर्क अमीरों ('चालीसा') के विद्रोह के बाद उसने भटिंडा के सूबेदार अल्तूनिया से विवाह किया, किंतु 1240 ई. में कैथल के पास उसकी हत्या कर दी गई। इतिहासकार **मिनहाज-उस-सिराज** ने सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद को समर्पित अपनी फारसी कृति **'तबकात-ए-नासिरी'** में रजिया की असाधारण योग्यता का यह प्रसिद्ध मूल्यांकन किया है।

अभ्यास प्रश्न #7 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 47. दिल्ली सल्तनत के किस सुल्तान ने स्वयं को पौराणिक ईरानी नायक 'अफरासियाब का वंशज' घोषित किया, दरबार में हँसने-मुस्कुराने और मद्यपान पर कठोर प्रतिबंध लगाया तथा मंगोल आक्रमणों से पश्चिमी सीमा की रक्षा करते हुए अपने ज्येष्ठ पुत्र शहजादा मुहम्मद को खो दिया?

- (क) इल्तुतमिश
- (ख) गियासुद्दीन बलबन
- (ग) जलालुद्दीन खलजी
- (घ) गियासुद्दीन तुगलक
- **सही उत्तर:** (ख) गियासुद्दीन बलबन
- **विस्तृत व्याख्या: गियासुद्दीन बलबन (1266–1287 ई.)** ने सुल्तान पद की गरिमा को पुनः स्थापित करने के लिए ससानी (फारसी) राजत्व के सिद्धांत को अपनाया। फिरदौसी के 'शाहनामा' के आधार पर उसने स्वयं को पौराणिक तुर्क-ईरानी वीर **'अफरासियाब'** का वंशज बताया, अपने पौत्रों के नाम पर **कैखुसरो, कैकुबाद और क्यूमर्स** रखे, और कुलीन रक्त की शुद्धता पर अत्यधिक बल दिया। उसने बंगाल में **तुगरिल खाँ के विद्रोह (1279 ई.)** का निर्मम दमन किया। 1285 ई. में मंगोलों के आक्रमण का सामना करते हुए उसके योग्य पुत्र **शहजादा मुहम्मद** (जिसके दरबार से अमीर खुसरो और अमीर हसन ने अपना साहित्यिक जीवन प्रारंभ किया था) की मृत्यु हो गई (NCERT Delhi 12th to 15th Century)।

अभ्यास प्रश्न #8 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 48. अलाउद्दीन खलजी के कृषि और भू-राजस्व सुधारों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वह दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था जिसने भूमि की वास्तविक पैमाइश ('मसाहत') कराकर प्रति 'बिस्वा' उपज के आधार पर राज्य की माँग ('खराज') कुल उत्पादन का 50% (आधा) निर्धारित की।

2. उसने ग्रामीण मध्यस्थों — खुद, मुकद्दम और चौधरी — के विशेषाधिकारों ('हकूक-ए-खोती' व 'किस्मत-ए-खोती') को समाप्त कर दिया और उन्हें भी आम किसानों की भाँति कर देने के लिए बाध्य किया।

3. उसने 'घरी' (आवास कर) और 'चरी' (चरागाह/दुधारू पशु कर) नामक दो नए कर लगाए तथा बकाया लगान वसूलने के लिए 'दीवान-ए-मुस्तखराज' विभाग बनाया।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- (क) केवल 1 और 2
- (ख) केवल 2 और 3
- (ग) केवल 1 और 3
- (घ) 1, 2 और 3 सभी
- **सही उत्तर:** (घ) 1, 2 और 3 सभी
- **विस्तृत व्याख्या:** एनसीईआरटी (NCERT Delhi 12th to 15th Century) के अनुसार, अलाउद्दीन खलजी ने मंगोल आक्रमणों से रक्षा और साम्राज्य विस्तार हेतु रखी गई विशाल स्थायी सेना के खर्च के लिए कृषि-राजस्व प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन किए। उसने मुकद्दमों और खुदों (ग्राम मुखियाओं) के विशेषाधिकार छीन लिए ताकि कर का बोझ शक्तिशाली वर्ग द्वारा गरीब किसानों ('बलाहार') पर न डाला जा सके। बरनी लिखता है कि खुद और मुकद्दम घोड़ों पर चढ़ना और पान खाना भूल गए तथा उनकी स्त्रियों को दूसरों के घरों में काम करना पड़ा।

अभ्यास प्रश्न #9 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 49. अलाउद्दीन खलजी के सेनापति मलिक काफूर ('हजार दीनारी') के दक्षिण भारतीय अभियानों (1307–1311 ई.) में विजित चार राज्यों का सही कालानुक्रम क्या था तथा इनमें से किस शासक ने अलाउद्दीन की अधीनता स्वीकार ही नहीं की थी?

- (क) देवगिरि (यादव) → वारंगल (काकतीय) → द्वारसमुद्र (होयसल) → मदुरै/माबर (पांड्य); मदुरै के पांड्य शासक वीर पांड्य ने अधीनता स्वीकार नहीं की
- (ख) वारंगल → देवगिरि → मदुरै → द्वारसमुद्र; देवगिरि के रामचंद्र देव ने अधीनता स्वीकार नहीं की
- (ग) द्वारसमुद्र → वारंगल → देवगिरि → मदुरै; वारंगल के प्रतापरुद्र देव ने अधीनता स्वीकार नहीं की

• (घ) मदुरै → द्वारसमुद्र → वारंगल → देवगिरि; होयसल शासक वीर बल्लाल तृतीय ने अधीनता स्वीकार नहीं की

• **सही उत्तर:** (क) देवगिरि (यादव) → वारंगल (काकतीय) → द्वारसमुद्र (होयसल) → मदुरै/माबर (पांड्य); मदुरै के पांड्य शासक वीर पांड्य ने अधीनता स्वीकार नहीं की

• **विस्तृत व्याख्या:** गुजरात विजय (1299 ई.) के दौरान नुसरत खाँ ने खंभात बंदरगाह से हिंदू हिजड़े **मलिक काफूर** को एक हजार दीनार में खरीदा था ('हजार दीनारी')। अलाउद्दीन ने दक्षिण भारत के राज्यों को सीधे साम्राज्य में न मिलाकर उनसे वार्षिक कर लेने की नीति अपनाई:

1. **देवगिरि अभियान (1307–08 ई.):** यादव शासक **रामचंद्र देव** को पराजित किया (अलाउद्दीन ने उसे सम्मानपूर्वक 'राय-रायान' की उपाधि व नवसारी की जागीर दी)।

2. **वारंगल/तेलंगाना अभियान (1309–10 ई.):** काकतीय शासक **प्रतापरुद्र देव द्वितीय** ने आत्मसमर्पण कर अपनी सोने की मूर्ति में जंजीर डालकर भेंट की और विश्वप्रसिद्ध **'कोहिनूर हीरा'** मलिक काफूर को दिया।

3. **द्वारसमुद्र अभियान (1310–11 ई.):** होयसल शासक **वीर बल्लाल तृतीय** ने अधीनता स्वीकार की।

4. **मदुरै/माबर अभियान (1311 ई.):** पांड्य भाइयों सुंदर पांड्य और **वीर पांड्य** के गृहयुद्ध में काफूर ने मदुरै और चिदंबरम मंदिरों से अपार धन लूटा (आर्थिक दृष्टि से सबसे सफल अभियान), किंतु **वीर पांड्य कभी हाथ नहीं आया और उसने अलाउद्दीन की अधीनता स्वीकार नहीं की** (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #10 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 50. सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक (1325–1351 ई.) के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

• (क) वह दिल्ली के सभी सुल्तानों में सर्वाधिक शिक्षित, विद्वान (तर्कशास्त्र, दर्शन, गणित, खगोल व चिकित्सा का ज्ञाता) और धार्मिक रूप से सहिष्णु शासक था।

• (ख) वह होली आदि हिंदू त्योहारों में भाग लेता था तथा उसने जैन विद्वान जिनप्रभ सूरि और राजशेखर को अपने दरबार में सम्मानित किया।

• (ग) उसने मोरोक्को (अफ्रीका) के यात्री इब्न बतूता को दिल्ली का मुख्य काजी नियुक्त किया और 1342 ई. में अपना राजदूत बनाकर चीन के तोगन तिमूर के दरबार में भेजा।

• (घ) उसकी मृत्यु मुल्तान में मंगोलों से लड़ते हुए हुई और बदायूँनी ने लिखा कि "प्रजा को अपने राजा से कभी मुक्ति नहीं मिली।"

• **सही उत्तर:** (घ) उसकी मृत्यु मुल्तान में मंगोलों से लड़ते हुए हुई और बदायूँनी ने लिखा कि "प्रजा को अपने राजा से कभी मुक्ति नहीं मिली।"

• **विस्तृत व्याख्या:** कथन (घ) आंशिक रूप से गलत है क्योंकि मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु मुल्तान में मंगोलों से लड़ते हुए नहीं, अपितु **20 मार्च 1351 को सिंध के थट्टा (गोडाल) में विद्रोही तागी का पीछा करते हुए बीमारी के कारण** हुई थी। उसकी मृत्यु पर इतिहासकार **अब्दुल कादिर बदायूँनी** ने यह प्रसिद्ध टिप्पणी की थी — "अंततः सुल्तान को अपनी प्रजा से और प्रजा को अपने सुल्तान से मुक्ति मिल गई।" ज्ञातव्य है कि वह अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह और बहराइच में सालार मसूद गाजी की दरगाह की यात्रा करने वाला दिल्ली का प्रथम सुल्तान था (NCERT Delhi 12th to 15th Century; IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #11 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 51. दिल्ली सल्तनत के किस सुल्तान ने सर्वप्रथम ब्राह्मणों पर भी 'जजिया कर' लगाया, सिंचाई हेतु पाँच बड़ी नहरों का निर्माण कराकर उलेमाओं की सलाह से उपज का 1/10 भाग 'हक-ए-शर्ब' (सिंचाई कर) वसूला तथा इक्तादारों और सैनिकों के पदों को पुनः वंशानुगत बना दिया?

• (क) गियासुद्दीन तुगलक

• (ख) मुहम्मद बिन तुगलक

• (ग) फिरोजशाह तुगलक

• (घ) सिकंदर लोदी

• **सही उत्तर:** (ग) फिरोजशाह तुगलक

• **विस्तृत व्याख्या: फिरोजशाह तुगलक (1351–1388 ई.)** ने उलेमा वर्ग को संतुष्ट रखने के लिए अब तक कर-मुक्त रखे गए **ब्राह्मणों पर भी जजिया कर** लगा दिया (जिसके विरोध में दिल्ली के ब्राह्मणों ने भूख हड़ताल की, जिसे दिल्ली की हिंदू जनता ने स्वयं ब्राह्मणों के बदले कर चुकाकर समाप्त कराया)। उसने सतलज नदी से घग्घर तक (उलूगखानी नहर) और यमुना नदी से हिसार तक (रजबवाही नहर) सहित 5 बड़ी नहरों का जाल बिछाया तथा शाही नहरों का पानी उपयोग करने वाले किसानों पर उपज का **10% (1/10 भाग) 'हक-ए-शर्ब'** नामक सिंचाई कर लगाया। उसने अमीरों और सैनिकों को प्रसन्न करने के लिए

इक्ता और सैन्य पदों को वंशानुगत कर दिया तथा वृद्ध सैनिकों को अपने स्थान पर पुत्र, दामाद या दास को भेजने की अनुमति दे दी, जिससे सल्तनत की सैन्य क्षमता कमजोर हो गई (**NCERT Delhi 12th to 15th Century**)।

अभ्यास प्रश्न #12 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 52. तुगलक वंश के अंतिम शासक नासिरुद्दीन महमूद के शासनकाल में किस वर्ष मध्य एशिया के समरकंद के शासक तैमूर लंग ने दिल्ली पर भीषण आक्रमण कर लूटपाट की तथा जाते समय किसे पंजाब और मुल्तान का सूबेदार नियुक्त किया, जिसने बाद में सैय्यद वंश की स्थापना की?

- (क) 1388 ई. — बहलोल लोदी
- (ख) 1398 ई. — खिज्र खाँ
- (ग) 1405 ई. — मुबारक शाह
- (घ) 1414 ई. — दौलत खाँ लोदी
- **सही उत्तर:** (ख) 1398 ई. — खिज्र खाँ
- **विस्तृत व्याख्या:** नासिरुद्दीन महमूद तुगलक (1394–1412 ई., जिसके बारे में व्यंग्य प्रचलित था कि "शहंशाह की सल्तनत दिल्ली से पालम तक फैली है") के शासनकाल में **1398 ई.** में समरकंद के लंगड़े तुर्क-मंगोल विजेता **तैमूर लंग (अमीर तैमूर)** ने भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली को 15 दिनों तक रौंदा। भारत से लौटते समय तैमूर ने **खिज्र खाँ** को मुल्तान, लाहौर और दीपालपुर का राज्यपाल नियुक्त किया। खिज्र खाँ ने **1414 ई. में दिल्ली पर अधिकार कर 'सैय्यद वंश'** की नींव रखी, किंतु उसने कभी 'सुल्तान' की उपाधि धारण नहीं की, बल्कि तैमूर के पुत्र और उत्तराधिकारी **शाहरुख** के प्रतिनिधि के रूप में **'रैयत-ए-आला'** की उपाधि से ही शासन किया (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #13 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 53. सल्तनत कालीन केंद्रीय प्रशासन के विभागों और उनके संबंधित कार्यों का कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

- (क) दीवान-ए-विजारत — राजस्व एवं वित्त विभाग (वजीर के अधीन; महालेखाकार: मुशरिफ-ए-मुमालिक और महालेखापरीक्षक: मुस्तौफी-ए-मुमालिक)
- (ख) दीवान-ए-इंशा — शाही पत्राचार एवं राजकीय घोषणाओं का विभाग ('दबीर-ए-मुमालिक' के अधीन)
- (ग) दीवान-ए-रिसालत — विदेशी मामलों एवं धार्मिक अपील का विभाग
- (घ) दीवान-ए-कजा-ए-मुमालिक — राजकीय अश्वशाला एवं हाथीशाला का विभाग
- **सही उत्तर:** (घ) दीवान-ए-कजा-ए-मुमालिक — राजकीय अश्वशाला एवं हाथीशाला का विभाग
- **विस्तृत व्याख्या: 'दीवान-ए-कजा-ए-मुमालिक'** न्याय विभाग था जिसका प्रमुख **'काजी-उल-कुजात'** (मुख्य न्यायाधीश) होता था। इसके विपरीत राजकीय अश्वशाला का प्रमुख **'अमीर-ए-आखूर'** और हाथीशाला का प्रमुख **'शहना-ए-पील'** कहलाता था। सल्तनत काल में मंत्रिपरिषद को **'मजलिस-ए-खलवत'** कहा जाता था और राज्य के चार प्रमुख स्तंभ (मंत्रालय) थे — दीवान-ए-विजारत (वित्त), दीवान-ए-अर्ज (सैन्य), दीवान-ए-इंशा (पत्राचार) और दीवान-ए-रिसालत (विदेश/धार्मिक मामले) (**NCERT Delhi 12th to 15th Century**; **IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #14 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 54. विजयनगर साम्राज्य के महानतम शासक कृष्णदेव राय (1509–1529 ई.) और उनकी प्रसिद्ध तेलुगु कृति 'आमुक्तमाल्यदा' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'आमुक्तमाल्यदा' (जिसने माला पहनाकर दी) दक्षिण भारत की वैष्णव आलवार महिला संत 'अंडाल' (गोदा देवी) और भगवान रंगनाथ के आध्यात्मिक विवाह की कथा के साथ-साथ राजधर्म (प्रशासनिक नीति) का वर्णन करती है।

2. कृष्णदेव राय ने इसमें लिखा है कि "एक राजा को अपने राज्य में बंदरगाहों को सुधारना चाहिए और वाणिज्य को इस प्रकार प्रोत्साहित करना चाहिए कि विदेशी व्यापारी बिना किसी भय के घोड़े, हाथी, रत्न, चंदन और मोती का स्वतंत्र व्यापार कर सकें।"

3. कृष्णदेव राय ने पुर्तगाली गवर्नर अल्बुकर्क के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए ताकि भटकल में किला बनाने की अनुमति के बदले विजयनगर को अरबी और फारसी घोड़ों की एकछत्र आपूर्ति मिलती रहे।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- (क) केवल 1 और 2

• (ख) केवल 2 और 3

• (ग) केवल 1 और 3

• (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **सही उत्तर:** (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **विस्तृत व्याख्या:** तुलुव वंशीय सम्राट **कृष्णदेव राय** ने अपने तेलुगु महाकाव्य **'आमुक्तमाल्यदा'** में एक आदर्श राजा के कर्तव्यों का सूत्रबद्ध वर्णन करते हुए लिखा है — "राजा को सदैव धर्म को ध्यान में रखकर शासन करना चाहिए और समुद्र पार के व्यापारियों को करों में छूट, उचित मूल्य और राजदरबार में दर्शन देकर आकर्षित करना चाहिए ताकि दुर्लभ घोड़े व हाथी शत्रु राज्यों के हाथ न लगें।" उन्होंने 1510 ई. में गोवा जीतने वाले पुर्तगाली गवर्नर **अल्फांसो डी अल्बुकर्क** के दूत फादर लुईस का स्वागत किया और अरबी घोड़ों के व्यापार पर एकाधिकार का समझौता किया (ASI World Heritage; IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #15 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 55. विजयनगर साम्राज्य में 'वड्डेरायेरु' या 'कुदिरई चेट्टि' कौन थे तथा वहाँ के समाज में प्रचलित 'वरुदक्षिणा' और 'कुरुवई' शब्दों का क्या आशय था?

• (क) कुदिरई चेट्टि = घोड़ों के स्थानीय व्यापारी; वरुदक्षिणा = दहेज कर; कुरुवई = चावल की एक प्रमुख किस्म

• (ख) कुदिरई चेट्टि = मंदिर के पुजारी; वरुदक्षिणा = तीर्थयात्रा कर; कुरुवई = रेशमी वस्त्र

• (ग) कुदिरई चेट्टि = शाही अंगरक्षक; वरुदक्षिणा = सैन्य कर; कुरुवई = स्वर्ण सिक्का

• (घ) कुदिरई चेट्टि = विदेशी राजदूत; वरुदक्षिणा = बंदरगाह शुल्क; कुरुवई = सिंचाई नहर

• **सही उत्तर:** (क) कुदिरई चेट्टि = घोड़ों के स्थानीय व्यापारी; वरुदक्षिणा = दहेज कर; कुरुवई = चावल की एक प्रमुख किस्म

• **विस्तृत व्याख्या:** दक्षिण भारत और विजयनगर के युद्धों में अश्वारोही सेना निर्णायक होती थी। अरब और मध्य एशिया से समुद्री मार्ग द्वारा घोड़ों का आयात किया जाता था और इस व्यापार में भाग लेने वाले स्थानीय भारतीय व्यापारियों के संघ को **'कुदिरई चेट्टि' (घोड़ों के व्यापारी)** कहा जाता था। विजयनगर में विवाह कर प्रचलित था (जिससे कृष्णदेव राय ने अपने राज्य की जनता को छूट दी थी), कन्या मूल्य/दहेज प्रथा से संबद्ध शुल्क को 'वरुदक्षिणा' और शीतकालीन धान/चावल की उच्च कोटि की फसल को **'कुरुवई'** कहा जाता था (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #16 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 56. दक्कन की बहमनी सल्तनत से स्वतंत्र हुई पाँच सल्तनतों और उनके संस्थापक राजवंशों का कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

• (क) बीजापुर — आदिलशाही वंश (यूसुफ आदिलशाह)

• (ख) अहमदनगर — निजामशाही वंश (मलिक अहमद)

• (ग) गोलकुंडा — कुतुबशाही वंश (कुली कुतुबशाह)

• (घ) बरार — बरीदशाही वंश (कासिम बरीद)

• **सही उत्तर:** (घ) बरार — बरीदशाही वंश (कासिम बरीद)

• **विस्तृत व्याख्या: बरार (एलिचपुर/गाविलगढ़)** में **1484 ई. में फतेहुल्लाह इमादशाह ने 'इमादशाही वंश'** की स्थापना की थी (यह बहमनी से अलग होने वाला प्रथम राज्य था, जिसे 1574 ई. में अहमदनगर ने हड़प लिया), जबकि **'बरीदशाही वंश' की स्थापना बीदर में** अमीर अली बरीद (कासिम बरीद के पुत्र) द्वारा 1526–27 ई. में की गई थी (जिसे 1619 ई. में बीजापुर ने अपने राज्य में मिला लिया) (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #17 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 57. कर्नाटक में बारहवीं शताब्दी में बसवन्ना (बसव) द्वारा प्रारंभ किए गए 'वीरशैव' या 'लिंगायत' आंदोलन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

• (क) बसवन्ना प्रारंभ में जैन मतावलंबी थे और कलचुरि राजा बिज्जल के दरबार में मंत्री थे।

• (ख) लिंगायत भगवान शिव की आराधना 'इष्टलिंग' (चाँदी के पिटारे में गले में धारण किए जाने वाले छोटे शिवलिंग) के रूप में करते हैं और उनके वचनों को कन्नड़ भाषा में 'वचन साहित्य' कहा जाता है।

• (ग) लिंगायतों ने जाति प्रथा, अस्पृश्यता, बाल विवाह और पुनर्जन्म के सिद्धांत का कड़ा विरोध किया तथा वयस्क विवाह और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।

• (घ) लिंगायत अपने मृतकों का अग्नि-दाह (अंतिम संस्कार में जलाना) और श्राद्ध कर्म अत्यंत भव्य रूप से करते हैं।

• **सही उत्तर:** (घ) लिंगायत अपने मृतकों का अग्नि-दाह (अंतिम संस्कार में जलाना) और श्राद्ध कर्म अत्यंत भव्य रूप से करते हैं।

• **विस्तृत व्याख्या:** कथन (घ) पूर्णतः असत्य है! लिंगायतों (वीरशैवों — 'शिव के वीर') का विश्वास है कि मृत्यु के पश्चात भक्त सीधे शिव में लीन हो जाता है और इस संसार में पुनः नहीं लौटता (अर्थात् वे **पुनर्जन्म के सिद्धांत को नहीं मानते**)। इसलिए वे धर्मशास्त्रों में बताए गए **अग्नि-दाह संस्कार और श्राद्ध कर्म का पालन नहीं करते, अपितु अपने मृतकों को विधिपूर्वक दफनाते हैं**। इस आंदोलन में बसवन्ना के भतीजे चन्नबसव, अक्कमहादेवी (प्रमुख महिला संत) और अल्लमप्रभु ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा इनके घुमंतू भिक्षुओं को **'जंगम'** कहा जाता है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #18 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 58. सूची-I (भक्ति संत / दार्शनिक) को सूची-II (उनके दार्शनिक मत / संप्रदाय) के साथ सुमेलित कीजिए:

• A. रामानुजाचार्य — 1. शुद्धाद्वैतवाद (पुष्टिमार्ग / रुद्र संप्रदाय)

• B. मध्वाचार्य — 2. विशिष्टाद्वैतवाद (श्री संप्रदाय)

• C. निम्बार्काचार्य — 3. द्वैतवाद (ब्रह्म संप्रदाय)

• D. वल्लभाचार्य — 4. द्वैताद्वैतवाद / भेदाभेदवाद (सनकादि संप्रदाय)

कूट:

• (क) A-2, B-3, C-4, D-1

• (ख) A-3, B-2, C-4, D-1

• (ग) A-2, B-4, C-3, D-1

• (घ) A-1, B-3, C-2, D-4

• **सही उत्तर:** (क) A-2, B-3, C-4, D-1

• **विस्तृत व्याख्या:** बारहवीं शताब्दी के **रामानुजाचार्य** ने शंकराचार्य के निर्गुण अद्वैतवाद के प्रत्युत्तर में सगुण भक्ति को दार्शनिक आधार देते हुए **'विशिष्टाद्वैतवाद'** (श्री संप्रदाय) का प्रतिपादन किया। तेरहवीं शताब्दी के **मध्वाचार्य (आनंदतीर्थ)** ने ब्रह्म और जीव को पूर्णतः अलग मानते हुए **'द्वैतवाद'** (ब्रह्म संप्रदाय) चलाया। **निम्बार्काचार्य** ने राधा-कृष्ण की युगल उपासना करते हुए **'द्वैताद्वैतवाद' (भेदाभेद)** और पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी के **वल्लभाचार्य** ने बाल-कृष्ण ('श्रीनाथजी') की सेवा पर आधारित **'शुद्धाद्वैतवाद' (पुष्टिमार्ग)** का प्रवर्तन किया (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #19 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 59. निम्नलिखित में से किन सूफी और भक्ति संतों की वाणियाँ सिखों के पवित्र धर्मग्रंथ 'आदि ग्रंथ' (गुरु ग्रंथ साहिब) में संकलित हैं?

1. बाबा फरीद (शेख फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर)

2. संत कबीरदास

3. संत नामदेव एवं संत रविदास (रैदास)

4. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती

कूट:

• (क) केवल 1, 2 और 3

• (ख) केवल 2 और 3

• (ग) केवल 1, 3 और 4

• (घ) 1, 2, 3 और 4 सभी

• **सही उत्तर:** (क) केवल 1, 2 और 3

• **विस्तृत व्याख्या:** सिखों के पाँचवें गुरु **गुरु अर्जन देव** द्वारा 1604 ई. में संकलित (और दसवें गुरु गोविंद सिंह द्वारा पूर्ण किए गए) **'गुरु ग्रंथ साहिब'** में सिख गुरुओं (गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जन देव और गुरु तेग बहादुर) की वाणियों के अतिरिक्त अनेक हिंदू भक्तों और मुस्लिम सूफियों की वाणियाँ ('भगत वाणी') संकलित हैं। इनमें चिश्ती सूफी संत **बाबा फरीद (गंजे-शकर)** के 112 श्लोक व 4 शब्द, **कबीरदास** के सर्वाधिक पद/दोहे, महाराष्ट्र के **संत नामदेव**, बनारस के **संत रविदास (रैदास)**, राजस्थान के **धन्ना जाट**, **पीपा**, **सेन नाई**, **सधना** और बंगाल के **जयदेव** की रचनाएँ सम्मिलित हैं; किंतु ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की कोई रचना इसमें संकलित नहीं है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #20 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 60. चिश्ती सूफी संत शेख निजामुद्दीन औलिया (1238–1325 ई.) के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

• (क) उन्होंने अलाउद्दीन खलजी और मुहम्मद बिन तुगलक से मिलने का निमंत्रण सहर्ष स्वीकार किया और शाही दरबार में 'शेख-उल-इस्लाम' का पद संभाला।

• (ख) उनकी खानकाह दिल्ली के गियासपुर में स्थित थी; उन्होंने अमीर खुसरो को 'तुर्कल्लाह' की उपाधि दी और उनके वार्तालाप का संकलन अमीर हसन सिज्जी ने 'फवायद-उल-फुआद' में किया।

• (ग) वे सुहरावर्दी सिलसिले के संस्थापक थे और संगीत ('समा') के कट्टर विरोधी थे।

• (घ) उनका मकबरा अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा के निकट स्थित है।

• **सही उत्तर:** (ख) उनकी खानकाह दिल्ली के गियासपुर में स्थित थी; उन्होंने अमीर खुसरो को 'तुर्कल्लाह' की उपाधि दी और उनके वार्तालाप का संकलन अमीर हसन सिज्जी ने 'फवायद-उल-फुआद' में किया।

• **विस्तृत व्याख्या:** बाबा फरीद के प्रमुख शिष्य **शेख निजामुद्दीन औलिया ('महबूब-ए-इलाही' व 'सुल्तान-उल-औलिया')** आजीवन अविवाहित रहे और दिल्ली के गियासपुर में अपनी खानकाह स्थापित की। उन्होंने दिल्ली के सात सुल्तानों का शासन देखा किंतु किसी भी सुल्तान से भेंट नहीं की (जब अलाउद्दीन खलजी ने उनसे मिलने की इच्छा जताई तो उन्होंने कहा — "मेरे घर में दो दरवाजे हैं; यदि सुल्तान एक दरवाजे से अंदर आएगा तो मैं दूसरे दरवाजे से बाहर चला जाऊँगा" और जब गियासुद्दीन तुगलक ने बंगाल अभियान से लौटते समय उन्हें दिल्ली छोड़ने का संदेश भेजा तो उन्होंने कहा — "हुनूज दिल्ली दूर अस्त" और तुगलक की दिल्ली पहुँचने से पूर्व ही अफगानपुर में लकड़ी का महल गिरने से मृत्यु हो गई)। उनका मकबरा **दिल्ली** में है (जिसे मुहम्मद बिन तुगलक ने उनकी इच्छा के विरुद्ध बनवाया) (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #21 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 61. बाबर द्वारा लड़े गए खानवा के युद्ध (17 मार्च 1527 ई.) का पानीपत के प्रथम युद्ध से भी अधिक ऐतिहासिक महत्व क्यों माना जाता है?

• (क) क्योंकि इस युद्ध में बाबर ने पहली बार बारूद और तोपखाने का प्रयोग किया था।

• (ख) क्योंकि पानीपत के युद्ध ने केवल लोदी वंश की जर्जर सत्ता को समाप्त किया था, किंतु खानवा के युद्ध में मेवाड़ के महाराणा साँगा के नेतृत्व वाले राजपूत-अफगान महासंघ को पराजित कर बाबर ने भारत में मुगल सत्ता को स्थायी रूप से स्थापित किया और काबुल लौटने का विचार त्याग दिया।

• (ग) क्योंकि इस युद्ध के बाद बाबर ने दक्षिण भारत में विजयनगर और बहमनी पर अधिकार कर लिया।

• (घ) क्योंकि यह युद्ध जल और थल दोनों पर लड़ा गया भारत का प्रथम मध्यकालीन युद्ध था।

• **सही उत्तर:** (ख) क्योंकि पानीपत के युद्ध ने केवल लोदी वंश की जर्जर सत्ता को समाप्त किया था, किंतु खानवा के युद्ध में मेवाड़ के महाराणा साँगा के नेतृत्व वाले राजपूत-अफगान महासंघ को पराजित कर बाबर ने भारत में मुगल सत्ता को स्थायी रूप से स्थापित किया और काबुल लौटने का विचार त्याग दिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** फतेहपुर सीकरी (आगरा) के निकट **खानवा के मैदान** (ASI Fatehpur Sikri) में 17 मार्च 1527 को बाबर का सामना उत्तर भारत के सबसे शक्तिशाली शासक **मेवाड़ के महाराणा संग्राम सिंह (राणा साँगा)** से हुआ, जिनके साथ हसन खाँ मेवाती, महमूद लोदी (इब्राहिम लोदी का भाई) और मारवाड़-आमेर-चंदेरी के राजपूत राजा एकजुट थे। बाबर ने अपने हताश सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए इस युद्ध को **'जिहाद'** घोषित किया, शराब के पात्र तुड़वा दिए, मुसलमानों पर लगने वाला व्यापारिक कर **'तमगा'** माफ किया और विजय के बाद **'गाजी'** की उपाधि धारण की। ज्ञातव्य है कि **जल और थल दोनों पर लड़ा गया युद्ध 6 मई 1529 का 'घाघरा का युद्ध'** था।

अभ्यास प्रश्न #22 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 62. शेरशाह सूरी (1540–1545 ई.) के प्रशासन और सुधारों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उसने किसानों से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित कर भूमि की माप के बाद लगान निर्धारित करने वाला 'पट्टा' दिया और किसानों से सहमति पत्र 'कबूलियत' लिया।

2. उसने व्यापार और संचार की सुगमता के लिए बंगाल के सोनारगाँव से सिंधु नदी (पेशावर) तक 'सड़क-ए-आजम' (बाद में ग्रैंड ट्रंक रोड) का निर्माण कराया और प्रत्येक दो कोस पर सराय बनवाई, जिन्हें इतिहासकार कानूनगो ने 'साम्राज्य रूपी शरीर की धमनियाँ' कहा है।

3. उसने मिश्रित धातु के पुराने सिक्कों को बंद कर 178 ग्रेन का शुद्ध चाँदी का 'रुपया' और 380 ग्रेन का ताँबे का 'दाम' जारी किया, जो मुगल और ब्रिटिश काल की मुद्रा प्रणाली का आधार बना।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- (क) केवल 1 और 2
- (ख) केवल 2 और 3
- (ग) केवल 1 और 3
- (घ) 1, 2 और 3 सभी
- **सही उत्तर:** (घ) 1, 2 और 3 सभी
- **विस्तृत व्याख्या:** मात्र पाँच वर्षों के शासनकाल (1540–45 ई.) में **शेरशाह सूरी** ने मध्यकालीन भारत की सर्वाधिक सुसंगठित प्रशासनिक व राजस्व प्रणाली निर्मित की, जिसके कारण अब्बास खाँ सरवानी ने अपनी कृति **'तारीख-ए-शेरशाही'** में उसकी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा की और उसे **'अकबर का पथ-प्रदर्शक (पूर्वगामी)'** कहा जाता है। उसने डाक चौकी व सराय व्यवस्था के साथ-साथ स्थानीय अपराधों के लिए ग्राम मुखिया (**मुकद्दम**) के **'स्थानीय उत्तरदायित्व'** का सिद्धांत लागू किया (यदि किसी सराय या गाँव की सीमा में चोरी हो जाए तो मुकद्दम को चोर पकड़ना पड़ता था अथवा स्वयं हर्जाना भरना पड़ता था)। उसका मकबरा बिहार के **सासाराम** में एक कृत्रिम झील के मध्य अष्टभुजाकार रूप में निर्मित है (ASI Monuments; IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #23 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 63. 5 नवंबर 1556 को लड़े गए 'पानीपत के द्वितीय युद्ध' के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

- (क) यह युद्ध हुमायूँ और शेरशाह सूरी के बीच लड़ा गया था।
- (ख) यह युद्ध अकबर के संरक्षक बैरम खाँ और आदिलशाह सूर के हिंदू प्रधानमंत्री एवं सेनापति हेमू ('हेमचंद्र विक्रमादित्य') के बीच लड़ा गया, जिसमें आँख में तीर लगने से हेमू पराजित हुआ।
- (ग) यह युद्ध अकबर और मेवाड़ के महाराणा प्रताप के बीच लड़ा गया था।
- (घ) इस युद्ध में मराठा सेनापति सदाशिवराव भाऊ की अहमदशाह अब्दाली के हाथों पराजय हुई।
- **सही उत्तर:** (ख) यह युद्ध अकबर के संरक्षक बैरम खाँ और आदिलशाह सूर के हिंदू प्रधानमंत्री एवं सेनापति हेमू ('हेमचंद्र विक्रमादित्य') के बीच लड़ा गया, जिसमें आँख में तीर लगने से हेमू पराजित हुआ।
- **विस्तृत व्याख्या:** जनवरी 1556 में हुमायूँ की आकस्मिक मृत्यु का लाभ उठाकर अफगान शासक आदिलशाह सूर के योग्य वजीर और सेनापति **हेमू (हेमचंद्र)** ने, जिसने अपने जीवन में 22 युद्ध जीते थे, मुगल सूबेदार तारदी बेग खाँ को हराकर आगरा और दिल्ली पर अधिकार कर लिया तथा **'विक्रमादित्य'** की उपाधि धारण की (मध्यकाल में दिल्ली के सिंहासन पर बैठने वाला एकमात्र हिंदू शासक व इतिहास का 14वाँ विक्रमादित्य)। **5 नवंबर 1556 को पानीपत के मैदान** में अकबर और **बैरम खाँ** की मुगल सेना का हेमू से युद्ध हुआ; हेमू विजय के अत्यंत निकट था किंतु अचानक उसकी आँख में एक तीर लग जाने से वह अपने हाथी ('हवाई') के हौदे में अचेत हो गया और उसकी सेना में भगदड़ मच गई (NCERT The Mughals)।

अभ्यास प्रश्न #24 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 64. सम्राट अकबर द्वारा प्रारंभ की गई 'मनसबदारी प्रणाली' में 'जात' और 'सवार' पदों के संबंध के विषय में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'जात' शब्द से मनसबदार के व्यक्तिगत पद (दरबारी पदानुक्रम में स्थान) और उसके व्यक्तिगत वेतन का निर्धारण होता था, जबकि 'सवार' पद से उसके द्वारा रखे जाने वाले घुड़सवार सैनिकों की निर्धारित संख्या का बोध होता था।
2. प्रथम श्रेणी का मनसबदार वह होता था जिसका 'सवार' पद उसके 'जात' पद के बराबर होता था (जैसे 5000 जात / 5000 सवार)।
3. किसी भी मनसबदार का 'सवार' पद उसके 'जात' पद से अधिक हो सकता था।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- (क) केवल 1 और 2
- (ख) केवल 2 और 3

• (ग) केवल 1 और 3

• (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **सही उत्तर:** (क) केवल 1 और 2

• **विस्तृत व्याख्या:** कथन 3 असत्य है क्योंकि मुगल मनसबदारी के नियमों के अनुसार **किसी भी मनसबदार का 'सवार' पद उसके 'जात' पद से कभी भी अधिक नहीं हो सकता था** (NCERT The Mughals)। 1595–96 ई. में अकबर ने मनसबदारों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया:

1. **प्रथम श्रेणी:** जिनका 'सवार' पद उनके 'जात' पद के बराबर होता था (जैसे 5000 जात / 5000 सवार)।

2. **द्वितीय श्रेणी:** जिनका 'सवार' पद उनके 'जात' पद के आधे या आधे से अधिक (किंतु बराबर से कम) होता था (जैसे 5000 जात / 3000 सवार)।

3. **तृतीय श्रेणी:** जिनका 'सवार' पद उनके 'जात' पद के आधे से कम होता था (जैसे 5000 जात / 2000 सवार)।

ज्ञातव्य है कि 500 से कम मनसब पाने वाले **'मनसबदार'**, 500 से 2500 तक **'अमीर'** और 2500 से ऊपर **'अमीर-ए-आजम' (उमरा)** कहलाते थे; अकबर के काल में सर्वोच्च मनसब 7000 (मिर्जा अजीज कोका व राजा मानसिंह को) दिया गया।

अभ्यास प्रश्न #25 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 65. फतेहपुर सीकरी में अकबर द्वारा स्थापित 'इबादतखाना' (पूजा गृह) और 'सुलह-ए-कुल' (सार्वभौमिक शांति) की नीति के विकास का सही क्रम क्या था?

• (क) 1575 ई. में इबादतखाना की स्थापना (प्रारंभ में केवल सुन्नी मुस्लिम उलेमाओं के लिए) → 1578 ई. में सभी धर्मों (हिंदू, जैन, पारसी, ईसाई) के विद्वानों के लिए इसके द्वार खोलना → सितंबर 1579 ई. में 'मजहर' की घोषणा → 1582 ई. में 'तौहीद-ए-इलाही' (दीन-ए-इलाही) का प्रवर्तन

• (ख) 1564 ई. में दीन-ए-इलाही → 1575 ई. में मजहर → 1582 ई. में इबादतखाना

• (ग) 1579 ई. में इबादतखाना → 1575 ई. में मजहर → 1580 ई. में जजिया समाप्ति

• (घ) 1582 ई. में इबादतखाना → 1585 ई. में मजहर → 1590 ई. में दीन-ए-इलाही

• **सही उत्तर:** (क) 1575 ई. में इबादतखाना की स्थापना (प्रारंभ में केवल सुन्नी मुस्लिम उलेमाओं के लिए) → 1578 ई. में सभी धर्मों (हिंदू, जैन, पारसी, ईसाई) के विद्वानों के लिए इसके द्वार खोलना → सितंबर 1579 ई. में 'मजहर' की घोषणा → 1582 ई. में 'तौहीद-ए-इलाही' (दीन-ए-इलाही) का प्रवर्तन

• **विस्तृत व्याख्या:** एनसीईआरटी (NCERT The Mughals) एवं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI Fatehpur Sikri) के अनुसार:

1. **1575 ई.:** अकबर ने फतेहपुर सीकरी में दार्शनिक व धार्मिक चर्चा हेतु **'इबादतखाना'** बनवाया।

2. **1578 ई.:** इसे धर्म-संसद का रूप देते हुए हिंदू विद्वानों (**पुरुषोत्तम व देवी**), पारसी दस्तूर (**मेहरजी राणा** — जिनसे अकबर ने दरबार में 24 घंटे अग्नि प्रज्वलित रखने की प्रथा सीखी), जैन आचार्यों (**हरिविजय सूरि** — जिन्हें अकबर ने **'जगद्गुरु'** की उपाधि दी, व जिनचंद्र सूरि जिन्हें 'युगप्रधान' उपाधि दी) और गोवा के ईसाई पादरियों (**एक्वाविवा व मोंसेरात**) को आमंत्रित किया।

3. **सितंबर 1579 ई.:** शेख मुबारक द्वारा तैयार किए गए **'मजहरनामा'** की घोषणा की, जिससे धार्मिक मतभेद की स्थिति में अकबर ('इमाम-ए-आदिल' / 'सुल्तान-ए-आदिल') को अंतिम निर्णयकर्ता का अधिकार मिला।

4. **1582 ई.:** अबुल फजल की सहायता से **'सुलह-ए-कुल' (सार्वभौमिक शांति एवं सहिष्णुता)** पर आधारित नैतिक आचार संहिता **'तौहीद-ए-इलाही' (दीन-ए-इलाही)** प्रारंभ की।

अभ्यास प्रश्न #26 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 66. अकबर की भू-राजस्व व्यवस्था 'आईन-ए-दहसाला' (1580 ई.) में 'पोलज', 'परौती', 'चाचर' और 'बंजर' शब्दों का प्रयोग किस आधार पर किया गया था?

• (क) किसानों की सामाजिक जाति के आधार पर

• (ख) भूमि पर खेती किए जाने की निरंतरता और परती छोड़े जाने की अवधि (उर्वरता) के आधार पर

• (ग) सिंचाई के लिए नदी, कुएँ या तालाब के उपयोग के आधार पर

• (घ) मनसबदारों के पद के आधार पर

• **सही उत्तर:** (ख) भूमि पर खेती किए जाने की निरंतरता और परती छोड़े जाने की अवधि (उर्वरता) के आधार पर

• **विस्तृत व्याख्या:** राजा टोडरमल और ख्वाजा शाह मंसूर द्वारा 1580 ई. में लागू की गई **'दहसाला' (जब्ती) व्यवस्था** के अंतर्गत बांस की कड़ियों जिन्हें लोहे के छल्लों से जोड़ा गया था (**'जरीब' या 'तनब'**), से भूमि की पैमाइश की गई और कृषि की निरंतरता के आधार पर भूमि को चार वर्गों में बाँटा गया: (1) **पोलज:**

वह सर्वोत्तम भूमि जिस पर प्रतिवर्ष नियमित रूप से दो फसलें उगाई जाती थीं और जिसे कभी खाली (परती) नहीं छोड़ा जाता था; (2) **परौती:** वह भूमि जिसे अपनी उर्वरा शक्ति वापस पाने के लिए 1 या 2 वर्ष के लिए खाली छोड़ा जाता था; (3) **चाचर:** जिसे 3 या 4 वर्षों तक बिना बोए छोड़ना पड़ता था; और (4) **बंजर:** जिस पर 5 या उससे अधिक वर्षों से खेती नहीं की गई हो (**NCERT The Mughals**; **IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #27 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 67. मुगल सम्राट जहाँगीर के दरबार में 1608 ई. में आने वाले प्रथम अंग्रेज प्रतिनिधि कैप्टन विलियम हॉकिंस और 1615 ई. में आने वाले ब्रिटिश राजदूत सर थॉमस रो के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

• (क) विलियम हॉकिंस 'हेक्टर' नामक जहाज से सूरत पहुँचा और उसने आगरा दरबार में जहाँगीर से तुर्की और फारसी भाषा में सीधे संवाद किया, जिससे प्रसन्न होकर जहाँगीर ने उसे 'इंग्लिश खाँ' की उपाधि और 400 का मनसब दिया।

• (ख) सर थॉमस रो ब्रिटिश सम्राट जेम्स प्रथम के आधिकारिक राजदूत के रूप में अजमेर में जहाँगीर से मिला और मुगल साम्राज्य के विभिन्न भागों में अंग्रेजी व्यापारिक कोठियाँ (फैक्ट्रियाँ) खोलने का शाही फरमान प्राप्त किया।

• (ग) उपर्युक्त दोनों कथन (क) और (ख) सही हैं।

• (घ) न तो (क) और न ही (ख) सही है।

• **सही उत्तर:** (ग) उपर्युक्त दोनों कथन (क) और (ख) सही हैं।

• **विस्तृत व्याख्या:** ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रतिनिधि **कैप्टन विलियम हॉकिंस (1608–1611 ई.)** सम्राट अकबर के नाम ब्रिटेन के राजा जेम्स प्रथम का पत्र लेकर 'हेक्टर' (व रेड ड्रैगन) जहाज से सूरत उतरा और अप्रैल 1609 में आगरा में **जहाँगीर** के दरबार में उपस्थित हुआ। हॉकिंस तुर्की और फारसी भाषा जानता था, इसलिए जहाँगीर ने बिना किसी दुभाषिए के उससे बात की और उसे **400 का मनसब तथा 'इंग्लिश खाँ' (फिरंगी खाँ)** की उपाधि दी। इसके बाद **1615 ई. में सर थॉमस रो** जेम्स प्रथम के विधिवत राजदूत के रूप में भारत आया, उसने **अजमेर दुर्ग** में जहाँगीर से भेंट की और मांडू व अहमदाबाद के अभियानों में सम्राट के साथ रहकर सूरत आदि में व्यापारिक छूट के फरमान प्राप्त किए (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #28 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 68. मुगल चित्रकला के संदर्भ में किस मुगल सम्राट ने अपनी आत्मकथा में गर्वपूर्वक लिखा था कि "यदि किसी एक चित्र में विभिन्न चित्रकारों ने अलग-अलग अंग बनाए हों, तो मैं उसे देखकर बता सकता हूँ कि आँख किस चित्रकार ने बनाई है और भौं किसने बनाई है"?

• (क) बाबर

• (ख) अकबर

• (ग) जहाँगीर

• (घ) शाहजहाँ

• **सही उत्तर:** (ग) जहाँगीर

• **विस्तृत व्याख्या: जहाँगीर (1605–1627 ई.)** का शासनकाल मुगल चित्रकला का **'स्वर्ण युग'** था। उसने हेरात के प्रसिद्ध चित्रकार **आगा रजा** के नेतृत्व में आगरा में एक चित्रशाला स्थापित की। अपनी आत्मकथा **'तुजुक-ए-जहाँगीरी'** में अपनी कला-पारखी दृष्टि के बारे में उसने लिखा है कि वह किसी भी जीवित या मृत चित्रकार की कृति को देखते ही पहचान सकता था, यहाँ तक कि यदि एक ही चेहरे की आँख किसी एक कलाकार ने और भौंहें किसी दूसरे ने बनाई हों, तो भी वह प्रत्येक कलाकार का नाम बता सकता था। उसके दरबार में **उस्ताद मंसूर** (दुर्लभ पशु-पक्षी व वनस्पति चित्रकार — उपाधि: 'नादिर-उल-अस्र') और **अबुल हसन** (व्यक्ति चित्रकार — उपाधि: 'नादिर-उल-जमाँ', जिसने तुजुक-ए-जहाँगीरी के मुखपृष्ठ का चित्र बनाया) जैसे दिग्गज चित्रकार थे (**ASI Fatehpur Sikri**; **IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #29 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 69. आगरा में स्थित यूनेस्को विश्व धरोहर स्मारकों — ताजमहल, आगरा का किला और फतेहपुर सीकरी — तथा 'एतमाद-उद-दौला के मकबरे' के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

• (क) आगरा में यमुना तट पर स्थित 'एतमाद-उद-दौला का मकबरा' नूरजहाँ ने अपने पिता मिर्जा गियास बेग की स्मृति में बनवाया था, जिसमें पहली बार पूर्णतः सफेद संगमरमर और 'पिएत्रा दुरा' जड़ावट तकनीक का प्रयोग हुआ।

• (ख) ताजमहल का निर्माण शाहजहाँ ने अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल (अर्जुमंद बानो बेगम) की स्मृति में मकराना (नागौर, राजस्थान) के सफेद संगमरमर से करवाया और इसके मुख्य वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी थे।

• (ग) फतेहपुर सीकरी में स्थित 'बुलंद दरवाजा' का निर्माण शाहजहाँ ने कंधार विजय के उपलक्ष्य में करवाया था।

• (घ) शाहजहाँ ने दिल्ली में यमुना तट पर 'शाहजहाँनाबाद' नगर बसाया और वहाँ लाल बलुआ पत्थर से 'लाल किला' (किला-ए-मुबारक) तथा 'जामा मस्जिद' का निर्माण करवाया।

• **सही उत्तर:** (ग) फतेहपुर सीकरी में स्थित 'बुलंद दरवाजा' का निर्माण शाहजहाँ ने कंधार विजय के उपलक्ष्य में करवाया था।

• **विस्तृत व्याख्या:** कथन (ग) असत्य है क्योंकि फतेहपुर सीकरी की जामा मस्जिद के दक्षिणी प्रवेश द्वार के रूप में निर्मित विश्व के सबसे ऊँचे प्रवेश द्वार **'बुलंद दरवाजा'** (जमीन से कुल ऊँचाई 176 फीट, चबूतरे से 134 फीट) का निर्माण शाहजहाँ ने नहीं, अपितु **सम्राट अकबर ने अपनी गुजरात विजय (1572–73 ई.) और बाद में खानदेश/दक्कन विजय (1601 ई.) की स्मृति में** लाल और पीले बलुआ पत्थर में संगमरमर की पच्चीकारी से करवाया था (**ASI Fatehpur Sikri**)। शेष तीनों कथन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (**ASI World Heritage Agra**) के अभिलेखों के अनुसार पूर्णतः सत्य हैं।

अभ्यास प्रश्न #30 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 70. शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र शहजादा दारा शिकोह (1615–1659 ई.) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. दारा शिकोह कादिरी सूफी सिलसिले के संत मुल्ला शाह बदख्शी का शिष्य था और इतिहासकार लेनपूल ने उसकी उदारता के कारण उसे 'लघु अकबर' (Little Akbar) की संज्ञा दी।

2. उसने काशी के संस्कृत पंडितों की सहायता से 52 उपनिषदों का 'सिर्र-ए-अकबर' (महान रहस्य) नाम से फारसी में अनुवाद किया और माना कि कुरान में जिस 'किताब-उल-मकनून' (छिपी हुई पुस्तक) का उल्लेख है, वे उपनिषद ही हैं।

3. उसने वेदांत दर्शन और इस्लामी सूफीवाद की समानताओं को दर्शाने के लिए फारसी में 'मज्म-उल-बहरैन' (दो समुद्रों का संगम) नामक ग्रंथ की रचना की।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

• (क) केवल 1 और 2

• (ख) केवल 2 और 3

• (ग) केवल 1 और 3

• (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **सही उत्तर:** (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **विस्तृत व्याख्या:** शाहजहाँ ने अपने सबसे बड़े और विद्वान पुत्र **दारा शिकोह** को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर **'शाह बुलंद इकबाल'** की उपाधि और 60,000 जात / 40,000 सवार का अभूतपूर्व मनसब प्रदान किया था। दारा शिकोह ने भगवद्गीता, योगवशिष्ठ और 52 उपनिषदों (**'सिर्र-ए-अकबर'** — इसी फारसी अनुवाद से बाद में अंकेतिल दुपेरों ने लैटिन में अनुवाद किया जिसे पढ़कर जर्मन दार्शनिक शोपेनहावर उपनिषदों का प्रशंसक बना) का फारसी अनुवाद कराया तथा सूफी संतों की जीवनियों पर **'सफीनत-उल-औलिया'** व **'सकीनत-उल-औलिया'** और बाबा लालदास वैरागी के साथ अपने आध्यात्मिक संवादों का संकलन किया (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #31 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 71. मुगल सम्राट औरंगजेब (1658–1707 ई.) के शासनकाल से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं का सही कालानुक्रम (सबसे पहले से सबसे बाद तक) कौन-सा है?

1. पुरंदर की संधि (मिर्जा राजा जयसिंह और शिवाजी के मध्य)

2. सिखों के नौवें गुरु तेग बहादुर की दिल्ली में शहादत

3. हिंदुओं पर पुनः 'जजिया कर' का आरोपण

4. बीजापुर और गोलकुंडा का मुगल साम्राज्य में विलय

कूट:

• (क) 1 → 2 → 3 → 4

• (ख) 2 → 1 → 3 → 4

• (ग) 1 → 3 → 2 → 4

• (घ) 3 → 1 → 2 → 4

• **सही उत्तर:** (क) 1 → 2 → 3 → 4

• **विस्तृत व्याख्या:** औरंगजेब के शासनकाल की इन चार युगांतकारी घटनाओं का सटीक तिथिवार अनुक्रम इस प्रकार है:

1. **पुरंदर की संधि: जून 1665 ई.** (मिर्जा राजा जयसिंह और छत्रपति शिवाजी महाराज के बीच)।

2. **गुरु तेग बहादुर का बलिदान: नवंबर 1675 ई.** (दिल्ली के चाँदनी चौक में जहाँ आज गुरुद्वारा शीशगंज साहिब स्थित है)।

3. **जजिया कर का पुनः आरोपण: अप्रैल 1679 ई.** (अकबर ने इसे 1564 ई. में समाप्त किया था; औरंगजेब ने 115 वर्षों बाद इसे पुनः लागू किया, जिसका मेवाड़ के महाराणा राजसिंह ने पत्र लिखकर कड़ा विरोध किया)।

4. **बीजापुर और गोलकुंडा का विलय: 1686 ई.** में बीजापुर (सिकंदर आदिलशाह) और **1687 ई.** में गोलकुंडा (अबुल हसन कुतुबशाह) को जीतकर मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया (**NCERT The Mughals**)।

अभ्यास प्रश्न #32 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 72. मुगल काल के प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथों और उनके लेखकों का कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

• (क) हुमायूँनामा — गुलबदन बेगम (बाबर की पुत्री और हुमायूँ की बहन)

• (ख) तबकात-ए-अकबरी — ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद

• (ग) पादशाहनामा — अब्दुल हमीद लाहौरी (शाहजहाँ के काल का राजकीय इतिहासकार)

• (घ) मुंतखब-उल-लुबाब — अबुल फजल

• **सही उत्तर:** (घ) मुंतखब-उल-लुबाब — अबुल फजल

• **विस्तृत व्याख्या:** **'मुंतखब-उल-लुबाब'** की रचना मुहम्मद हाशिम **'खफी खाँ'** ने की थी, जिसमें औरंगजेब के शासनकाल (जहाँ 1668 ई. के बाद औरंगजेब ने राजकीय इतिहास लेखन पर रोक लगा दी थी) का गुप्त रूप से लिखा गया प्रामाणिक एवं आलोचनात्मक विवरण और मराठा संघर्ष का वर्णन मिलता है। इसके विपरीत, **अबुल फजल** ने **'अकबरनामा' (तीन जिल्दों में — तीसरी जिल्द 'आईन-ए-अकबरी')** की रचना की थी। ध्यान रहे कि अब्दुल कादिर बदायूँनी की पुस्तक का नाम **'मुंतखब-उत-तवारीख'** है (जिसमें उसने हल्दीघाटी युद्ध का आँखों देखा हाल लिखा और अकबर की धार्मिक नीतियों की आलोचना की) (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #33 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 73. मुगल प्रशासन में प्रांतीय (सूबा), जिला (सरकार) और परगना स्तर के अधिकारियों तथा उनके दायित्वों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?

• (क) सूबेदार (सिपहसालार / नाजिम) — प्रांत का सर्वोच्च कार्यकारी एवं सैन्य प्रमुख, जबकि प्रांतीय 'दीवान' सीधे केंद्रीय दीवान-ए-आला के प्रति उत्तरदायी वित्त प्रमुख था (नियंत्रण एवं संतुलन सिद्धांत)

• (ख) फौजदार — सरकार (जिला) का मुख्य सैन्य व कानून-व्यवस्था अधिकारी, जबकि 'अमलगुजार' जिले का प्रमुख राजस्व अधिकारी था

• (ग) कानूनगो एवं पटवारी — परगना के राजस्व अभिलेखों का प्रमुख 'कानूनगो' तथा ग्राम के भूमि एवं कर अभिलेखों का रखवाला 'पटवारी' होता था

• (घ) उपर्युक्त सभी कथन पूर्णतः सही हैं

• **सही उत्तर:** (घ) उपर्युक्त सभी कथन पूर्णतः सही हैं

• **विस्तृत व्याख्या:** एनसीईआरटी (**NCERT The Mughals**) के अनुसार, मुगल प्रांतीय प्रशासन (सूबा → सरकार → परगना/महल → दस्तूर → ग्राम/मौजा/डीह) में सम्राट अकबर ने **'नियंत्रण एवं संतुलन' (Checks and Balances)** की अनूठी व्यवस्था लागू की। सूबे में **'सूबेदार'** के पास सैन्य व कार्यपालिका शक्ति थी, किंतु वित्तीय अधिकार प्रांतीय **'दीवान'** के पास थे; दोनों एक-दूसरे के अधीन न होकर सीधे केंद्र के प्रति जवाबदेह थे। इसी प्रकार जिले ('सरकार') में **'फौजदार'** (कानून-व्यवस्था), **'अमलगुजार'** (भू-राजस्व) व नगरों में **'कोतवाल'** तथा परगने में **'शिकदार'**, **'आमिल'**, **'फोतदार'** (खजांची) और **'कानूनगो'** (पटवारियों का प्रमुख) कार्य करते थे।

अभ्यास प्रश्न #34 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 74. जून 1665 ई. में मुगल सेनापति मिर्जा राजा जयसिंह और छत्रपति शिवाजी महाराज के मध्य संपन्न हुई ऐतिहासिक 'पुरंदर की संधि' की प्रमुख शर्तें क्या थीं?

1. शिवाजी ने अपने 35 किलों में से 23 किले (जिनसे 4 लाख हूण वार्षिक आय होती थी) मुगलों को सौंप दिए और अपने पास केवल 12 किले (1 लाख हूण वार्षिक आय वाले) रखे।

2. शिवाजी को व्यक्तिगत रूप से मुगल दरबार में उपस्थित होने से छूट दी गई, किंतु उनके नाबालिग पुत्र संभाजी को मुगल दरबार में 5000 जात का मनसबदार बनाया गया।

3. शिवाजी ने बीजापुर की आदिलशाही सल्तनत के विरुद्ध मुगल सैन्य अभियान में सहायता करने का वचन दिया।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- (क) केवल 1 और 2
- (ख) केवल 2 और 3
- (ग) केवल 1 और 3
- (घ) 1, 2 और 3 सभी
- **सही उत्तर:** (घ) 1, 2 और 3 सभी
- **विस्तृत व्याख्या:** शाइस्ता खाँ पर पुणे के लाल महल में हमले (1663) और सूरत की लूट (1664) के बाद औरंगजेब ने आमेर के कुशल कूटनीतिज्ञ एवं सेनापति **मिर्जा राजा जयसिंह** को शिवाजी के विरुद्ध भेजा। जयसिंह ने पुरंदर दुर्ग का घेरा डाला, जिसके परिणामस्वरूप **11 जून 1665 को 'पुरंदर की संधि'** हुई। इस संधि के समय फ्रांसीसी यात्री **बर्नियर** और इतालवी यात्री **मनुची** भी उपस्थित थे। संधि की उपर्युक्त तीनों शर्तें पूर्णतः सत्य हैं; इसके अतिरिक्त कोंकण व बालाघाट का बीजापुरी क्षेत्र जीतने के बदले शिवाजी ने मुगलों को 40 लाख हूण 13 वार्षिक किश्तों में देना स्वीकार किया (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #35 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 75. छत्रपति शिवाजी महाराज के 'अष्टप्रधान' मंत्रिमंडल के संदर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:

1. अमात्य (मजूमदार) — राज्य की आय-व्यय का लेखा-जोखा रखने वाला वित्त एवं राजस्व मंत्री
2. सुमंत (दबीर) — विदेशी राज्यों के साथ संधि-विग्रह और राजदूतों से व्यवहार देखने वाला विदेश मंत्री
3. वाकियानवीस (मंत्री) — राजा की दैनिक सुरक्षा, दरबारी कार्यवाही, गुप्तचर एवं गृह मामलों का प्रभारी
4. पंडितराव एवं न्यायाधीश — अष्टप्रधान के वे दो मंत्री जिन्हें युद्ध में सेना का नेतृत्व करने से छूट प्राप्त थी

उपर्युक्त में से कौन-से युग्म सही सुमेलित हैं?

- (क) केवल 1, 2 और 3
- (ख) केवल 2, 3 और 4
- (ग) केवल 1 और 4
- (घ) 1, 2, 3 और 4 सभी
- **सही उत्तर:** (घ) 1, 2, 3 और 4 सभी
- **विस्तृत व्याख्या:** छत्रपति शिवाजी के प्रशासन की सर्वोच्च संस्था **'अष्टप्रधान'** थी, जिसके मंत्री आधुनिक मंत्रिमंडल के समान सामूहिक रूप से उत्तरदायी न होकर व्यक्तिगत रूप से छत्रपति के सचिवों की भाँति कार्य करते थे और उनके पद वंशानुगत नहीं थे (वेतन नकद में मिलता था, जागीर प्रथा समाप्त कर दी गई थी)। अष्टप्रधान के आठों पदों में **पेशवा** (प्रधानमंत्री), **अमात्य/मजूमदार** (वित्त), **वाकियानवीस/मंत्री** (गृह व गुप्तचर), **सुरुनवीस/चिटनीस** (पत्राचार व परगना हिसाब), **सुमंत/दबीर** (विदेश), **सर-ए-नौबत** (सेनापति), **पंडितराव** (दानाध्यक्ष/धार्मिक मामले) और **न्यायाधीश** शामिल थे। पंडितराव और न्यायाधीश को छोड़कर शेष सभी 6 मंत्रियों को अवसर पड़ने पर सैन्य कमान संभालनी पड़ती थी (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #36 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 76. मराठा साम्राज्य द्वारा पड़ोसी राज्यों से वसूले जाने वाले दो प्रसिद्ध करों — 'चौथ' और 'सरदेशमुखी' — की दरें क्रमशः क्या थीं?

• (क) चौथ = उपज/आय का 1/4 भाग (25%); सरदेशमुखी = उपज/आय का 1/10 भाग (10%)

• (ख) चौथ = उपज का 1/3 भाग; सरदेशमुखी = उपज का 1/5 भाग

• (ग) चौथ = उपज का 1/10 भाग; सरदेशमुखी = उपज का 1/4 भाग

• (घ) चौथ = उपज का 1/2 भाग; सरदेशमुखी = उपज का 1/6 भाग

• **सही उत्तर:** (क) चौथ = उपज/आय का 1/4 भाग (25%); सरदेशमुखी = उपज/आय का 1/10 भाग (10%)

• **विस्तृत व्याख्या:** शिवाजी ने अपने प्रत्यक्ष नियंत्रण वाले स्वराज्य क्षेत्र ('स्वराज') के बाहर स्थित मुगल और बीजापुरी क्षेत्रों से दो प्रकार के कर वसूले:

1. **चौथ (कुल राजस्व का 1/4 भाग = 25%):** यह एक प्रकार का सैन्य सुरक्षा कर था, जिसके बदले मराठे उस क्षेत्र पर आक्रमण न करने और बाहरी आक्रमण से रक्षा करने का आश्वासन देते थे।

2. **सरदेशमुखी (कुल राजस्व का 1/10 भाग = 10%):** शिवाजी स्वयं को पूरे महाराष्ट्र के देशमुखों का वंशानुगत प्रमुख (**'सरदेशमुख'**) मानते थे, और इसी पैतृक कानूनी अधिकार के रूप में 10% अतिरिक्त कर वसूलते थे (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #37 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 77. सत्रहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य की यात्रा करने वाले विदेशी यात्रियों और उनके व्यवसाय/देश का कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

• (क) फ्रांस्वा बर्नियर — फ्रांसीसी चिकित्सक एवं दार्शनिक (दारा शिकोह और दानिशमंद खाँ की सेवा में रहा; 'ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर' का लेखक)

• (ख) जीन-बैप्टिस्ट टैवर्नियर — फ्रांसीसी जौहरी एवं हीरा व्यापारी (जिसने भारत की 6 बार यात्रा की और कोहिनूर हीरे व मयूर सिंहासन का विस्तृत वर्णन किया)

• (ग) निकोलो मनुची — इतालवी तोपची एवं चिकित्सक (जो दारा शिकोह की सेना में रहा और भारत में ही बस गया; 'स्टोरियो डो मोगोर' का लेखक)

• (घ) अब्दुर रज्जाक — पुर्तगाली यात्री जो औरंगजेब के दरबार में आया था

• **सही उत्तर:** (घ) अब्दुर रज्जाक — पुर्तगाली यात्री जो औरंगजेब के दरबार में आया था

• **विस्तृत व्याख्या:** कथन (घ) गलत है क्योंकि कमालुद्दीन **अब्दुर रज्जाक** पुर्तगाली यात्री नहीं, अपितु **पंद्रहवीं शताब्दी (1443 ई.) में फारस (खुरासान) के तैमूरी शासक मिर्जा शाहरुख का राजदूत** था, जो कालीकट के जमोरिन और विजयनगर के संगम वंशीय शासक **देवराय द्वितीय** के दरबार में आया था तथा उसने अपनी कृति **'मतला-उस-सदैन व मजमा-उल-बहरैन'** में विजयनगर नगर की सात प्राचीरों की भव्यता का वर्णन करते हुए लिखा था कि "पूरी पृथ्वी पर विजयनगर के समान कोई नगर न तो आँखों ने देखा है और न कानों ने सुना है" (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #38 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 78. मध्यकालीन भारत में कृषि, शिल्प और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए परिवर्तनों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. दिल्ली सल्तनत के काल में सूत कातने के लिए 'चरखा' (Charkha), रुई धुनने की 'धुनकी' (Bow) और बुनाई में 'पैडल करघा' (Treadle Loom) के प्रसार से वस्त्र उत्पादन में भारी वृद्धि हुई।

2. कागज निर्माण की तकनीक और पुस्तकों की जिल्दसाजी (Bookbinding) तथा घोड़ों के खुर में लोहे की नाल व रकाब (Stirrup) का व्यापक प्रयोग तुर्क काल की देन थी।

3. सत्रहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों के माध्यम से भारत में तंबाकू, मक्का, आलू, लाल मिर्च, अमरूद, पपीता और अनन्नास जैसी नई फसलों का प्रवेश हुआ।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

• (क) केवल 1 और 2

• (ख) केवल 2 और 3

• (ग) केवल 1 और 3

• (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **सही उत्तर:** (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **विस्तृत व्याख्या:** एनसीईआरटी (NCERT Tracing Changes) के अनुसार, 700 से 1750 ई. के मध्य के एक हजार वर्षों में भारतीय उपमहाद्वीप में अनेक नई प्रौद्योगिकियाँ और फसलें आईं। सिंचाई में दांतेदार गियर वाले **'रहट' (Persian Wheel)**, कताई में **'चरखे'** (जिसका भारत में प्रथम साहित्यिक उल्लेख 1350 ई. में इसामी की 'फुतूह-उस-सलातीन' में मिलता है), युद्धकला में बारूद व आग्नेयास्त्रों, निर्माण कार्य में चूना-गारा (Lime Mortar) व मेहराब-गुंबद, तथा खान-पान में नई दुनिया (अमेरिका) से पुर्तगालियों द्वारा लाई गई फसलों — **आलू, मक्का, लाल मिर्च, टमाटर, मूँगफली, तंबाकू, पपीता, अमरूद और काजू** — ने भारतीय कृषि और अर्थव्यवस्था को समृद्ध बनाया।

अभ्यास प्रश्न #39 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 79. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के संरक्षण में स्थित निम्नलिखित यूनेस्को विश्व धरोहर स्मारकों को उनके निर्माण के कालानुक्रम (सबसे प्राचीन से सबसे नवीन तक) में व्यवस्थित कीजिए:

1. साँची का बौद्ध महास्तूप (मध्य प्रदेश)
2. तंजावुर का बृहदीश्वर मंदिर (तमिलनाडु)
3. दिल्ली की कुतुब मीनार
4. आगरा का ताजमहल (उत्तर प्रदेश)

कूट:

• (क) 1 → 2 → 3 → 4
• (ख) 2 → 1 → 3 → 4
• (ग) 1 → 3 → 2 → 4
• (घ) 1 → 2 → 4 → 3

• **सही उत्तर:** (क) 1 → 2 → 3 → 4

• **विस्तृत व्याख्या:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI World Heritage) के आधिकारिक विवरण के अनुसार इन चारों स्मारकों का कालानुक्रम इस प्रकार है:

1. **साँची का बौद्ध महास्तूप:** तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व (सम्राट अशोक द्वारा मूल निर्माण एवं दूसरी-पहली शताब्दी ई.पू. में शुंग-सातवाहन काल में विस्तार; ASI Sanchi)।
2. **तंजावुर का बृहदीश्वर (राजराजेश्वर) मंदिर:** लगभग 1003–1010 ईस्वी (चोल सम्राट राजराज प्रथम द्वारा निर्मित; ASI Chola Temples)।
3. **कुतुब मीनार, दिल्ली:** 1199 ईस्वी से प्रारंभ (कुतुबुद्दीन ऐबक व इल्तुतमिश द्वारा निर्मित)।
4. **ताजमहल, आगरा:** 1631–1653 ईस्वी (मुगल सम्राट शाहजहाँ द्वारा निर्मित; ASI Taj Mahal)।

अभ्यास प्रश्न #40 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 80. छत्रपति शिवाजी महाराज की मृत्यु (1680 ई.) के पश्चात मराठा इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. शिवाजी के ज्येष्ठ पुत्र छत्रपति संभाजी (1680–1689 ई.) ने उज्जैन के हिंदी-संस्कृत विद्वान 'कवि कलश' को अपना सलाहकार नियुक्त किया तथा औरंगजेब के विद्रोही पुत्र शहजादा अकबर को शरण दी।
2. 1689 ई. में मुकर्रब खाँ ने संगमेश्वर में संभाजी को बंदी बना लिया और औरंगजेब द्वारा संभाजी की हत्या के बाद राजाराम (1689–1700 ई.) तथा उनकी मृत्यु के बाद उनकी वीरांगना पत्नी ताराबाई (1700–1707 ई.) ने अपने अल्पवयस्क पुत्र शिवाजी द्वितीय के नाम से मुगलों के विरुद्ध मराठा स्वतंत्रता संग्राम जारी रखा।
3. 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद संभाजी के पुत्र शाहू महाराज मुगल कैद से मुक्त हुए और 'खेड़ा के युद्ध' (1707 ई.) में ताराबाई की सेना को पराजित कर बालाजी विश्वनाथ (प्रथम वंशानुगत पेशवा, 1713 ई.) की सहायता से सतारा में छत्रपति बने।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

• (क) केवल 1 और 2
• (ख) केवल 2 और 3

• (ग) केवल 1 और 3

• (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **सही उत्तर:** (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **विस्तृत व्याख्या:** छत्रपति शिवाजी महाराज के पश्चात **संभाजी (1680–89 ई.)** ने वीरतापूर्वक मुगलों का सामना किया और स्वयं संस्कृत में **'बुधभूषणम्'** ग्रंथ की रचना की। मार्च 1689 में संभाजी के बलिदान और रायगढ़ के पतन के बाद **राजाराम** ने केवल 'प्रतिनिधि' के रूप में शासन करते हुए **जिंजी के अभेद्य दुर्ग (तमिलनाडु)** को 8 वर्षों तक मराठा प्रतिरोध का केंद्र बनाया और अष्टप्रधान के अतिरिक्त **'प्रतिनिधि'** नामक नौवाँ पद सृजित किया (जिससे मंत्रिपरिषद 'नवप्रधान' कहलाने लगी)। 1700 ई. में राजाराम की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी **महारानी ताराबाई** ने अद्भुत नेतृत्व क्षमता दिखाते हुए 1707 ई. तक औरंगजेब की शाही सेना को दक्कन में उलझाए रखा (IUC Academy)।

त्वरित पुनरावृत्ति: प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत के 50 अति-महत्वपूर्ण परीक्षा तथ्य (एक-पंक्ति सूत्र)

1. **भारतीय पुरातत्व का जनक:** अलेक्जेंडर कनिंघम (1861 ई. में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ASI की स्थापना; 1904 ई. में लॉर्ड कर्जन के काल में जॉन मार्शल महानिदेशक बने)।

2. **रॉबर्ट ब्रूस फुट (1863 ई.):** मद्रास के निकट पल्लवरम से भारत का प्रथम पूर्व-पुरापाषाणकालीन पाषाण उपकरण (**हस्तकुठार / Hand-axe**) खोजा (NCERT Early Humans)।

3. **पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य:** मध्यपाषाण काल में **आदमगढ़** (नर्मदापुरम/होशंगाबाद, मध्य प्रदेश) और **बागोर** (भीलवाड़ा, राजस्थान — कोठारी नदी तट) से प्राप्त हुए हैं।

4. **ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों का कालानुक्रम:** कायथा संस्कृति → अहाड़ (बनास) संस्कृति (ताम्रवती नगरी) → मालवा संस्कृति (उत्कृष्ट मृदभांड) → जोरवे संस्कृति (इनामगाँव व दैमाबाद — सबसे अंत तक, 700 ई.पू. तक जीवित रही) (IUC Academy)।

5. **हड़प्पा सभ्यता का नामकरण एवं काल-निर्धारण:** सर जॉन मार्शल ने 1924 ई. में 'सिंधु घाटी सभ्यता' की घोषणा की; रेडियोकार्बन (C^{14}) विधि के अनुसार इसका मानक परिपक्व काल **2300 ई.पू. से 1750 ई.पू. (या 2600–1900 ई.पू.)** माना जाता है (National Museum India)।

6. **हड़प्पा सभ्यता की धातु आयात सूची:** ताँबा = खेतड़ी (राजस्थान) व ओमान (मगान); चाँदी = अफगानिस्तान व ईरान; सोना = कोलार (कर्नाटक); लाजवर्द मणि (Lapis Lazuli) = बदख्शाँ (अफगानिस्तान); फिरोजा व टिन = ईरान।

7. **मेसोपोटामिया के अभिलेखों में 'मेलुहा' शब्द:** सुमेरियन/अक्काद के शासक सारगोन के अभिलेखों में सिंधु क्षेत्र के लिए **'मेलुहा'**, बहरीन के लिए **'दिलमुन'** (बिचौलिया व्यापार केंद्र) और मकरान/ओमान तट के लिए **'मगान'** शब्द प्रयुक्त हुआ है (NCERT Writing and City Life)।

8. **चारों वेदों के उपवेद एवं उनके प्रवर्तक:** ऋग्वेद → **आयुर्वेद** (धन्वंतरि/प्रजापति); यजुर्वेद → **धनुर्वेद** (विश्वामित्र); सामवेद → **गंधर्ववेद** (भरतमुनि/नारद); अथर्ववेद → **शिल्पवेद / अर्थवेद** (विश्वकर्मा)।

9. **छह वेदांग (वेदों को समझने के सहायक अंग):** (1) **शिक्षा** (उच्चारण विधि — वेद की नासिका), (2) **कल्प** (कर्मकांड/सूत्र — वेद के हाथ), (3) **व्याकरण** (पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' — वेद का मुख), (4) **निरुक्त** (यास्क कृत व्युत्पत्ति शास्त्र — वेद के कान), (5) **छंद** (पिंगल कृत — वेद के पैर) और (6) **ज्योतिष** (लगध मुनि कृत — वेद के नेत्र) (IUC Academy)।

10. **सोलह संस्कार एवं आठ प्रकार के विवाह:** गृह्यसूत्रों में गर्भाधान से अंत्येष्टि तक 16 संस्कारों और 8 विवाहों — **4 प्रशंसनीय विवाह (ब्रह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य)** तथा **4 निंदनीय विवाह (आसुर, गांधर्व, राक्षस, पैशाच)** — का उल्लेख है।

11. **जैन तीर्थंकरों के प्रतीक चिह्न:** प्रथम तीर्थंकर **ऋषभदेव (आदिनाथ)** = वृषभ (साँड); द्वितीय अजितनाथ = हाथी; 19वें मल्लिनाथ = कलश; 22वें **अरिष्टनेमि (नेमिनाथ — श्रीकृष्ण के समकालीन)** = शंख; 23वें **पार्श्वनाथ** = सर्प फण; 24वें **महावीर स्वामी** = सिंह (National Museum India)।

12. **सिकंदर (अलेक्जेंडर) का भारत आक्रमण (326 ई.पू.):** खैबर दर्रे से प्रवेश कर झेलम और चिनाब के मध्य के शासक **पोरस (पुरु)** के साथ **'हाइडेस्पीज (वितस्ता / झेलम) का युद्ध'** लड़ा; सिकंदर की सेना ने व्यास (हाइफेसिस) नदी पार करने से इनकार कर दिया और वह अपने जलसेनापति **नियार्कस** व थलसेनापति **सेल्यूकस निकेटर** के साथ 325 ई.पू. में लौट गया (323 ई.पू. में बेबीलोन में मृत्यु)।

13. **चंद्रगुप्त मौर्य और सेल्यूकस निकेटर की संधि (305 ई.पू.):** चंद्रगुप्त ने 500 हाथी उपहार में दिए और बदले में सेल्यूकस ने चार प्रांत — **एरिया (हेरात), अराकोसिया (कंधार), जेड्रोसिया (मकरान/बलूचिस्तान) और पेरोपनिषदई (काबुल)** — सौंपे, अपनी पुत्री हेलेना (कार्नेलिया) का विवाह किया तथा **मेगस्थनीज** को पाटलिपुत्र में राजदूत नियुक्त किया (IUC Academy)।

14. **सौगौरा (गोरखपुर, उ.प्र.) ताम्रपत्र एवं महास्थान (बोगरा, बंगाल) पाषाण अभिलेख:** चंद्रगुप्त मौर्य के काल के ये दोनों प्राकृत-ब्राह्मी अभिलेख **अकाल के समय राजकीय अन्नागारों से अनाज वितरण (दुर्भिक्ष राहत)** का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।

15. **बिंदुसार ('अमित्रघात' / 'सिंहसेन'):** यूनानी लेखकों ने चंद्रगुप्त मौर्य को **'सैंड्रोकोटस'** (जिसकी पहचान 1793 ई. में सर विलियम जोन्स ने की) और बिंदुसार को **'अमित्रोचेट्स' (शत्रुओं का संहारक)** कहा; बिंदुसार ने सीरिया के शासक एंटियोकस प्रथम से **मीठी मदिरा, सूखी अंजीर और एक दार्शनिक (सोफिस्ट)** भेजने की माँग की थी (दार्शनिक को छोड़कर शेष दो वस्तुएँ भेजी गईं)।

16. **बराबर और नागार्जुनी पहाड़ियों की शैलकृत गुफाएँ (जहानाबाद/गया, बिहार):** सम्राट अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 12वें व 19वें वर्ष में बराबर पहाड़ियों में **आजीवक संप्रदाय** के भिक्षुओं के लिए **कर्ण चौपार, सुदामा, लोमश ऋषि (प्रवेश द्वार पर हाथियों की सुंदर नक्काशी) और विश्व झोपड़ी** गुफाएँ दान कीं, जबकि उसके पौत्र **दशरथ** ने नागार्जुनी पहाड़ियों में **गोपी, वहियक और वडथिका** गुफाएँ आजीवकों को प्रदान कीं (NCERT Indian Art)।

17. **गौतमीपुत्र सातकर्णी और वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी:** सातवाहनों की राजकीय भाषा **प्राकृत** और लिपि **ब्राह्मी** थी; इन्होंने ग्रामीण प्रशासन की इकाई **'गौल्मिक'** (जो 9 रथ, 9 हाथी, 25 घोड़े व 45 पैदल सैनिकों की एक सैन्य टुकड़ी का प्रमुख होता था) स्थापित की।

18. **रेशम बुनकरों की श्रेणी का मंदसौर (दशपुर) अभिलेख:** कुमारगुप्त प्रथम और बंधुवर्मन के काल का 436 व 473 ई. का यह अभिलेख (रचयिता: **वत्सभट्टि**) प्रमाणित करता है कि लाट (गुजरात) प्रदेश से रेशम बुनकरों की एक श्रेणी ने दशपुर (मंदसौर, म.प्र.) में आकर भव्य सूर्य मंदिर का निर्माण और जीर्णोद्धार कराया (IUC Academy)।

19. **एरण (सागर, मध्य प्रदेश) के तीन प्रमुख अभिलेख:** (1) समुद्रगुप्त का एरण अभिलेख; (2) हूण शासक तोरमाण का वराह प्रतिमा अभिलेख; और (3) **भानुगुप्त का 510 ई. का एरण अभिलेख** (जिसमें हूणों से लड़ते हुए सेनापति गोपराज की वीरगति और उसकी पत्नी के सती होने का **प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य** मिलता है)।

20. **त्रिकोणीय संघर्ष और अरब यात्री सुलेमान व अल-मसूदी:** नवीं शताब्दी में आए अरब यात्री **सुलेमान** ने पाल साम्राज्य को **'रुहमा' (धर्मपाल)** और गुर्जर-प्रतिहार शासक मिहिर भोज को इस्लाम का सबसे बड़ा शत्रु किंतु सर्वश्रेष्ठ अश्वारोही सेना का स्वामी व चोर-डाकुओं से मुक्त राज्य बताया, जबकि दसवीं शताब्दी में बगदाद से आए **अल-मसूदी** ने राष्ट्रकूट शासकों ('बलहरा' = वल्लभराज) की धार्मिक उदारता की प्रशंसा की (NCERT Empires and Kingdoms)।

21. **काकतीय वंश की महान शासिका रुद्रमा देवी (1262–1289 ई.):** वारंगल (तेलंगाना) के काकतीय वंश की रानी **रुद्रमा देवी** ने पुरुषों के समान वस्त्र पहनकर और अपने अभिलेखों में पुरुष नाम ('रुद्रदेव महाराज') लिखवाकर शासन किया; वेनिस के यात्री **मार्को पोलो** ने उनके न्यायप्रिय शासन की भूरि-भूरि प्रशंसा की और काकतीय काल में ही पालमपेट में यूनेस्को विश्व धरोहर **'रामप्पा (रुद्रेश्वर) मंदिर'** (ASI World Heritage, 2021) का निर्माण हुआ (जिसके विमान में पानी पर तैरने वाली हल्की छिद्रयुक्त ईंटों का प्रयोग हुआ है)।

22. **असम का अहोम साम्राज्य (1228–1826 ई.):** शान (म्यांमार) क्षेत्र से आए **सुकाफा** ने ब्रह्मपुत्र घाटी में 'भुइयाँ' (भूस्वामियों) को दबाकर अहोम राज्य स्थापित किया; यहाँ राज्य के लिए अनिवार्य श्रम करने वाले लोगों को **'पाइक'** और उनकी गणना को 'खेल' कहा जाता था; 1671 ई. में अहोम सेनापति **लचित बोरफुकन** ने **'सरायघाट के युद्ध'** में औरंगजेब की मुगल सेना (रामसिंह के नेतृत्व में) को निर्णायक रूप से पराजित किया; अहोमों के ऐतिहासिक इतिवृत्त **'बुरंजी'** कहलाते थे (IUC Academy)।

23. **गोंडवाना की वीरांगना रानी दुर्गावती (1524–1564 ई.):** चंदेल राजकुमारी और गढ़-कटंगा (जबलपुर क्षेत्र — 70,000 गाँवों का समृद्ध राज्य) के गोंड राजा दलपत शाह की विधवा पत्नी **रानी दुर्गावती** ने अपने पांच वर्षीय पुत्र **वीर नारायण** की संरक्षिका के रूप में शासन संभाला और 1564 ई. में अकबर के सेनापति आसफ खाँ से युद्ध करते हुए आत्मसमर्पण करने के बजाय रणभूमि में वीरगति चुनी (IUC Academy)।

24. **अहमदनगर की चाँद बीबी और मलिक अंबर:** बीजापुर के अली आदिलशाह प्रथम की विधवा और अहमदनगर की संरक्षिका **चाँद बीबी** ने 1595–96 ई. में अकबर के पुत्र शहजादा मुराद और अब्दुर्रहीम खानखाना की मुगल सेना के विरुद्ध अहमदनगर किले की वीरतापूर्वक रक्षा की; बाद में अभीसीनियाई मूल के वजीर **मलिक अंबर** ने दक्कन में **गोरिल्ला (छापामार) युद्ध पद्धति ('बार्गीगिरी')** और टोडरमल की व्यवस्था पर आधारित भू-राजस्व सुधार लागू किए, जो आगे चलकर शिवाजी के प्रशासन का आधार बने।

25. **सिख गुरुओं का क्रम एवं प्रमुख योगदान (10 गुरु):** (1) **गुरु नानक देव** (संस्थापक, लंगर व संगत); (2) **गुरु अंगद (लहना)** — **गुरमुखी लिपि** के जनक; (3) **गुरु अमरदास** — 22 गद्दियाँ (मंजियाँ) स्थापित कीं व अकबर ने भेंट की; (4) **गुरु रामदास** — अकबर द्वारा प्रदत्त 500 बीघा भूमि पर **अमृतसर (रामदासपुर)** नगर बसाया व पद वंशानुगत हुआ; (5) **गुरु अर्जन देव** — हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर), **आदि ग्रंथ का संकलन (1604)** व जहाँगीर द्वारा मृत्युदंड (1606); (6) **गुरु हरगोविंद** — **अकाल तख्त** की स्थापना, 'मीरी और पीरी' की दो तलवारें धारण कर सिखों को सैन्य रूप में संगठित किया; (7) **गुरु हरराय**; (8) **गुरु हरकिशन** (चेचक से अल्पवय में निधन); (9) **गुरु तेग बहादुर** (औरंगजेब द्वारा 1675 में शहादत); और (10) **गुरु गोविंद सिंह** — पांवटा साहिब व आनंदपुर साहिब, **1699 ई. में बैसाखी के दिन 'खालसा पंथ'** की स्थापना, पाँच ककार (**केश, कंघा, कड़ा, कच्छ, कृपाण**), आत्मकथा **'विचित्र नाटक'** व औरंगजेब को फारसी में लिखा पत्र **'जफरनामा'** (1708 ई. में नांदेड़, महाराष्ट्र में निधन) (IUC Academy)।

अध्ययन सामग्री सत्यापन एवं आधिकारिक स्रोत सूची:

- **शैक्षणिक संस्थान:** IUC Academy (Inclusive Universal Careers Academy | www.iucacademy.com)
- **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT):** Ancient & Medieval History Textbooks (ncert.nic.in) | Indian Art and Architecture | Delhi: 12th to 15th Century | The Mughals: 16th to 17th Century
- **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI):** World Heritage Monuments of India (asi.nic.in) | Great Living Chola Temples | Buddhist Monuments at Sanchi | Agra Monuments & Taj Mahal
- **राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार):** National Museum Galleries & Collections (nationalmuseumindia.gov.in)

परिशिष्ट: प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत — अभिलेख, स्मारक, साहित्य एवं शब्दावली संकलन

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — परिशिष्ट: प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत — अभिलेख, स्मारक, साहित्य एवं शब्दावली संकलन

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2	प्रमुख अध्ययन बिंदु 3
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ (कालानुक्रमिक संकलन)	प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत की प्रमुख प्रशासनिक, राजस्व एवं सांस्कृतिक शब्दावली	प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत के 20 प्रमुख ऐतिहासिक युद्धों की निर्णायक सारणी

प्रतियोगी परीक्षाओं (संघ लोक सेवा आयोग, राज्य लोक सेवा आयोग, कर्मचारी चयन आयोग, रेलवे भर्ती बोर्ड एवं शिक्षक पात्रता परीक्षाओं) में प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत की प्रशासनिक-आर्थिक शब्दावली, प्रमुख अभिलेखों, संधियों तथा स्थापत्य स्मारकों से संबंधित सुमेलन प्रश्न नियमित रूप से पूछे जाते हैं (IUC Academy; NCERT Textbooks)। नीचे अध्याय-स्तरीय पुनरावृत्ति हेतु प्रामाणिक बिंदु सूचीबद्ध किए गए हैं:

1. प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ (कालानुक्रमिक संकलन)

1. **बोगजकोई अभिलेख (लगभग 1400 ई.पू., एशिया माइनर):** हित्ती राजा सुब्बिलुलिउमा और मित्तानी राजा मत्तिउआजा के मध्य संधि के साक्षी के रूप में ऋग्वैदिक देवताओं — **इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य** — का उल्लेख (IUC Academy)।

2. **पिपरहवा धातु-मंजूषा अभिलेख (सिद्धार्थनगर, उ.प्र. — लगभग 5वीं–4वीं शताब्दी ई.पू.):** शाक्य कुल के भगवान बुद्ध के पवित्र अस्थि-अवशेषों से संबंधित प्राचीनतम ब्राह्मी अभिलेख (National Museum India)।

3. **सोहगौरा ताम्रपत्र (गोरखपुर, उ.प्र.) एवं महास्थान पाषाण लेख (बंगाल):** चंद्रगुप्त मौर्य के काल में अकाल राहत हेतु राजकीय कोष्ठागारों से अनाज वितरण का आदेश (IUC Academy)।

4. **सम्राट अशोक के 14 बृहद शिलालेख (268–232 ई.पू.):**

- **प्रथम शिलालेख:** पशुबलि की निंदा एवं समाज-उत्सवों पर नियंत्रण ("यहाँ कोई भी जीव मारकर हवन न किया जाए")।
- **द्वितीय शिलालेख:** मनुष्य एवं पशु दोनों के लिए औषधालयों की व्यवस्था तथा दक्षिण के चोल, पांड्य, सतियपुत्र, केरलपुत्र व ताम्रपर्णी का उल्लेख।
- **तृतीय शिलालेख:** युक्त, रज्जुक और प्रादेशिक अधिकारियों को प्रत्येक 5वें वर्ष राज्य के दौरे ('अनुसंयान') का आदेश।
- **चतुर्थ शिलालेख:** 'भेरीघोष' (युद्ध की दुंदुभि) के स्थान पर 'धम्मघोष' की घोषणा।
- **पंचम शिलालेख:** राज्याभिषेक के 13वें वर्ष **'धम्ममहामात्र'** नामक नवीन अधिकारियों की नियुक्ति।
- **षष्ठ शिलालेख:** आत्म-नियंत्रण एवं प्रतिवेदकों को आदेश कि वे किसी भी समय प्रजा के कार्यों की सूचना राजा को दें।
- **सप्तम एवं अष्टम शिलालेख:** सभी संप्रदायों के बीच सहिष्णुता तथा राज्याभिषेक के 10वें वर्ष अशोक की बोधगया ('धम्मयात्रा') यात्रा।
- **नवम एवं दशम शिलालेख:** जन्म-विवाह के खर्चीले आडंबरों के स्थान पर 'धम्म-मंगल' (दासों के प्रति दया व गुरुओं का आदर) पर बल।
- **एकादश एवं द्वादश शिलालेख:** धम्मदान की श्रेष्ठता, स्त्री-महामात्रों ('इत्झीझख महामात्र') की नियुक्ति एवं सर्वधर्म समभाव ("जो अपने धर्म की प्रशंसा और दूसरे धर्म की निंदा करता है, वह अपने ही धर्म को हानि पहुँचाता है")।

• **त्रयोदश शिलालेख:** राज्याभिषेक के 8वें वर्ष (261 ई.पू.) **कलिंग युद्ध**, आठविक जातियों को चेतावनी तथा 5 समकालीन यवन शासकों — अंतियोक (सीरिया), तुरमय (मिस्र), अंतिकिनि (मकदूनिया), मक (सीरीन) व अलिकसुंदर (एपिरस) — का उल्लेख।

• **चतुर्दश शिलालेख:** ऊपर के सभी लेखों का उद्देश्य व लिपिक ('चपड़') की संभावित त्रुटियों का उल्लेख (**ASI Monuments**)।

5. **बेसनगर (विदिशा) गरुड़ स्तंभ लेख (दूसरी शताब्दी ई.पू.):** तक्षशिला के यवन राजदूत **हेलियोडोरस** द्वारा भागवत धर्म ग्रहण करने और वासुदेव स्तंभ स्थापित करने का प्रमाण (**ASI Monuments**)।

6. **अयोध्या धनदेव अभिलेख (प्रथम शताब्दी ई.पू.):** पुष्यमित्र शुंग के वंशज धनदेव द्वारा उत्कीर्ण, जिसमें पुष्यमित्र शुंग द्वारा दो अश्वमेध यज्ञ किए जाने का उल्लेख है (**IUC Academy**)।

7. **हाथीगुम्फा अभिलेख (उदयगिरि, भुवनेश्वर — प्रथम शताब्दी ई.पू.):** कलिंग के चेदि (महामेघवाहन) वंश के शासक **खारवेल** के शासन के प्रथम 13 वर्षों का तिथिरहित क्रमबद्ध विवरण; इसमें सर्वप्रथम **'भारतवर्ष'** शब्द, नंद राजा द्वारा कलिंग से जिन-मूर्ति ले जाने व नहर खुदवाने तथा जैन भिक्षुओं को ग्राम दान का उल्लेख है (**NCERT Indian Art**)।

8. **नाणेघाट अभिलेख (रानी नागनिका) एवं नासिक गुहा अभिलेख (गौतमी बलश्री):** सातवाहन शासकों — सातकर्णी प्रथम और गौतमीपुत्र सातकर्णी — की विजयों तथा भूमि अनुदान का विवरण (**IUC Academy**)।

9. **रबातक अभिलेख (बगलान, अफगानिस्तान):** कुषाण सम्राट **कनिष्क प्रथम** की वंशावली (कुजुल कडफिसेस, विम तक्तु, विम कडफिसेस और कनिष्क) तथा पाटलिपुत्र व चंपा तक उसके साम्राज्य विस्तार का प्रमाण।

10. **जूनागढ़ (गिरनार) प्रशस्ति अभिलेख (150 ई.):** शक महाक्षत्रप **रुद्रदामन प्रथम** द्वारा चंपू शैली और विशुद्ध संस्कृत में उत्कीर्ण; इसमें सुदर्शन झील के पुनर्निर्माण और लक्ष्मी के स्वयंवर का प्रथम अभिलेखीय उल्लेख है (**IUC Academy**)।

11. **प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ लेख):** अशोक के कौशांबी स्तंभ पर **हरिषेण** द्वारा उत्कीर्ण **समुद्रगुप्त** की दिग्विजय का अभिलेख; इसी स्तंभ पर बाद में बीरबल का लेख और मुगल सम्राट **जहाँगीर** का फारसी लेख भी उत्कीर्ण किया गया (**ASI Monuments**)।

12. **महरौली लौह स्तंभ लेख (दिल्ली): चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ('चन्द्र')** की वंग और वाह्लीक विजयों तथा विष्णुध्वज स्थापना का प्रमाण (**ASI World Heritage**)।

13. **भीतरी स्तंभ लेख (सैदपुर, गाजीपुर, उ.प्र.):** गुप्त सम्राट **स्कंदगुप्त** द्वारा पुष्यमित्रों और बर्बर **हूणों** को परास्त करने का विवरण (**IUC Academy**)।

14. **ऐहोल प्रशस्ति अभिलेख (634 ई., कर्नाटक):** चालुक्य सम्राट **पुलकेशिन द्वितीय** के दरबारी जैन कवि **रविकीर्ति** द्वारा रचित; नर्मदा के तट पर हर्षवर्धन की पराजय तथा कालिदास व भारवि के नामों का उल्लेख (**NCERT Empires and Kingdoms**)।

15. **ग्वालियर प्रशस्ति अभिलेख (नवीं शताब्दी ई.):** गुर्जर-प्रतिहार शासक **मिहिर भोज ('आदिवराह')** के शासनकाल का प्रमुख अभिलेख (**NCERT Empires and Kingdoms**)।

16. **खालिमपुर ताम्रपत्र (धर्मपाल), मुंगेर एवं नालंदा ताम्रपत्र (देवपाल):** बंगाल-बिहार के पाल राजवंश की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों के प्रमुख अभिलेखीय स्रोत।

17. **उत्तरमेरूर अभिलेख (919 व 921 ई., चिंगलपुट/कांचीपुरम, तमिलनाडु):** चोल शासक **प्रांतक प्रथम** के काल में ब्राह्मण ग्राम 'सभा' की **'वारियम' समितियों** के सदस्यों की योग्यता एवं निर्वाचन प्रणाली का संविधान-सदृश अभिलेख (**NCERT Kings and Kingdoms**)।

18. **तिरुवालंगाडु एवं तंजौर अभिलेख:** चोल सम्राट **राजराज प्रथम** और **राजेंद्र प्रथम** के नौसैनिक अभियानों, श्रीलंका विजय और गंगईकोंडचोलपुरम की स्थापना का विवरण (**ASI Chola Temples**)।

2. प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत की प्रमुख प्रशासनिक, राजस्व एवं सांस्कृतिक शब्दावली

1. **अमात्य एवं महामात्र:** मौर्य एवं सातवाहन काल में उच्च प्रशासनिक पदाधिकारी (**IUC Academy**)।

2. **रज्जुक:** मौर्य काल में जनपद स्तर पर भूमि मापन और न्याय दोनों का अधिकार रखने वाले अधिकारी।

3. **अग्रोनोमोई एवं एस्टिनोमोई:** मेगस्थनीज द्वारा वर्णित क्रमशः जिले/सड़क निर्माण अधिकारी और नगर अधिकारी।

4. **रूपदर्शक:** मौर्य काल में प्रचलित सिक्कों की शुद्धता की जाँच करने वाला अधिकारी (**National Museum India**)।

5. **सार्थवाह एवं श्रेणी:** प्राचीन भारत में व्यापारिक काफिलों के प्रमुख को 'सार्थवाह' और एक ही शिल्प या व्यवसाय के कारीगरों के निगम को 'श्रेणी' (जिसके प्रमुख को 'ज्येष्ठक' कहते थे और जो बैंक का भी कार्य करती थी) कहा जाता था (**IUC Academy**)।

6. **अग्रहार एवं ब्रह्मदेय:** ब्राह्मणों और शैक्षणिक-धार्मिक संस्थानों को दी जाने वाली कर-मुक्त भूमि, जिस पर राजकीय अधिकारियों और सैनिकों का प्रवेश वर्जित ('अचाट-भट-प्रवेश') होता था (**NCERT Kings and Kingdoms**)।

7. **उपरिकर एवं उद्रंग:** गुप्त काल में अस्थायी काश्तकारों से लिया जाने वाला कर 'उपरिकर' और स्थायी किसानों से लिया जाने वाला नियमित भूमिकर 'उद्रंग' कहलाता था।

8. **सामंत एवं महासामंत:** गुप्तोत्तर और पूर्व-मध्यकाल में भूमि अनुदान प्राप्त करने वाले अधीनस्थ शासक या सैन्य जागीरदार, जो राजा को सैन्य सहायता देते थे (**NCERT Kings and Kingdoms**)।

9. **इक्ता, मुक्ता एवं फवाजिल:** दिल्ली सल्तनत में नकद वेतन के बदले सैनिक व प्रशासनिक अधिकारियों को सौंपी गई राजस्व इकाई **'इक्ता'** कहलाती थी; इसके प्रमुख को **'इक्तादार', 'मुक्ता' या 'वली'** कहते थे; अपना वेतन और सैन्य खर्च निकालने के बाद इक्तादार द्वारा केंद्रीय राजकोष में जमा की जाने वाली अधिशेष (बचत) राशि को **'फवाजिल'** कहा जाता था (**NCERT Delhi 12th to 15th Century**)।

10. **खालसा भूमि:** सल्तनत और मुगल दोनों कालों में वह भूमि जिसका राजस्व मध्यस्थों के बिना सीधे केंद्रीय शाही राजकोष में जमा होता था (**NCERT The Mughals**)।

11. **उश्र एवं खराज:** मुस्लिम किसानों से सिंचित भूमि पर उपज का 1/10 (या प्राकृतिक वर्षा सिंचित पर 1/20) भाग लिया जाने वाला भूमिकर **'उश्र'** और गैर-मुस्लिम किसानों से उपज का 1/3 से 1/2 भाग तक लिया जाने वाला भूमिकर **'खराज'** कहलाता था (**NCERT Delhi 12th to 15th Century**)।

12. **बंदगान:** दिल्ली सल्तनत (विशेषकर इल्तुतमिश के काल) में सैन्य सेवा के लिए खरीदे गए विशेष प्रशिक्षित तुर्क गुलामों के लिए प्रयुक्त फारसी शब्द (**NCERT Delhi 12th to 15th Century**)।

13. **किस्मत-ए-खोती एवं हकूक-ए-खोती:** सल्तनत काल में ग्रामीण मुखियाओं (खुद और मुकद्दम) द्वारा किसानों से वसूला जाने वाला उपकर और उनकी स्वयं की भूमि का कर-मुक्त विशेषाधिकार (जिसे अलाउद्दीन खलजी ने समाप्त कर दिया) (**NCERT Delhi 12th to 15th Century**)।

14. **सौंधर (तकावी):** मुहम्मद बिन तुगलक और मुगल शासकों द्वारा किसानों को कुआँ खोदने, बीज और हल-बैल खरीदने के लिए दिया जाने वाला राजकीय कृषि ऋण (**IUC Academy**)।

15. **जवाबित:** सल्तनत और मुगल काल में शरीयत के अतिरिक्त राज्य के प्रशासनिक संचालन के लिए शासक द्वारा बनाए गए धर्मनिरपेक्ष राजकीय कानून (**IUC Academy**)।

16. **कारखाना (ब्यूतात):** फिरोजशाह तुगलक और मुगल काल में शाही परिवार व सेना के लिए अस्त्र-शस्त्र, कालीन, रेशमी वस्त्र और आभूषण बनाने वाली राजकीय कार्यशालाएँ (जो 'रातिबी' और 'गैर-रातिबी' दो प्रकार की होती थीं) (**ASI Fatehpur Sikri**)।

17. **हुंडी एवं सर्राफ:** मध्यकालीन भारत में धन के सुरक्षित हस्तांतरण और ऋण के लिए प्रयुक्त साख-पत्र (Bill of Exchange) को **'हुंडी'** तथा मुद्रा की शुद्धता परखने, विनिमय करने और हुंडी जारी करने वाले बैंकर वर्ग को **'सर्राफ'** कहा जाता था (**IUC Academy**)।

18. **दस्तूर-उल-अमल:** मुगल काल में परगना और दस्तूर स्तर पर नकद भू-राजस्व की दरों की आधिकारिक निर्देशिका सूची (**NCERT The Mughals**)।

19. **मदद-ए-माश (सयूरगल / मिल्क / इनाम):** मुगल सम्राट द्वारा विद्वानों, संतों, विधवाओं और धार्मिक संस्थाओं को जीवन-निर्वाह हेतु दी जाने वाली कर-मुक्त अनुदान भूमि (**NCERT The Mughals**)।

20. **पैबाकी भूमि:** मुगल काल में वह आरक्षित जागीर भूमि जो किसी मनसबदार से स्थानांतरित होने के बाद दूसरे मनसबदार को आवंटित किए जाने की प्रतीक्षा में अस्थायी रूप से खालसा विभाग के अधीन रहती थी (**IUC Academy**)।

21. **जमादामी एवं हासिल:** मुगल जागीरदारी व्यवस्था में किसी जागीर से प्राप्त होने वाले अनुमानित (निर्धारित) राजस्व को **'जमा' (या 'जमादामी' — दामों में गणना)** और वर्ष के अंत में वास्तव में वसूल हुए राजस्व को **'हासिल'** कहा जाता था (**NCERT The Mughals**)।

22. **तैनात-ए-रकाब एवं तैनात-ए-सूजात:** मुगल दरबार में सम्राट की प्रत्यक्ष सेवा में तैनात रहने वाले मनसबदारों को 'तैनात-ए-रकाब' और सूबों (प्रांतों) में तैनात मनसबदारों को 'तैनात-ए-सूजात' कहा जाता था।

23. **वाकियानवीस, सवानिहनगार एवं खुफियानवीस:** मुगल प्रांतों में नियुक्त समाचार लेखक और गुप्तचर अधिकारी जो प्रांतीय घटनाओं की रिपोर्ट सीधे सम्राट को भेजते थे; इसके अतिरिक्त **'हरकारा'** डाक और गुप्त संदेश ले जाने वाले धावक होते थे (**IUC Academy**)।

24. **ददनी प्रथा:** सत्रहवीं शताब्दी में यूरोपीय और भारतीय व्यापारियों द्वारा भारतीय जुलाहों और कारीगरों को माल तैयार करने के लिए अग्रिम धनराशि (पेशगी) देने की संविदा प्रथा (**IUC Academy**)।

25. **मोकासा एवं सरंजाम:** मराठा प्रशासन में सैन्य अधिकारियों और सरदारों को नकद वेतन के बदले या चौथ के हिस्से के रूप में दी जाने वाली भूमि को 'मोकासा' या 'सरंजाम' कहा जाता था (**IUC Academy**)।

3. प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत के 20 प्रमुख ऐतिहासिक युद्धों की निर्णायक सारणी

क्र.सं.	ऐतिहासिक युद्ध का नाम	वर्ष / तिथि	युद्धरत पक्ष (विजेता बनाम पराजित)	ऐतिहासिक परिणाम एवं महत्व	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
1.	**दाशराज्ञ युद्ध** (परुष्णी / रावी नदी तट)	ऋग्वैदिक काल	भरत जन के राजा **सुदास** (विजयी) बनाम दस राजाओं का संघ	भरत जन की सर्वोच्चता स्थापित हुई और भारतवर्ष नामकरण का आधार बना	**IUC Academy**
2.	**हाइडेस्पीज (वितस्ता / झेलम) का युद्ध**	326 ई.पू.	**सिकंदर (अलेक्जेंडर)** बनाम पौरव नरेश **पोरस (पुरु)**	पोरस की वीरता से प्रभावित होकर सिकंदर ने उसका राज्य लौटाया; भारत व यूनान के मध्य सीधा संपर्क	**IUC Academy**
3.	**कलिंग का युद्ध** (दया नदी तट, ओडिशा)	261 ई.पू.	मौर्य सम्राट **अशोक** (विजयी) बनाम कलिंग राज्य	भीषण रक्तपात के बाद अशोक ने युद्ध नीति ('भेरीघोष') त्यागकर 'धम्मघोष' अपनाया (13वाँ शिलालेख)	**ASI Monuments**
4.	**नर्मदा नदी के तट का युद्ध**	लगभग 618 ई.	चालुक्य सम्राट **पुलकेशिन द्वितीय** (विजयी) बनाम **हर्षवर्धन**	हर्षवर्धन का दक्षिण अभियान रुका; नर्मदा नदी दोनों साम्राज्यों की सीमा बनी (ऐहोल अभिलेख)	**NCERT Empires and Kingdoms**
5.	**तक्कोलम का युद्ध**	949 ई.	राष्ट्रकूट शासक **कृष्ण तृतीय** (विजयी) बनाम चोल शासक **प्रांतक प्रथम** (राजकुमार राजादित्य)	चोल साम्राज्य को अस्थायी आघात लगा और कृष्ण तृतीय ने तंजौर व रामेश्वरम तक अभियान किया	**ASI Chola Temples**
6.	**तराइन का प्रथम युद्ध**	1191 ई.	चाहमान सम्राट **पृथ्वीराज तृतीय** (विजयी) बनाम **मुहम्मद गोरी**	पृथ्वीराज चौहान ने गोरी की सेना को परास्त कर भटिंडा (तबरहिंद) दुर्ग पर पुनः अधिकार किया	**NCERT Kings and Kingdoms**
7.	**तराइन का द्वितीय युद्ध**	1192 ई.	**मुहम्मद गोरी** (विजयी) बनाम **पृथ्वीराज तृतीय**	उत्तर भारत में राजपूत प्रभुत्व का अंत और दिल्ली सल्तनत की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ	**NCERT Kings and Kingdoms**
8.	**चंदावर का युद्ध**	1194 ई.	**मुहम्मद गोरी** (विजयी) बनाम गहड़वाल शासक **जयचंद्र**	कन्नौज और वाराणसी तक के पूर्वी दोआब क्षेत्र पर तुर्कों का नियंत्रण स्थापित हुआ	**IUC Academy**
9.	**पानीपत का प्रथम युद्ध**	21 अप्रैल 1526	**बाबर** (विजयी) बनाम **इब्राहिम लोदी**	लोदी वंश व दिल्ली सल्तनत का अंत और भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना	**NCERT The Mughals**
10.	**खानवा का युद्ध**	17 मार्च 1527	**बाबर** (विजयी) बनाम मेवाड़ के **महाराणा साँगा**	राजपूत-अफगान गठबंधन पराजित हुआ और मुगल सत्ता की जड़ें उत्तर भारत में सुदृढ़ हुईं	**ASI Fatehpur Sikri**
11.	**चंदेरी का युद्ध**	29 जनवरी 1528	**बाबर** (विजयी) बनाम चंदेरी शासक **मेदिनी राय**	मालवा और बुंदेलखंड की सीमा पर स्थित सामरिक दुर्ग चंदेरी पर बाबर का अधिकार	**IUC Academy**
12.	**घाघरा का युद्ध**	6 मई 1529	**बाबर** (विजयी) बनाम **महमूद लोदी** एवं बंगाल के नुसरत शाह	बिहार और बंगाल के अफगानों की शक्ति कुचली गई (बाबर का भारत में अंतिम युद्ध)	**IUC Academy**
13.	**चौसा का युद्ध**	26 जून 1539	**शेर खाँ (शेरशाह सूरी)** (विजयी) बनाम **हुमायूँ**	कर्मनाशा और गंगा के संगम पर हुमायूँ पराजित हुआ; निजाम भिश्ती ने हुमायूँ की जान बचाई; फरीद ने 'शेरशाह' उपाधि ली	**IUC Academy**
14.	**कन्नौज (बिलग्राम) का युद्ध**	17 मई 1540	**शेरशाह सूरी** (विजयी) बनाम **हुमायूँ**	हुमायूँ को 15 वर्षों के लिए भारत से निर्वासित होना पड़ा और द्वितीय अफगान (सूर) साम्राज्य स्थापित हुआ	**NCERT The Mughals**
15.	**सरहिंद का युद्ध**	22 जून 1555	**हुमायूँ एवं बैरम खाँ** (विजयी) बनाम **सिकंदर शाह सूर**	हुमायूँ ने दिल्ली और आगरा का मुगल सिंहासन पुनः प्राप्त किया	**NCERT The Mughals**

क्र.सं.	ऐतिहासिक युद्ध का नाम	वर्ष / तिथि	युद्धरत पक्ष (विजेता बनाम पराजित)	ऐतिहासिक परिणाम एवं महत्व	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
16.	**पानीपत का द्वितीय युद्ध**	5 नवंबर 1556	**अकबर (बैरम खाँ)** (विजयी) बनाम **हेमू ('विक्रमादित्य')**	अफगान-हिंदू चुनौती समाप्त हुई और अकबर का मुगल सिंहासन सुरक्षित हुआ	NCERT The Mughals
17.	**तालीकोटा (राक्षसी-तंगड़ी / बन्नीहट्टी) का युद्ध**	23 जनवरी 1565	दक्कन की **4 सल्तनतों का संघ** (विजयी) बनाम **विजयनगर (रामराय)**	गौरवशाली विजयनगर महानगर (हम्पी) का विध्वंस और दक्षिण में हिंदू साम्राज्य की सर्वोच्चता का पतन	ASI World Heritage
18.	**हल्दीघाटी का युद्ध**	18 जून 1576	**महाराणा प्रताप** (हकीम खाँ सूर व राणा पूंजा) बनाम मुगल सेना (**मानसिंह व आसफ खाँ**)	अनिर्णित युद्ध; महाराणा प्रताप ने जीवित रहते मेवाड़ के अधिकांश भाग (चित्तौड़ व मांडलगढ़ को छोड़कर) पर पुनः अधिकार किया	ASI World Heritage
19.	**सामूगढ़ का युद्ध**	29 मई 1658	**औरंगजेब एवं मुराद** (विजयी) बनाम **दारा शिकोह**	शाहजहाँ के पुत्रों के उत्तराधिकार युद्ध का सबसे निर्णायक युद्ध जिससे आगरा व दिल्ली पर औरंगजेब का अधिकार हुआ	IUC Academy
20.	**सरायघाट का युद्ध** (ब्रह्मपुत्र नदी, गुवाहाटी)	1671 ई.	अहोम सेनापति **लचित बोरफुकन** (विजयी) बनाम मुगल सेना (**राजा रामसिंह**)	अहोम नौसेना की अद्वितीय रणनीति से असम पर मुगल विस्तार के प्रयास स्थायी रूप से विफल हुए	IUC Academy

मास्टर स्मृति ट्रिक्स बैंक (Complete Mnemonics Compendium) — मध्यकालीन भारत का इतिहास

परीक्षा हॉल में त्वरित स्मरण हेतु IUC Academy के विशेष निमोनिक्स सूत्र

स्मृति ट्रिक #1: दिल्ली सल्तनत के 5 राजवंश (कालक्रम: 1206-1526)

ट्रिक: 'गुलाब खिले तो सांस लो' — 1. गुलाम/मामलूक वंश (1206-1290, कुतुबुद्दीन ऐबक), 2. खिलजी वंश (1290-1320, जलालुद्दीन), 3. तुगलक वंश (1320-1414, गयासुद्दीन — सर्वाधिक लंबा शासन 94 वर्ष), 4. सैयद वंश (1414-1451, खिज्र खाँ), 5. लोदी वंश (1451-1526, बहलोल लोदी — प्रथम अफगान वंश)।

स्मृति ट्रिक #2: सल्तनत कालीन प्रमुख विभाग एवं संस्थापक

ट्रिक: 'अर्ज बलबन, मुस्तखराज व रियासत अलाउद्दीन, कोही मुहम्मद तुगलक, खैरात व बंदगान फिरोज तुगलक' — दीवान-ए-अर्ज (सैन्य: बलबन), दीवान-ए-मुस्तखराज (राजस्व बकाया: अलाउद्दीन), दीवान-ए-अमीर कोही (कृषि: मुहम्मद बिन तुगलक), दीवान-ए-बंदगान (दास) व खैरात (दान): फिरोज शाह तुगलक।

स्मृति ट्रिक #3: विजयनगर साम्राज्य के 4 राजवंश एवं संस्थापक

ट्रिक: 'संगम हरि-बुक्का, सालुव नरसिंह, तुलुव वीर नरसिंह (कृष्णदेव राय), अरावीडु तिरुमल' — विजयनगर में आने वाले विदेशी यात्री: निकोलो कोंटी (देवराय-I), अब्दुर्रज्जाक (देवराय-II), बारबोसा व डोमिंगो पायस (कृष्णदेव राय), नूनिज (अच्युतदेव राय)।

स्मृति ट्रिक #4: बाबर द्वारा लड़े गए 4 प्रमुख युद्ध (1526-1529)

ट्रिक: '26 में पानी पिया, 27 में खाना खाया, 28 में चल दिया, 29 में घर गया और 30 में मर गया' — पानीपत प्रथम (1526, इब्राहिम लोदी), खानवा (1527, राणा सांगा — गाजी उपाधि), चंदेरी (1528, मेदिनी राय), घाघरा (1529, अफगान)।

स्मृति ट्रिक #5: अकबर के नवरत्न याद रखने की ट्रिक

ट्रिक: 'BAT BAT MDH' — B=Birbal (बीरबल), A=Abul Fazl (अबुल फजल), T=Tansen (तानसेन), B=Bhagwan Das (भगवान दास), A=Abdul Rahim Khan-i-Khana (अब्दुर्रहीम खानखाना), T=Todar Mal (टोडरमल), M=Man Singh (मानसिंह), D=Mulla Do Pyaza (मुल्ला दो प्याजा), H=Hakim Humam (हकीम हुमाम)।

स्मृति ट्रिक #6: शिवाजी का अष्टप्रधान मंत्रिमंडल

ट्रिक: 'पेशवा प्रधानमंत्री, अमात्य/मजूमदार वित्त मंत्री, सुमंत/दबीर विदेश मंत्री, वाकियानवीस गुप्तचर व गृह, सुरुनवीस/चिटनीस पत्राचार, सर-ए-नौबत सेनापति, पंडितराव धार्मिक मामले, न्यायाधीश न्याय विभाग'।

स्मृति ट्रिक #7: कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष (8वीं-10वीं सदी)

ट्रिक: 'पाल (बंगाल/धर्मपाल), गुर्जर-प्रतिहार (पश्चिम/वत्सराज व नागभट्ट-II) और राष्ट्रकूट (दक्कन/ध्रुव)' — इस 200 वर्षीय संघर्ष में अंततः गुर्जर-प्रतिहारों को कन्नौज पर स्थायी सफलता मिली।

स्मृति ट्रिक #8: चोल कालीन भूमि के प्रकार (अभिलेखीय शब्दावली)

ट्रिक: 'वेल्लनवगाई = गैर-ब्राह्मण किसान भूमि, ब्रह्मदेय = ब्राह्मणों को दान, शालाभोग = विद्यालय रखरखाव भूमि, देवदान/तिरुनामट्टुक्कनी = मंदिर को दान, पल्लीच्चंदम = जैन संस्थानों को दान की गई भूमि'।

स्मृति ट्रिक #9: फिरोज शाह तुगलक द्वारा लगाए गए 4 कर

ट्रिक: 'खराज (लगान), खुम्स (युद्ध लूट का 1/5 भाग), जजिया (ब्राह्मणों पर भी लगाने वाला प्रथम सुल्तान) और जकात (मुसलमानों पर धार्मिक कर) + हब-ए-शर्ब (सिंचाई कर — उपज का 1/10)'।

स्मृति ट्रिक #10: प्रमुख सूफी सिलसिले एवं उनके संस्थापक (भारत में)

ट्रिक: 'चिश्ती = ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती (अजमेर), सुहरावर्दी = बहाउद्दीन जकारिया (मुल्तान), कादिरी = शाह नियामतुल्लाह व मियाँ मीर, नक्शबंदी = ख्वाजा बाकी बिल्लाह व शेख अहमद सरहिंदी (मुजद्दद)'।

स्मृति ट्रिक #11: दिल्ली सल्तनत के 5 राजवंशों का क्रम और संस्थापक

ट्रिक: 'गुलाब खिले तो सांस लो' — 1. गुलाम/मामलूक वंश (1206–1290: कुतुबुद्दीन ऐबक), 2. खिलजी वंश (1290–1320: जलालुद्दीन खिलजी), 3. तुगलक वंश (1320–1414: गयासुद्दीन तुगलक — सबसे लंबा कार्यकाल), 4. सैयद वंश (1414–1451: खिज्र खाँ), 5. लोदी वंश (1451–1526: बहलोल लोदी — प्रथम अफगान वंश)।

स्मृति ट्रिक #12: विजयनगर आने वाले विदेशी यात्री और शासक

ट्रिक: 'देवराय प्रथम के समय निकोलो (इटली), देवराय द्वितीय के समय अब्दुर रज्जाक (फारस), कृष्णदेव राय के समय बारबोसा व डोमिंगो पायस (पुर्तगाल), अच्युतदेव राय के समय नूनिज (पुर्तगाल)'।